GANADARPANA

EDITED

BY

RAMATARANA SHIROMONY

HEAD PANDIT

OF THE

KANDEE SCHOOL.

FIFTH EDITION.

गगदर्पण:।

पाणिनीयधातुसहितसक्तवधातुक्तपात्मकः।

कान्द्रिसराजकीय-विद्यालयाध्यापकेन श्रीयुक्त रामहारण शिरोमणिना

प्रयोतः।

पञ्चमसंस्करणम्



वालिकाताराजधान्यां

नारायणयन्त्रे

सुद्रितः।

सन १३११।

্র প্রকাশক—জীরানতারণ শিরোমণি শাদি-খন।

প্রিণ্টার—প্রীরসিকলাল পান নং ৭৫ ত্রাপটা, নার্থিণ প্রেল—ক্ষিকাতা।

প্রথমবারের-বিজ্ঞাপন।

একংশ সংখ্য ভাষার উন্নতি সাধনার্থ সন্ধন্য নবা স্প্রদায় বহুপ্রিকর ইইয়াছেন—ইইয়া অভিশয় শোভাগোর বিষয়। আহা ু কিছুকাল পূর্বে এই ভাষার যে কি ছ্রবস্থা ঘটিয়াছিল ভাষা অবণ করিতে ইইলে কদম বিদীপ হয়। সে যাহা ইউক, বর্তমান সময়ে এভাষার আসাধারণ চমৎকারিত্ব দেশীয় বিদেশীয় অনগণের ক্ষয়ে দুচ্লগ্ন ইইয়াছে, অভএব সম্মাণান্ত মে ইহার পুনক্ষতি আমাদের নহনগোচর ইইবে, ভাষার স্নান্ত নাই। কিন্ত অগ্রেইয়ার কন্টকারত ব্যা অপরিয়ত করিতে না পারিলে কেইই ইহার মুধুর মুখ নিরীক্ষণ করিতে সমর্থ ইইবেন না।

ধাত্বাংন এত জটিশ যে, মহামহোপাধাায়গণকৈও এ গহনে ছলিভপদ ইইতে দেখা বিহা থাকে; অন্নমতি বালকগণের ত কথাই নাই। অতএব এই হর্ষোধ ধাত্বদ্ধ যাহাতে স্থাম করিতে পারী যায় সে বিষয়ে সকলের যত্ন করা কর্তবা। আমি যথাসাধ্য চেটাও পরিজ্ঞানীকার করিয়া সকল ধাত্র অর্থ ও রূপ সংগৃহীত করিয়া এই পুত্তক মুক্তিত ও প্রচারিত করিলাম। কিন্তু কি পর্যান্ত কডকার্য হইয়াছি ভাষা বিজ্ঞানীকগণ্ট নলিতে পারেল অক্ষতবিশতঃ আপনি কিছুই দির করিতে পারিলাম না।

্বাছ-সাংক্ষণ-করণার্থ আমরা নির্মালয়িত নিয়মে ধাতুর রূপ প্রদর্শন করিয়াছি।

- ্ । তা দি, দিখাদি, উদাদি ও চুলাদিন্দীয় ধাত্র লাথিতজ্ঞতে কোপ কাণ্য হয়, লোট্ দিও, ও লঙ্ বিভক্তিতেও সেইরপ কাণ্য হয় এজন্ত আমনা ওওদাণীয়হলে লটের প্রথম পুরুষের একবচনের পদমাত্র দিয়াছি।
- ২। আদাদি আদি প্রভৃতি গণীয় পাতুর প্রারেৎ সার্থাতুক-বিভক্তিমাতেরই প্রায় একরাল কাল্য হইলা থাকে এবং পিং ভিন্ন সার্থাতুক-বিভক্তিমাতেরই প্রায় একরাশ কাল্য হয়। এই দিমিত আমরা লট, লোট্ড সভের ভাবৎ পদ না লিখিয়া কেবল সেই সকল পদ লিখিলাম, যভাৱা অবশিষ্ট সমন্ত পদও কল্লিভ ইইতে পারে।
- ৩। লিটের প্রথম পুরুষের হিবচনে যে যে কার্যা হয় আর সমস্ত বিভক্তিতেও সেইকণ কার্যা হইয়া থাকে বেবল প্রতিষ্ঠানের একবচনে রূপান্তর হয়। এই নিমিন্ত আমরা প্রথমণ পুরুষের একবচন ও হিবচনের প্রমাত দিলাম। এবং লিটের ব্যঞ্জনাদি বিভক্তিতে নবল ধাতুর। উত্তর ইট্ হয়। যে হয় খলে, ইটের নিষেধ অথবা বিকলে বিধি আছে, সে সমস্ত পর্যা
- ৪) বুট্ প্ত বিভক্তিতে আয়ু এবই কার্যা, এই নিমিত তারাদের এক একটা প্র আদর্শিত হইয়াছে।

^{।। •} আশীলিঃ বিভক্তিতে যে যে কলে কার্যাবিশেষ আছে—তত্তৎপদমাত দিয়াছি।।

৬। পূঙ্বিভজিতে প্রায় সকল ধাতুর প্রথম পুদ্রের জপ প্রথমিত হইবাছে। বি যে যে কার্য্য হয়, অভাত বিচক্তিতেও সেইকণ কার্যা হয়। অত্রব বিষয়নাত্মণ্ডের অভাত পদ করিত হইবে। সমস্তাদি প্রের ভ্রিপ্রয়োগ বেখা খাল না, এখন বক্ষারাত্র প্রদত্ত হইয়াছে।

कान्ती विन्तानय। थीः ১৮७१ ।

শ্রিমানতারণশন্ত

দ্বিতীয়বারের বিজ্ঞাপন।

প্রথম বাবের গণনপণি ধাতু সকল অন্তা অকারাদি বর্গ অনুসারে আনিই হুইনাছিল।
তাহাতে ঝটিতি ধাতু বাহির করা সকলের পক্ষে অতি সহজ্ঞ হুইত না; এই হেতু পাতু সকল আন্য অকারাদিক্রমে সনিবেশিত করা হুইনাছে। বিশেষ এছলে ইংলা বা বে, গত বার অপেকা এবার সমধিক পরিশ্রম বীকার করা হুইনাছে। ছালে সংক্ষিপ্ত বিচার ও স্থানে হালে আবশ্যক্ষত বহুবিধ প্রমাণ প্রযোগ বিশ্বের করা নাই। (শোধনকার্যাও পূর্মাপেকা প্রশংসনীয় হুইনাছে।) এই সম্বাহ বিশেষ প্রবার প্রস্তের আয়তন বৃদ্ধি মুইয়াছে। এমন কি পূর্মাপেকা প্রায় ভার পাত কর্মা হুইনা পড়িয়াছে। মুহুরাং এবার ইংলার মুলাও কিকিং অবিক প্রিমাণে নির্দেশ কার্যা হুইরাছি। গতবার ১০ এক টাকা চারি আনা জিলঃ এবার ১০ এক টাকা আনা মাত্র নির্দ্ধারত হুইল।

कांनी विमानिय। ३२४७ मान।



জীরামতারণশর্মণ

তৃতীয়বারের বিজ্ঞাপন।

এই সংশ্বনে কবিবহন্ত ও ধাত্পানীপ হইতে প্রমাণ সংগ্রহ কবিয়া ইহাব অন্তর্নি কবিয়াছি। পূর্কাণেকাইহা বিশেষরূপে সংশোধিত হই য়াছে।

कान्ती-विकानय। ">৮৮१ मान।

<u> এরামতারণশর্মণ</u>

पाणिनौया विभन्नयः।

तिप्तम् कि। सिप् यस् या सिप् वम् सम्॥ त चाताम् भा। यास् प्रायाम् ध्वम्। इट् विह महिङ्॥ पा ३, ४, ७८।

चादिष्टा विभक्तयः।

बट् लट् परसोपदम

प्रथम पुरुष: अस्थिमपुरुष: असमपुरुष: ए॰ डि॰ ब॰ ए॰ डि॰ ब॰ ए॰ डि॰ ब॰

तिष् तम् चन्ति। सिष् धम् ध। सिष् वस् सस्। त्राति **ः अवात्रानेपदम्** हिन्दा । इत्राति १९०० ।

द्याते चन्ते। . से चाथे ध्वे। ए वहे महै।

पयुजीपदम् १

तुप् ताम् घन्तु। डि तम् तः। प्रानिप् प्रावप् प्राप्तप्।

यात्मनेपगम्

ताम् जाताम् जन्ताम्। स जावाम् ध्वम्। ऐप् जावद्रैप् जासदैप्।

बिह परस्रे पदम्

यात् याताम् युम्। यास् यातम् यातः। याम् याव षात्मनेपदम्

केत दैयालाल् देरन्। देयाम् देयायाम् देध्वम्। देय देवडि देमडि।

ं पादिष्टा विभन्नयः। ₹° मुङ् मुङ् खड् परस्रेपदम् उत्तमपुर्यः मध्यमपुरुषः प्रथमपुरुष: हि॰ व॰ ए॰ हि॰ व॰ Ue ताम् अनु। सिष् तम् त। षासनेपदम् त जाताम् जन्त। वास् जावाम् ध्वम्। निद् वरस्रेवदम् यत् प्रतुन् उन्। यत् प्रश्न् प। चात्रानेपदम् से पाये थे। ए वह मह भाते दरे। नुद् परकेपदम् ता तारी तारम्। तासि तास्त्रम् तासा तास्त्रम् तास्त्रम् तास्त्रम् चातानेपदम्

षाक्षनेपदम्
ता तारी तारम् ताचे ताचाचे ताच्चे। ताचे ताचाचे
िकाशीचिंडः

यात् यास्ताम् यास्म्। यास् यास्तम् यास्त। यासम् यास्त यास्त षात्मनेपदम्। सीष्ट सीयास्ताम् सीरन्। सीष्ठास् सीयास्थाम् सीध्वम्। सीय सीविष्ट सीमण्डि

र परसोपदम्

गगदर्पगः।

भ्वायदादी जुहोत्यादि-दिवादी खादिरेव च। तुदादिश्व संधादिश्व तनक्रादिचुरादयः॥

(事)

श्रक्-भ्वा. प।

कुटिनगति:। वक्रगति:। सट्घनति। सिट्घानः। प्राक्ततः। सुटघिति।। सुङ्घानीतः। प्राक्तिष्टाम्। पिष्घन-यति। घटादिः।

यन्-पन्, सा, प।

१ खाप्तिः। २ संइतिः, वो। लट् सचिति, अस्पोति, पा ३, १, ७५। सङ्घानत्, भास्पोत्। सिट्भानच। धानचतुः। भानचिय, भान्छ । ७; २, ४४। तुद् भिचिता, जष्टा। रूट् धिच्छिति, भस्ति। सुङ् भावोत्। धाचिष्टाम्, भाष्टाम्। भाचिषुः, भाचुः। इड्भावपचे वृद्धः। मा भवानाचौत्। सन् भविचिषित, भविचिति। विच् भचयित। भाविचत्। भिच् भचयित। भाविचत्। भिच् भचयित। भाविचत्। भिच् भच्यित। साविचत्। भिच्

श्रम्—(श्रक्ष) स्वा, ए। वक्रमति:।श्रमति।श्रामः।श्रमिता। गिच् श्रमयति।श्रटाद्दिः।

मध—चु, प। मदन्तः। पापकरणम्। लट् भघयति। मङ्—म्बिक, भ्वा, मा। १ मङ्गम्। चिक्रीकरणम्। २ गृतिः, वो। सट् चक्कते, चक्कते पुग्यतीर्थेषु इषयुग्भानि यक्कितः। चक्कयत्यरिकेन्यानि
युधि पृष्ठेषु सायकैः॥ कित १६०। सिट्
यानक्के। सुट चिक्किता। सुक्क् चाक्किष्ट।
सन् चिक्किष्ठते। चक्किल्या, प।
घटन्तः। १ गितः। २ सचगम्। चक्कयिता चक्कापयित। चक्क्यामास
वसान्, भारत। चिक्कितः। चक्क्यामास
वसान्, भारत। चिक्कितः। चक्क्यामास
वसान्, भारत। चिक्कितः। चक्कितः। चक्कितः। चक्कितः। चक्कितः।

श्रङ्ग-प्रगि, भ्वा, प। गतिः।

लट् घङ्कति। निट् घानङ्गः। घङ्क (घङ्क) चु, प। घटन्तः। १ गतिः। २ घङ्कनम्। घङ्कयति। घङ्कापयति, वो। घङ्कम्। घङ्कना।

यङ्— अधि, भ्वा, घा।
रे गितः। गमनारमः। २ घाचेपः।
निन्दा। ३ आरमः, वो। लट् यङ्गते।
लिट् धानङ्घे। लुट् यङ्गिता सुङ्धे
याङ्विष्ट। यङ्गः।

श्रमु (श्रम्बु)

ग्रज्-भ्वा, प। १ गतिः।

२ चेपणम्। लट् मुर्जात। लिट् वि-वाग, पा २, ४, ५६०। विव्यतः विष-यिथ, विवेध, माजिध, की ४०। विवास, विवय। विव्यितः। लुट् वेता, मजिता। लट्ट् वेष्यति, मजिष्यति। मामिनि, वीयात्। लुङ् सवैषोत्। धवेष्टाम्। धवेष्ठः। पचे धाजीत्। धाजिष्टाम्। धाजिष्ठः। सन् विवोषति। यङ् वेषोन्यते। धस्य यङ्तुग् नास्ति, की २१६। णिच् वाययति। प्रवायकः। प्रवयणी-यम्। प्रवीतः। प्रवयनः, प्राजनः, पा २,४,५७। संवीतिः। समजः। समानः, खाजः। वातमजः। धाजरम्।

र्ि श्रञ्शन्चु, खा, प।

१ गति:। २ पूजनम्। धन्तु, भनु चित् भ्वा, छ। १ गति:। २ याचनम्। ३ प्रव्यतप्रवदः, वो। सट् प्रचति। •ते, खतन्त्रा कथमससि, स ४, २२1 बच्, बचति। ०ते। लिट् प्रानच। बानचे, राममानचुर्यज्ञिया स्गाः, भ १४, ८८। तुर् पश्चिता। 'त्वर् पश्चिषति। •ते। पार्थिष, पश्चात्, पा ६,४,३०। गती तु अचात्, पा ६, ४, २४। लुङ षाञ्चीत्। पाञ्चिष्टाम्। प्राञ्चिषु:। प्रा-च्चिष्ट। प्राञ्चिषातीम्। प्राञ्चिषतः। कः सीपि, अचते। यदि, अञ्चाते। सन् य-श्चिविषति। •ते। णिच् श्रञ्चवति। धन्यु, पु, प। विश्रेषणम्। पञ्चयति। षञ्चति। सुदमञ्चय, गौतगो १०११) (छ) प्रचिता, या ७,२,५३। प्रकृता पूजायाम्। अन्यत यक्ता। अतः, अश्वि तः, अञ्चितविक्रमः, र ८,२४। उच्चर-चित्रलाङ्ग्लः पिराऽचित्वेव संवहन्, भ ८,४०। प्राङ, मध्युङ्। पूजायां प्राञ्चा, प्राङ्भ्याम्। प्रव प्रधोगतौ प्रवाङ्। छद्—उद्गति:। इदिश्वताद्यः, भ १,३१। - इदत्तमुदकं कूपात्, पा ७,२,५३। सम्, समझी यक्तने: पादी, पा ८,२,४८। नि न्यग्भावः। न्यचल्युदचलपि, मः हाना, ३,८१।

पञ्-धन्त् स, प ।

१ व्यक्ति:। प्रकाश:। २ सर्पणम्। ३ स्रज्ञणं, यो। ४ कान्तिः। ५ गतिः। स्ट धनिताः चङ्काः। चर्चान्ता। सीट धनत्। पङ्ग्धि। धनजानि। लिङ् यश्चरात्। चङ् यानक्। ,याङ्काम्। प्राप्तन्। निट् पानका। पानक्षिय, यानद्ध। नुट् पश्चिता, पङ्का। सट् पश्चिषति, पङ्गात। सुङ् पाञ्चीत्। षाश्विष्टाम् । धाश्विषुः पा ०, २, ०१ । सन् चिश्वजिषति, पा ७,२,०४। विश् यञ्चयति। याञ्चित्रत्। सानाञ्ची रा-चरामायाः, भ ८,४८ । पञ्चयन्तो स्रव नेत्रे, सनुः ४,४४। चित्र, चु, प, दीप्ति:। पञ्चयति। पञ्चिता, पङ्का, पक्षा, पा ६,४.३२। जलाः। प्रक्रि—प-भ्यङ्गः। वि—ध्यक्तिः, धकिश्वनत्वं सध-जंब्यनतिः रघु ४।१६। व्यनति यण्डः रीरस्यं नचग् मावभीमताम्। व्यव्यवन्ति च मोदानं यहेशी याश्रिका विजाः ॥ कवि २२५। भुजद्वाः व्यज्यन्ते संधितः फणस्ये:, र ११,१२। यमिवि—यमि-व्यक्तिः, तां प्रचमित्यक्तमनोरयानाम्, र 4, 17, 14, 29 1

षर्—भा. प। गतिः।

भ्रमणम्। सद् घटति। सिट् घाट।
घाटतुः। घात्रमानार, भ ४,१२। तुर्
घाटता। स्ट् घटिषाति। तुष्ट् घाटीत्।
घाटिष्टाम्। घाटिषुः। कापराटीद्
ग्टहाद् ग्टहम्, भ ५,४२। सन् घाटिष्टाति। यस् घटाव्यति, पा ७,४,८३।
घटाव्यमानोऽरख्यानीम्, भ ४,२। विष्
घाटयति। घाटिटत्। परि—पर्याटनम्। तीर्याटन पर्याटक्त, भारत। घट्, सु, प (घट)।

षह्— चहर, घत्र, घह। स्वा, घा।
१ ष्रांतक्रसः। २ हिंसा। सट् घहते।
सिट् थानहे। सुट् घहिता। सुङ् घाहिष्ट।
सन् घहिरिषते । घरिहिषते।
"घतिहिषते"। घह— स्, प। घनादरः।
घहयति। घाहिरत्। घर— घारयतीति
रमानाथः। क्रिप् घर् 'घत्'। • •

• यह्-भा, था। (त्रस्ड)

* षड्—भ्वा, प। उद्यम:।

चर् घडति। चिट् घाड। घाडतुः। चुट् घडिता। चुट् घाडीत्।

षड् - षद्ड, भा, प।

१ श्रीभयोगः। समन्ताद् योगः। २ निर्वोद्धः, वो। सद् श्रव्हति। सिट् श्रानुद्धः। सुद् श्रव्हिता। सृद्ध् श्राद्धीत्। सन् श्रद्धिष्ठपति। श्रव्हिडिपति, वो। गिन् श्रव्हयति। श्राव्हिडत्। क्षिप् श्रत्।

धग्-भा, प। ग्रव्हः।

दि, या। प्राणनम्। जीवंनम्। सर् यणित। यखते, न प्राण्यते पुरं तस्य प्रतिकृतं करोति यः। कवि १७२। सिट् याण। याणे। लुट यणिता। लुड् याणीत्। याणिष्ट। सन् यणिणिषित्। वते। णिच् याणयति। यन्, यन्यते द्रस्थेके। याणकः।

षग्छ्—षठि, षठ, भ्वा, षा।

गतिः। त्तर् अग्छते। त्तिर् धानग्छे। तुर् धाग्छता। तुङ् धाग्छिष्ट। सन् अग्छिठिषते। त्याच् अग्छयति। धाग्छि-ठत्। घठते इति काशिका। घठति, वो।

चत्-भ्वा, प। भ्रमेणम्। सततंग्रमनम्। सट् घतति। सिट् यात। याततुः। लट् यतिता। लट् यतियति। लुङ् यातीत्। मा भदा-•नतीत्। यातिष्टाम्। यातिः, स्वातिः, पदातिः, यतसी।

षद्-बदा, प। भचणम।

लुट् यति। यतः। यदन्ति, विम-दन्ति सङ्गः, विदम्बसु। हि अहि। बिङ् प्रदात्। बङ् प्रादत्, पा ७,३, १००। पात्ताम्। प्रस्त्। पादः। बिट् जघास, पा २,४.४०। जचतु:। जघ-सिय। पचे, घाद। घादतुः। घादिय, पा ७,२,६६। पस्त्रेरादिय मस्त्राणि, भः ८,४८। लुट् बत्ता। लुट् बत्खन्ति नरानत्स्यन्ति, भ १६,३२। लुङ् प्रघ-नत्, पा २,४,३०। चुध्यन्तोऽप्यवसन् व्यानास्वामपानां क्षयं नवा, भ ५, ६६। कमणि, अदाते। अनेनात्सामहे वयम्, भ ७,८२ । सन् जिचताति । णिच प्रादेवति। ०ते। जग्धा। जग्धः। अविमिति संचित्रसार: । अब्रर: घासः। त्रतुं माहिन्द्रियं भागम्, भ ४,११। नि-निघसः, न्यादः।

प्रन्—घदा, प। प्रन्, (पण्) दि, या। प्राणनं जीवनम्। सट् प्रनिति, पा
७,९,७६। प्रनितः। प्रनितः। दि,
प्रन्यते। हि, प्रनिष्ठः। सिङ्ग्यन्यात्।
सङ् प्रानीत्, प्रानत्। प्रानिताम्। प्रानन्। सिट् प्रान, प्राने। सुट् प्रनिता।
स्ट प्रनिष्यति। ०ते। सुङ् प्रानीत्।
प्रानिष्टाम्। प्रानिष्ठः। प्रानिष्टः। प्रानिष्ठतः।
प्रानिवति। ०ते। पित् प्रानयति।
प्रानिनत्—न प्रनम्। प्राणिति। पराणिति, पा
८,४,१८। प्राप्ति। पराणिति, पा
८,४,१८। प्राप्ति। प्राणिति। प्राणिति
प्राति यत्प्रजा। कवि १७२। प्राणिति।

प्राणिवस्तव मानार्थम्, भ ४, ३८।
प्राणीदुदमीलीच लोचने, भ १५, १०२।
प्राणितम्। प्राणनम्। "प्राणीऽपानः।
समानचोदानव्यानी च वायवः" इत्यमरः।

धन्त्- चन्द्-ईन्त्— चिति, चिदि, ईति।
स्वा, प। बन्धनम्। सट् घन्ति।
धन्दित। ईन्ति। सिट् घानन्त।
धित, चिदि, विदि, गिड् पचैते
न तिङ्विषया इति काम्यपादयः। चन्धे
ति तिङ सपीच्छेन्ति। घन्तः। घन्तकः।
धन्दुकः। घन्दुः।

ग्रस-चु, प। ग्रदन्तः।

१ दृष्टिरिइतीभावः । २ उपसंदारः । अस्ययति । आन्द्रधत्। अस्यितः ।

श्रम्भा, प। गतिः। सद्यस्ति। सिट्घानसः। पान-

स्तर् अस्तात । स्ट्रियान । नार्षे सतः । वनेष्वानस्य निभयः, म ४, ११। सुट् अस्तिता। सुङ् आस्तीत्। मा भवानस्तीत्। सन् प्रविश्चित्ततः। सिन् श्रम्यति । प्राविश्चत्। प्रसम्।

ब्रम्-स्वा. य। १ गतिः।

२ शब्दः। ३ सम्बक्तिः सेवा। लट् यमित, अमित्त व्याधयोऽप्येनम्, कवि १८०। लिट् श्राम। श्रामतः। लुट् श्रीमता। ल्टट् श्रीमश्रीत। ल्र्ड् श्रामीत्। श्रामष्टाम्। श्रिक् श्राम-यति। श्रम, चु, प, रोगः, श्रामयितः

पामयन्ति यम्, कवि १८०। प्रमितः। प्रान्तः। प्रभ्यमितः, प्रभ्यान्तः, पा ७,

२, २८। श्रश्यमितः श्रभ्यान्तः, पा ७, २, २८। श्रस्यमी। श्रमः।

ग्रस्त्—ग्रिव, स्वा, ग्रा। ग्रन्दः।

सर् प्रस्ति। लिट पानस्ते। ल्ट् प्रस्तिता। सूङ् प्रास्तिष्ट। प्रस्त्, स्ता, प।गंति:। प्रस्ति, तो। ग्रय्-स्वा, ग्रा। गतिः।

सट् अयते । सिट् अया सके, पा १, १, ३० । सुट् अयिता । स्टट् अयित्रते । धार्भिष, अयिवीद्रम, अयिवीध्वम् । सुङ् आयिष्ट । आयिवाताम् । आयिष्यत । धार्यद्रम्, आयिध्वम्, पा ८,३,०८ । मन् अयियिषते । सिन् आययित, आयः । प्र—परा—पनायनम् । भ्रायते । पना-यते, पा ८, २, १८ । दुरितस्व पन्तायते,

कावि २५८। पलायाञ्चको, म ५ १०६। तमादाय पलायिष्ट, भ १५, ५६। पलायितः। निर्—निलयते। दुर— दुलयते। षदयति बिततोर्बरिमस्जी,

मा ४, २०। ध्रयमताविति खरितेतं केचिदिच्छन्ति, मझी। वस्तुतस्तु इ मन् तावित्यस्य कपम्।

> चर्न्-चु,प।१स्तुतिः। २ तपनस्। चर्नयति। चर्नः। चर्न्-भ्या,प।१ डिसा।

२ क्रयः । ३ पूजनम्, वो । अर्घति । अर्घः ।

पर्-स्वा, प। छ, वो।

े अर्चनम्। पूजा। लट् अर्चति। ०ते, वो। लिट् आनर्च। लुट् अर्चिता। लृट् अर्चिष्यति। लुङ् आर्चीत् आर्चि-ष्टाम्। आर्चिष्ठः। आर्चीद् दिजातीन्, भ १, १५। सन् अर्चिविषति। चु, प। पूजा अर्चेषति। अर्चेति। युजादिषु

पाठफलं कर्स भिषाये जियापले पातम-नेपदार्थभिति प्रदोपः। भन्नयाऽच यति त्यो विप्रान् गुरून् देवांस्तयाच ति। प्र-च न्ते चरणी यस्म, कवि ११६। प्राचि-

चत । दूर स्थी नार्च येद गुरुम्, मनुः २,

२, २ पर्वियता फलैरची भ ६,००१

षर्वा। षर्वना। षर्वितः। ष्रिम-षागीभि रभ्यची, भ १, २४। प्र-प्रानचुरचा । जगदर्वनीयम्, भ २, २०। सम्-सामन्यां समर्चयन, भ ४,८। ।

षर्ज्-भा, प। पर्जनम् 1 *

. उपार्जनम्। सट् यर्जति। यद्वमकॅति, ने ४, ८४। सर्वोऽप्यर्जयित द्रव्यमासनः प्रोतिहेत्वे। प्रकंति प्राप्यती
कोत्तिं यप्रवार्जित यः स्थिरम्॥ कवि
१००। सिट् पानकं। पानकंतः।
पानकुः। पानकुं नृभुजोऽस्ताणि, भ
१४, २४। सुट् पार्जिता। सुङ्
पार्जीत्। पार्जिष्टाम्। पार्जिष्ठः।
पन् पार्जिष्टाम्। पार्जिष्ठः।
पन् पार्जिष्टात। सु, प। १
प्रतियक्षः। संस्तानः। २ उपार्जनम्।
पर्जयति। पार्जिजत्। पार्जिजत् स
वचम्, भ १५, ४३। परस्तान्यार्जयन्,
भ १७, ३८। पर्जनम्। पर्जितः। उपउपार्जनम्। विरकासोपार्जितः सुद्धत्,
स्तितेप।

पर्ध-चु, प्रा। पदन्तः।

खपयाच्जा। याचनम् । पर्ययते,
पर्यापयति याद्धाणि नार्थमर्थयतेइन्यतः। कवि २६४। प्रात्तंयत। तमर्थयाञ्चले योदुम्, भं१४, ८८। वैखां
गत्वाऽर्थयस्य धनम्, भारतः। पर्यः।
पर्यो। पर्यंतः। पर्ययत्वाः। प्रभि—
प्रभ्यर्थना पार्यंनाः। प्रवकाशं विकादिन्वान् रामायाभ्यर्थितो ददी। र ४,
प्रदा भ ६, ३। प—प्रार्थनाः। तं प्रायंयाञ्चले प्रियाकर्त्तुम्, भ ४, १८। गावस्तृणस्वारण्ये पार्थयन्ति नवं नवम्।
प्रार्थयन्ति प्रयन्ति पार्यंन्यस्ति
तु (प्रार्थनं सुर्वन्तीति पार्यंन्यस्ति
। क्रिं सुर्वन्तीति पार्यंन्यस्ति

पद्-भा, प। '१ गति:।

 २ याचनम्। ३ पौड़नम् लट् प्रदीत, भदीत दिषतां दर्पेमर्दतं दुरिताद्यम्। यबाद्यति द।रिद्राम्, कवि ११८। यर-इनं नार्दीत चातकोऽपि, र ५, १०। सिट् बानदे। बानदेतु:। सुट् बर्दिता। स्टर् पारिषाति। लुङ् परीत्। पादि-ष्टाम्। प्रादिषुः। रचःसङ्ग्रीण मे बा-दींत्, भ १२, ३६। . सन् प्रदिद्यित। षर्द, चु, उ। था, वो। हिंसा। यदं-यति। ० ते प्रदेति। ० ते । प्रादिंदत्, येनार्दिद हेत्यपुरं पिनाकी भ २, ४२। पर्दनम्। पर्दितः। प्रति-प्रपीड्नम्। पत्यादींद्र बालिन: पुत्रम्, भ १४, ११५। प्रभि—प्रभ्यदितः। सन्निकर्षे, प्रभ्यर्गः। नि-निपीड़नम्। न्यर्णः। वि-व्यर्णः। सम—समर्थः, पा ७, २४, २५।

प्रब्-भवा, प । १ गति:।

२ डिंबा। प्रवेति। प्रानवै। प्रविता। पर्वे, स्वा, प। डिंसा। प्रवेति।

षह्— स्वा, प। १ पूजा।
२ योग्यता। समधीं भावः। लट् यहीत।
धर्मान् नो वक्त् महीं सि, मनुः १, २।
स्कृष्ट्रीकाधिपत्यं वेदशास्त्रविदहीं ति,
मनुः १२, १००। लिट् घानही। लुट्
पहिंता। स्टट् घहिंच्यति। लुट् घान् हींत्। घाहिंद्याम्। घाहिंदुः। सन् प्राजिद्यित। पहें, सु, प। पूजा। घहेंयति। घाजिंदत्। राजाजिंदत् तम्, भ ११, ७। पहें, सु, प। पूजा। पहेंयति। घहित। घही। पहेंगा।

पर्हणम्। पर्हन्। पूजाईः।

चल्—भ्वा, प । १ चलक्करणम् । २ निवारणम् । ३ पर्व्याप्तिः । साम-र्याऽम् । स्टर् चलति । ०ते, वो । सिट

फान। तुर्पनिता। खर्पनिष्यति। लुङ् प्रानीत्। पालिष्टाम्। प्रानिष्ठः। मा भवान लोत्। पलम्। पलकम्। पनी।

ष्रम्

श्रव्,—भ्वा, प। १ रचणम्।

२ गति:। ३ शोभा। ४ प्रोति:। ५ स्तिः इच्छानामः। ६ पवगमः। ७ प्रवेश । ८ यवंगम्। ८ ऐखयम्. स्ना-मिलम्, सामर्थम्, दी। १० याचनम्। ११ करणम्। यनुष्ठानम्। १२ इच्छा। १३ दोप्ति:। १४ प्राप्ति:। १५ व्यानिङ्ग-नम्। १६ इननम्। १७ बादानम्। १८ त्यागः। १८ वृद्धिः। एकोनविंगतिरयोः सट् प्रवित, न मामवित सद्दीपा रत-स्राप सेदिनो, र १, ६५। खिट् पाव। षावतुः । लुट् अविता । लृट् अविषाति । सुङ् यावीत्। मा भवानवीत्। पावि-ष्टाम्। पाविषुः। जः छवी, जतिः प्रविष:।

्र प्रवधीर—चु, प। घटनाः।

चवन्ना। चवधीरयति। चवधीरणा। प्रवधीरितः। ज्ञा, प्रवधीर्थः। हित-वचनमवधीर्था। इतो। इतीव धारा-मवधीर्थ। नै १, ७२। नित्यम्ब-योगः।

. यम्-त्रम्, स्ना, या।

. १ व्याप्तिः। प्राप्तिः। पूर्णम्। पाच्छा-ट्नम्। २ अंघातः। रागौकरणम्। स्ट अयुत्रे। अयुवाते। अयुवते, रामा-द्रचांसि विभ्यत्यश्रुवते दियः, भ ५, १४। प्रमुते च परं तपः, कवि २६६। तिङ् प्रयुवीत। सङ् पायुत। पायु-वाताम्। प्रायुक्त । लिट् पानमे, पा ७, ४, ७२। पानिधिषे । पानचे । पान-यिध्वे, पानज्द्वे। खपाटी: खमानशे, भ २, ३०। स्रोधन्त्रणा मानश्चिर, र ७,

२३ । जुट् चियता, घटा । जृट् चिय-यते, प्रस्ति। पाणिष, पणिष्ठे, प्रचीष्ट। नुङ्घागिष्ट, घाष्ट। चाणि-वाताम्, पाचाताम्। पाणिवत, पा-चत। सन् षशिशिषते, पा ७, २, ७४। यङ्चयाञ्चते को २०६। णिच् पागयति। पागिगत्। प्रशिवा, पद्या। पष्टः। वि—व्याप्तिः। धोषो व्यानग्रे दिशः, भ १४, ८६। व्यम् वाना दिशः प्रापुर्वेनम्, भ ८, ४। ते तं व्यागिषत, स १४, ४३।

चम्-क्रा, । भोजनम्।

लट् पश्चाति । पश्चीतः । पश्चन्ति । प्रश्नाति ग्रविमाहारम्, कवि २२६। देवता मांसानि पत्रन्ति, भ ५ १४। 4, 88। लिङ् पश्रीयात्। हि पमान। लङ् पात्रात्। पात्रीताम्। पात्रन्। बिट् याम। पामतः। बुट् प्रधिता। लुङ् पाशीत्। याशिष्टाम्। पाशिषुः। तन् प्रशिमिषति। यङ् प्रशास्ति। णिच् सामयति, पा १,२,८१। अतिथि। पूर्वेमाययेत्, मनुः, ३, ८१। उप-उप-भोगः। प्राप्तिः। खगेनोकमुपात्रीयाम्, रामा। न फलं तदुपामाति, भारत। प्रने-भोजनम्। प्राय हुतोञ्जिष्टम्, स र, १३। प्राधीत्, भं १५, २८। मम्-भोजनम्। अनं समग्रीयात्, मनु: ६,१८। श्रंश—(श्रंम)

चम्-प्रष्, भा, उ। १ गति:। २ दोति:। ३ पादानम्। लट् यसति। •ते। प्रपति। •ते । चिट् घास। प्रासे। नावस्य वत्पादा इवास यतः (दिदोपे) कु १, २५ । नुट् घिता। प्रभि—प-म्यासः। वेदमेवाभ्यसेत्, मनुः ४, १४०। नि—निचेपः। न्यसेत् पादम् मनुः । ४६। सम्, नि—संन्यासः 🕨 वेदान्तं 🖟 त्रुला संन्धसेत्, मनुः ६, ८४। विनि-विन्धासः। विन्धसेत् पूर्वं भूमो, मनुः ३, २२६।

पर्ध-पदा, प। सत्ता।

विद्यमानता। स्थितिः बट् पस्ति। न्तः । सन्ति, पा ६, ४, १११। . पस्यूत-रस्यां दिशि देवताला। जु १।१। चस्ति-वांनीति वानरः, भ ६, ८८। प्रसि, पा ७, ४, ५०। लिङ् स्यात्। स्रोट् यस्त । हि एधि, पा ६, ४, ११८। एधि कर्मकरस्वं मे। भ २०,६। लङ्घा-मीत, पा ७, ३, ८६। पास्ताम। या-सन्। पासीदिदं तमीभूतम्। मनुः १, थ । सिट् बभूव, पा २, ४, ५२ । इवास चतः। तिङन्तप्रतिरूपमञ्चयम्। १। लुट् भविता लृट् भविष्यति। लुङ पभूत्। सन् तुभूषति। यङ् बोभूवते। व्यति—व्यतिस्ते। व्यतिसे। व्याति है, पा ७, ४५०, ५२। अन्यो व्यितस्ते तु ममावि धर्मः, भ २, ३५। चभि-चभिचात, पा द, र, द०। यदव समाभिष्यात् तहीयताम्, पा १, ४, ८१। पादु:-पादुर्भावः। पादु:-चात्। पादुरास ताड्का, र ११, १५।

चम्-चसु, दि, प। सोपसर्गः (उ)

चिवणम्। घवनोदनम्। सद् घस्यति।
निद् घास। घानतः। घस्यास्यासः परस्मरम्, भ १४, ७०। स्नोणासास यमम्,
ननोदयः ४, ३६। तुद् श्रीसता। लृट्
घसियति। तुङ् घास्यत्, पा ७, ४,
१७। तिस्मनास्यदिषीकास्त्रम्, र १२,
२३। सन् घसिस्यति। णिच् घासयति। घासिसत्। (उ) श्रीसत्नाः,
पस्ता। घस्तः। पस्यमानं महागदाः,
भ ५, ८१। पा ३, २, १२८। प्रप

पपसार्यम्। त्यागः। पपास्यति। •ते। किमित्यपाखाभरणानि, कु ५, ४४। सुरानपास्य तं निषेविरे, सा १, ४४। यदि समरमपाया.नास्ति सत्यो-भैयम, हितोप। श्रभि—श्रभ्यासः। चेपणम्। प्रभ्यस्यति व्रतम्, र १३, ६७। प्रथस्यन्ति तटाघातम्, क २. ४०। सगकुलं रीमत्यम्थस्यत्, प्रकृ। वेदं सदाभ्यस्येत्, मतुः रं, १६६। बैभ्य-स्रतो वाणान्, भारत। नि-निचेप:। त्यागः। पयोग्ये न महिधो न्यस्यति भारम, भ १, २२। भातरि न्यस्य मां यातः, भ ५, ८२। जीवितं न्यस्य यम-चयं व्रजेत, रामा। म्यस्त्रयम्तः, भारत। विनि-विन्यासः। विभागविन्यस्त-महार्घरतम्, भ १, १। निर्-निरस-नम्। पपसार्थम्। वायेन रचःप्रध-नाविराखत, भ २,३६; १,१२,१५, ३५। यशांसि सर्वेषुस्तां निरास्त्, भ १, ३। परि-चिपषम्। पतनम्। घटं पर्यास्त्रेत् पदा, मनुः ११, १८४। पूर्यं-स्ताः पृथिव्यामञ्जविन्दवः, र १०, ७५। चनेन पर्यासयतात्रुविन्द्न, र ६, २८। विपरि-विपर्यासः। विपर्ययः। प-वचेप:। कुषां प्रास्त्रेयुर्जेबायये, मनुः रें १. १८५ । वि-अपनयनम् । विभागः। व्यस्ववदन्यां विविदे: पयोभिः, भ ३. ४०। चतुर्धा व्यस्य प्रसवः, र १०, ८४। व्यस्य वेदान, भारत। सम-संचीपः। समामः।

शंस—प्रंश—चु, प । घटन्ती । विभागः । प्रंसयति । प्रंसापयति । श्रंगयति । प्रंशापयति । प्रंस, चु, प्रः । समार्घातः । प्रंसयति । प्रंसः, प्रंथः । प्रंशः । प्रंशी । प्रंथितः । वि—विश्लेषः । व्यंस्यामास तत् सैन्यम्, भारत । ष'ह्—प्रहि, स्वा, घा। गितः।

"सट् घ'हते। सिट् घानंहे। घानंहिरेऽद्रिं प्रति, भ ३, ४६। सुट्
ग्रंहिता। सुट् ग्रंहिष्यते। सुङ् घांहिष्ट । घांहिषातां रघुत्राप्ती गरभङ्गाश्रमम्, भ ४, ४। सन् घांछिषते।
प्राचमिद्धिहिषाचको, भ ४, १६।
चिच् ग्रंहयति। प्राष्ट्रिःत्। तमान्तिहस्यिस्यच्यस्तुभिम्, भ २, ४०। प्रहि

40

(आ)

(ब्रजि) चु, प । दीप्तिः। चंहयति । बंहः ।

पान्क्—पाकि, भा, प।

पायामः। दैघ्येम्। लट् पाञ्छिति, पाञ्छिति यत्नुपां धूलिपदितः, कवि २१६। लिट् पानार्व्छ। (पाञ्छ दिति न्यासकारः)। लुट् पाञ्छिता। लुङ् पाञ्छीत्। सन् पाधिकिवित, पा६, १,३। पिच् पाञ्छयति।

त्रान्होत्त—चु, प। घटन्तः । दोलनम्। चान्होत्तयति । हिन्होत्तयति । हिन्ना-चयति ।

षाप्—बाष्ट्र, खा, प।

खासि:। प्राप्तिः। चर् बाप्ने ति।
पाप्रतः। पाप्रवन्ति। चाप्रोति देखतां
जीकात्, भारत। जिङ् चाप्रयात्।
खर्गपन्न सारत। जङ् चाप्रोत्। चाप्रताम्। चाप्रवन्। पम्,
पाप्रवन्,। जिर् चाप। चापतः, गवरीमापत्रवने, मक्, प्रदे। चाप्रच्यां फन्नम्,
र २, ११। जुर् चाप्ता। जुर् चप्खति।
लुङ् चापत्। चौपताम्। कर्माण, मया
त्वमाप्याः गरणं भयेषु, वयं त्वयाप्याप्सादि धमें बढेर, भ १, २१। सन् इंस्रित,
पा ७, ८, ५३। ईंस्रितं सार्गं विदि,

पायति । प्रापति । पापते इति कथित्। यः प्रापयति सर्वत् समानं सनुराजवत्। प्रापित प्रत्य हं तेजः की त्यां प्राप्नीत रोदसी॥ कवि ६६। पश्चि गृहिम-भीषता, मनुः ४, १३६। नान्यदत्तमभी-पामि स्थानम्, भारत। प्रव—प्राप्तः। लाभः। सिंहादधाव दिवदम्, स १८, ३५। इह कीत्तिमवाद्रीति, मनु: २, ८। परि-पर्याप्तः, र १४, १८। प्र-प्राप्तः। गति:। प्रापदात्रमम्, र १, ४८। जटायुः प्राप रावणम्, स ४, ८३। एव गजः प्राप्त:, यकु । मन्त्राप्ति: । मंत्राप्य तीरं तमसापगायाः, भ ३, २८ । गंबाध्वन्ति दु:पानि तासु योनिषु, मनु: १२, ७४। वि—धाप्तिः। खं व्यापदपुषीऽच्या, भ १४, २२, ७, ५६। मिनियोगः ऋथाहिः, भ ६, ३८। सन्- प्राप्ति:। विश्वि समाप्र-यात्, भारत। णिच् मनाप्तिः। जतमेषं "समावयेग्, मनुः ११, १५८। चन्दन-नाङ्गरागं मसावव्यः र १७, २४। समाव्य मास्यञ्च विधि दिशीयः, र २, २३। याम्—पटा, या। १ मता। २ वामः। ३ उपवेगनम्। ४ स्थिति:। सट् औरते। प्रामाते। बाहते। तथा पुत प्रास्ते मोमयवा नाव, भारत। सम पयादागक्कृत् प्रास्तो, प्रितीप। कोट् चाम्ताम् । चामनं भगवानास्ताम्, रामा। सुलमास्ख, गमा। लिङ् जि-मामीत वजेत किम्. भगवद्गीता २, ५४। लङ् यास्त । लिट् यामाध्रते, पा १, १. ३७। यायमे क्यिट्यामाख्यो, भारत। भयादासाञ्चांक्ररे, भ ५, ८५।

तुर् प्रासिता। जुर् पानियते। जुङ्

पासिष्ट। पासिपाताम्। पासिपत।

र १, ८०। णिच् पापर्यात । पापिपत्।

बाइ, चु, प। नन्धनम्। प्रायणम्। पा-

षासिखदि वर्धवने, भ ८. ६। इहा-मिष्ट, भ ६१२, ३, २१। सन् प्रामिसि-यते, पा १, ३, ६२। शिच् श्रामयति। यामियत्। यानीनः। पानितः। या-मनम्। प्रधि — उग्वेशनम्। प्रधिवा-मः। अधिष्ठात्म्। पीठमध्यास्ते, या १, ४, ४६। रयमध्यास्त, र १२, ८५। पर्यो शानामधाय, र १, ८६। जुनपति: शीनकोऽन्त्रिशरणमध्यास्त, भारत। सन् पध्यासिमवसागो वियनाध्यम (त्रारोद्धिच्छन्), स ८, ३८। तमध्याः सयदामनम्, भ २, ४६। चनु-पंचाद्-पवेशनम्। उपमेवाः। उपासनाः। नरी-न्द्रबन्या स्वरुष्यमन्त्रास्तं, कु ३, १७। भन्वामितमक्यत्या, र १, ५६। ता-मन्वास्य, र २, २४। उद-उदामी-नता। उपेजा। विधाय वैरं सामर्षे नरोऽरो य उटामते, मा २, ४२। उप-उपामना। यवस्थिति:। यनुष्ठानम्। माम्यास्ते हरिः. भ ४. २४ । - ह्यामा-चितिरे द्रष्ट्रम (उपगताः), भ प, १००। परनोकम्णासाने, भ ७, मधा सम्या-मुपामते ये तु, स्राति:। श्रीमहोत-मुपासते, मनः ११. ४२। पर्यंप-सेवा। भुजङ्गाः पर्युगामते, कु २. ३८। सम् ⊱ **एववेशनम्। पूर्वा मस्यां तिष्ठन पश्चि-**मान्तु समासीनः, मनुः २, १०१। (宝)

इ-भ्वा. प। गति:।

नट् प्रयति । निट्-इयाय । ईयत्:। देयु:, की ५३। दययिय, द्येय। दयाय, इयय। लुट् एता। बार्शिष, देयात्। विततो हुरिसरजी, सा ४, २०। प्रय-सुदयति सुद्राभञ्जनः पश्चिनीनाम्।

इ—इण्. घटा, प। गति:। प्राप्ति:। लट एति। इत:। यन्ति, पा ह, ४, ८१। हि इहि। लिङ् इयात्। लङ् ऐत्। ऐताम्। षायन्। लिट् इयाय । ईयतुः । ईयुः, पा ७, ४, ६८ । इयिय, इयेय। ईयिव। सुट् एता। लुट् एवति। लुङ् ऐवत्। पाणिवि, इंबात्। निरियात्, पा ७, ४, २४। ममीयःदिति प्रयोगसु भीवादिकस्य। लुङ् ग्रगात्, पा २, ४, ४५, ००। च्या-ताम्। चगुः। नर्माण ईयते। ऐयत्। एता चायिता। एखते, चायिखते। एबीष्ट, चायिसीष्ट। चगायि। चगा-सत्। अगायिषत्। अभ्ययोध्यमगात्, भ २, ४८। निकेतम्, भ ३, ४०। समा-जम्, र ४, ७६। सन् जिगिधपति, पा २, ४, ४७। बोधने तु. प्रयोन् प्रतोषि-पति। चिच् गमयति, पा २, ४, ४६। बोधने तुपत्याययति। इत्वा। • इत्व। इतः। प्रयनम्। प्रति-प्रत्ययः। प्रति-क्रमः। अतील डि गुणान्, डिनोप। प्रतीत:। व्यति—प्रतिक्रम:। यं यं व्यतीयाय सा. र ६, ६७, ५२। तस्य दिनानि व्यतीयुः, र २, २५। व्यतीतः। व्यक्त्यः। घनु—घनुगमनम्। घन्वदः। भर्वेति श्वतमन्वेति, दायभागः ८०। पन्वितः। सर्वान्वतः। प्रय—प्रयगमः। चयः। धर्मोऽयेति पादगः, मनुः १, ८२। स्विपिति यावद्यं निकटं जनः। स्विप-मि तावदहं किमपै।त ते। "यपेत:। व्यप-व्यपगमः। निवृत्तिः। पुत्रं टदतः स्वधा व्यपेति, मनुः ६, १४२। व्यपेतः भी:। प्राभ-प्राप्तः। ततोऽभ्यगाद् गाधिसुतः चितीन्द्रम्, भ १, ४७। पव —जानम्। भवानपीदमवैति, र २, प्द। वस्तवावेति कार्यम्, भ ४, ८७।

चा-चागमनम्। प्राप्तिः। चत्तं माहे-न्द्रियं भागमैति दुषावनः, भ ५, ११। ऐति रामम्, भ २, ५०। ७द-७दयः। उद्गमनम् । उद्भवः । उद्योगः । स्रमाः नोब्दियाय घूमः, र ७, २६। उदा विव तमोप इ: ६, ११०। उद्यन् प्रभा विश स राजा राजां बभून, र १७, ७७। न प्रभातर हैं ज्योति इदेति वसुधा-तलात्, शक्तु । डिद्तः । प्रभ्युद्—उदयः । प्रभ्युदयः । ं उन्नतिः । प्रभ्युदियात् स्याः, मनुः २, २२०। प्रभ्युदितः। उप -- प्राप्तगमनम्। प्राप्तिः। लच्नोः पुरुष-सिंडसुपैति, डितोष। सैनापत्यः सुपेत्य वः, कु २,६१। ब्लियम्, ६, १३६। डपेतः। उपायः। षभ्युप—उपस्थितिः। स्तीकार:। यचेतमा न गणितं तदि हाभ्यपैति, महाना। प्रभ्यपेता। प्रभ्य-पेतः। प्रभ्यपायः। प्रति—प्रतीतिः। प्रतिगमनम्। ं चैक्ततेषु कलइंसमालाः प्रतीयिरे निनादैः, भ २, १८। प्रतीयाय सुरी: सकायम्, र ४, ३५। प्रतीत:। प्रत्ययः ।

100

इ-इक्. घटा, प। सारणम्। षयं नित्यमधिपूर्वः। लट् षध्येति, यदध्येति तदचयम्, कवि, २, %। षधीतः। पधीयन्ति। समीतयो राष वयोरधोयन्, भ १, १८। पियन्तीति बेचित्, को ११८। येषं रखत्।

इ—इङ्, घदा, पा। पध्ययनम्। नित्यमिषयोगः। सट् प्रधीते। प्रधी-याते। पधौधते। यत्किश्चदप्यधौते-अवी, कवि २ ४७। बिङ् प्रधीयीत। संड प्रधात। प्रधायाताम्। प्रधायत। षधीय पध्येनति। तिट् पधिजगे, या २, ४, ४८। प्रधिनगिषे। सुद षधेता। सद् पधेयते। सङ् बधी-

व्यत, प्रध्यगीव्यत, पा २, ४, ५०। षाधिष, पध्येषीष्ट। पध्येष दम्, पा ८, ३, ७८। मुङ् प्रधेष्ट, प्रध्यगीष्ट, या २, ४, ५०। अध्येषाताम्, अध्यगीयाः ताम्। प्रधीयतः, प्रधागीयतः। प्रधीवृत्तः, प्रध्यवीहुं, पा द, ३, ७८। सोध्य ष्ट वैदान्, भ १, २। कर्माण, वैदीध्वगाः यि, सर, १६। सन् अधिनिगांसंते, पा २, ४, ४८। जिच् पच्च। पैयति, पा प, १, ४८, ७, ३, ३६। पाधाविषत्, प्रधानीगपत्। प्रधापिपयिवति, प्रधिन-गापविषति, पा २, ४, ५१। पधोयानः। पधीतः। पधीता। धध्ययनम्। पधा-पना। प्रध्यापितः। प्रध्यापिपद् गाधिः स्तः चितोन्द्रम्, विद्याम्, भ २, २१। नीतिमध्यापितस्य, कु ६, ६। रख-रक्-राख, भ्वा, य।

रुख्

गमनम्। सट् एखति। इङ्गति। सिट् इयेख। इडीचकार। जुड एखीत्। पेडोत्। प्र-जिताः। प्रेडत् ज्ञिनता चितिः, सं १७, १८। चूङ्ग-दृगि, (चिगि) स्वा, प।

गमनम्। इङ्गति। इङ्गाञ्चकार। ऐ-क्रीत्। इक्रितम्।

दर्—स्वा, प। गमनम्। पटित । इयेट । इंटतुः । पटिता ।

इन्-तु, वु, प। विनायः। यः प्रेणत्यालनोऽचम्. कवि १८। नायसन्यव द्रायते।

द्रन्द्-द्रिद, भ्वा, प

परमेखयम्। सट्रन्दति। लिट् इन्दाञ्चकार। लुट इन्दिता। लुङ् ऐन्दीत्। सन्, इन्दिदिषति। इन्द्रः। इन्दिरा।

दर्य-निदयी, त, या। दीप्तिः। चट् इस्ये, पा क्षु ४, २१। इस्थाति। इस्थति। इन्स्से। इस्थे युहेषु
यत्तेनः, कवि २६८। जिङ् इस्थीत।
स्न, इन्तस्न । इस्थे। कङ् ऐस्था। ऐस्थान्ताम्। ऐस्थतः। जिट् इस्थाप्यते।
छन्दमि नृजोपः। समीधे, पा १, २,
६। जुट् इस्थिता। ल्ड्ड् इस्थिपते।
सन् इन्दिधियते। जिड् इस्थयति।
सन् इन्दिधियते। जिड् इस्थयति।
सन् इन्दिधियते। जिड् इस्थयति।
सन् इन्दिधियते। जिड् इस्थयति।
सन् इन्दिधियते। सम् इस्थयति।
सन् इन्दिधियते। सम् इस्थयति।
सन् इस्थिपते। सम् इस्थयति।
स्राधिय च पावकम्, मनुः २, १८७।
सिम्यानोऽस्नकौयसम् (वर्षयन्), स

इन्व-इनि, भ्वा, पा १ व्याप्तिः। २ प्रीणनम्। इन्वति। इन्वाञ्चकार। इन्विता। ऐन्वीत्।

इल्-तु, प। खत्रः।

निद्रा। २ चेपणम्। चट् इसति। निट् इयेन। ईनतः। चट् पुनिता। चट् पनिष्यति। चुङ् ऐनीत्। इस, चु,प। प्रेरणम्। एनयति। ऐसिसत्।

रप्-इषु, तु, प। इच्छा।

पाकाङ्घा। लट् इच्छित, पा ३, ००। दच्छामि संविद्धितमाज्ञ्ञया ते। कु ३,३। लङ् ऐच्छत्। लिट् इयेष। ईषतुः। इये- विष्यः। चुट् एषिष्यति। पश्चिषि, इ- धात्। लुङ् ऐषीत्। ऐषिष्टाम्। ऐषिष्ठः। मधूनि नेषीत्, म ३, २०। कमिषि, इप्यति। सन् एषिष्यति, मी २००। पिच् एषयति। ऐषिषत्। (५) एषित्या, इष्टा। इष्टः। इच्छा। इच्छन्। इच्छः। प्रत्या, प्रित्या, प्रत्या, प्रत्या,

मनुः ४, ३३। घन्वेषयामि सुमुखीं
विमुखी विधाता, महाना ४, ५०।
प्रति—यहणम्। स्त्रीकारः। ततः प्रतीच्छ प्रहरेति भाषिणी, नै १, ६८।
गदां प्रतीयेष, भ १४, ३६। घोषां
प्रतीषुः, भ ३, ४३। प्रेषः। प्रेषः,
की ४५। निकष्टस्य प्रवर्तनं प्रेषणम्
प्राजा। समानस्य प्रधिबास्य वा प्रवर्तना
प्रस्योषणा प्रार्थना।

दूष्-दि, पं। गरानम्।

र्ष्यति। रयेष । एषिता । ऐषीत्। स र्षितः । एषितुं (ज्ञातुम्), भ ४, ८२ । पनु—चन्वेषणम् । न रत्नमन्विष्यति स्ट्यते हि तत् । कु ४, ४५ । प—िष्यं, प्रेषणम् । चेषणम् । प्रेषिषत् प्राचम्, भ, १५, ७७ । प्रेषितः ।

प्रव्-कारा, प। पाभी च्याम्।

पुनः पुनः करणम्। जद् र्षाति। निक्र्रणीयात्। जक् ऐणात्। ऐणीः ताम्। निद् रयेषा नुद् एषिता। वार्त्तिकनारमते, एषिता, एष्टा। जुक् ऐषीत्। ऐषीः पुनर्जन्मज्ञयाय यस्तम्, भ १,१८। रक्कति ब्राह्मणैः सङ्ग्रान्तिष्यति सतां गतिम्। रणाति धर्मकार्येषु यः सदीवतिमीयते। कवि १६।

(章)

९—(९) भा, प। गतिः।

सर् प्रयति । सिट् प्यासकार, को ४५ । सुट् एता । सङ् ऐवीत्। ऐष्टाम् । एट्—एट्य: । एट्यति ।

र्-(वी) पदा, प्र। १ गतिः। २ र्फ्हा। ३ व्याप्तिः। ४ चेपणम्। ४ भीजनम्। ६ गर्भयद्यम्। सट्पति। ईतः। इयन्ति। लिङ् ईयात्। लिट् प्रयाञ्चकार, की ४४। लुट् एता।

इंज

ई—ईड्, दि, घा। गति:।
बार् ईयते। बिर् घया घक्ते, कौ १३५।
बार् एता। खार् एयते। बाड् एट।
बारीयमानं दिनादी. भा १, ४६। राजाबुद्यते चन्द्रो दिवोदय्ति भास्तरः।
बारेरिक्यां मोदीयन्ते च वि-

ईच्-भा, या। दर्शनम्।

दिषः॥ कवि २३।

पर्यानोचना। सट् ईचते। हिता-हितं प्रजानां यः प्रेचते, कवि २२४। तत्तदवपरिपूर्णमीचते, महाना 8, ३७। लिट् ईचाचले। लुट् ईचिता। स्टर् रेचियते। लुङ् ऐचिष्ट। ऐचि-षाताम। ऐजिबत। दैवदत्ताय ईचते (तस्य ग्रभाग्रभं पर्याकोचयति), पा १, ४, ३८। ऐचिष्ट गोष्ठान्, भ २, १४। ऐचिषडि मुद्दः सुप्ताम्, स ६, १४। मर देविचिषते। षिच् देचयति। ऐचिचत्। ईचमाणः। ईचितः। ईच-णम। अप-अपेचा। लामपेचते, कु ३, १८। पव-पवेचणम। परिटर्श-नम्। पानोचना। तेऽस्य कार्याप्यवे-चीरन, मनु: ७, ८१। उप-उपेचा। निर्-निरीचणम्। परि-परीचा। मया परोचितोऽसि, र २, ६२। प्र-प्रेचणम्। उत्-प्र-- उत्प्रेचणम्। सम्भा-वनम्। त्वि-दर्भनम्। सम-परिदर्भ-नम्। पालन्य परेषाञ्च यः समीच्य बलाबलम् । हितीप ।

र्धे इंट्-रंखि. (इख) स्वा, प। गति:। रंड्वित। रंड्वाञ्चकार। रंज्-रंज्ज्-रंजि, स्वा, पा। १ गति:। २ जुला। निन्दा। रंजते। रेजाचले । रेजिता। ऐजिष्ट । रेजिते, वी । रेड्-चदा, चा । म्तृतिः।

लट् रेहे। रेहाते। रेहते। रेहिये।
रेहिछो। रेहिछा। रेहिछान, पा ७, २,
१८। रहे लिपिष्टपस्ताने यदगुणायारणल्लां। स्वयं पुनकितो हवादिहीला
रेह्यत्विषा कवि १४८। लिट् रेहाखले। नृद् रेहिता। लट् रेहिछते।
नृङ् ऐहिष्ट। ऐहिषाताम्। एहिषत।
रेहिये काञ्चत्सम्, म ८, ५०। मन्
रेहिइयते। चु, पा स्तृतिः। रेह्यति।
ऐहिड्त्।

इन्त्-ईति, भ्वा, प। बी, बन्धनम्। ईन्तिति । ईन्ताखकार । (४) इन्यते । ईर्-धदा, घा । १ गति: ।

२ कम्पनम्। लट् ईर्ले। ईराते। ईरते। इत्तं यतकोतिरेन्द्रं प्रमनवदनं प्रेरय-त्यन्तरात्मा, यं धर्म प्रेरति योः, कवि १८। शक् ऐसं। पेराताम्। परतः। बिट् इराखंकी। सुद् इंदिना। सद् इंदि-षते। नुङ् ऐरिष्ट। ऐरियाताम्। ऐरि-यत। सन् ईरिर्वित। ईर, च, प। पे-रणम्। चेपचम्। रंरवति। रंरति। पेरिरत् ममुद्रम्, भ १५, ५२। एँख-माणो माता, भ १२, ६। देरणम्। देरितः। उद्-उतिः। उचारणम्। उत्चेपणम्। प्रकाशः। जयगब्दम्दो-रवासास:, र २, ८। प्रचामुदीरवा-मास, र ६, १८। प्रशीककुसमुदी-रविष्यति, र ६, ६२। न्याये छिनि भवटी-रचम्, जु २, १२। सिकाममुदी-रयन्, कु २, ६। उदोरितः। प्रभाद-चिता:। ऋषिणाभ्युदीरिता, मा १, १८। म- चिच् प्रेरचन्। यातायै प्रेरवामास् िगल्डमनः]

35 ·

24

तं यरत्, र ४, २४। सम्—विजेपणम्। व्यवनम्। समीरयाञ्चकाराय राजसस्य किषः यिकाम्, स १४,१११। रघुणा समोरितं वर्षः, र ३, ४३। समीरणः।

इंच-इंची- मा, प। इंची।

ष्रवान्तिः। त्रद् इंख्रीताः इंद्यीत देवदत्ताय इंख्रीत, पा १,४,३०। त्तर् इंख्रीचुकार। लुट् इंख्रिता। तर् इंख्रिया खात। लुङ् ऐखीत्। सन्। इंख्रिया पति। इंख्रियापति। पिच् इंख्रियति। ऐख्रियत्। ऐख्रियत्, की ८०। ईख्री।

र्म — घदा, था। १ ऐखर्थम्।

प्रभुता। र यथिष्टविनियोगः। लट् इष्टे। इंगाते । इंग्रते। इंग्रिखे। इंग्रिखे, पा ७,२,००। सिर्पंप इंग्रे यथेष्टं विनि-युङ्को, पा। धनानामोगते यचाः, भ ८, २०। विषयाणां निष्ये, भ १८,१५। यदोग्रिषे त्वं न सिंग्र स्थितेऽपि, भ ३,५३। इष्टे इरिणान् प्रहोतुम् (ग-क्रोति), र १८,१३। न तत् सांकुमोग्ने, र १८,३८। चिङ् ईग्रोत। चङ् ऐष्ट। जिट् ईग्राचको। जुट् ईग्रिता। जुङ् ऐशिष्ट। ऐश्रिपाताम्। ऐशिषत।

र्ष्य्-भ्वा, प। उब्बहितः।

र्ष्य, भ्वा, घा। १ गतिः। २ हिंगा। ३ दर्मनम्। ४ दानम्, बो। दंषति। •ते। यः सदोन्नतिमीपते, कवि ३६। दंषाचकार। दंषाचको। ऐषीत्। ऐ-विष्ठ। दंषा, मनीषा, मनीषणः। प्रेषः।

इंह्-भा, याः। चेष्टा।

देश। इच्छा। सद्देशते। सिट्देश-स्रक्ते। सुट्देशिता। स्टट्देशियते। सुङ् ऐहिष्ट। ऐहिषाताम्। ऐहिषत। इन्तुमीहास्रकाते तो प्रस्मरम्, भ.४, १०६। ऐडिष्ट तं कार्यितं क्रतम् भ
.१,११। मन् इंजिडियते। पिच् ईडयति। ऐजिडत्, सुयोवमैजिडत्, भ
१४, ४१। ईडा। खार्यं समोइते।
(अनुसन्यते) मा २।६५।

·(a)·

ड—डङ्, स्वां, प्रां। प्रब्ह:।

अवते। जवे। योता। योष्यते। भीष्ट्रां सन् जिपयते। यिच् यावयति।

डच्—्या, प। सेचनम्।

पार्शिकरणम्। वर्षणम्। लट् उचित ।
पीचन् प्रोणितमभोदाः, भ १७, ८।
लिट् उचाचकार्। उचाम्प्रचक्र्नगरस्य
मार्गान्, भ ३, ५। लुट् उचिता। लुट्
उचियति। लुङ् प्रोचीत्। प्रभि—
पभ्युचणम्। प्रभ्युचा। प्रभ्युचितः।
प्र—प्रोचणम्। प्रोचितं भचयेनांसम्,
मनुः ४, २७।

ष्रज्—डङ्—डिख (देख) भ्वा, प।

गति:। पोखति। उनोख। प्रोखिता। पोखीत्। उङ्गति। उङ्गाञ्चकार। उ-क्विता। पोङ्गीत्। पोचिखियति। उ-पधाकार्थः दिलात् प्रवस्तामित गुणे कते दिवेचनमिति प्रदोप:। उखा।

डच्-दि, प। समवाय:।

सङ्गमः। मित्रणम्, बो। उच्चति। उबोच। जवतुः। ग्रोचिता। ग्रीचत्। माभवानुचत्। पुषादिः। उचितम्।

ं डब् — उच्छी, भ्या, प्राप्ति विवासः। कै समाप्तिः। २ निवासः, बी। ३ विपाण इति प्रदीपः। प्रायेणायं विपूर्वः। लट् व्युच्छति। सन् व्यक्षिच्छिषति। (ई) 64

ष्यष्टम्। उद्यो, तु, प। समाप्तिः। बन्धनम्। त्यागः, वा। उच्छति।

। डन्म्-डद्भः, तु, प। त्यागः।

सर्वद विगतनिद्रस्तस्यमुज्याचनार। सर्वद विगतनिद्रस्तस्यमुज्याचनार। र ५१७५। सुङ् योज्योत्, प्राणानी ज्योत्, भ१५, ८४। उज्भतः।

ं उच्छ्—उक्ति, भ्वा, तु, प।

उक्दः। सण्यं घादानम्। कणिया-द्यर्जनम्। यिसम्, भूमौ पतितानाम-कैकस्योपादानम्। सट् उक्दित। सिट् उक्दाचनार। सट् उक्दित। सन् उद्घिक्तिकार। सिच् उक्दिता। एक्ट्रन्ती। तुदादेस्तु, उक्द्रन्ती, उ-क्दती। प्र—मार्जनम्। प्रोव्ह्यन्ति प्रसुरे-येषामसेन दोनतां प्रजाः, कवि १६२। उक्दिप्टमच्यवदुक्टिप्टपोक्ट्रने दित वि-विक्तः।

्र चठ्—जरु, भ्वा, प । चपचातः । चट् । षोठति । चिट् चवोठ । चुट्

षोठिता। जर्ठाता जठाचनार। जठिता। उभ्रस् (भ्रस्) क्राा, चु, प । उच्छद्वत्तिः । उभ्रसाबः

कार। उन्नासयित।

उन्द्—उन्दी, त्, प। क्षेदनम्।

पार्टीभावः। बट् उनितः। उन्तः। उन्दन्ति। बिड् उन्दात्। बड् योनत्। प्रोन्ताम्। प्रोन्दन्। प्रोनदम्। बिट् उन्दाचनाराः बुट् उन्दिता। बृट् उ-"न्दिष्यति। बुड् प्रोन्दीत्। प्रोन्दिष्टाम्। प्रोन्दिषुः। धन् उन्दिदिषति। पिच् उन्दयति। प्रोन्दिद्त्। (ई) उन्नम्। उन्दयति। प्रोन्दिद्त्। (ई) उन्नम्। डभ्—डभ्—डन्म त, प।
पूर्वम्। सट्डभति। निट्डबोम।
जभतः। सुट्घोभिता। नुड्घोभीत्।
डभाता। डभाखकार। डभिता।
योभीत्, तमोभीत्रोक्तः यिनीसुषेः, म

छद्ज्—तु, प। घाजवम्।
सार्व्यम्। छट् छद्कति। निट्
छद्जाकार। सुट् छद्किता। नृट्
छद्जिष्यति। सुड् घोव्कीत्। सन्
छद्जिष्यति। णिच् छद्कयित। चोद्किः

डद्°—भ्या, चा। १ मानम्।

जत्। नि—कोटिखम्। न्युब्जः।

परिमाणम्। २ कोडा । १ काकादः, वो। सट् कर्दते, पा ८, २, ७८ । सिट् कर्दाचके । सुट् कर्दिता । सृट् कर्द-यते । सुङ् चौर्दिष्ट । चौर्दियाताम् । चौर्दियत । सन् कर्दिद्यते । पिन् कर्द्यति । चौर्दिद्या ।

ुर्व् — उर्वी, भ्या, प। धननम्। जर्वात । जर्वाचकार (४) जर्वम्। जः।

छष्—उष्ठ, तो। भा, प।
१ दाइ: । २ इननम्, ते। सट्योपति। सिट् घोषाचकार। उत्योष, पा
१, १, ३८। घोषाचकारः। जयतः।
उत्योषय। घोषाचकार कामाम्निदंयवक्तमङ्गियम् भ ६, १। सुट् घोषिता। सुट् घोषिचाति। सुङ् घोषीत्।
घोषिष्टाम्। घोषिषः। सन् घोषिषषति। चिच् घोषयति। (३) घोषिता,
उष्टा, ते। घोषः। जसा, वक्षस्ववचनाइ

, जर्-डिंडर्, आ, प । वध: । पर्दनम्, बी । पोस्ति । उदीह । पोस्ति । (इर्) पोस्त् । प्रोधीत् ।

दीर्घः।

(ज)

जर्—(इर)। जन-नु, प। चदनाः। परिश्वामम्। जनय्ति। पौननत्। जनितः। जय्—जबी, भ्वा, पा।••

. तन्तुमन्तानः । सोवनम् । लट् छयते । भाजित्वाणि वस्ताणि व्यूयन्ते यस्य कोत्कात्, कवि २१३। जिट् छया-सक्ते । लुट् क्यिता । लृट् क्यिप्यते । लुङ् सोयिष्ट । सन् क्यिप्यते । (ई) जतम ।

जर्ज — चु. प । १वलम् । २प्राणनम् । जर्जविति । पौजितत् । जर्जितम् । जर्ज — जर्ज्ज, घटा, उ ।

पाष्टादनम्। सद् जगीति। जगी-ति, पा ७, ३, ८०। जग्वते। निड् जन्यात्। जनुवीत। नाङ् प्रीमीत्, पा 0, ३, ८१। भीगुता जिट् जर्म नाव। जा निविय, जण निविय, •पा १, २, ३। जर्षानुवे। नुट् जर्गावता, जन्विता। लट् जनविष्विता ०ते। जगुँवियति। ॰तं। प्राणिपि, जगूँ-यान्। जर्णविषीष्ट. जर्णविषीष्ट। ल्ड् जीवंबीत्। श्रीयांबीत्. पा ७, २, ६। योण बात्। योगावद्याम्। योगा-विष्टाम्। चौचुविष्टाम्। चौचीवष्ट। भोण्बिष्ट । सन् जण्जूषति । •ते, पा e. २, ८८। जापुनिषयति। ०ते। जापे-गुविवति। ०ते। यङ् उचिन्यते। जः पानियाति। अपनिति। पिन् जगी-वयति। योणुं नुवत्। जनुं नाव शकाघे रना जनीत, भ १४, १०३। हडी मुँद्वा-मान्। बाबाभी बलोव। इ. सर्, ४०। ग-बाब्दादनम्। दंदः प्रीणीविषु- भुवम्। दिग्रः पोर्णविष्: भ ८, १०।

• श्रव्रुन् शरवर्षेण प्रोर्णाजीत्, भ १४,

११८। प्रोर्णवन्तं दिश्रां वाणेः, भ ५,

५६। प्रोर्णात श्रोक्षिनं मे, भ १८,

२८। प्रस्तीवेः प्रोर्णुनूयते विद्विषः। भ
१७, ७५।

जब्-स्ता, प। रोगः। जबति। जबाद्यकारः। श्रीपोत्। जपः रम्।

जह्—भ्वा, था। वितर्भः।

प्रधाहार:। मन्भावनम्। लट् जहते। लिट् जहाबको, जहाबको जयं न च, भ १४, ७२। लुट् जांहता। लुट् ज-हिचते। प्राणिष, जिंदपीष्ट। लुङ् चौडिष्ट। चौडिषाताम्। चाडिषत्। बोडिष्ट तान् वीतविवस्त्रद्वान्, भ ३, ४८। सन् काजिडियते। चिच् कड-यति। श्रीजिइत्। तावाजिहतां जनम्. भ २, ४१। जिंहित:। जहनम्। ज-द्यम्। यप-प्रपनादेनम्। उपस्रान-दास्तनिपदं विति वक्तव्यम्, की २४०। चवीहहा गवर्षे तद्भन्ने:, भ १६, ८३। तानपोद्दोत्, भ १४, ११६। एते ब्रितेर-वाहित वाप स्तयक्षतं दिन:, मनु: ११, १०३, १०८। उत्सवसपीहर्वावः, र १८, थ। जाप-विनाशः। बाहित्वस्तमी चयोत्रति, भारत। ब्रह्महत्यां व्यया-इति, सनु: ११, ८१। प्रति—विधात: । प्रख्वेद्रशांनायु नियाः, मनुः ४, ४८ १ प्रतियादस से प्रत्युत्ता, भे ६, १०१। वि-रचना। विन्तासः। यतान् व्यूहेन व्युद्धा योधर्यत्, सनुः ७, १८१ । व्यूदम् । सम् बमुद्धते। समृद्ध गतः, पा ७, ४, २३। षागिष, ब्रह्मसम्बाग्। यभि समु-चात्। मस्दः। सस्दः।

(程)

ऋ—भ्वा, प। १गितः। २प्रापणम्।

लट् ऋच्छति। तस्च्छिन्त मस्पदः, "भ १८, ५। चच्डालपुकसानाच ब्रह्महा योनियच्छिति। सनुः १२, ५५। लङ् षाच्छत्, पा ७, ३, ७८। सिट् बार। चारतुः, पा ६, ४, १११ चारिय, पा ७, २, ६६। तुट् मत्ती। लट् चरि-ष्यति, पा ७, २, ७०। पाणिषि, च-र्यात्. पा ७, ४. २८। लुङ् प्रापीत्। पाष्टोंम्, को ८०। सन् प्ररिदिष्ति, पा ७, २, ७४। यङ् चरार्विते, पा ७, 8, २०। भरति। अरियात्तं। अर-रीति। परियरीति। यक्तः। परि-यृत:। वने किमरार्थ्यमे, स ४, २१। णिच् चर्पयति, पा ७, ३, ३६। पपथे पदमपंथन्ति, र ६, ७५। पापियत्। तां नापिंवः, भ १५, १६। प्रचितः, भ ८, ११८। ऋतः। यातः। यनु—यनु-सस्णम्। सम्—ग्रा। सम्च्हते, वा १,

ऋ—हा, प। गति:।

२, २८। मा सस्ता मा सस्वाताम्।

लट् इयत्ति । इयतः । इयुति । यस्य कोत्तिरियत्ति द्याम्, कवि ४५। पर-निप् इवराणि। खिङ् इयृवात्। लङ् ऐय:। ऐयृताम्। ऐयतः। सिट् आर चारतुः चारिय लुङ् चारत्, पा ३, १, प्रहा सीतां जिघां स्तावारताम्, स ६,२८। समारन्त समाभीष्टाः, स ८,१६। मा समरत। मा समरताम्। मा समरन्त।

ऋच्-तु प। स्तृतिः। 🖊 ऋचिति। भानचे। भाचीत्। ऋक्।

ऋच्छ्-तु. प। १ गति:। २ इन्द्रियमलयः। ३ मृत्तिः। ४ काठि-न्यम्। ५ भावः। सट्ऋच्छति। सङ्

घाच्छेत्। निट्घानच्छे। धानच्छेतः, पा ७, ४, ११। लुट मर्बाका। मुक प्राच्छीत्। सन् परिविच्छित्। विव मरच्छ्यति। परच्छ, भ्रा। पच्छतीति वेचित्। सम्-भा। सस्वातं, पा 9, 9; ₹€ 1 बरज्—भ्या, या। १ गतिः। २ स्थितिः।

३ यजनम् । ४ जनम् । मट् यजना बिट् षानृत्रो सुट् पर्तिता। स्टर् पर्तियते। जुङ् पाजिष्ट। पाजिषा-ताम्। पाजिपत्। सन् पान्निजयते। णिच् यज्ञवति ।

पर्या-पर्धान, भ्या, था। भननम्। पाकविशेष:। सट् ऋष्यते। सिट् प्रदाधको (पान्छो)। लुद् पर्धानता। मृङ् भाष्ट्र । सन् ऋषितियते । विच्

ऋषावति। त्रहण्- प्रत्या, सना, छ । मति:।

षपाति। प्रणते। परणाति। परणते, को १६९। ऋणाति धरणी लक्षाम् वावि ४५। चिट् पानण । पान्धे। लुट् घणिता। लुट् घणि घति। •ते। नुङ याणीत्। धाणिष्टाम्। धाणिष्ट। पात्ते। पाणि हाः। पार्थाः। सन पणि-निषति। •ते। (उ) ऋत्वा, षणित्वा। ऋतम्। ऋणम्।

चरत्—भ्वा, प। मीवधातुः।

१ जुगुमा छ्या २ कवा। सट करती-यते, पा ३, १, २८। मिट ऋतायाञ्चले। ईयङभावपचे, शामन । शान्ततः । जुट् षत्तिनामि । ऋतीयितामे । नृद् पतिः ष्ति। ऋतीविषते। नृङ् पानीत्। षात्तीयिष्ट। ऋतित्वा, षतित्वा।

न्द्ध् न्द्रधु. दि, खा, प। इडि:। लट् ऋध्वति। ऋषाति, ऋषोति थीः

सदा यस्य ऋधाति सौस भूतली, कवि २४६। निट् चानर्द। चान्रधतुः। नुर् पर्वता। नृट् पर्विष्यति। नुङ् षावत्। साः पार्वत्। पार्विष्टाम्। सन् चर्दिधिषति, पा ७, २, ४८। इंसति. पा ७, ४, ४५। प्रदिधिष्यंगः जीति-मीत् सं विचेरताइयत् स ८, ३२ । पिन् पर्देशति प्रादिधत्। (उ) पहिला, ऋहा ७ऋहः। ऋहिः। सम्—सर्खहः। तपोवनं मस्द्रशासम्, भ २, २४।

चर्ष-चरम्फ,-"िम्फ्"-त. प। ज्ञिंसा। लट् ऋकति । जिट् घानर्फ लुट अर्फिता। लुङ् आर्फीत् लट् ऋम्फति। ऋम्फाञ्चकार। ऋम्फिता। विम्पति।

ऋव्-ऋषो, तु, प। गति:। बरवित । चानवं । चान्वतः । चर्षि-ता। अधियति। आपीत्। अपिता। (ई) ऋष्टः। ऋषिः।

ऋ - क्रा, प। गृति:।

नट ऋगाति, यस को विक्रंगाति फणिनां पुरम्, कवि ४५। जिङ् ऋणी-यात्। लङ् धार्णात्। लिट् घराञ्च-कार। लुट् प्ररिता, घरीता। ऌट् परिष्ति, परीष्ति। लुङ् प्रारीत्। चारिष्टाम्। त्र, इंगं:। उदीर्गः।

(U)

एज् एजृ, भ्वा, ए। बस्पनम्। भ्यः, आरादोक्षिः। लट् एजति। ०ते। ए तते राजि इडिये: एजयत्य सिलं जगत्। कवि २६८। लङ् ऐजत्। ०तः लिट् एजाञ्चकार। एज जन्ने। लुट्र एजिता। लुङ् ऐजीत्। ऐजिष्ट । सन् एंजजिपति । ेती चिच् एजयति। ऐजिजत्। घोणति। ग्रोणाञ्चकार। ग्राणिता।

प-प्रेजते, पा ६, १, ८४। जनमेजयः। प्रदुष्मेजयः।

एठ्-स्वा, या। विदाधा। श्रात्मा पठते। पठाचक्री। पठिता। ऐर्छिए। सन् एटिडियते। गिच् एठयति। ऐटि-उत्।

एध्-भ्वा, था। हिहः।

चट् एधते, एधते या वियाधिकम. कवि २६८। अधूमें ग्रेधते, मनुः ४. १ 9 ४। निट् एध। चन्ने। नुट् एधिता। लट् एधियते। लुङ् ऐधिष्ट । ऐधिया-ताम्। ऐधियत। सन् एदिधियते। गिच् एधयति । ऐदिधत् । विं नैदिधः खपराक्रमम्, भ १४, १८। सा भवा-निदिधत्, पदीपः। बागीभिरधयामास्-रिबनाम्, कु ६,,८०। क्रजानुः समिधि-तस्त शेयेभू तै:, स १२, २०। प्र-प्रेवते। उपैधते, पा ६, १, ८८।

एष्-एषु, खा. था। गति:। एवते। एवा खन्ने। र्षिता। ऐविष्ट। यन्वेषते। यध्येषते।

(भ्रो)

श्रीख्—श्रीख़, भ्वा, प। १ श्रीषणम्।

सेहरहितीभावः। २ अलमर्थः। भूष-गम्। ३ सामर्थ्यम्। ४ निवारणम्। सट् योखित। सिट् योखाञ्चकार। तुट् बोबिता। जुङ् बीबीत्। सन् शो चिक्विपति। गिच् श्रीक्षयति । श्रीचि-खत्। सा अवानोचिखत्। ग्र—प्रोखति

भोज-चु, प। वी । भटन्तः। १ बनम्। २ तेजः। दो जयति। षाण्-प्रोण्, स्वा प । प्रवनयनम् । कज्

20 1

धोणीत्। श्रोण्यति। श्रीण्णत्। मा भवानोण्णित्। स्निष्धवादा। श्रोतञ्ज्—श्रोलित, भ्या, प।वो। सत्तेष:। श्रीलञ्जति। श्रोत्त्रतीत्यन्ये। श्रोलण्ड्—श्रोलिड. श्रु, प। उत्तेष:। श्रोलण्ड्यति। श्रोलण्डति। श्रीसण्ड-यति। खण्डति दस्तेके।

(有)

क्रव्यक्षाः शाश्योखम्। चञ्चलोभावः। २ गर्वः। इच्छाः, वो। सट्ककते। सिट्चकके। सुट्ककिता। सुङ्धकिष्टः। काक्ष्यति। काकः।

कक् — जक्त्. भ्या, प। वो। इमनम्। कक्ति। कक्ति। कख्—कश्चे, भ्या, प। इसनम्। कख्ति। चक्षाकः। चकक्तः।

क्विता। (ए) प्रक्रकीत् पा २,२,५। चिच् क्वियति। घटादिः।

काग्-दागे, भा, प।

समनादयी बहवीऽर्घीः। नानार्घीऽ यम्। कगति। चकाग। चकागृः। कगिता। (ए) खकागीत्। णिच् कग-यति। घटादिः।

बङ्—किकि, भा, या। गितः। बङ्कित। चकङ्के। किङ्कता। यकिङ्कर। किंग्—भा, या। १ वस्थनम्।

२ दीप्तः, बो। लट्कचते। लिट् र्वकचे। लुट्कचिता। लुङ्चकचिष्ट। षा—त्वज्ञमाचकचे, भ१४, ८४। कच्, भा, प, दो। यब्दः। कचित्। कचः। विकचः। काचः। कल्—भा, ष। सदः। कजति। कजसदै इति कखित्।

कच्—काच, कवि. काचि, भाषा। र दीतिः। २ वनानम्। किचते। च

कची। कचिता। काचती। चवाचे। काची। काचनम्।

कट्—कटी (इट) थ्वा, छ। मति:। कटे, भ्वा. छ। १ वर्धकम्। २ धाव-

रणम्। कटति। चकाट। चनैदतः। कटिता। चकटीत्, चकाटीत्। (ए)

चकटोत्, पा ७, २, ५,। प्र-चिर्, व्यक्तिः। प्रकटयति। घवटिनः। प्रक

टनम्। (ई) (जहः)। कटि, कण्टनि इति कथित्। कण्टकः। कट्, चवाटीत्.

वो । घटः । कटकम् । कटो । कट्—भूा, प । फ़फ्कीवनम् । कटति । चकाठ । कटिता । चकटोत्,

कडति। चकाउँ। कडिता। चकडात् चकाडोत्। कडितः। कडिनम्।

कड्-भा. तु. प। १ मदः। सन्नीभावः। २ भड्यम्, यो। अडित।

चकारा कडिता। चकडीत्। चकः डीत्।

कडड-कद्द, भा, पा कर्क भीभावः। कडडिता चकडडे। कडिडता। किय् कत्। कजनः।

कण्-(वण) भा, प। शब्दः।

षात्तनादः, थी। कष्भा, घागतः। लट्कणतः। लिट्चजाणः। चकणतः। लट्कणितः। लट्जिज्ञानः।

नुर्काणता। खड्काणचाता पुर चक्रणीत्, चकाचीत्। सन् विकास पति। गिन्काणपति। मनी कणपति

घटादिः। आण, तु. या निसीवनम्

क्राणयति। घचीकषत्। धघकाषत् की १००। जण, (जूण) यु. घा। सङ्घाचः

कारणयते। कणः। कणिका।

कण्यः—(कट)। कण्डः—कठि, भा, था।

शोकः। धाध्यानम्। उत्सर्ग्हाः न्द् न्नाष्ट्रते। निट्। चन्ये के नृद् काष्ट्रता। न्नाट् काण्ड्रयते। मुङ्ग ध्रकाण्ड्रटः। निट, श्रु. प। श्रोकः। काण्ड्यति। न्नाष्ट्रति। न्नाष्ट्रयान्, स ४, ७२। उत्नाष्ट्र-यान्ति पध्यान् चनदाः सनन्तः, घट-नाप्यः। उत्नाष्ट्रतः। नेतमीतक्तन्ते चेतः समुन्याद्वते। नोत्वाप्ट्रते पर-दुःखे नोत्वाद्यते परास्त्रयम्। यस्रोत्-काष्ट्रयति साध्ये धर्म एव सनः सदा॥ न्नावि ८८।

कण् कड़ि (कड़) स्वा, प।
कडि, स्वा, पा। मदः। इपः। क गडित। ॰ते। चकण्ड। ॰ गडे। कण्डि॰ ता। पकण्डीत्। पकण्डिट। कडि, तु. प। भेदनम्। बितुमोकरणम्। २ दनणम्, वो। जग्डयत्। स्वग्डा मु-णलेन गानय दव त्वत्नी स्वयः । कण्डि॰ ताः, सदाना १,६०। कण्डिनी। ॰

कत्र—कत्री—कर्त्त, प्राप्य दन्ताः। जीविष्यम्। कत्रयति। कर्त्रयति। कर्त्तयति।

कळ्—कळ्—भ्या, था। आघा।
प्रमंता। लट् कळते। यः खप्रेनापि नालीयं गुणं कुवापि कळते।
कळ्यळादिराजानां चिरतानि सहः
स्वाः॥ कवि २२७। निट् चकळे।
लुट् कळ्यिता। ल्डट् कळ्ळियते। कळा कळ्ळियते न कः, भ१६,४। लुङ् अकळ्ळिट। वि—विकळतन्। आघा।
विकळी। कळा

> कथ—चु,प। प्रदन्तः। कथनम्। वर्णनम्। कथयति। स्वय-

याचिकिरे गुणान्। भारत। यचकयत्। गाकटायनमते कयापयति। कययि-त्वा। •कयय्य, पा ६, ४, ५६। क-यितः। स्त! अकियिनोऽपि । ज्ञायत प्वायमाभोगस्त्रपीवनस्य, शकु १, ५६। कया। कयनम्। कयकः। समृवर्णना। मिथोभाषणम्।

कन्-कनी, खा, पा १ दीहि: ।

र कान्ति:। रंगिति:। लट् कनिता। लिट् चकान। चर्जानतः। लुट् कनिता। ल्टट् कानिष्यति। लुड् प्रकनीत्, प्रकानीत्। (ई) कान्तः, पा६, ४,१५। कनकम्।

कम्य-(कत्य)।

कन्द्—किंदि, आ, प। १ पाष्ट्रानम्। २ रोदनम्। जुट्कन्दित्। जिट्चकान्द्र। जुट्कन्दिता। जुङ्चकन्दीत्। कन्दः। कन्दरः। कन्दरा। कन्दलः। कन्दनी।

कन्द्-बदु-कदि, खा, था।

१ वैक्सव्यम्। विवयता। २ वैकस्यम्। बन्दते। चकन्दे। कन्दिता। बदते। चकदे। कदिता। यिच् कदयति। घ-टादिः।

• वान् — कह, भ्वा, ग्रा। १ वर्षः।

श्रुक्तादिकरणम्। र स्तुति:। कवते। चकवे वो।

वाम्-वामु, भ्वा, था। १ कान्ति:।

र श्रीमनायः। इच्छा। स्प्रहा। नट् कामयते, पा ३, १, ३, । श्रथनयं का मयेत का, भ ८, ८१। निट् कामया-खक्षे, चक्षमे। निष्कुष्टुमधं चक्षमे कुषै रात्, र ५, २६। कामयाञ्चकिते का-न्ताः, भ १४, ५३। नुट् कामयिताः, कमिता। नुट् कामयिष्यते, कमियते। । वाद

ङ् प्रचीतमत्, प्रचतमत । णिङ्
ावपचे न टीवंसन्बद्धाचे । सन् चिः
समियपते, चिकसियते । यङ् चङ्कः
यते । चङ्कत्ति । णिच् कामयति । (उ)
हमिला, कान्ला, कामयिला, कान्तः ।
हमः । कामुकः । कामी । कमिता ।

कम्प्—किष्, भ्वा, बा। चलनम्। कम्पनम्। लर्ट् कम्पते। लिट् चकम्पे, चकस्ये प्राग्च्योतिषेखरः, र ४, ८। लुट् कम्पिता। लृट् कम्पिषते। लुङ् यकस्पिष्ट। यकस्पिषाताम्। यकस्पि-वत। भूरकस्पिष्ट, भ १५,७०। सन् चिकम्पिषते। यङ् चङ्गम्पाते। चङ्ग-म्प्ति। णिच् — कम्पर्यात। अचकम्पत् कस्य:। कस्पित:। कस्पनम्। कस्प:। कस्पनः। यनु चनुकस्पा। सपा। धनुचकस्पिरे सुरा वायुना, सा १, ६१। रतिमन्वकम्पयत्। कु शह्ट। समनु श्रनुग्रहः। समनुक्तम्या सपत्रपरिग्रहान्, र ८, १८। उद्-प्रकस्य नम्। उत्क-म्पते सा. गीतगी, ४, १८। प्र-प्राच-कम्पदुदन्वत्तम्, भ १५, २३। वि— प्रकस्पनम्। रावणात्रयमपि व्यकस्प-यत्, र ११, १८। उपतापाङ्गविका-रयोः, विकपितः। अन्यत्र विकस्पितः (

कस्ब — भा, प। १ हिंसा। २ गति:, वो। कस्बति। खस्ब, खस्ब-ति। गस्ब, गस्बति। घस्ब, घस्बति। खस्ब, चस्बृति।

कर्ज्नभा, प। १ व्ययनम्।
२ पोडनम्, वो। कर्जात। चकर्ज।
२ कर्ण-(किंद्र) पदन्तः। चु, प।
भेदनम्। कर्णयति। घा-यवणम्।
घाकर्णयामाम् न विद्नादान्। भ ३।

कर्त — कर्त (कर्त)। घटनाः।
कर्द्र — भूग, प। कुक्तितग्रदः।
कुत्सितकु चिग्रदः। कर्दति। कर्दभः।
कर्व — भूग, प। गितः।
कर्वति। खर्व, खर्वति। गर्थ,
गर्वति। घर्व, घर्वति। चर्व, धर्वति।

कल्-भा, पा। १ गव्दः।
२ संख्यानम्। गणना। जट्कलते।
लिट् चकले। लुट् कलिता। लुड् पन्
कलिष्ट। कल, चु, प। चेपणम्। पेरणम्। कालस्रति। बालस्याय या गावः
कालग्रासास ता घि, सारत। निष्कलन्ते सुखाद् यस्य नाश्चीलपन्ता गिरः।
उत्कालग्रति यो यगः, कवि २०।

क्त-चु, प। पदन्तः। १ गति:। २ संख्यानम्। गणना। कालि: कामघेतु:। कनयति। भावकः लत्। विडगाः वासयन्यनेवासयम्, सा ४. २६। कलयेदमानमनमन्, मा ८, प्र'ट। सन्धार्मि समिभूषणे वर्तृषः चम्, नीतगो ७, ७। गरनमिव नानः यति सल्यसमीरम, गीतगी ४, ३। यदैनां काया दितीयां कलया बनार, नै ३, १२। स्त्रेक्कृनिवर्शनधने कन यसि सरवानम्, गीतगो १, १४। ज-बंध बन्नययेणी पाणी, गीतगी १२, २६। सरकत-प्रकल-कलित-कलधीत-सिपे:, गीतमो ८, ४। मधुपज्जनकिः तरावः, गीतगो ११, १८। पा-धीधः। वस्तम्। जिन्नमस्यया छट्यं तथा-कालयामि, गीतगी १, ७। सुवर्णस्त्राः क्रिताधराम्यराम्, सा १, ६। जघनः स्वतीपरिसरे रसना कलापकगुणेन सकर-घजिंदरमान्त्रवत्, मा ८, ४५।

परि-द्वानम्। स्त्रीकोकः परिक्षस्यादः

कार तुलाम, माट, १। सम्-सङ्घ- विश्वत्। लट्बंस्ते। बंसते। बंसते। सन्ते। सन्ते। सन्ते। सन्ते। सन्ते। सन्ते। सन्ते। सन्ते। सन्ते।

कत्-भा, था। १ अव्यक्तग्रव्हः।

२ अगन्दः। तृष्योक्यावः। ३ कृजनम्, वा। कस्ति। चकन्ने। किस्ता। कस्नोतः। अयु-(क्य)।

. कार्य — स्वा, पागवै:। कार्य कार्य, स्वर्गता गर्वे, गर्वेता कार्य — स्वा, पाश्च्यः। कार्याता चकाया कार्यता।

कप्-स्वा, प। हिंसा।

नापति। चनाप। निपता। प्रकल्पोत्, ध्रमापीत्। समूननापं चन्तुः, स्व ३, ६८। (परीचा) क्टहेम नपः विव वापापाणिमे नभस्तने, नै २, ६८। ख्रम्, स्वपति। जप्, जपति। जेषतुः। सर्वेद्वयः। नापः। निक्षयः। जष्म्। पत्कापी।

वास् भ्रा, प। गतिः।

लट् सस्ति। लिट् चैकासं। •चकमतः। लुट् कसिता। लुड् प्रकसीत्,
प्रवासीत्। सन् चिकसिषेति। यड्
वनीकस्यतं, पा ७, ४, ८४। चनीसितः। विच् कासर्यातः। पचीकसत्।
मिनः। वि—विकासः। यस्य लच्चीवैकस्ति प्रजाधर्मण रिजतः, कवि
देश विकसितात्पनाः, स, ८, ६२। प्रविकाशः। प्रविकसितात्पनाः, सा ११, ६३।
स्कामी। विवस्तः। क्यतोत्येक।
स्कान्यः। विकशितम्। विर्णिच्
पःसारणम्। निरकासयद्विस्पत्वसम्।
। ८, १०।

वंस्—,कम्—कण्, भदा, भा। । वि—विकाशः। विकाशन्ते च ९ गतिः। २ गासनम्। प्रातनसिति । गुपाः, कवि २३२ । प्राकाशम्।

विधित्। सर्वास्ते। संसाते। संसते। तिट् चमंते। सृट् संसिष्यते। सुङ् प्रवासिष्ट। प्रवासिषताम्। प्रवासिषता। कस्ते। चम्ते। कसिता। तानव्या-न्ताऽपि। कष्टे। कचि। कड्ट्वे। चमग्रे। कशिष्यते। बांस्यम्।

वाह्य-वाचि, खा, प्र वाकाङ्गा।

लट्काङ्गित। मृथुव्रतः काङ्गित।
विद्योम्। सा, द। लिट् चंकाङ्ग। लुट्
काङ्गिता। लुङ् भकाङ्गोत्। सन् चिकाङ्गिपति। यङ् चाकाङ्ग्रते। चाकांष्टि। णिच्काङ्ग्यति। अचकाङ्गत्।
भा—भाकाङ्गा। प्रत्याश्वसन्तं रिपुमाचकाङ्ग, र ७, ४७। नाकाङ्गित परखियम्, कवि १४४।

काञ्-(कञ्च)।

काण्-काण्, भा दि, चा।

दीप्ति:। प्रकाम:। कामते। काम्यते। भादो। दन्यान्तोऽपि। नासते। निट् चकाशे। कासाञ्चले पा २, १, ३५। कासाञ्चक्रो। पुरा साथे:, भ ८,३८। लुट् काशिता। लृट्काणियते। लुङ् घकाशिष्ट। घकाशिषाताम्। चका-शिष्त। अकाशिरेतव खता विलोलाः, भ र, २५। तया दुन्तिवा सविवी चका भी, कु, १, २४। र ७, २१, २४। सन् चिकाशिषते। यङ् चाकाश्यते। चाकाष्टि। णिच् कामयति। अचका-यत्। प्र—प्रकामः। प्रकामते यथा व्योखि चन्द्रः, प्रकास्त्रते न्तया भूभी प्रजानां नयनोत्सवः, कवि १५३। विखासिवायम एष प्रकाशते, भारत। प्रकाशयान्त निगूहनीयम्, भ १४, ३१। प्रकामयांत लोकं र्वि:, गीता १२, ३३। वि—विकाश:। विकाशन्ते च भूयांशी

काम्-काछ, भूा, या।

नीट

कुल्लितगच्दः। गोभार्यस्तु उत्तः। नट् कासते। निर्दे कामाञ्चले, पा ३, १, ३५। लट् कामिता। नृट् कामिच्यते। मुङ् चकामिष्ट। भ्रमीतो रावणः कामा-जुले (कुल्लितमभिहितवान्), भ,५, १०५१ सन् विकासिपते। यङ् चाका-स्यते। चाकास्ति। णिच् कास्यति। (ऋ) भ्रचकासन् कासः।

किट्—भा, पा१ वासः। २ भीषणम्, वो। किट् (इट्) भा, प। गतिः। केटति। केटिता।

कित्-भा, प, जा, जाभरणमति।

१ व्याधिप्रतिकारः । रोगनिर्णयः । र नियहः । ३ प्रपन्यनम् । ४ नाप्रनम् । ५ संभयः, की १०१ । चट् चिकित्वति । ०ते । रोगिगम्, पा २, १, ५ । चिकित्-स्रति जगद्दगाधिम्, किव २५० । चिट् चिकित्सा चकार । चुट् चिकित्सता । लुङ् प्रचिकत्सोत् । चिकित्सकः । चि-क्तित्सितः । मया न पिठता चण्डी त्वया नापि चिकित्सितम् । वि—संग्रयः । विचिकित्सा तु संग्रय द्व्यमरः ।

कित्भा, जुप।

१ निवासः ।२ इच्छा, वो ।कैतिति । कैतयति । निकेतयति । निकेतनम् ।

ू किल्—तु, प । ऋऐत्यम् ।

ग्रुक्कोभावः । २ क्रोडनम् । किलति । किलन्ति वाश्वकाः कामम्, कवि २३३ । २ चिकेल । केलिता । किल, चु, प, वो । चेपणम् । प्रेरणम् । केलयित । केलिः । किष्क्—चु, ज्ञा । इंसा ।

> किष्क्रयते । इिष्क् इिष्क्रयते । इिक्कयते । कोट्—चु, प्रवर्षः । भूग, बस्थः वो ।

कोल्-भा, या वस्त्रम्। कीस्ति । विकाला कोलिता। कीता। कीलका। कोलितम् प्रदर्ध सम शरकीलितम् (विवस्), गीतगो ७, ४, १२, १४।

कु—कुङ् (जङ्) भुा, चा।

गवः। पञ्चनगद् दति पदीतः। कु, पदा, प। शब्दः। लट् कपर्त। काति। कवीति, घणिमनि:। माजाज कौति कुवते न भय। च कचिद् यन्त्र-ग्छले जनपदः कावते च खलम्, जावि २ । जुतः। जुर्बाला निङ् जुगात्। लङ् प्रकीत्। सिट् युकाव। युक्तवतुः। चुक्कविय, चुकोय। चुक्के । जुट् कीता। लृट् कोर्चाता ∘ते। पाणिति, ज्र-यात्। कोषोष्ट। जुङ् चकोषोत्। चना-ष्टाम्। प्रकोषुः। प्रकोष्टा यम् पुत्रः पति। •ते । यङ् भूगः को सुबते, पा ७, ४, ६३। घटा, धाक्यते। वाबीक् यिष्टल्सेन्यम्। पनायिष्ट चाकुनम्, म १४, १११। चोकाबीति। विष् काव-यति। प्रचूंभवत्।

कु—कू—कुड्—कुड्, तु, धा। १ मदः। २ पार्तनादः, वो। कुवते। पुकुवे। कुता। पकुन, पाट, २, २०। मकुपातान्। पकुषत, जूरा घषुपत दिजाः, म १५, २६। भोजूबते। कु। कुवते। चुकुवे। कुविता। पकुविष्ठ। पाकृतम्।

बुक्-भा, था। दारानम्।

्यहमम्। लट्काकते । लिट् श्रुक्ते । चुक्काकिये । लुट्कोकिसा । कर्न् श्रुक्ते किपते, चुकोकिपते । कोकः ।

बुद्-भूर,प। १तारः।

. उच्चमब्दः। २ विद्यायता । चढ्कीः चति । कौचति उक्षेति धुनादानी। [almena.]

नुष्ठ् .

ता, पा १, २, १। ऌट् कुटिचिति। ्लुङ् चकुटौत्। चकुटिष्टाम्। चकुटिष्टु!। सन् चुकुटिपति। यङ् चोकुळाते। ची- •

. 57

कोहि। णिच् कोटयति । अचुकुटत्। कुटिला। कोट:। कोटि:। सम्-नि-हत्ति:। केचित् संचुकुटुर्भोताः, भ १४,

१०५। संकुटितुम्, भ ७, ८१। सङ्गु-टन्ति भयाकान्ताः श्वबो यस्य द्रशं-

नात्, कवि २३४। •

कुर्-(तुर) चु, या। छेदः। कोटयते। कुट (कूट)। कुटुम्ब्—(तित्र) चु, घा। धारणम्।

पोषणम्। पाचनम्। जुटुम्बयते। कुट् — चु, प। १ छेदनम्।

२ भव्यंनम्। ३ पूरणम्। कुष्टयति। षजुकुहत्। चु, था। प्रतापनम्। ज्ञाह-यते।

कुड्-तु, प। १ वाखम्।

चापच्यम्। २ भोजनम्, वो। अडित। वुकोड । नुकुडतुः । कुडिता । यक्कडीत्।

कुण्-तु, प। १ शब्दः। २ उपल्लातः । कुपति । चुकोष । कोषः ।

कुण-च, प। यदन्तः।

१ पामन्त्रणम्। २ केतनम्। ई स-क्रीचः। कुणयति।

कुण्ट्—कुण्ड्—कुटि, कुडि, भ्वा, प। विवासीवारणम्। कुण्डति। कुण्डति। कुण्डम्।

कु एर्—कुठि, भ्वा, प। प्रतिचातः। गतिप्रतिचृतः। कुछति। चुकुष्छ। कुष्छिता। प्रक्षुष्छीत्। कुष्टि तासीव बच्चते, कु २, २०। कुठि, (गुडि) चु, प। १ वेष्टनम्। २ रचणम्। ३ चूर्णीकरणम्। कुण्डयति। कुण्डः।

कीचित काश्वीं विषाक् इति भद्दमदः। कुच्—भ्वा, प। १ तारः।

3.0

उच्च १ व्याप्य १ व्याप्य १ व्याप्य १ । ८ प्रतिष्टमः। ५ विलेखनम्। कीचिति। चुकोच।कोचिता। प्रकोचित्। कोचः पा २,१,१ 8०। यस्मिन् ममुदिते राजि जन: सङ्घोचित चिती, कवि १४०।

कुच्-तु, प। मङ्गोचः।

कुर्वति। चुकोच। कुचिता। प्रकु-चौत्। सम्-सङ्घोचः। सङ्चिति। सङ्चित:। णिच् समकोचयदर्चि:। सङ्चलारिनारीणां सुखं पद्वेतहबुति, कवि १४०।

कुज्-कुजु, भ्वा, प। स्तेयम्। भपहरणम्। काजिति। चुकाल। की-जिता। पकोजीत्। (उ) कोजिला, कुळा। कुताः।

जुब्-मुब्-जुन्च-मुन्च। भ्वा, प। १ कोटिस्यम्। कुटिनीकार-णम्। कुटिनीभावः। १२ प्रस्पीभावः। चन्यीकरणम्। लट् कुञ्जति। जिट् चुकुष । लुट् कुषिता । खट् कुष्वियति । पाणिष, कुचात्। नुङ् पकुश्चीत्। मन् चुकु चिपति । यङ् चोकु चते । षिच् कुञ्चयति। कुञ्चितम्। कुञ्चिका। पा-सङ्गोचः। पाकुञ्चनम्। पाकुञ्चितापा-क्र्नि:, र ६, १५। आकुचितसव्यपा-दम्, कु ३, ७०। वि-सङ्घोषः। विकु-चितन्तनाटस्त्, भारत। क्रच्, क्रचित। चुक्रच। क्रुचिता। क्रुचात्। क्रुङ्। क्राङ्भ्याम्।

> कुन्-(कून्)। कुर्-तु, प। कोटिच्यम्।

वन्नीकरणम्। लट् कुरुति। लिट् चु-कोर । सुकुरतः । चुकुरिय । सुर् क्रिटि- . बुप्

कुर्ल् — कुडि, स्वा, चा। दाइ:। 'कुर्ल्टते। चु, प। रचणम्। कुर्ल्डयति। स्वा, प। वैकल्यम् (कुर्य्ट)। कुर्ल्डा। कुर्ल्डम्।

38

कुल्ल — चु, षा। कुला। धवचेप:। कुल्लयते। कुल्लयति, दो। यो न कुल्लयते कुल्लां न च कुल्लिति निर्धे-नम्, कृति २४६। इन्नासुधमते स्वादि-रिष।

कुय्—िट, प्रश्तिभावः। दीर्गन्धम्। लट् कुष्यति। लिट् चु-कोय। चुकुयतः। लुट् कोयिता। खट् कोथिषति। लुङ् चकोयीत्। कोथिता। कुथितः।

कुण्-क्रा, प (कुन्द)। 'कुद' चु, प (कुन्द)।

कुत्य्—कुथि, भ्वा, प। १ हिंसा।

२ पंक्षे यनम्। कुन्य्, कुष्, क्राा, प।
१ पंग्नेषणम्। २ पंक्षे यः। सद कुन्यति।
कुष्याति। कुष्योतः। कुष्याति। न कुष्याति।
बुभुवार्तः योतार्त्तेय न कुन्यति। यस्य
राष्ट्रे धनाच्यो वा स्तः कीऽपि न
कुष्याति॥ कवि १२४। लिङ् कुष्योयात्।
लङ् प्रकुष्यात्। लिट् चुकुन्य। चृकोष।
लुट् कुन्यिता। कीषिता। पार्याति,
भ्वा, कुन्यात्। क्राा, कुष्यात्। कुन्यनम्।

कुन्द्—कुद्रि, चु, प।

त्रत्रभाषणम्। पनत्यक्षयनम्। सुन्द्र-यति। पनुकुन्द्रत्। गुद्रि, गुन्द्रयति। कुद्, कोदयति दृति केचित्।

् कुप्—िद्र, फ। कोपः। कोधः। खट् कुप्यति, देवदत्ताय कुप्यति, पा १,४,३७। यो न कुप्यति विपाय कु-प्यते च महाप्रभुः। प्रकोषयत्वसी राजा

यस्तेन सहगो जनः॥ किव १५८।
लिट् चुकांप, चुकांप तस्य सस्यम्, र
३,५८। लुट् कापिता। लट् कोपिव्यति। लुङ् चकुपत्। चकुपताम्। मन्
चुकुपिपति चुकोपिपति। यङ् चोकुव्यते। चोकोप्ति। चिच् फोपयित।
कुप, चु, प। दोप्तिः। कोपयित। कोपः।
कुपितः। कोपनः। चित, प्र—चितकोपः। च्यकुपत्, भ१५, ५५।

क्रमार-चु, प। घटनाः। क्रीडा। कुमारयति। घचुकुमारत्। कुमान इत्येकः। कुमानयति। कुमारः।

कुछ्-कुवि, खा. चु. प।

षाच्छादनम्। कुम्बति। कुम्बयति। कुषि, कुम्पति। कुम्पयति। कुम्पर्यति। कुम्पर्यति। कुम्पर्यति। कुम्पर्यति।

कुर्-त, प। मन्दः।

कुरति। चुकोर। कोरिना। चामिषि, कूर्यात्। दीर्घनिषेधनु करोतरेव, की १५२।

चुन्तीं चुन्तीं — भा मा।

कीड़ा। कूर्दते, पा प, २, ७८। खूर्दते।

गूर्दते। चुक्रों। क्रिंता क्रियते।

पक्रिंटा स १५, ४५। चुक्रिंता स्थानी

१४, ८, ७०। क्रूर्दनम्। क्रिंता। दीर्घन्तम् क्रिययेगा।

समस्र केषिचेयते। क्रुर्दने खुर्दते दिता।

प्रदीपः।

कुन्—स्वा, पा १ महातः।
राशीकरणम्। २ वन्धुश्रावः। मैतीकरणम्। लट्कीनितः। निट्चुकीनः।
लुट्कीनिताः। नुड् घकोनीत्। कुः
खितः। पाकुसितः। व्याकुनितः।
कोसः। कुनम्।

कुर्य—दि, प (कुस)। योगः। कुंय—कुणि, चु, प, वो। दोसिः। कुंग्रयति। कुंगति। सुष्-क्रा, प। निष्कर्षः।

विह्य्करणम्। निःसारणम्। लट् कु-पाति। कुण्यातः। कुखन्ति। डिकुपाग। लिङ् कुणोयात्। मङ् प्रकुणात्। लिट् चुकाष्। लुट् कोषिता। खट् की-विष्वति । नुङ् भकोषीत्। पक्षीवि-ष्टाम्। प्रकोषिषुः। पञ्जव्यात् प्राणान् वनौकमाम्, भ १७, ८०। धिवाः कुर्यान्त मांसानि, भ १८, १०। कर्मकर्त्तर, कुर्यात । कुर्यते पाटः स्वयमेव, पा १, १, ८ । सन् चुकोषिषति, चुकुषि-यति, पा १, २, २६। यङ् चोकुष्यते। चोकोष्टि। षिच् कोपयति। कुपित्वा पा १,२,०। कुषितः। कुषित्वा जगतः मारम्, भ ७, ८५। निर्-विहिनि:सारणम्। निष्कोष्टा, निष्क्षिता, या ७, २, ४६। निष्कोद्यति, निष्कापिष्यति। निर्कुः चत्। निरक्षोषीत्। निष्कीषितव्यान् निष्कोष्टुं प्राणान् दगमुखां सजात्, भ ८, १। कीटनिष्कुचितं । धनुः, अ ५, ४२। उपान्तयोनिष्कायतं विषक्षभूज-च्छेदम्, र ७, ५०।

जुम् — जुग् — दि, प। योगः। जुष्यति। जुग्यति। चुकोस। प्रजु-सत्।

कुंम्—कुसि (कुष) चु, प। दीप्तिः। कुंसयित। कुंसित। क्रांस, क्रांसयित। क्रांसित, वी।

कुम्-चु, पा। कुलितसय:।

जुत्मितहासः। जुम्मयते। षजुकुम्मतः।
बुद्धिकर्षकद्रभैनमिति दुर्गोदासः।
कुम्मयते जनः (बुद्धाा पम्मति) जुद्दिः।
कुम्मयते युवतीं कासुकः। षथ्या कुम्मेति
प्रातिपदिकं- ततो धालर्षे पिक्

की १६७। सुमन्दपूर्वकस्मिधातुरित्य[प .कस्मि।

कुष्ट—चु, या। घदनाः।

विद्यापनम् । कुइयते, कुइयते कुइ॰ केनेन्द्रजानिको लोकमिति दुर्गीदामः।

क्-तु, था। (कु)। ग्रव्दः।

कुवते। क्राा, प इति इनायुधः। यु-तिपुटपरिपेयं क्रीच्चकं क्नुनानिः कवि १७।

कूज्—कुष्ण्—कुंजि, घन्द्रमते।
भा प। प्रयात्त्रयण्टः। कूजनम्। कट्
कूजित। कुष्ण्यता। सिट् पुकूज, पुकूज
कूजी कलडंसमण्डली, नै१, २०। पुंस्कोकिलो यन्पपुरं पुकूज, कु ३, ३२।
सुट् कूजिता। सुङ् प्रकूजीत्। प्रकृजिष्टाम्। प्रकृजिष्ठः। सन् पुकूजिषित।
यङ् चोकूज्यते। कोकूक्ति। पिष्
कूजयित। कूजितम्। कूजनम्। स
कोचनैर्माक्तपपूर्णरम्यः कूजिंडः, र २,
१२। कोकिलकूजित-कुष्णकुटीरे, नीतगी १, २८। उप—चक्रवाकोपक्जिता
इदिनी, भारत। वि—विद्याविक्जिन
तवन्दिमङ्गलानि, र ८, ०१।

कूट — चु, या। १ यापदानम्।

श्र पपदानम्। ३ प्रवसादनम्। पप्र-सत्रीभावः। कूटयते। कुट् कोटयते प्रति मैत्रेयः। कूट चु, प। पदन्तः। परितापः। पामन्त्रणम्। यः कूटयति प्रतूषां गजघटाः, कविः २३४।

कूड्-तु, प (कड)। मान्द्रता।

कूण्-वु, पा। मुक्कोचः।

क्ष्णयते। कष, कार्णयते। क्ष्ण— चु, प घदन्तः। सङ्घोवः। क्ष्णयति।

कूल्-भ्वा, प। श्वावरणम्। कूलति। चुकून। कूलिता। पर्के- कीत्। कूचम्। घनुकूनः। प्रतिकूनः। यथामुं प्रतिकूनित, कवि ८०। क्ष-कञ्, भ्वा, उ, वो। कारणम्। करति। ०ते। चकार। घन्ने। क्ष-सञ्, स्वा, उ। हिमा।

क्षणीत। क्षणते। क्षणीति किरणं प्रती: किष्ठ , युदे क्षणीति प्रतूणां वार-पान् किष्ठ । चकार । निर्—भक्ष-नम्। प्रतिांनरकारि मे (भग्ना), भ १५,५४। कारणा काराग्टहम्।

ल-डुक्तञ्, तना, छ। करणम्। विधानम्। जनुष्ठानम्। सट् करोति। वुद्तः, पा ६, ४, ११०। कुर्वन्ति, पा ८, २, ७८। कुर्वः, पा ६, ४. १०८। जुदते। जुदीते। जुदीते। जिङ् कुर्यात, पा ६, ४, १०८। जुर्वीत। सोट करोतु। कुरा करवाणि। मङ् पक रोत्। यनुक्ताम्। यनुर्वन्। यन्र-वम्। प्रकुरत। पक्षुवेत। पक्विं। ब्रिट् चकार। चक्रतु:। चक्रये। चक्रव। चक्री। चक्रदे। लुट् कर्ता। लृट् करिचति। ०ते। प्राधिषि, कियात्। सवीष्ट, पा १, २, १२। कृषीदृम्। सुङ् चकाषीत्। चकाष्टीम्। चकाषुः चकृत। श्रव्याताम्। श्रव्यातः। श्रव्याः। प्रकृद्वम्। कर्मीष, क्रियते। कारिता। कारियते। पकारि। देवदत्तः घटं करोति। न च खं जुरते कमं, मनुः १, ५५। वितृषां कु वि कार्यम्, म द, ६३। यतं जुरत, भ ७, ८३। धनुः सवाणं कुर, भ २, ५१। उपाम्यकुरतां सख्यम्, भ ६, १०५। ऋषययक्तिरे धर्मम्, मतुः २, १५४। नाकाषं देवि ! विक्रमम्, भ ८, ११३। यदकाषीत् स रचसाम, भ १५, ८। कर्म व्याधस्यापि विगहितं मां घता भवताऽजारि, भ

६, १२८। तेदियोऽकारियताकुनाः, भ १९, ०३। कृषीदुं कत्त्रानन्दम्, भ ८. 991 सन् शिक्तोपीत । •ते, पा १, २, ८। यङ् चेकीयते, पा ०, ४, २०। चर्क रीति। चरिकारीति। चरीकरीति। च चरिकासि। चरीकासि, पा o, ४, ८२। णिच् कारयति। •ते। पः चीकरत्। ०त. पा २, १, ४८। ७, ४, ८३। जुवन्। जुर्वाषः। कृत्यं, कार्यम्। कत्तेव्यम्। करणोयम्। जृत्। जृतः। कारः। करणम्। कृता। • कृता। कः र्तुम्। छद्यै:कारम्। वियद्वरः। पन-इतियाः। नुस्रकारः। गद्कारः। सुब करः। कारतः। कत्तां। कारः। कर्म। कृत्या। किया। दत्यादि। तो राजकृता, स ४, १३०। तां इन्द्रोकृत्य (स्रोकृत्य), भ ४, १६। या १, ४, ००। पाणीकृत्य। उरमिकृत्य। सनमिकृत्य। नीविकानृत्त, (नीविकामित कृता)। डपनिषत्कृत्य, पा १, ४, ०८। युभुन देवसात् कृता (देवेभ्यो दचा), भ ४, ८। यसमाचकतु हियो, भ ५, ३। प सम्-भूषणम्। धनह्ना, पा ४, ३४। पत्यानं गताभ्यामनञ्जातः, र २, ८। पाविस्-पाविष्करणम्। पादुम्-पाविः ष्कारः । पुरम्-पुरस्कारः। पूजा । पयतः करणम्। पुरस्कृता वस्त्रनि पाधियेन, र २, २०। पुरस्कृतः मताम्, र ॥, ॥३। तिरम्—तिरम्कारः। भवनम् याच्याः दनम्। विषम्-दूरीकरणम्। मत्-पादरः। नमम्-नसस्वारः। मुनिवर्य नमस्कृत्य, की ४१। सज्:-महायः। सजू:कृत्य रति वसेत्, अ ५, ७२। पधिः पधिकारः। नैवाध्वकारिषाचि वैदहते म २,३४। प्रहसनम्। पधिचके न यं हरिः, मान,२०। या १,१,३१, यतु — प्रतुकाश्यम्।

यति। चचकत्तेत्। चचीकृतत्। (ई)
कत्तम्। कत्तः। कर्तनम्। कन्तनः
भवि। विरहिनिक्तन्तनेति जयदेवः।
चव—क्षेदनम्। स्मिचमस्यावकत्तेयत्,
मनुः ८, २८१। उत्—उत्कर्त्तनम्।
निष्कीयणम्। खण्डियत्वा विष्करः
णम्। उत्कत्योत्कत्य गर्भानिय यक्तः
स्मयतः, महाना ५, ८,। नि—कुस्मितः
कर्त्तनम्। क्षेदनम्। स्थकन्तंयकधाराभिः,
भ १७,१२। निर्—उत्कर्त्तनम्। प्रवावुमध्याविष्कृत्य वीजम्, भारत।

कत्—कती, क, प। विष्टनम्। सर्कपत्ति। कन्तः। कन्तन्ति, यं

कन्तन्ति गुणयामाः, कवि १२२। लङ् प्रक्षपत्। प्रकन्ताम्। येषं पूर्ववत्।

सन्व्-सवि, भ्वा, प्। १ दिसा।

२ करणम्। गमनम्। सट् क्रणोति। क्रणुतः। क्रखन्ति, पा ३, १, ८०। क्रिङ्कणुयात्। स्टिट्चकन्व। चकृ-न्वतुः। सुट्कन्विता।

कप—(क्रृप्)।

कप—षदन्तः । चु, प । दुर्वेचता । नामी कपयति वसुः, कवि २३५ ।

कय्—दि, प। तन्करणम्। कार्य्यम्। जट्कार्याता। जिट्चकर्य। चक्रमतुः। जुट्कार्यिता। जुट्कार्यः चिता। जुङ्चक्रयत्। क्रियता, क यिता, पा१, २, २५। क्राक्षयः, पा८, २, ५५। कार्यात चन्द्रं काण्यपचे इति दुर्गादास⊁। योककार्यतः, रामा।

कप्-भा, पा। तु, छ। विलेखनम्। पानपंपम्। प्रापणम्। चट् नपंति। किपति। •ते। नपंति प्राप्तां पामम्। प्राहो जले गजेन्द्रमपि नपंति, हि-तोष। सुखं मृपति प्रालेयमिनुनेवच विगा कि १८२। निट् चन्पं।

चलपे। प्रमुख सिंहः किन तांचकर्ष, र २, २९। नुद् कर्टी, करा। नृद् कर्चात। ॰ते। कच्चति। ॰ते, पा ६, १, ५८। तुङ् प्रकाचीत्। प्रकाटाम्। थकासुः। यकास्ति। यकारोम्। य-कार्तुः। शक्रचत्। पक्रचताम्। पक-चन्। पक्षष्ट। पक्षचाताम्। पक्षचत्। पक्तचत। प्रक्रचाताम्। प्रक्रचन्तः, को २४८। तं इस्ताध्यामकाचीत् भ १५, ४०। कर्मीण, जयते। पक्विं। सन् चिक्तचित । ॰ते । यङ्चरीक चते । चरीकार्छ। चरीकारि। चिव्कवयति। पचकर्षत्। पचीकपत्। कटः। कटिः। कर्षणम्। चनु, चा, वि—पाकषणम्। धतुर्व्यक्षाचीत्, भ २, ५१। पप-पप-कर्षः। अवसारणम्। उद्-उत्कर्षः। निर्-निष्कर्षः। निष्कुष्टुमये चन्नने क्षुवेरात्, र ४, २४। प्र-प्रकर्षः । विप्र-विषक्षयः । ं

क्-तु, प। चेत्रयम्। याच्हादनम्। व्यापेनम्। सट्किरति, पा ७, १, १००। नरि नरि किरति द्राक् गाय-कान् पुष्पेधन्वा। सोमित्रिमिकाः दाणैः, भ १७, ४२। सिट्चकार। चकरतः। दिश्य प्रव्येयकरः, भ ३, ५। चक-रिय। लुट् करिता, बरीता. पा ७, २, ३८। करिचति, करोचति। पाधिय, कीर्यात्। लुङ् पकारीत्। पकारि ष्टाम्। प्रकारिष्ठः। प्रकारिष्टां गिरीन्, भ १५, ८०। कर्मान, कीर्यते। सन् चिकरियति, पा ७, २, ०४। यङ चेकीर्यते। चाकत्ति। चिच् कारयति। बोर्षः। बीर्षिः। विकारः। विष्किरः। उत्वरी धान्यानाम्, उत्वरी रजधाम्। पप-पासिच्य विचेपचम्। पपस्किः रते हवसी च्रष्टा। कुक् दो सवार्थी, मा

पात्रवार्थी, पा ६. १. १४२। घव-षाच्छादनम्। वर्षणम्। कविं वाणै रवाकिरत्, भट, ३४! प्रवाकिरन् तं लाजै:, र ४, २८। पा-व्यापनम्। चाकीर्णम्, र १, ५१। उप, प्रति— छेदनम्। 'हिंसा। उपस्किरति। अतिः स्कीर्णम्, पा ४, १, १४०, १४१। उरो-विदारं प्रतिचम्करे नखैः, मा १, ४७। उद्-उत्वेषणम्। रजस्रागोत्कोणम्, द १, ४३। पृष्परेणत्किरेकातैः, र १, ३८। समुद्-विधनम्। सणी वळम-मृत्कीर्ण, र १, ४। वि-विचेष:। त्रखुनकणान् विकीर्ध, हितीप। द्-मान् विचवत्ः, भ १४, २५। विनि-निचेव:। विनिकीय माम्, कु ४, ६। प्र-प्रचेष:। विस्तार:। वार्तन प्रकी-र्यास्तवकोच्याः, भद ६६। मम्-मित्रपम्। वर्षाः सहीर्णाः, सनुः १, ११६। चित्रया वैभ्याः महीर्थन्ते पर-खरम्, भारत।

कू -कृञ् काा, उ। कू काा, पी

हिंसा। जणाति। जणीते। सिडादी पूर्ववत् सनितु चिकारियति चिकीपैति। कृ चु, चा। ज्ञानम्। कार्यते। बाणावनिं किरत्याजी खणाति तुरगान् रणे, कवि ४४। हितीयानु कर्नुगामिः फलेऽपिन तङ्।

कृत्-चु, प। संग्रव्हनम्।
कीत्तंनम्। कीर्तंयति, पा ७, १,
१०१। कीर्त्तयन्ति च गोष्ठीषु यद्गुणानप्ररोगणाः, काव १२२। प्रचिकीतंत्। प्रचीकतत्। स्नातुरचिकीर्त्तिः
क्रमम्, भ १५, ७२। विप्रमेवैष शूद्रस्य
प्रगस्तं कर्म, कीर्त्वंते, । सनुः १०, १२३।
कृष्-कप्, स्वा, प्रा। सामर्प्यम्।
योग्यतः। पर्याप्तः। सम्पत्तः। चत्-

पत्ति:। जट् कस्पते, पाट, २, १८। .पितकारविधानसायुपः मित शेषे डि. फलाय कलाते, र द, ४१। स्थंतप-त्यावरणाय हरे: कल्पेत कार्यं तमिस्रम्, र ४, १३। योऽर्घिना-मी (प्रतप्राप्तेर कस्पते कस्पहचवत्। न कस्याति मिलाऽयं घिरः कस्पति विः दिवाम्॥ कवि दशः लिट् चेक्रवे। चक्राविषे। चकलासा चक्रापे चाम्बकु-चारम् (मज्जीकतम्), भ १४, ८८। लुट् कल्प्तांस। कल्प्ताम कल्पितामे, पा १, ३, ८१। ७, २, ६०। खट् कल्-स्रति। जल्यते कल्यियते। लड्घ कत्यत्। भकत्यत भक्षां स्थत। कल्पियते हरे: प्रीतः, भ १६, १२। तोषः शीतायाचेत्रि कत्य्यात, भ ८, ४५। वितयैव नोऽकस्खदुर्यातः, भ १८, (८। पाणिष, काल्पपीष्ट, सृप्योष्ट। सुङ् धङ्गृपत्। पकांस्पष्ट। चक्रा। चकल्यिय।तभ्मः चक्रमाः ताम्। प्रकल्पियत। प्रक्रुपत। सन् चिक्कृपति। चिक्काल्यपते, पा १, ३, ८२। ७, २, ५८। यङ् चलोक्न्यते। चलोक्ता। विच् कल्यति। क्रप, चु, प। १ सियचम्। २ चित्रोकरणम्। ३ केल्पनम्। कल्पयति। कल्पति, वी। विन्यामः। रचना। निर्माणम्। निरू पणम्। पासनं कल्पयामास, भारत। किङ्करैं: कल्पितम्, भ १२, १२। इदं गास्त्रमवास्पयत्, मनुः १, १०२। न्ययो-धमेव वासार्थे कल्पयामाम्तुः, रामा। तेषां कर्माखकलयत्, मनुः १, ८०। कित्यतः। कस्ययित्वा। कस्पना। क्रृप्तः। क् सि:। घतु—घतुकस्य:। घव—सन्धा-वना। चवकत्ययामि भवान् भुज्जीत। नावनस्यामिदं ग्लायेत् यत् अक्षेषु

भवानिष, इति महिः। उप-विन्यामः। - सम्पन्नता। आयोजनम्। पामनेष्यः ' कृप्तेषु, मनु: ३, २०८। चन्नयाधी १-कत्पते, मनुः ३, २०२। योवराज्याय रामस्य मर्वमेशीयकत्यनाम्, रामा। परि—करणम्। परिकस्पिनमानिध्या, र ४, ६। रिक्यजातं दगुधा परिकल्पा, मर्तुः ८, १५२। निषयः । ये धर्मे परि-बल्पयेत्, मनु: १२,,११०। ध्यानन्तयेन परिकल्प्य भवन्तमतीव दुरापम्, गी-तगी 8, द। प्र-करणम्। धनुष्ठानम्। षायोजनम्। निरूपणम्। प्रक्राप्तः, भ २, २८। ममानांशान् प्रकल्पयेत्, मनुः र्राहा प्रकल्यति तस्यार्थः (मन्प-त्यते।, म १६, ११। वि—विवासः। मंग्रय:। चाटिष्टो न विकल्पेत. हितोप। विं तत् वयं विति विकल्पयन्तः, भ ११. १०। मम्-मंबल्यः। मानम-क्रिया। इच्छा। संकल्पितेऽयं विष्ठता-व्यक्तिम्, कु ३, ११।

केत-च, प। पदनाः।

१ त्रावणम्। २ निमन्त्रणम्। मन्त्रणा,वो। केप-केषु, भ्वा, चा। १ कस्पनम्। २ गति:। केंपते। चिकेपे। केंपिता।

वेस्-वेस्र, भाष। चलनम्। वेसति। चेस खेसति। चेस, चे-स्रति। वेस्, वेस्रति। केसः। केना।

केव-केव, भ्वा, था। सेवा। देवते, ने। स्तेष्ठ क्रोवतं। खेर, खेवते। गेव, गेवते।

के—स्वा, प। मध्दः।

सट् कायति । बिट् चको । चक्तुः। चुर् काता। कास्रति। चुङ् पकाशीत्। पकाषिष्टाम्।

क्रय्—भ्या, प, वो। वधः (क्रय) । क्रम्-क्रम्, दि, य। १ क्ररणम्। कोटिखम्। २ छोतिः। चट् क्रधांत। लिट् चक्ताम। चक्तमतुः। लृट्कामः र्यात । णिच् क्रमयति । घटादिः । (उ) क्रमिता क्रम्बा।

क्रान्द

क्रंम्-(कुंम्) चु. प। दीप्तिः।

क्रु—क्रू—(क्रूब्) क्राा, छ। तान्दः। क्रय्—क्र्यो, भा था। १ जब्दः। २ सो दः। १ दुर्गसः, वो। जर् क्रायति। लिट् चुक्क ये। लुट् क्रियता। लुङ् पक्त विष्ट। विच् कीवयात. या ७, ३, ३४। धचुक्रुपत्। चैकक्रीयं हशी देवः, पा २, ४, ३३।(६) ज्ञातः ।

कार्-भाः प। कोटिन्यम्। कारति। चकार। कारिता। चका-रोत्।

- क्रय्∸भ्ना,पारिमा।

सर्कावि। निर्चकाव। भुर् क्रयिता। लुङ् पक्रथीत्, पक्रायीत्। क्रयं, क्रयति। क्रयं क्रयति। पिच्काः ययति। जासिन प्रस्मेति स्ते काः चेति मिलेऽपि इडिनियाव्यते । मिलन्तु निपातनात् परत्वात् चिमामुनोरिति टीचं चरितार्थम्। यक्तवि, यक्तावि। क्रयं क्रयम्। क्रायं क्रायम्, को ८१। क्रययति। क्रययति। क्रय, च, च, प, वा। पुन: पुनच होकरणम्। काचयति। कर्-कर्-करि, (करि) आ, था।

वैक्कव्यम्। विवयता। धेकव्यम्। कन्दते। कदते। कन्दले कान्दिशीकाच यस्य मवयः, कवि ०२। कदयनि घटादि।

अन्द्-कदि, (कदि) आया १ पश्चिम्। १ शेदनम्। नद अन्दति। मा पितः जन्द मा तातः भारत । काल्लायुजनीवीग्भः काल्यन्ति रिप्स्तियः, कवि ७२ । सिट् चकल्द, यक्तन्द कोधविष्ठना, भाष, प्र । रामिति यक्तन्द्रः, भाष, ४८, ४८ । सुट् काल्द्रिता । सुद्ध्यक्रतीत्, भाष्य, ८५ । यक्तन्द्रशम् । सन् विक्तन्द्रियति । यङ् याक्तन्यमे । याक्तन्ति । सिष् काल्यति । काल्द्रितः । काल्द्रम् । या—याज्ञानम् । याक्तनिद्धः । शेदनम् । योरमंप्रामः । याक्तन्तियः । शेदनम् । योरमंप्रामः । याक्रन्दियः, अ१५, ५० । याक्तदि, जु, प । निरन्तायस्यः । पाक्रन्द्यति यन्त्रम् । याक्रन्दः । योक्रन्दनः ।

कप्—भ्वाः चा। कपा। दया। कपते, क्रुपते कपणेष्वेव, कवि १३४। चक्रपे। कपिता। णिच् कपयित। चिक्रपत्। चक्रपि, चक्रापि। कपा, कौ ४४२।

जाग्-जामु, खा. प। पादविचेष:।

गधनम्। उत्पतनम्। धाक्रमणम्। भाज्यति। आगति, पा,३, १, ७०। ७, 3. 24 । कम्य तथी। कच्छीरमी पदा कार्याम पुन्छदंगे. भारत। चिट् चकाम। अज्ञान:। लुट् कामेता। खट् क्ष सर्वात । नुङ् पक्ष मीत्। पक्ष सि-ष्टाम्। चक्रसिषुः। प्रशोकविषकां लावन्यक्रमान्, भ ८, २३। प्रमति-बन्धाकारम्कीततामु पाननंपदम्, पा। १, १, ३८। क्रमते। क्रम्यते। चक्रमे। क्षान्त । पा ७, २, ३६। क्षं स्वते। प्रकंस्त। यक्षंत्राम्। यक्षंत्रतः। शास्त्रे क्रमते व्हाः (न प्रतिहन्यते ।। व्याकरणाध्ययः नाय जमते (उलादने)। पैक्सिन् जमन्ते शानाणि (सहोतानि भवन्ति), पा १, ३, ३८। सन् चिक्रमियति। चिक्रंसते । यङ् चङ्ग्यते। चङ्गिता । विच् क्रमः यति। पनिज्ञमत्। मंकामयत्रोति

केचित्। जरामन्यस्मिन् धंकाम्य, भारतः विभिन्ना, जान्ता, कुन्ता। कान्या कान्या स्तितं कचित्, ४, ५१। कुम्तः। ते कुम्ताधेतसि विष्ययेन, र १४, १७। समं वबन्ध का-मितुम्, भ २, ८। जुमणम्। देवार्त्तर्योव कति क्यो गेट्। कर्मीच तु प्रक्रियत-व्यम्, की ३१६। धात-मतिकृतः। उत्तक्तम्। व्यति—व्यतिक्रमः। धतु— पतुक्रमः। पनुसरंगम्। पप-पपछ-रणम्। या-पालमणम्। पानमते स्थः, पा १, ३, ४०। उद्-उद्गमनम्। पतिकासः। व्यतिकृतः। व्युद्-व्युत्-क्रमः। व्यृत्कृस्य लक्ष्यमुभी भरती ववन्दे, र १३, ७२। भ २२, ३। उप, प-पारमः। प्रमोनिषेस्तरम्पाकंस्त (गन्तुमारव्यवान्), अ ८, २५। प्रसी प्रक्रमते योषुमेकोऽपि बहुभिः सह। नाकमान्त तथाप्येनं विकान्ता बहवी-ऽविते॥ कवि १८०। निर्-निष्कृमः। निगमनम्। निर्विक्सिद्धाता वा-नरान्, भ ०, ७०। परा-पराक्रमः। खे पराक्षंत्र तूर्णं चुनुनेभक्षतः, भ ८, २२। परि-परिक्रम:। इचादृ इसं परिका-मन्, भ ८, ७०। वि—विकृम:। वसे विक्रममाचाः, भ ८, २४। साध् विक-मते वाशी। विकासित सन्धिः (दिधा भवति ।, पा १, ३, ४१। स्गान् विध्यन् विचलमें, भ ४, ६। मन् संक्रमणम्। प्रवेगः। प्राप्तः। णिच् रसातलं संका-मिते तुरङ्गे, र १३, ३। अमरसंक्रमिते-चगहत्तयः, र ८, ५४। . धयं पाप इद-मकार्थं गयि भंकामयेत्।

को — डुक्रीज्, कुगा, उ। क्रयः। द्रव्यविनिमयः। लट् क्रीणाति, पा ३,१,८१। क्रीणीतः, पा ४,१,११३। क्रीवन्ति। क्रीपीते। दस्वा गस्तप्रहाः रच तेषां कीषाति यः यिथम्, कवि न ११०। जिङ्कीणीयात्। लङ्चकीः यात्। बद्रोगीताम्। बद्रोगत्। य-क्रीयीत। प्रकीयत। सिट् विकाय। चिक्तियय, चिक्रिय। चिक्रियव। चिक्रि-थिये। चिकिये। सुरुक्षेता। क्षेत्राता •ते। चार्चिष्, कीयात् । लेबीर। लुङ् यक्तैकीत्। यक्तैष्टाम्। यक्तेषुः। यक्तेषः। पक्तियाताम्। पक्तियतः सन् चिक्तीः षति। ०ते। यङ् चेक्रीयते। चेक्तवीता चेकोति। चिच् कापर्यात, या ६, १, ४८। पविस्तात्। सीला। • साय। क्रोतः। क्रयः। परि-क्रयनिक्रयः। धेनन-स्त्रीकारः। परिक्रीभीतं, पा १, १, १८। श्रतेन परिक्रोतः, पा १, ४, ४४। सम्भोगाय परिकृतिः, भ ८, ७८। वि-विक्रयः। विक्रीणाति। प्रवक्रीणाति।

कीड्-कोड्, खा, प। विशाहः

क्रीड़ा। लट्काडित। क्रीडील ख्र-विशा परि, काव २३३। लिट् विक्रीड़ा। विक्रोडतु:। लुट् क्राहिता। लट्ट् क्राइिष्यति। लुड् प्रकाडिता। प्रकाडिपति। प्रम्। प्रक्रीडिपु:। सन् विक्राडिपति। यङ् वेक्रीडते। विक्राडि। गाव् कृष्ट-यति। प्रावकाड्त्। प्रनु—पन्की-इते. पार्र, ३, २१। पा—पाकोडते। परि—परिकाड्ते। परिकाड्ब, भ ८, १०। सम्—मंकोड्ते। साध् संक्रोड्यानानि, भ ८, १०। क्रूजने तु, संक्रोड्यानानि, भ ८, १०। क्रूजने तु,

सुच — (कुन्द्) भ्वा, प। कीटिच्यम्। फ़्रुं — तुं, प। निमक्तनम्। फ़्रुंडित। चुकोड। फ़्रुंडिता। प्रक्रुंडीत्। कुंध्— दि, प। क्रोधः। रोषः। स्नृट्टेक्ट्रेन्सय कुंध्यन्ति, पा१, ४,

३०। सीताये नाक्ष्यत्, स ८, ०१। किट् चुकोध। चुक्ष्यतः। चुकाध मादतिः, स १४, ८५४ चुट् कोडा। चृट्
कोत्यति। चुड् घकुषत्, दयानगेक्रिष्यत्, स १४, १८। सन् चुक्रुवाति।
यहः चोक्र्ष्यते। चोकोडि। विच् कोधयति। घचक्रुपत्। व्यदः। चाम, घन,
प्रति, परि, सम्, देवदस्तर्गामक्रुव्यति,
पा, १, ४, ३८। क्ष्यतं न प्रतिकृष्येत्,
मनुः ४, ४८। मक्ष्यति यपा माम, स
८, ७४। शपनानं सं यद्नुपा न प्रचक्रिपः, मा।

क्रान्य-क्राा. ए. थी। १ स वणम्। २ मुगः। स्याति। युक्ताः स्मिता। क्य-का. प। १ था द्वानम्। २ रादनम्। लट् कोमति, एय कोमति टाख्डा, रामा। वाशकारां कपि-ब्रियः, म ६. १२४। लिट् पृक्षीय। नुक्तगतुः। चक्रम्यातीत चुनीम, स १४, . ३१। स्ट्कोष्टर। स्ट्योब्यात । सुब् चक्र तत्। चक्र चनाम्। धन् चक्र चिन। यङ चाक्र माता पोक्र गाति, चोक्रांट। विच् क्षांमधति। चच्च्यत्। चन्-द्या। किमनुक्त्रत्र वेकक्षमुत्पादयीम। पा-रोटनम्। भवानम्। तं भात-द्वारमात्र्या, भ ४, १८। अद्, घ. वि— चीत्वारः। रीदमम्। विश्वज्ञाः केनन मासमुद्धः, भ ३, १०। डा डीन च वि-चुक्तु श्रे, भ १४, ४२। विकृष्यन्ति, भ १६, १२। व्यक्त चत्, भ १६, ४०।

क्रू — क्रूज््कृा, उ। ब्रव्हः । क्रूपाति । क्रूपीने । कृषिता। क्र्रुवी । ृक्षुद्दति जैमिनिः । क्रुदति स्वानाद्यः । क्रुष्—ु(क्रुष्ट) स्वा, प । क्षिना।

. जुल्-कृद्-कृदि (क्षदि). आ, प।

१ पाष्टानम्। २ रोदनम्। सद्। क्रांट (क्रांट) भ्याः प्राः। १ वैक्रव्यम्। २ वैक्रव्यम्। सट्क्रान्द्रति। ०ते। स्नद्र-ते। स्नद्यति।

> क्त प् (ह्नप्) चुः प । कथनम् । काम् कामुः दि, प । क्वानिः।

्यमः। यसामयीम्। मूर्क्शः। नट् काम्यितः। कामितः, पा ७, ३, ०४, ०५। कायः काम्यितः यस्य प्रहरतो निपृन्। कामितः रिपृमेनासः प्रवसाना दिशो दगः। कवि २२६। नद्धाराष्ट्रेन काम्यतः, भ १२, ३८। स्वास्त्रद्धावणः, भ १७, १०२। निट् चकामः, न चकाम न वि-व्यथि, भ४.१०२.१४,१०१। नुट् कमिता। स्यद्धातस्यति। नुष्ट् स्वस्ता। (३) कमित्वाः कान्वा। कान्तः। कान्तः। कमः।

क्रव्—मा. चा, वो। भवम्। क्रवते। क्रिट्—क्रिट्र, दि, प। चार्द्रीभावः।

नट् क्रियित. पन्नमिन्नभिन्तामां क्रियित्त नयनानि च, कवि १३१। नुयान्त भूमौ क्रियांना, भ १८, ११। निट् चिक्रोद। चिक्रिट्न,। चिक्रोदय, चिक्रेट्य। चिक्रिट्य, चिक्रेट्य। चिक्रिट्य, चिक्रेट्य। चिक्रिट्य, चिक्रिट्य। चुट् क्रिया। चुट् क्रियात, क्रोटिच्यत। चुङ् पिक्रदताम। सन् चिक्रेटियति, चिक्रिट्यति, चिक्रिट्यति, चिक्रिट्यति, चिक्रिट्यति, चिक्रिट्यति। यड् चेक्रियति। चिक्रिट्यति। चिक्रिट्यति। यचिक्रिट्यति, चिक्रिट्यति। यचिक्रिट्य, उक्रैर्ट्यक्रिट्ट भूमिम्, भ १४, ४८। क्रेट्टिव्या, क्रिट्या, क्रिट्या, क्रिट्या। क्रिया। क्रियम्, उदक्षप्रिक्रियम्।

सिन्द्-सिदि, खा, प। वी, छ। •

परिदेवनम्। विलाप:। शोक:। कि-न्द्रिता कृते भत्तीर दुःखार्ताः किन्द्रित

यदरिक्तियः, कि १६१। पालने प्रदे भोकार्यः सक्तमैकः। किन्द्रते चैत्रम्। क्रिन्टिना। उभयपदिष्ययं न पत्र्यते इति प्रदीपः।

लिग्-दि. था। इ, बी।

को घः। उपतापः। विष्यति। ०ते, विष्यते न च निष्फलम्, कृषि ८३। सा, किथितः, क्रिष्टः, पा.७, २,५०।

जिल्लाम् - जिल्लाम् । योहनम्।

विवाधनम्। बुगः। लट् क्रियाति। क्षिणीतः। क्षिणांनाः नेग्द्रथांच विदः देपु विद्यानि विषयम् सः, कवि ८३। म क्रियाति भुवनवयम्, कु २, ४०। गणवर्त्तन्त्री न जिल्लातः (क्रियं नान्-भवतः), भ १८,३१। जिङ्कां क्योगात्। डि जिनान। लङ् चित्रुत्रात्। सिट् चिक्नेश। चिक्रियतः। चिक्नेशिय, विक्षेत्र। नृपालको विक्रिमतुः, भ ३, ३१। जुट् को शिता, को छ।। नृट् क्रिथिति, क्रेचिति। नृङ् चक्रीमा पा ७, २, ४। अधिचत् पा २, १, ४५। भवेशिष्टाम्। भक्तिज्ञताम्। भक् शिषु:। याज्ञिचन्। सन् चिक्वियिपति, विक् शिष्ति, चिक्रिजित। यङ चेकि-ज्यते। चेकेष्टि। पिच के जयति। यचिकियत्। भक्तं मां मातिचिक्यः, भ ६, १७। किंगिला, विद्वा। विभिन्तः, किए:। किथितवान, जिल्लान, पा 0, 2, 40 1

को ब्-बोब्-को वृ.-को वृ, भ्वा, था। यथ छोन्। यप्रगन्भता । चट्की वर्ते। योवते। चिट्चिक्वी वे चिट्की विता। को वन्।

कुड्—भ्वाः शा। यतिरिति सेतः। योश—भ्वाः शा। १ पस्पुटक वनस्।

.२ बाधनम्। पीड्नम्। ३ वधः, वो। , कथनं, पदीप:। लोगतं, लोगते न स्पा-वाकाम्, कवि ८३। चिक्को घे। को घिता। पता शिष्ट।

जग-(प्रम्) खा, प। प्रदः। स्वता थकाण । कविता । पक चीत्, शक्काणीत्। , शक्काणिषुयातीः व्यांचाः, भ ८, ११-। निकाणी निक्रणः क्षाणः कणः कण्नगित्यपि। योगाः याः कणिते पादेः प्रकाणप्रकणादय-

द्रत्यमर:। क्षय्—वाये, नावा, प। निष्पावः।

स्रम्, (कृष्) भ्या, प। विसा। नट् क्यति। बिट्चकाय। बुट्कियता। लुट् कथियति। तुङ्(ए) पकथीत्। णिच काययति। (हिंसायाम्) कय-थिति। काषः। कवः।

केल्—(केल्) भ्वा. प। गति:। चन्-चन्-जह्-चनि-

''वज्, जविण भ्वा, पा। १ गितः। २ दानम्। चम्नते। सिट् चचन्ने। तुर् चिन्ता। तुङ् यचित्रर। सन् विचिच्चिपते। यङ् वाचम्राते। पिच् चस्रवित। यचचस्रत्। वर्मीण, यच-च्चि, यचाच्चि, पा ६, ४, ८३। प्रमुन् चसं चंद्रम्, चासं चास्रम्। चनते। च जयित। घटादि:। चित्र, चु, प। कच्छ्जीवनम्। पातज्ञः, वो। पञ्च-यति। चजते। जङ्गते।

चण्-चण्, तना, छ। हिंसा।

सट् चर्णात । चणुते । सिट् चचा-य। चचषे। लट् चिषता। लट् चिष्यति। •ते। लुङ् पचपीत्, पा ७, २, ७। प्रजीवटाम्। प्रचिष्युः। षविष्ट, बंदत । पद्मिष्ठाः, पद्मधाः ।

सन चिचिषिपति। •ते। यङ पहुष्यते। वक्षाण्ड। उपदेवीस्य नकार रित धातुपारायमे व्याख्यातं तेन यहल्कि चहुन्ति। चिन चाचयति। (त) चचित्वा, चला। चतः या ४, ४, ३०। चितः। योकान्यकारचतमध्येष्टा, म १, १८। परिचतः। विचतः।

श्वम

चप-पु. प। परताः। , प्रेरणम्। चैपणम्। चपयति। पचि-ची चपविविद्याम्, कृति:।

चम-चम्य, भा, पा।

चम् दि. प। सहमम्। सर्वेषम्। चमा। मिकः। मट् चमते। चाम्यः ति, पा ७. ३, ०४। चमते यो दिरहा-षां दृष्टान् न खस्ति प्रभुः। न खाव्यति चितोगानामपराधकषामपि॥ अवि १४०। सिट् चलामा चलमत्। पर्वागय, प्रवस्त । प्रवस्ति , प्रवस्त पा ८, २, ४४। चर्चाता, चर्च्या चचम्। चचमिषे, चचं मे। चचमिष्ये. चचनुर्खाः लुट् जमिताः जला। नृट् चिमिषति। •ते। चंदाति। •ते। मुङ् घचमत्। घचमिष्ट, घचंदा। चचमिषाताम्, चचंत्राताम्। चचमि-पत, षर्चमत। पाणिष, चम्बात्। चिमपीष्ट, चंमीष्ट। बहुते रवे: चाल-यितुं चमित कः, चयातमस्काण्डमनी-मर्स नभः, मा १, ३८। चचमिर सी-रव्रताभं न तस्य, र ၁, २४। पर्चसा न तत्, अ १४, १४। कार्म चास्यत् यः चमी, मा २, ४३। यन् चिचिमिषति। ॰ते। चिचंसति। ॰ते। यङ् चहुमाते। चङ्गान्त। यिच् चमयति। पविच-मत्। चिमला, चान्या। चान्ता। च सितुम्, धन्तुम्, तह्नवान् चन्तुशर्धति। चीलि:। चमा। चितः चाम्यतः चान्तिः चमूषः चयतेः चया, के १४२। चान्तः। चान्तवान्।

fw

चम्प्—चिषि, चु, पै। १ चालिः। २ कालिः। चम्पति। चर्—ेभ्या, प। १ मञ्चलनम्।

्र जरणम्। शंमोचनम्। जर् चरित। जिट् चारा। चचरतः। जुट् चरिता। जट् चरियात। जुट् पचारीत्। प्रचारिष्टाम्। पचारिष्ठः प्रदाक्षांषि तिष्मन् रचःपयोधराः, भ ८, ८। मद्धाराः चरस् गजेषु, र १३, ०४। सन् चिचरिपति। यङ् चाचर्यते। चाच- चित्रं। णिच् चारयति। षा—षाचा- रितः चारितोऽभिगम्ते इत्यमरः। प्रम्बतः। पानुकाः पवचरः, भ १४, ८०।

जन्-भा, प, वी। १.सखननम्।

र मचयः। चन्नति। चन्न, पु, प।
शौचिनुया। शोधनम्। चन्न नम्।
चान्यति। चान्यामि तव पादपङ्जी
महाना २, ४५। पिचचन्नत्। चान्नथितुं चम्ति कः, मा १, ३८। प्र—प्रचान्नम्। प्रचाननाहि पङ्गस्य दूरादस्पर्धनं वरम्। इस्तौ पादौ मुखं पच।च्य, मनुः २, २६४। वि—विचानितः, र ५, ४४।

चि—भ्वा, प। चयः।

पेख्यम्, वो। प्रयमकर्मकः। प्रतः भीविष्ययंसु सकर्मकः, को ५०। चय-ति, चयति प्रत्यद्वं पापम्, कवि ११२। विचाय। चिचियतः। चिचियद्य, चि-चेय। विचियव। चिचियम। चेतां। चोयात्। प्रचेयीत्। जोणः। चितः। चि—तु, प। १ निवासः। २ गितः। चियति, यथः चियति वो दखोर्यस्य, कवि ११२। चिचाय। पासीयाडी चिन्तामायः, द १, ११। (महीं चियत्ति पंपते दित महीचितः। चिधातोरेख-र्यार्थात् किए) मजीनायः। वोपदेवस्तु स्वादिगसीयस्य ऐख्वर्यार्थमाइ।

चि—सा. प। जिष् (जीष्) कुरा, प।

हिंसा। बधः । बट् चियोति । चिया-त:। न तष् यमः मञ्जस्तां चिणोति, र २, ४०। धविषोद् धर्यान्, भ १७, ८८, ८०। धनुरचिषोः, र ११, ०१। विष्. विषाति, विषाति द्रितं हद्दा चिषोत्वर्धेष दु:स्वितान्, कवि ११०। विषीतः। चीर्णान्त। विषीयात्। पविषात्। बिंद् चिचाय। चिचि-यतः। विचयिय, विचेय। विचि-यिव। सृद् चेता। सृद् चेष्यति। पा-मिषि, चीयात्। लुङ् यसेपीत्। यसे-ष्टाम्। प्रचेषु:। कर्माण, जीवते। अन विचीपति। यङ् वेजीयते। चेचयीति। चेचिता चित्र चाययति। चिला। •चीय, पा ६, ४, ५८। प्रचीप:। उपचीप:, पा ६, ४, ६०। (याक्रीय) चीणायुः चितायुक्तिः। (दैन्ये) चितः चीषोऽयं तपसी, पा ६, ४, ६१। चितः कामी मया, कौ ३४६। चयः। चितिः। (वः चिया। येन चियततमसा (चयमव्याचित्), मक् 8, 84 1

चिण्-चिण (चणुः) तना, उ।

हिसा। (सर्चेपोति, चेणते)। चिपोति। चिपाते, सत्यानां नित्यमत्तानं चिपाते यः सद्क्षिभः, याव ११०। सिङ् चेप्यात्। सङ्घचेपोत्। सिट् चित्रेण। जुट् चेणिता। जुङ् घचेणीत्। श्राचित, घचेणिष्ट। चिणु, चिणीति। घडलुकि, चेचेन्ति।

चिप-दि: प, तु, छ। पेरणम्। चेपणम्। त्यागः। सट् चिप्यति। चिपति। •ते। चिपति प्रतिपचार्या द्वदये यो भयं भ्रवम्। चिप्यति चोत्रि-याणाञ्च निर्ध्वतं, पुष्कतमानये॥ १८३। यस्तं वार्णमित्रयदिच्वदौद्र-मिन्द्रजित, भ १७, ४३। सिट् चिचेप। चिचिपतुः। चिच्चेपिय। चिचिपे। सुट् चेपाति। बृट् चेपाति। ०ते। लुङ् प्रचेषीत्। प्रचेपाम्। यचैप्सः। प्रचिप्ताम्। प्रचिप्तताम्। प्रचिप्ततः तेनाचिपतेषवः, भ १५, ६५। सन् चिचिपति। •ते। यङ् चेचिप्यते। चेचेप्ति। णिच चेप्यति। अचिचि-पत्। चिद्धाः। चिप्तः। चिप्तः। चिपणम्। चिपकः। चेप्तं कालम्, म-हाना 8, दशा तं चिष्न् योजनं स-तम्, भ ६, ११५। चति, चभि, पति— श्रमिभवः, पा १, ३, ८०। श्रमिचिपन रावणः पर्वतिश्रयम्, भ ८, ४१। पधि-श्रिषिचेप:। निन्दा। भर्यानम्। विभे-षेगाधिचिप्तोऽस्मि, शकु ५, ८६। एते-रिवित्ताः, मनुः ४, १८५। प्रव-क्तसा। • त्रघोविचेप:। पा—पाचेप:। षाकर्षणम्। निन्दा। पराभवः। प्रसाः धिकालिबतमप्रवादमाचित्रम, र ७, ७। समा- अपसारणम्। कायाः समा-चिचिपिरे, भा १६, ४७। उद्-उत्-चेपः। दूरीकरणम्। उत्रमनम्। ग्रैनानु-ह्येषु, म १५, ३४। उदचिपन् केतृन्, अ ३, ३४। नि-निचेपः। न्यासः। पर्णेणम्। तेन घुः सचिवेषु निचिचिपे र १, इ४। तं बन्धुता न्यचिपदाश तले,

भ ३,२३। परि वेष्टनम्। पावासः।
प्राकारेण परिचित्रः, भारतः। परिचित्राः ग्राखिनोऽजिगाथकैः, भ ६,
८४। पश्चिपे। प्र—प्रचेपः। वि—
विचेपः। मम्—मङ्घेपः। संद्वारः।
सङ्घ्यु संस्थाम्, भ २,५३।

चिव् चीव् चिव्, खा, दि, वो, प।

निरमनम्। चेवति। चीव्यति।
ची-स्वा, उ, वो। वधः। चीङ्, दि, पा।
चयः। चयति। वीयन्ते, मनुः ७,
११२। पायुः परं चीयते, मान्तिम्
५। दिवादिस्तु खाद्यादिवदाञ्जतिमणः,
तेन चीयते रत्यादिसिवः, को १४४।
चीष्, क्राा, प। हिंसा। चोषाति
(चिकाति)।

चीज्भा प। प्रवाहणाब्दः। हिक्कनम्, वो। चीजति। चीजिता। चीजिता। चीक्-चीक्-चीक्, खीक्-खा, पा। मदः। गवः। मतीभावः। चीवते। चीवते। चीवते। स्वाविदः, पा ८, ९, ५५। स

चीव् चेव् चीव्, चेवु, खा, प।
निरसनम्। निष्ठीवनम्। चीव्, खाः
पा, वो। दर्पः। चीवति। चेवति। चीवते। प्रावेन चीवते सर्वः चीवते इर्षगर्वितः, कवि ८५।

चु-रुचु, घदा, प। घब्दः। चुतम्।
चर् चीति। चुतः। चुवन्ति। निर्
चुचाव। चुचुवतुः। सुर् चिवता। चृर्
चिव्यति। चुड् घचावीत्। प्रचाविष्टाम्। चुचावाग्रमम्, स १४, ६७। (टु)
चवयुः। चुतम्। चिवता। चुचाविर्
पति। क्रिय् चुत्।

चुद्-चुद्दिर्, त, उ। सम्पेषणम्।

चूर्णनम्। मर्दनम्। जट् चुर्णात्त। चुन्तः। चुन्दन्ति। चुन्ते। चुन्दाते। चुन्दते। चुर्णाद्म सर्पान् पाताले, भ ६, ३८। , तिङ् चुन्यात्। चुन्दीत। सङ् प्रमुणत्। प्रमुन्ताम्। प्रमुन्दन्। षचुना। बिट् चुचोद। चुच्दे। जुट् चोत्ता बृट् चोताति। वते। सुङ् (इर्) यत्तुदत्। यत्तीसीत्। यत्तुदताम्, श्रचौत्ताम्। श्रचुद्रन्। श्रचौत्सः। श्रवुत्ता। अनुत्साताम्। अनुतात। ते तमचौत्सुः पादै, भ १५, ४३। सन् चुत्तुताता •ते। यङ् चोत्तुयते। चार्चात्ता गिच् चोदयति। अवुद्धदत्। चोदयन्ति नः चुद्राः, भ १८, २६। ता चुसः। चोदः। प्र-चूर्णनम्। तस्य प्रचुचीद गदयाङ्गम्, स १४. ३३, ८०।

सुध्-दि. प। बुभुत्ता। सुधा।

बट् चुर्थात । बिट् चुचोध । चुचु-घतः। जुट् चीबा। जुट् चीलाति। कुङ् प्रचुधत्। प्रचुधताम्। सन् चुचु-स्ति। यङ् चोस्रध्यते। चोचोदि। णिच् चीवयति। यचुत्रवत्। त्रुध्यन्तोऽप्य-घसन् व्याचा न त्वाम्, स ५, ६६। चु-धिता, चीधिता, पा १, २, २६ । चु-भितः, पा ६, २, ५२। चुधा।

चुम्-खा, या। दि, क्रा, प।

चोभः। सञ्चलनम्। विकारः। उद्देगः। व्यथा। लट् चीभते। चुभ्यति, फणि-पति: चुम्यति, महाना १, ३०। चुम्।-ति, पा ५, ४, ३८। चुगुतः। चुगु-न्ति। नाचुभादाचसः, भ १७, ८०। य: चुन्यात रिपुष्येव चोभते नानु-जीविष्या। मनागपि मनो यस्य न सुभाति सदाइवे। कवि ५६। सिट् चुचीभ।

चुत्तुमे। रघोरभिभवाग्राङ्कि चुत्तुमे द्वि-·षतां मनः, र ४, २१। नार्थ्ययुत्तिभिरे, भ १४, ६। लुट् चीभिता। लूट् ची-भिष्यति। •ते। प्रचीभिष्यत चेदियम्, म २१, ६। लुङ् पचीमीत्। प्रचीमि-ष्टाम्। अचे।भिषुः। दि, अचुभत्। स्वा, यत्तुभत्, यत्ते।भिष्ट। यसी नापि चा-चुभत्, भ १५, ३८। सन् चुचुभिषति। ०ते। चुचे।भिषति। ०ते। यङ् चोच्च-भ्यते। चोचीब्धि। णिच् चीभयति। चवुच्यात्। च्यितः, चुन्धः, पा ७, २, १८। चुभितं गणम्, भा १३, १०। चीभः। महाइद इव स्थन्, भ ८, ११८। प्र-मञ्चलनम्। प्राचमन् कुल-पर्वताः, भ १५, १५। वि-गिच् विनी-डनम्। विचीभयन् नागः सरः। सना विचे।भिता तै:, भारत। सम्-दः-खता। समस्तं सङ्घु वं त्रेलोकाम्, चग्हो।

चुर्-तु, प। विसेखनम्।

चुरति। चुचोर। चोरिता। यद्ये गैत्।

चेव्-(चोव्)।

चे-भा, प। चयः। चायति।

े चायति दिषतां कुलम्, कवि ११२। वचौ। चाता। चार्यात। प्रचारीत्। त चामः, पा ८, २, ५३।

च्यु — ग्रदा, प। तोच्योकरणम्। लट् च्योति। च्युतः। च्युवन्ति। लिट् चुद्राव । चुद्रापुवतः। लुट् इपविता। लुङ् अच्यावीत्। ता च्यातम्। प्रचुच्यातु-में हा स्त्राणि, म १४, ८१। सम् आ, पा १, ३, ६५। समच्या वत शस्त्राचि, भ १७, ५५। संज्ञ्यावान इवोत्कच्छाम्, भ C, 801

स्म य्—स्मायो, स्वा, घा। विधूननम्।
कम्पनम्। चट् स्मायते। अस्मायतः
महो, भ १४, २१। १८, ७३। चिट्
चस्माये, चस्माये महो। भ १४। २१
बुट् स्मायिता। बुङ् प्रस्मायिष्टं। मन्
चिस्मायिषते। यङ् चास्माय्यते। चास्मात्। चित्र् स्माययति। अविस्माप्त्, पा ७, ३, ३८, ८८। स्मामस्माप्यतां गतेः, भ १४, ८५। (ई) स्मातः।
स्मोल्—(मोल्) भा, प। निमेषणम्।
पन्मभिषच् रावरणम्। स्मोबति।
स्निड्—जिस्निड़ा (जिल्वदाः स्वः, प।

खु च

श्रयत्रशब्दः। कूलनम्। भा, षा, वो। १ स्रेडनम्। २ सोघनम्। व्लेडति। ०ते। न व्लेडेत् (प्रयत्तदन्तशब्दात्मकां व्लेडनं न कुर्यात्), मनुः ४, ६४। (जिया) व्लिडितं सिष्टं तेन।

च्चिद्-चिच्च्दा (चिच्च्दा) भा, प।

श्वाश्चमग्रदः। क्जनम्। भा, चा।
श्वाहनम्। श्योचनम्। श्योचनम्।
दि, प। श्वाहनम्। श्योचनम्।
च्चेदति। श्वे। च्चिच्चित्। चिच्चेद।
चिच्चदे। च्चेदिता। (जिचा) चिच्चेद।
चिच्चदे। च्चेदिता। (जिचा) चिच्चेद।
चिच्चदे। च्चेदिता। (जिचा) चिच्चे।
चिच्चदे। च्चेदिता। (जिचा) चिच्चे।
चिच्चदे। च्चेदिता। (जिचा) चिच्चे।
चिच्चदे। च्चेदिता। प्रच्चेदिताः
परम् (अव्यक्तग्रव्दं कुर्वाणाः), स्थ ७,

च्चेल्—(केलृ) भ्रा, प। चलनम्।

, (ख)

खक्व्—भा, प, वो। हास्यम्। खक्वति। खन्—कृषः, प। भूतमादुभावः। श्रातक्। लोत्पत्तः। उत्पद्धस्य पुनक् त्पत्तः। सम्पत्य पत्तिः, वो। पवित्रो- भावा, वो। नद् खन्जाति। खन-जीतः। खन्जन्ति। निद् चखान। चल्चतुः। नुद्खनिता। नुड् धक-चोत्, घखानीत्। खन् नु, प। घद-न्तः। बस्थनम्। खन्यति। खन्तिः। 'खन्-भा, प। विभोड्नम्।

मन्यः। खजिति। चखाज। खजाका। खञ्च-खजि, भा, प। पाङ्ग्लीम्। गतिवैकल्पम्। खोटनम्। खजिति। चखन्न। खजिता। खजः। खजन् प्रभुजनजनः, नै १४, १०७।

खर्—भा, प। बाकाङ्वा। खटति। चखाट। खट्टिता। खाटः।

खद्या

खह्—चु, प। संवरणम्। गोपनम्। प्राच्छादनम्। खहयति। प्रचखहत्। खड्—खण्ड्—खड्ड (कड्डि) चु, प।

मेदः। भञ्जनम्। खण्डनम्। खाडयितः। खण्डयित। खण्डित। अन्यण्डच्छितिम्, भ१५, ५४। खण्डित। अन्यग्राच्छितिम्, भ१५, ५४। खण्डि खण्डमखण्डयद् वाड्सहस्म, महाना २,
४। खण्डियत्वा। खण्डितः। खण्डनम्। परि—विनाधः। जयः। अखण्डामानं परिखण्डा घतुम्, भ १२, १०।
खड़ि, भा, घा। मन्यः। विलोजनम्।
भञ्जनम्, वो। खण्डतं। चखण्डे।
खण्डिता। मानं खण्डयित खोणां
खण्डते दिषतां धिरः, कवि २६१।

खद्-भा, पा र खैर्थम्। र हिंसा।

् ३ भचणम् । खदति । चखाद । खदि-ता । पखदीत्, पखादीत् । खदिर: ।

खन् चनु, भा छ। खननम्। पनदारणम्। लट्खनित। ०ते। त्विती

जाइबोतीरे कूपं खनति दुर्मति:। बिट् चखान। चख्ने, पा ६, ८, ८८। तुर् खनिता। खर् खनिषति। ०ते। चाशिषि, खांगत्। खन्यात्, पा ६, 8, ४३। लुङ् अखनीत्, अखानीत्। पखनिष्ट। कार्मणि, खायते। खुन्यते। षाना। सन्, ।चिखनिषति। ०ते। यङ् • चाखायते । चङ्घन्यते, पा ६, ४, ४३। चैङ्गिला। चङ्गातः। णिच् खान-यति। श्रचीखनत्। (उ) खनित्वा, खाला। खातः, पा ६,४,४२। खेयम्। खनित्रम्। खननम्। खनिः। खनकः। उद्-उत्पाटनम्। उन्मूलनम्। उच्चे बु हचम, अ १४, ८५। उच्चाते नले-नाचियो तस्य, भ १४, इर। गिरि-सुदखनीत्, भ १४, ४५। वङ्गानुत्-खाय तरसा, र ४, ३८। नि—रोप-षम्। स्वापनम्। प्रवेशः। तंती भुवि निचखुतुः, भ ४, ३। विषादगङ्गस मतौ निचख्ने, स ३, ८। तत्र जयस्त-थान् निचलान, र ४, ३६। भुँजे निचखान सायकम्, र ३, ५५ । निच-खान दूरं वाणान् ध्वजिन्या हृदयेषु, भा 195,09

खस्य (कस्य) भ्वा, प। १ हिंसा। २ गतिः, वो। खस्यति। चखस्य। खस्यिता।

खर्ज — स्वा, प। १ पूजनम्। २ व्यथा। ३ सार्जनम्। ४ कण्डूयनम्। खर्जीता। चखर्जे। खर्जिता। खर्जनम्। यज्जैः। खर्जुरः।

खर्^९ — भ्वा, प। दन्दश्वक्रिया।

दंशन-चिंसनादि। दन्तकरणका-किया, दुर्गा। खर्दति। चेखर्दी। चरिदेता। खबँ—(कर्व) स्वा, प। गितः। दपैः।

• खल्—स्वा, प। १ सञ्चयः।

र चल्नम्, वो। खलित खुले धर्मात्।
खव्—(खच्) क्राा, प। सूतप्रादुर्भावः।
प्रतिक्रान्तोत्पत्तः। सम्पर्शुत्पत्तः,
वो। र पवित्रोभावः, वो। लट् खौः
नाति, पा ६, १४, १८। खौनीतः।
खौनन्ति। हि खौनीहि। लिट् चखावः।
चखवतः। लुट् खविताः।
प्रखावीत्। खवितः।

खष्—(कष्) स्वा, प। हिंसा।
खाद्—खाद्द, स्वा, प। भचणम्।
खट् खादति, खादति प्रक्षमांत्रम्,
हितो। लिट् चखाद। चखदतुः।
दन्तैरोष्ठं चखादं, स १८, ८०। लुट्
खादिता। खृट् खांदिष्यति। लुङ् ब खादौत्। प्रखादिष्टाम्। प्रखादिषुः।
तानखादौत्, स १५,३५। सन् चिखाः।
तानखादौत्, स १५,३५। सन् चिखाः।
विषति। यङ् चाखाद्यते। चाखात्ति।
णिच् खाद्यति। (इट) घचखादत्।
वैदेशों खाद्यिष्यासि राचमैः, स १६,
२३। तां खिभः खादयेद्राजा, सनुः
८, ३०१। खादिला। खादितः। खाद्यम्।
खादनम्। खादकः। सां खादय स्वान्
अष्ठ, सार्ये णिच्।

खिट्—(किट्) स्वा, प। वासं।
भयोत्पादनम्। खिटति। चिखेट।
खेटिता। खेटित व्याचात्। व्याचो जनं
खेटित, दुर्गा। विनापराधमारस्थान् न
खेटित सगानसी, कवि १५५ ।

खिद्-तु, प। परिघृतः।
ृखिद्, दि, क, धा। दैन्यम्। दीनः
भावः। उपतसीक्षावः। चट् खिन्द्रिः,
पा ७, १, १६। खिद्यते। खसुखनिरभिकाषः खिद्यसे लोकहेतोः, मकु ५,

१७। यस तटे सङ्गावित्रनेखियात, मा ४,१२। खिन्ते। खिन्दाते। खिन्दाते। खिन्दाते। खिन्दाते। खिन्दाते। खिन्दाते। खिन्दाते। खिन्दाते। खिन्दाते। खिन्दाते यो ने सत्येषु याचनेषु न खिन्दाते। खिद्यते तेषु येद्देयं दोयमानं न रह्मते॥ किव ६८। लिट् चिखेद। चिखेदे, भृ१४,१०६। हिन्दु खेला। खुट् खेल्याते। कृते। लुङ् सखेल्योत्। खुलेता। खुलेताम्। अखेत्सा,। अखिन्त। अखिन्ताम्। अखिल्यते। सन् चिखिलाति। कते। यङ् चेखियते। सन् चिखिलाति। कते। यङ् चेखियते। चेखेति णिच् खेदयति। अचीखिदत्। खिन्नः। खेदः। खिद्यति। अचीखिदत्। खिन्नः। खेदः। खिद्यति। अचीखिदत्। खिन्नः। खेदः। खिद्यते। परिस्टिता, भ १०, १०। परिस्टिता, भ १०, २८।

खु—खुङ् (उङ्) श्वा, मा। यन्दः। खवते। चुखुवे। खोता। मखोष्ट। खुन्—खुनु (कुनु) श्वा, प्। स्तेयः। खोनति। मखोनोत्। खोनित्वा,

खुद्धा ।

खुण्ड —खुडि, खा, या। खोटनम्। खञ्जयापारः। खुण्डते। खुडि 'खुड'। चु, प। भेदः। खुण्डयति। खोड्यति, वो।

• खुर्—तु, प। १ छेदनम् । २ विलेखनम्, वो। खुरति। खोरिता। खुरः।

खुर्द (कुर्द्ध)।

खेट—खेर-चु, पा श्रदली। भवणम्। खेटयति , खेड्यति। श्रविखेटत्। खेटयखरिवोगंष, कवि १५५।

खेल् — खेलृ (केलृ) स्वा, प । १ चलनम्। कम्पनम्। २ गतिः। ३ क्रीड़ा। खेन् कति। तस्याः कुलै कस्पोऽखेलत्ः छन्दोः

मञ्जरी 8, १। खेलन्ति सञ्जना नित्यं खेलयन्ते च योषितः, कवि ६४। चिखेल। चिखेलुतः। खेलिता। अखे-लीत्। णिच् खेलयति। (न्ह) खिल्या-लत्। खेलितः। खेलनम्। निपीतकाल-लूट्स्य चरस्येवाडिखेलनम्। खेलद-नङ्ग-, गीतगो १, २६। खेला।

खेव्—(जीड) श्वा, चा। सेवा। खे—श्वा, प। १ खेथीम्। २ हिंसा।

३ खननम्। ४ खैदः। खायति। चखौ। चखतुः। खाता। घखासोत्।

खोट—खोड—चु, प। घरनो। खेपचम्, वो। खोटयित्। खोडयित। घचुकोटत्। खोट्ट (खोर्च्ट) भा.प। गत्याघात:। खोटनम्। खोटित खचः, दुर्गा। संखोटित निराययः, विव २६०।

खोट—खोड—खोड—(खोर)। व्या—प्रदा, प। १ वयनम्।

ैर'खातिः, वो। नट् खाति। निष्
खायात्। नज् प्रखात्। अयं माक्
धातुकमात्रिषयः, को १२०। निष्
दो तु चिन्छः खाजादेशे तखेव प्रयोगः।
लट् चखो। चखो। नुट् खाता।
नुट् खाखति। ०ते। धार्माप, खाः
यात्, खोयात्। खाःमीष्ट। नुङ् प्रखात्।
प्रखात, पा ३, १, ५२। कर्माण,
खायते। प्रखायि, तेन मोऽखायि
राघवस्य, भ १५, ८६। मन् चिखाः
सति। ०ते। यङ् चाखायते। चाः
खाति। चाखोति। णिच् खांपयति।

त्रचिख्यपत्। स्थातः। स्थातः। स्थेयः स्थातव्यः। सभि—सभिस्था। शोगा

षिच् "स्थापनम्। तेषां दोषानि

खाष्य, मनुः ८, २५२। भा - कथना

वर्णनम्। पास्यन् वसमस्रो, भ २, २८। उपा-वर्षनम्। प्रत्या-निराकरणम्। उपेचा। उस्तवः। प्रत्याख्यातः, प्रक्त ६, ३२। व्या-व्याख्या। विवरणम्। इहा-न्वयमुखेनेव सर्वे व्याख्यायते मया, मन्नी-नाथ:। प्र, वि—स्थाति:। मम्—संस्था। गणना। संपूर्वस्य स्थातेः प्रयोगो नेति न्यांसन्तारः, की १२०।

(ग)

गन्ध्—(घघ्) स्वा, प। इमनम्। गज्—भ्वा, प। १ मदनम्। हर्षः। २ यब्दः । लट् गजिति । लिट जगाज । जगजतु:। मधीरं जगजुर्गजा:. भ १४, ध। लुट् गजिता। लुङ् अगाजीत, द्यगजीत्। चु,प। ग्रव्दः। गाजयति। गञ्ज-गिज (गुज्) भ्वा, प। प्रव्दः। गञ्जति। गञ्जिता। गञ्जितम्। गञ्जा। नेवे खञ्जनगञ्जने।

गड्—स्वा. प। सेचनभ्। च्रणस्। गडति। जगाड्। गडिता। यगुडीत्, धगाडीत्। णिच् गडयति। घटादिः। गडकः।

गण-प्रदन्तः। चु, प। मंख्यानम्। ं गणना। ज्ञानम्। गणयति। नामा-चरं गणय, प्रकु ६,८०। चिट् गणया-सास. जीलाकमनपत्राणि गणगामास पावती, कु ६, ८४। तां भिक्तिमेशांगण-यहिचागाम्, र ५, २०। सुक्रमितावद-जस्य गण्यताम्, र ८,७०। गणयति च मे सूद्रहृदयम्, शकु ३, २१४। लुङ् चनीगणत्, चनगणत्, पा ७, ४, ८०। भाजीगणहाम्ययं न वाकाम्, स २,५३। स तान नाजीगणत् सर्वान्। स १५, प्, 8प्। ०गगळा, पा है, 8, प्रहा वि—ज्ञानम्। निश्वयः। अदूरवर्त्तिनीं प्राप्तार्था ज्ञानार्थाश्व। लट् गच्छति, पा

सिंखं विगणय, र १, ८८। प्रस्तिन-अपत्तिं विगणय्य, सा २,३५। प्रव— भवजा। भवगणितः।

गण्ड-गड़ि, स्वा, प। गण्डव्यापारः। गगडकम्पनचुम्बनादि। गगडित पांगुना कार्कश्यमिति रमानाय:। गग्डति कपोन: पांग्रना। वेचित्, गगड इति गब्दस्य व्यत्पत्त्रधंमिवायं धातुर्भन्तं व्यो न लेखा-न्यत प्रयोगः, दुर्गा।

गदु—स्वा, प। कथनम्।

लट् गदति, वैदान् गदति विस्पष्टम्, कवि २६५। लिट् जगाद। जगदतुः। जगाद सधुरं वच:, स ७, ८५। लुट् गदिता। लृट्गदिष्यति। लुङ् प्रग-दीत्, घगादीत्। कर्माणि, गद्यते। अ-गादि, तेनागादि सः, भ ५, ३१। दत्यमी जगदे तया, भ ५, ५८। सन् जिगदिषति। यङ् जागदाते। जागत्ति। गिच् गादयति। अजीगदत्। गदि-तम्। गद्यम्। गदनम्। गदः। नि-वायनम्। वर्णनम्। सूपालसिं इंनिज-गाद सिंह:, र २, ३३। इति निगदित-वन्तं राघवस्तं जगाद, भ ३, ५६। प्रणिगदति, पा ८, ४, १७। प्रण्यगादी-त्तर, भ ट. ८८। सारक कतिविच मञ्जगदिरे इति गणकतानिखलात्, दृगी। निगदः। निगादः।

गद- चदन्तः। चु. प। मेघग्रव्दः, वो। गदयति मेघः। यजगदत्। 🔓 गन्ध्—(वस्त) मु आ । श्रदेनम्। गत्थयते। गत्धनम्। गर्तत-हिंसा-याद नेष्वित रमानायः।

🧢 गर्म—गन्तु, स्वा, प। १ गरम् स्। २ प्राप्ति:। ३ ज्ञानम्। सर्वे गत्ववी:

७, ३, ७७। देवदत्तो ग्रामं गच्छति। कां ने मच्छिति घीमताम्, हितो। गः • च्छति पुरः मरीरम्, मञ्जू १, २२८। बिट् जगास ।· जग्मतु:, पा ६, ४, ८८। जगिम्य, जगन्य। जगामासी वनाद्रा-वर्षं प्रति, स ५, ४। पश्चादुसाख्यां सुसुखी जगाम, कु १, २६। तस्मिन-पत्थे न जगास दृप्तिम्; कु १, २७। बुट्गन्ता। बुट् गमिखति, पा ७, २, ५८। लुङ् घगमत्। धगमताम्। ल-च्मणं सागमत्, भ ४, ३०। सन् जिग-मिषति। यङ् (कौटिखे) जङ्गस्यते। जङ्गाता। णिच् गमयति। यजीगमत्। (यापनम्) वेबां गमयति, यकु ३, २१। गला। ०गत्य, ०गग्य, पा ६, ४, ३८। गतः, पा ६, ८, २०। रात्रिगैता सुञ्च थव्याम्, र ५, ६६। गतिः। गमनम्। गन्तुम्। गन्यम्। गन्तव्यः। गमनीयः। गच्छन्। गासुकः। गलरः। चच्छगत्य, पा १, ८, ६८। अस्तङ्गल, पा १, ४, इष। धति—धतिक्रमः। व्यति—व्यति-गच्छिति, पा १, ३, १५ । अधि— प्राप्ति:। जाभ:। ज्ञानम्। अधिगत्य सु-त्तिम्, नै २,१। गुरोरनुजामधिगस्य मातः, र २, ६६ । उन्नायानिधगच्छनाः प्रद्रावैवेसुधास्ताम् (जानन्तः), भ ७, ३७। अनु—अनुसरणम्। सर्वे सन्धर-मनुजाम्:, हितो। सटक्षधनिमन्व-गच्छत्, र १६, १३। अन्त:-प्रवेश:। षप-अपसरणम्। दूरीभावः। व्ययः। तावी नापगतः। प्रातम्क्लेनापजगाम रासः, भ ३, १६। व्यप-विनाधः। अपगमः । श्रमि—डपगमनम् । प्राप्तिः । अव-ज्ञानम्। निञ्चानं गाववान् रामं र्लं कार्यं नावगक्किसि, भ ५, ८१। अव-गन्य कायीकतं वपुः, ज्ञा ४, १३। न

भवति महिमा विना विपत्ते रवगमय विव प्रस्ततः पयोधिः, स १०, ६२। चा-चायसनस् । प्राप्तिः। जानस्। प्राजगाम तत्तीर्धे जलं पातुम्। प्रनङ्ग वयमागता। धर्माणामागतागमम्, सा-रत। (चमार्था) यागमधस्त्र तावत् मा त्वरिष्ठा इत्ययं:, की २४२। उपा-प्राप्ति:। परां तुष्टिसुपागता, भारत। प्रत्या—प्रत्यागमनम्। निर्जित्व प्रत्याः गच्छत्। समा—श्रागमनम्। सम-वायः। उद्—उद्गतिः। ग्रासपीत इवी-इतः, भारतः। प्रत्युद्-प्रत्युद्वतिः। स-कानार्धं पुरोगमनम्। प्रत्यद्वता पार्धिव-धर्मपद्भा, र २, २०। १, ४८। उप-खीकार:। सङ्गम:। प्राप्ति:। समीप-गमनम्। यं सनातनः पितरसुपागसत् खयम्, भ १,१। नीपगच्छेत् खिय-मार्त्तवदर्धने, मनुः ४, ४ । 🛮 🕽 वश्युप घङ्गीकारः। नि—ज्ञानम्। निर्— निर्गस:। निर्देगास रहणमातुः, भा रत। परि-पाप्तिः। ज्ञानम्। वेष्ट-नम्। प्रथमपरिगतार्थः, र ७, ७१। प-प्रसानम्। प्रगमनीयम्। प्रति-प्रतिगमनम्। अवतु प्रतिगच्छामि ताः वत्, यकु १, २।८। वि—त्यागः। विग-तच्चरः, भ ६, ८२। यदा च नो मा व्यममत्, मनु: ३, २५८। सम्—सङ्गः ति:। सङ्गमः। तन सङ्ख्यते, या १, ३, १८। प्राधिष, सङ्गंतीष्ट, सङ्ग-मीष्ट। बुङ्समगस्त। समगत, पा १, २,१३। सङ्क्ला पोंसि स्त्रेणं साम्, स ५, ८१। कपिना समगंसत राचसाः, भ ८,६। बधूवरी सङ्गमयाचकार, र ७,२०। ं गम्ब्—(कम्ब्) स्वा, प। हिंसा। गतिः, वो। गस्वति। 'गर्ज्-भ्वा, ए। सन्दः। 'गर्जनम्।

लट् गर्जात, गर्जात वारिटपटली।
यत् प्रजानासुण्यं देः पर्जन्योऽपि न
गर्जात। गर्जयन्ति कथन्नान्ये भिद्यमानास्तु तस्कराः॥ कवि २२०। निट्
जगर्ज। जगर्जतः। राम्रो जगर्ज, भ
६,३५। नुट् गर्जिता। खट्ट् गर्जिथात।
सुङ् भगर्जीत्। भगर्जिष्टाम्। भगजिष्ठः। सुभाक्षणीऽगर्जीत्, भ१५,२१।
सन् जिगर्जिथात। यङ् जागर्ज्यते।
जागर्ज्ञाः। गर्जे, नु, प। भव्दः। गर्जयति। गर्जनम्। गर्जितम्। गर्जन् हरिः
साम्थसि भ्रेनकुन्ने, भ२,८।

गर्दे—स्वा, चु, वो, प। शब्दः।
गर्देति। गर्देयति। जगर्दे। गर्देभः।
गर्देत्। गर्देयति। जगर्दे। गर्देभः।
गर्दे — (कर्वे) स्वा, प। गतिः।
गर्वे — (कर्वे) स्वा, प। गर्वेः।

गर्वति, नीचो गर्वति सम्पदा, दुर्गी। सर्वी गर्वति विद्याभिः * * विद्याघन-सम्बद्धीऽपि यो न गर्वयते प्रसुः, कवि ७१। जगर्व। गर्विता। धगर्वीत्। गर्वे—चु, धा। घदन्तः। मानः। दर्पः। धइङ्कारः। गर्वयते। धजगर्वत। गर्वापयते धनेनीचः, दुर्गा। गर्वः। गर्वितः। गर्वी।

ं गर्ह् — गल्ह् — भ्वा, घा। कुता।

निन्दा। गर्ही। लट् गर्हते। गल्हते।
न तथा गर्हते खानं स्मालं नापि गहित। गर्हयत्यभ्यपेतार्थत्यामिनं स नरं
यथा॥ कवि १०८। घिपत्त, गर्हते हःदयं स्त्रीणाम्, कवि ३३। लिट् जगर्हे,
जगर्हे खचणानि सा, भ १४, ५८। लुट्
गर्हिता। लट्ट् गर्हिथते। लुङ् अगहिष्ट। घगर्हिषाताम्। घगर्हिषत्।
यन् जिग्हिषते। यङ् जामर्ह्यते।

जागड्हिं। गई, चु, प। कुत्सा। गईयति। गईति, वो। गईितम्। गईणम्। गई। वि—निन्दा। भक्षेना।
निषेधः। कुला कमें विगईतिम्, मनुः
११, २३३। भ ६, १२८। ब्राला बार्थविगईताः, मनुः २, ३८।

गल्-भा, प। १.भचणम्।

२ चरणम्। ३ पतनम्। लट् गलति, खयं द्वाराकारा गस्ति जलधारा जुन-लयात्। सुपताद्यगलत्ततः, भ १७ ८७। बिट् जगालं। जगलतुः। प्रतोदा जगलुः, भ १४,८८। लुट् गलिता। लुङ् घगानीत्। घगानिष्टाम्। सन् जिग-लिपति। जागत्यते। जागल्ति। पिच गालयति। गल्, चु, घा। स्रवणम्। चरणम्। गालयते रत्तं चतस्य। दुर्गा। गिबतम्। गबनम्। विपचे गिबता-दरी, म ५, ४३। गलितवयसामिच्वा कूणाम्, र ३, ७२। गुलितयीवना का-मिनो, काव्यप। गालितमण्ड धोदनैः। श्रव-भंगः। वलयमवागलत् । करा-भ्याम्, मा प, ३४। पर्या-नि:सर्णम । पर्णान्तपर्यागलदच्छविन्दः स २, ४। निर्—निःसरणम्। निष्कर्षः। निर्ण-बिताम्बुगर्भः शरहनः, र ५, १७। इति निर्गे बितोऽर्थः । वि-ध्वं शः । मोच-नम्। विगल्तितवसनम्, गीतगो १३। विगलनानः, भ ८, ४०। रतिबि-गलितबन्धे केयपायी, विक्रमीवैधी।

गलभ्—स्वा, आ। भार्छ्यम्।

प्रगरभता। गरभते। जगरभे। गर्वे रिभता। प्रागमिपियतमं प्रजगरभे, मा १०, १८। चिति हि नाम प्रगरभे, उत्तर १८२। चाजी प्रगरभते दोभ्यां हिषां विघष्टयन् घटाः, कवि १५३। ग्गल्ह्—(गर्ह्) भ्वा, या। कुत्सा।

गवेष-श्रदन्तः। चु. प। मार्गणम्।

चन्वेषणम्। चनुसन्धानम्। गवेष-यति, गवेषयति सत्क्रियाम्, कवि २४७। गवेषणा। गवेषितम्।

गइ बदन्तः। चु, प। गइनम्।
*दुर्वोधः। गइयति गास्त जडघीः,
दुर्गो।

गा-गाङ्, भा, या। गतिः।

्लट् गाते। गाते। श्रादादिकोऽय-मिति इंग्द्रसादयः। फले तु न भेटः, को ८८। बहुवचने तु भेट एव। स्वा, गान्ते। श्रदा, गाते। ए. गै। लिङ् गेत। गियाताम्। लङ् श्रगात। इ, शगे। लिट् जगे। जगिषे। ल्ट् गाता। लृट् गास्त्रते। श्राधिष्ठि, गासीष्ट। लुङ् श्र-गास्त। श्रगामाताम्। श्रगासत। सन् जिगासते। यङ्, जागायते। जागाति, जागित। णिच् गापयति। श्रजोगपत्। गातः।

ा गाव—(व्रण) घटन्तः । चुन्धा । विचूर्णनम् । ग्रीधिल्यम्, वो । गावयते ।

गाध्—गाध्, भ्वा श्रा। १ प्रतिष्ठा।

र लिए। विक्छा। र ग्रस्थः। रचना। लट्गाधते। गाधते नार्थमन्यतः, कवि रेह्द। अगाधत ततो व्योम, भ द, १। लिट् ज्याधि। लुट्गाधिता। गाधितासे नभी भूयः, भ २२, २। ल्टट्गाधिक व्यते। लुङ् अगाधिष्ट। अगाधिषा-लाम्। अगाधिष्ति,। अजगाधत्। गाधनः। गाइ—गाह, भ्या, आ। विलोडनम्।

प्रवेश:। प्राप्ति:। सेवा। लट्गाइते, गाइते शास्त्रमत्यर्थम्, कवि २६८।

मनस्त में मंत्रयमेव गाइते, कु ५,

8६। गाइन्तां महिषा निपानसनि-लम्, प्रकु २, ४२। सिट् जगाहे। जया-हिषे, जघाचे। 'जगाहिष्ये, जगा-हिंदू, जञ्चाद्वे। जगशीं बाह इवान पगां जगाहे, भा १२, २४। जगाहे यां नियाचरः, स ५, ८४। जगाहिरे सा-र्गान्, भ २, ५४। लुट् गाहिता, गादा। लृट् गाडिव्यते, घाचाते। पाणिवि, गाहिबीष्ट, घाचोष्ट । जुङ् यगाहिष्ट । पगान्निवाताम्। अगान्निवतः। अगार्छ। ष्रघाचाताम्। ष्यघाचतः **ष्यगादाः**। अघादुम्। अघाचि। सन् जिगादिपते, जिघाचते। यङ् जागाचाते। जागादि। णिच् गाइयति। प्रजीगडत्। गा-हिला गाढुा। गाढुः। तपस्तिगाढा तमसा नदी, र ८, ७२। अव-अव-गाइनम्। प्रवेश:। पूर्वापरी तोसनिधी वगाद्य, कु १, १। गिरिसवगाडावरी, मर्द, २८। धवगाडियसे दियः, स ९६, ३८। वि— शवगाडनम्। निस्रकाः नस्। स्वानस्। प्रविशः। विसीड्नस्। गतिः। विगाद्य तमसाम्, र १४, ७६। विगाहितं यासुनमञ्जु, स ३, ३८। थब्दगुणसालानः पदं विसानिन विगाह-मानो इरिः, र, १३, १। विगान्न-माना सरयू नीभिः, र १४, ३०। सम्-विजोड्नम्। भाक्रान्तिः। सम-गाहिष्ट चास्वरम्, स १५, ६८।

गु—गुङ् (उङ्) खा, था। यदः।

प्रव्यक्तभव्दः। गवते। जुगुवे। गोता। गोष्यते। प्रगोष्ट। जुगूपते। कोग्यते। जोगोति। गावयति। प्रजूगवत्। क्रा, गुतम्। गुवाकः।

ृगु—"गू" तु, पाः सन्नत्वामः। पुरीषोक्षमः। गवति। जुनाव। जगुः विथ, जुगुथ। गुता। गुष्यति। अगु-पौत्। अगुताम, पा ८, २, २०। अ-गुषुः। गू—गुवति। गुविता। अगुवोत्।• ता, गूनः, कौ ३४०। गूथम्।

गुज्—भा, तु, प। शब्दः। कूजनम्।
गोजिता। जुगोज। गोजिता। धगोजीत्। तु, गुजिति। गुजिता। धंगुजीत्।
गुज्ज् —गुजि, भा, प। श्रव्यक्तशब्दः।

क्रैननम्। लट्गुद्धात। लिट् जुगुद्ध।
न षट्पदोऽसो न जुगुद्धाः कलम्,
भ र, १८। गुद्धा जुगुद्धाः, भ १४, र।
लुट् गुद्धिता। लुङ् घगुद्धोत्। गुद्धिन्
तम्। गुद्धनम्। गुद्धा।

गुड्—तु, प। १ रचणम्। २ व्याघातः। वो। गुड्ति। जुगोड्। गुड्ति। गुड्तिः। गुड्ः। गुड्का।

गुग्छ-गुठि, चु, प, वो। वेष्टनम्।

गुण्डयति। गुण्डति। अजुगुण्डत्। भव-भवगुण्डनम्। भावरणम्। शिरः-प्रच्छादनम्। भवगुण्डितः, मृतुः ४, ४६। रक्षाः ३, ७१।

गुण्ड्—गुड़ि, चु, पः। १ वेष्टनम्। २ रचणम्। ३ चूर्णीकरणम्। पेषणम्। गुण्डयति। गुण्डति। धनुगुण्डत्। गुण्डितः।

गुण-(कुण) अदन्तः। चु, प।

१ श्रामन्त्रणम्। २ श्रम्यासः । ३ गुण-नम्। पूरणम्। इन्तिः पूर्त्तिः गुणने इत्यङ्गविदः। गुणयति। गुणितम्। गुण श्रास्त्रे इने, गुणिनका इति मसी-नायः। सा २, ७५।

गुद्—(कुद्ध) भा, घा। क्रीड़ाः गोदते। जुगुदे। गोकिता। घगोदिष्ट। गुम्-भूग, घा, वो। क्रीड़ा। दि, प। पिवेष्टनम्। क्राा, प। रोष:। कोप:। सट्गोधते। गुध्यातः। गुध्यातं, गुध्यातं, गुध्यातं, गुध्यातं, गुध्यातं, तद्दुगं तत्चणादेव गुध्यातं, कित् जुगोध। जुगुधे। स्वट्गोधिष्यातः। जुगुधे। स्वट्गोधिष्यातः। व्ति। स्वर्गोधिष्यातः। व्ति। स्वर्गोधिष्याः। प्रिक्षाः, पाः १, २, ७। गुधितम्।

गुन्द्र—(कुन्द्र) चु, प्। मिथोक्तिः। गुप्—गुपू, भ्रुा, प। रचणम्।

लट् गोपायति, पा ३,१,२८। गोपा-यति इति: श्रियम्, भ १८,२३। लिट गोपायाञ्चकार, जुगोप। जुगुपतुः। जुगोपिथ, जुगोप्थ। जुगोपासान-मत्रस्तः, र १, २१ । २, ३। लुट् गीप्ता, गोपिता। गोपायिता, पा २, १, ३१ । जुट् गोप्राति, गोपिष्यति, गोपायि-चित्। चाचिषि, गुप्यात्। गोपास्यात्। लुङ् प्रगीपीत्। घगीपाः। घगीपाः। भगोपीत्। अगोपिष्टाम्। अगोपिष्ठः। यगोपायीत्। यगोपायिष्टाम्। यगो-पायिषुः। यानगोशीनाखेषु सः, भ ५, ३०। श्रगोपिष्टां पुरीं लङ्कामगौर्या रचमां बलम्, भ १५, ११३। सन् ज्गु-पति, जुगुपिषति, जुगोपिषति, जुगो-पायिषति । यङ् जागुप्यते, जोगो।स । चिच् गोपयति। अज्युपृत्। गुप्तः। गोप्ता । गोपनम्। गोपायति चिति-मिमां चतुरस्थिषीमां घीमानधमीवचनाच जुगुप्तते यः। वित्तं न गोपयति यस्तु वनीयकेम्यो धीरो न गुप्यति सहत्यपि कार्यजाते॥ कवि ६। प्र, निर्—रच-षम्। प्रगीपयाञ्चकौर पुरम्, स 28, ८७। निजुंगीय निशाचरान्, भ १४,१०६। सुप्⊢भा, था। गोपनम्। अपक्रवः।

प्—मृा, भा। गापनम्। भपक्रवः। निन्दा। जुगुप्सा। गुपेर्निन्दायां पन्।

गोपने तु णिच्, कौ, १०१। अधर्माज्-जुगुप्सते, पा ३,१,५। जिट जुगुप्सा-चक्री। सा जुगुप्साम्प्रचक्रेऽस्न्, भ १४, ५८। लुट् जुगुप्सिता। लृट् जुगु-्प्सिष्यते। लुङ् श्रज्जगुप्सिष्ट। श्रज्जगु-प्सिषाताम्। प्रज्ञगुप्सिषत। किं त्वं मामजुगुप्सिष्टाः, भ १४, १८। सन् जुगुप्सिषते, पा १, ३, ६२। (गोपने णिच् । गोपयति गोपते, वो। विं काञ्ची विजहासि कङ्गणभानत्कारञ्च किंगोपसे। राधाया वचनं नन्दान्तिके गोपतो गोविन्दस, गीतगो ६, १२। निज्गोप इषेमुद्तिम्, भा ६, ३८। इत्यादी परस्मेपदमपि। गोपनीयं कम-प्यर्थे कोर्तायला, दर्पणः। प्रव क्रिया-पदं गुप्तं बुधेरिय न बुध्यते, विदम्ध-सुखमण्डनम्। नवनखपदसङ्गः गोप-यस्यं युक्तेन, दर्पेण्।

गुप्-दि. प। व्याकु बलम्।

गुष्यति । जुगोप । जुगुपतुः । गो-पिता । गोपिष्यति । प्रगुपत । प्रगुपताम् । गुप् (जुप्) चु, प । १ दीप्तिः । २ गोप-नम्, वो । गोपयति ।

गुफ् गुम्फ् गुन्फ्, तु, प। प्रत्यनम्।
गुफ्ति। जुगोफ। गोफिता। गुम्फिति।
जुगुम्फ। गुम्फिता। अगुम्फीत्। गुफित्वा। गुम्फित्वा, पा १, २, २३।
गुम्फित्वेव निरस्यन् तरङ्गान्, भ ७,१०५।
गुम्फितम्। गुम्फनम्।

गुर्-गुरी, तु, मा। उदामनम्।

विश्वगोरणम्। ग्रुरते। युक्तेऽपि यो कोट्गुरते स्वधमीवत्, कवि ५१। जुगुरे। गुरिता। गुरिखते। अगुरिष्टा (ई) गूर्णः। गुरुणम्। अप—णमुल्, अप- गारसपगारम्। भपगोरसपगोरस्, पा ६, १, ५३। भव—ताङ्नार्थे दग्डा-दीनासुद्यसनस्। ताङ्गम्। ब्राह्मणा-यावगूर्थे वधकास्त्रयां, सनुः ४, १६५। न डिजेऽवगुरेत्, सनुः ४, १६१। सद्— स्त्रेतेपः। स्टगुरियत दुमान्, सः१५,३४।

गुद्° (कुद्°)।

गुर्वे,—गुर्वी, भा, प। उद्यमः। ताड़नाभिषायेण दण्डाटेक्डीं करः णम्। गूर्वेति। जुगूर्वे। प्रगूर्वीत्। (ई) गूर्थः।

गुइ-गुइ, मा छ। संवर्णम्।

षाच्छादनम्। गोपनम्। पपञ्चवः। लट् गुहति। ०ते, पा ६,४,८८। गृहित् कूमं इवाङ्गानि, मनु: ७, १०५। सिट् जुगूह। जुगूहिय, जुगोढ। जुगुही। जुगूहिषे, जुघुच। जुट् गूहिता, गाठा। लुट् गूडियति। •ते। घोष्यति। •ते। ग्रिचामि चिति कत्तरेख गावेदैनीक-साम्, भ १६, ४१। श्राधिव, गुह्यात्। ग्हिषोष्ट, वृज्ञीष्ट। जुङ् चग्रीत्। भगू चिष्टाम्। भगू चिष्ठः। इड्झाबे काः। श्रुचत्। श्रग्हिष्ट। श्रगृहिषाताम्। अगूहिषत। पत्ते, अगूढ, अधुजत, पा ७, ३, ७३। अधुचाताम्। अधुचन्त। श्रगृहिष्वहि, श्रगुह्वहि, श्रवुचाविह । ष्रगृहीच्छायकेदिंगः, स १५, ८८। सा घुचः पत्युराकानम्, स ६, १६। र्मण गुच्चते। प्रमृहि। सन् जुघुचित। ॰ते. पा ७, २, १२। यङ् जीगुह्मते। जोगोढि। णिच् गूहयति। अनुगुहत्। ग्रिता, गृद्धा । गृदः । गृह्यम्, गोह्यम् । गूडनम् । गूडनीयम् । गूडमानः स्वताः हालाम्, भ ८,४५। उप-उपगर्नम्।

गूर्-गूरो, दि, घा। १ हिंसा।
२ गितः। गूर्थते। जुगूरे। गूरिता।
घगूरिष्ट। गूर, चु, घा। उद्यमः। गूरयते। भन्ने घु नोद्गूर्यतेऽस्त्रमाहने। या
गूर्थते स्रोरिष यस्य सम्बुखम्॥ कवि
५१। (ई) गूर्षः। उद्-उत्चिषः। उद्युगूरे ग्रेजम्, भ १४, ५१। घव—घवगोरषम्। ताड्नोद्यमः। घवगूर्थ तब्द्यतं
सहस्रमभिहत्य च नरकं प्रतिपद्यते, मनुः
११, २०६।

गूर्दं — भ्वा, घा। वो। क्रीड़ा। गूर्दते। गूर्दं, चु, प। निकेतनम्। क्रीड़ा, वो। गूर्दंगति।

ग्ट-भ्वा, प । सेचनम्।

चट्गरति। जगार। जयतुः। गर्ता। गरिष्यति। ग्रियात्। धगार्धीत्। जिगी-र्षेति। जेगीयते। जर्गत्तिं। गारयति। धजीगरत्।

ग्टन्-ग्टन्-ग्टनि, (गुन्न) स्वा, प । शब्दः । गर्निता । जगर्ने । गर्निता । षगर्नीत् । ग्टन्निता । जग्टन्न । ग्टन्निम् ।

ग्टध्—ग्टधु, दि, प। भाकाङ्गा।

ग्रध्यति, न ग्रध्यति परद्रव्यम्, कवि २५४। नगर्षे। गर्षिता। गर्षिव्यति। प्रग्छित्। निगर्षिति। नरीग्रध्यते। जरीगर्षि। णिच् गर्षयति। (प्रनम्भने) गर्षेयते, पा १, ३, ६८। न च गर्षयते प्रम्म, कवि २५४। प्रच्छनः सोऽगर्षे- यत राचसान्, भ ८, ४३। (ड) गर्डिला, यद्धा। यदः। गर्डनः। यद्धः।

्यह्—ग्टइ, स्वा, द्या। १ गईंगम्। २ यहणम्। गईंते। जग्रहे। लग्र-हिषे, जप्तते। जग्रहिद्धे। जग्रहिद्धे,

ज्ञाहका जन्म जिल्हाहका जन्महिक् ज्ञाहको। गर्हिता, गर्हा। गर्हिकते, चर्चते। गर्हिषीष्ट, ष्ट्रचीष्ट। प्रगहिष्ट, प्रष्टचत । कविरद्द्सीऽप्रययम्। दिषां ग्रह्मते थिरः, ३३। ्ग्रहाः।

ग्टहम् ।

गृ—तु, प। भचणम्। क्राा, प। ग्रव्हः। स्तुति:। उत्ति:। बट् गिरति। गिवति, पा ८, २, २१। ग्रेगाति। ग्रेगीतः। ग्रणन्ति। भीताः प्राञ्जलयो ग्रणन्ति, गीता ११, २१। पौराणिका खेष्टितानि ग्टणन्ति, धनर्षे १८। ग्टणाति सुभगं वचः, कवि २५८। लिट् जगार। जग-रतु:। जगरिय, जगन्तिय। लुट् गरिता, गिलता, गरीता। लुट्गरिष्यति, गरी-. चिति। बाधिषि, मोधीत्। तुङ् बगा-रीत्। घगारिष्टाम्। घगारिषुः। सन् जिगरिषति क्यादिः, जिगरिषति जिगी-र्षेति। पा अशिष्ठ । (मावगद्दीयां यङ्, पा १, १, २४।) जेगिखते, पा ८, २, २ । जागत्ति। णिच् गारयति। अजी-गरत्। गृ, "गृं चु, या। १ विज्ञानम्। विज्ञापनम्, वो। गारयते। कर्माण्, गीर्थ्यते। गीर्णः। गिलितो वक्तेनेति गिलः थव्दासिच्। गौर्णः। ऋषि स्तुतिः। वर्णनम्। घव—घा, पा १, ३, ५१। भवगिरते। भवगिनते। भवगिरसाणाः पिशाचा सांसभी जित्रमु भ ८, ३०। ग्रणातिस्ववपूर्वी न प्रयुज्यत इति भाष्यम्, को २५३। घनु, प्रति—प्रोबाइनम्, पा १, ४, ४१। ग्टगद्भ्योऽनुग्टबन्खन्छे, भ ८, ७७। छट्-वमनम्। खेइस्राहरन्,

वनदेवताभिः, र २, १२। उद्यास्त्रता

किन्नराणाम्, कु १, ८। उप—ग्रदः।

मा १४,१। स तस्य यासनसृज्यगार, र १४,५३। विचेपणाद्रागमिवीद्गिरन्ती चरणी, कु १, ३३। नि—निगरणम्। निजेगिन्यते, पा १, १, २४। सम्— प्रतिज्ञा। सिक्करते, पा १,३,५२। सिक्क-रन्ते गोष्ठीषु स्वामिनी गुणान्, भ ७, ३१। वस्नि देशांय निवत्तिय्यम् रामे भ्रष्टाः सिक्करमाण प्रव, भ ३,८।

गेप्—गेष्ठ (जेष्ठ) चेवा, था। १ कस्पनम् । २ गति:।गेपते। (ऋ) चित्रगेपत्।

गेव्—(बेष्ट) म्वा, घा। सेवा। गेव्—गेवृ, भ्वा, घा। घन्तिच्छा।

पन्वेषणम्। षतुसन्धानम्, दुर्गा। गेषते। निगेषे। गेषिता। प्रगेषिष्ट। प्रनिगेषतः।

गै—(कै) भा, प। शब्दः।

गानम्। कीर्त्तनम्। लट्गायति।

गायेयुः साम सामगाः, स १८, १३ ।

लिट् जगी। ब्रह्मपारायणं जगी, उत्तर-चरितम्। जगुः सरागम्, भ ३, ४३। १३, २८। लुट्गाता। लृट्गास्वति। बाधिषि, गैयात्, पा ६, ४, ६७। लुङ् बगासीत्। अगासिष्टाम्। बगासिषु:। कर्मीण, गीयते, पा ६, ४, ६६। गीय-ताम्, शकु १, १२। भगायि। सन् जिगा-सति । यङ् जेगीयते । जागीति, जागाति। णिच् गाययति। अजीगपत्। जयोदा-इरणं बाह्रोर्गापयामास किन्नरान्, र ४, ७८। गीर्ला। •गाय, पा ६, ४, ६८। गीतम्। गीतिः। गायकः। गायनः। गैयोऽयं सास्ताम्। गायकः। गानम्। षतु—मञ्दः। चनुजगुरष दिव्यं दुन्दुभि-ध्वानम्, भा ३, ६०। श्रव-निन्दा। छद्- छचैगीनम्। छद्रीयमानं यशो उपगीयमाना स्त्रमरैवनराजयः, भारत।
सङ्गुलेक्पगीतवने, कन्दीमञ्जरी १२,२।
नि—पाठः। जुनयो निगमेषु निगीताः,
मनुः;८,१८। परि—कीर्त्तवम्। माम्बाहः
यव्दो लोकेषु परिगीयते, भारत। प्र—
यव्दः। ऋषम् क्रमगाद्धकुः प्रशीतं माम् गैरिव, स ६,८०। वि—गर्हा। निद्या।

गोम—घदन्तः। चु, प। सेवनम्। गोमयति स्थानम्। अञ्जगोमत्।

वितक विगोयसे शिवेन, नै १, ५८। सां

प्रस्य नयसस्त विगोतः, धनधे १५।

गोष्ट्—स्वा, था। सङ्घातः। रागीकरणम्। गोष्टते धान्धं स्रोकः। यथ्—प्रन्य्—यथि, स्वा, था।

्र कोटिच्यम् । वक्रीभावः । २ कुटिको करणम् । प्रेन्यते काष्ठं, ग्रन्यते कर्ता वासुः । जग्रन्ये । ग्रन्थिता । प्रमृत्यिष्ट । 'भ्रथते' । '

यत्य् - क्रा, प। सन्दर्भः। रचना।

यन्यनम्। चट् यथाति साकाम्। यथीतः। यथुन्ति। काचं सणि काचन मेकचले यथुन्ति स्ट्राः। किङ् प्रशे यात्। चङ् अयथात्। अपश्रीताम्। अयथुन्। यसलोकसिवायथादाचमैर्दतैः स १७. ६८। किट् जयन्य। जयथतः

जयन्यतुः। ग्रेथतुः, को १६०। तुर् यन्यिता। लृट् ग्रन्थियति। याणिष, यप्यात्। तुङ् यग्रन्थीत्। सन् जिग्रन्थ

षति। युङ् जाग्रथते। जाग्रसि। णिच् ग्रन्थयति। ग्रन्थ (श्वरुष) चु

पा सन्दर्भः। राज्यमञ्जा

बस्वनम्। अस्यनम्। ग्रन्थयति। ग्रन्थति। "यथ" याथयति, ग्रथति। गायां ग्रन्थयति प्रसवस्तितां स्रोकञ्च यो बन्दित, साव्यं यावयति स्कुटार्थम-धुगम्। यथति यः श्लिष्टाचरं नाटकम्, कवि १२। यन्यिमुद्यवयितुं द्वितेथी, मा १०,६३। कमीमयं ग्रधितसुद्यथ-यन्ति सन्तः, भाग ४।२२।३७। षयं चु-रादिस्तिवे नेत्यन्ये। वस्तुतस्तु नाम-भातुरयम्। प्रथित्वा, प्रत्यित्वा, पा १, २,२३। ग्रिधितः। ग्रन्थनम्। ग्रन्थः। यथितमी निरसी वनमालया, र ८, ५३। क्क समेर्थियतां सनम्, र ८, ३५। कची ग्रन्थितंव स्थितं तीयिषम्, भ ७, १०५। **उद्-बन्धनम्।** जताप्रतानोद्ग्रथितै: स किशै:, र २, ८। सम्—रचना। प्रियेन संग्रथ स्नजम्, भा ८, ३०।

यस—प्रमु, स्वा था। भचणम्।
यात्रमणम्। लट् यसते, यावतो
यसते यासान्, मनुः ३, १३३। डिमांधमाध्र प्रसते, मा २। ४८। जिट्
जयसे, अयसे जालरात्रीव वानरान्, म
१४, ४३। लृट् यसिषते। लुङ् ध्रयसिष्ट्। सन् जियसिषते। लागस्यते।
जाप्रस्ति। जिन् यास्यति। यस, चु,
प। १ प्रचणम्। २ यासः, वो। प्रास्यति।
यसति, यससि तव मुखेन्दुं पूर्णचन्द्रं विषया। जस्तुः। रोगयस्तः। विषद्यस्तः।
यासः। यिख्यः। यसि—धात्रमणम्।
सम्—विनायः। संयस्यतेऽसौ पुरुषाविभ्रते, म १२,४।

यह् नाता, जा ज्यादानम्। यहणम्। स्त्रीकारः। धारणम्। मातिः। ध्वसम्बनम्। धाययः। स्ट्रैग्टह्माति, प्रकृति,१६६। ग्टह्मीते। सिङ्ग्टह्मीयात्,

रुह्मीत्। न नामापि रुह्मीयात् पत्वी मेते परस्य, सनु: ५,१,५३। मरदीह न रहीयात्। न चेत् स सम रही-यादवः, भारत। हि ग्टहाण्। ग्टहाण् मखंम्, र ३, ५१। लङ् मग्रह्णात्। घरहोताम्। घरहत्। घरहीता षग्रहात् तं मत्यं पाणिना, भारत। जयहिया। जयहे। बिट् जग्राह। ज्याद केंग्रेषु तम्, भारत। तपसी मूलमाचारं जयहः, रं, ११०। लुट् यहौता, पा ७,२,३७। लुट् यहीस्यति। •ते। प्राणिष, ग्रह्मात्। यहीषीष्ट्र। लुङ् मग्रहीत्, पा ७, २, ५। अग्रही-ष्टाम्। घयहीषुः। घयहीष्ट। घयही-षाम्। प्रवहीषतः। ताभ्यो बलिमय-होत्, र १, १८। अभे धृतराष्ट्रादयहीत् सा, भारत। प्राणानग्रहीहिषाम् (निः ग्रहीतवान), भ ८, ८। बायुरग्रहीत्, भ १५, ६३। कर्भीष, ग्रह्मते। जग्रहे। .यहीता, याहिता। यहीव्यते, याहि-व्यते। यहीषीष्ट, याहिषीष्ट। अवाहि। षयदोषत, षयाहिषत, पा ६ 8, ६२। नेववक्रविकारेस ग्रह्मतेशन्तर्गतं मनः, मनः, ८, २६। जग्रहाते तौ रचसा, भ ६, ४४। सन् जिल्लाता •ते, पा ७, २, १२। १, २, ८। यङ् नरीरहाते, पा ६, १, १६। जायादि। (जरीगार्ट जरीयहीत इति नेचित्) नाग्टटः। जरीग्टढ इति,विश्वत्। शिक् याच्यति। प्रजियहत्, प्रजियहत्तं जनको धनुस्तत्, भ २, ४२ । अयाचि-तारं न सुतां ग्राइयितुं ग्रमाक, कु १, ५३। इदं शास्त्रं मां याच्यामास, मनुः १, १५। याइयिलाइमालानं ततो दम्या च तां पुरीम्, भारत । ग्रहीला । •ग्रह्म । ग्रहीतः । यहः । यहणम् ।

, यहीतुम्। यहीतव्यः। याद्यः। यही-ता। याही। याहकः। ग्रह्मन्। पाणि-याणियहणम्। परिणयः। पाणिं ग्ट-ह्यातुम, चण्डी। श्रनेन पाणी विधि-वद् ग्रहोते, र ६, ६३। पाद—पाद-यहणम्। प्रभिवादनम्। तयोर्जय्यतः यादान् राजा राष्ट्री च, र १, ५८। व्यति चारिक्रस्य, यहणम्। चारिक्रतीः ऽतिग्रहाते, पा ५, ४, ४६। अनु—अनु ग्रहः। मद्दालानीऽनुग्रह्मक्ति भजमा-नानरीनपि, मा २, १०। कुटुम्बिनीम-नुग्रह्मीष्य निवापदत्तिभिः, र ८, ८७। अव-अनादरः। निग्रहः। गमहानवः रह्य साध्यः, सा ५, ४८। अवस्टब्रं यदम्, पा ३, १, ११८। भवगाषः। अवग्रहः। प्रभि-प्रपित्रकीर्या कल इ। हानम्। उद्-उद्यमः। शक्तिमुद-बहीत, भ १५, ५२। णिच्, उपन्या-सः। शास्तं यत्तवीद्याद्यते पुरः, मा ूर, ७५। मीजियहः सुनीतानि, स १५, २०। उप-परियद्धः। प्रव्यवदा-यिनं प्रमदेव बहवतिं नेच्यत्यपग्र हीतुं बच्चीः, हितो। षिच्, उपहारः। उप-बाह्यः। नि-निवहः। पीड्नम्। गट-हाण चापं निग्टहाण ताड्काम्, अनर्घ अथ्। , निग्रहीतधेनुः सिंहः, र २, ३३। बम्यासनिग्रहीतं मनः, र १०, २२। राजां यशांसि निजिष्टचियान्, भ ३, ३०। परि-परिग्रहः। बादानम्। खोकारः। खपुरमगात् परिग्टहा राम-कान्साम्, स ४, १०८। ज्ञानेन परि-रुह्म साम्, अनुः २, १५१। प्र-प्रकर्षेण ग्रहणम्। बाह्वं प्रग्रह्याभ्यद्वत, भा-रत। प्रयस्तासभीषवः, शकु १, ३०। प्रति-प्रतिग्रहः। स्तीकारः। साभः। प्रत्यमधीष्टां तावासनादि, स २, १६।

प्रतिग्रज्ञीयात् मनुः १% सर्वत: विधिवत् प्रतिग्रह्म बान्वाम्, 2021 मनु: ८, ७२। 'तथेति प्रतिजगाइ गुरो-रादेशम्, र १,८३। प्रतिजयादः। काः लिङ्गस्तमस्त्रेः, र ४, ४२ h प्रतिग्रहीतं ब्राश्चयवच:, ग्रकु १, ४०। वि—िक यहः। सम्पृहारः। यदा विख्ञाति तदा इतं यशः, भा १४, २४। विस् नमुचिद्या, मा १, ५१। यत्कते दरीन व्ययन्त्रीम, भ १७, २३। बन्धुना वि-ग्रहीतः, भ ६, ८६। व्यक्तिष्टचत् स् रान्, भ १७, ३८। सम्-संग्रहः। ग्रह्—ग्रह, चु, प, वो। ग्रहणम्। याच्यति। यदति। षयं वेट्। यहीः ता। यादा। पयडीत्। प्रवाचीत्। म्बह्न, म्बाइयति । म्बहति । अम्बहीत। याच्यत दखेके। षघाचीत्। याम-बदन्तः। चु, प। शासन्तगम्। षाभाषणम्'। यामयति । षजयात्त्। युर्-युर्, भ्वा, प। १ स्तेयकारणम्। र गमनम्, वो। ग्रोचित । जुगोच। ग्रोचिता। अग्रचत् अग्रोचीत्, पा ३ १, ५८। (उ) ग्रोचित्वा, गुक्का। युक्कः।

ग्लस्—(यस्) भ्वा, घा। भज्ञस्। ग्लड्—(यझ) भ्वा, घा, वो गर्थस्। ग्लडते। ग्लइ, चु, य, वो। घाटानम्। ग्लुच्—ग्लुचु (युष्टु) भ्वा, या। १ चीर्यम्। २ गमनम्। ग्लोचति। जुग्लोच। ग्लो चिता। घग्लुचत्, घग्लोचीत्, या १

१, ५८। बह्ननासम्बुचत् प्राचानको चीच रचे यमः, स १५, ३०। (छ) को चिला, म्बुका। म्बुकाः।

ंग्लुच्—ग्लुन्चु, भ्वा, प। गतिः। ग्लुचिति। जुग्लुच। ग्लुच्चिता। चग्लु चत्, चग्लुचीत्, पा१, ३, ५८। चन्

घट

नासिकलोपाभावमिक्कृन्ति। प्रम्बुचिदिति प्रदः पः । ग्लुचित्वा, ग्लुका।।

क्वे प्-कि पृ, भ्वा, था। दैन्यम्। ग्लेष्ट (बेष्ट) स्वा, था। १ कम्पनम्। र गति:। ग्लोपते। (ऋ) खनिम्लोपत्। ग्बेपित:।

क्लोव्-क्लोह (केह) भ्या, था। सेवा। ग्बे वते। जिग्बेव। (ऋ) प्रजिग्बेवत्। म्बेष्—म्बेषु (गिषृ), भ्रा, भा।

षन्वेषणम्। षनुबन्धानम्, दुर्गा। ग्बोषते, ग्बोषते यः सतां मागॅमिति इलायुधः।

ग्लो - भा, प। इर्षचय:। धातुचय:। समः। लट् ग्लायति, न हृष्यति न ग्लायति, मनु: २, ८८। जिट् जग्लौ। जंग्बतुः। बुर्ग्बाता। खर्ग्बास्वति। षाशिषि, ग्लेयात्, ग्लायात्, पा ६, ४, ६८। लुङ् अग्लासीत्। अग्लासिष्टाम्। अग्वासिषु:। सन् जिग्लासित। यङ् जागायते। जाग्बेति, जागाति। जिन्द्, (चनुप्रसर्गेस्य) गुापयति, गुपयति। ग्बपमति कुमुद्दतीं दिवस:। यकु। (सोप्रसर्भस्य) प्रग्लापयति। श्राजिगुपो वैराणि, भ १५. १८। गूपितः। ग्लानः। गुम्हा गानि।

(됨)

ा वघ् वग्च गग्घ मा, प। इसनम्। घवति। घग्वति। गग्-घति, वो।

घट्-भा, था। चेष्टा। यतः। सट् घटते। नानभीष्टे घटामहे, भ २०, २४। घटेत सन्यादिषु गुम्रेषु, स १२, २६। तथापि, पुंतिशेषलाद घटतेऽस्य नियन्तृता, पचद्यो ६,१०६। बिट् जघटे, जघटे तुरगाध्वरेण यष्ट्रम्, भ २२, ३१। लुट् घटिता। खट् घटि-थते। न घटिये जीवितुम्, भ १६, २३। लुङ् अघटिष्ट,। अघटिषाताम्। षघटिषत। तेन समं योद्रमघटिष्ट, भ १५, ७०। सन् निघटिषते। यङ् नाघ-वाते। जाघदि। शिच् घटयति, पा ६, ४, ८२। प्रजीघटत्। कर्मण, घट् यिता, चटिता, घाटिता। प्रवाटि । प्रजीबटत । (निबोगः) मां वत् घटयति, भ १०,७३। (विधानम्) तद् घटयस्त, भ १२, ५। (योगः) द्वदयं तस्य घटयन्तीदमन्त्रीत्, भारतः। गावाणि गावेघेटयन्, स ११, ११। यनेन भेमीं घटियायता, ने १, ४६। घटय भुज-घटय जवनमपिधानम्। बन्धनम्। घटंय जघने काञ्चोम्, गोतगो ४, १३, १०। ३, १३, २५। अन्यथा घटियामि, शकु। घटित:। काष्ठ-घटितवेतालः, इतो। घटनम्। घटना। घटा। घटकः। उत्कर्छा घडमान-षट्पदघटा, दर्पणः। प्र—को विम्ब-जनीनेषु कर्मेषु प्रावटिष्यत, भ २१, प्रजघटे युद्धम्, भ १४, ७०। वि—विश्वेष:। मेदः। विज्ञघटे ग्रेलेः, भ १४, ६६। मन्त्रिणा पृथिवीपाल वित्तं विघटितं कवित्। कः संस्थातु-मोखरः, हितो। दृष्ट्रैव यं विघटते कोपा-चेवी सगीद्याम्। विघाटयति चास्कोटे वैरिणां करिणां घटा॥ कवि २००। सम्—संघटनम्। योगः।

घट्-(कुप) चु, प। दीप्तिः।

घट, चु, प। १० संघातः। योजना। २ वर्षः। घाटयति कपाटं दारि जनः, दुर्गा। उद्—उद्दाटनम्। सञ्जूषां यन्त्रे ब्हाटयामास । दारस्वाटयासि, भारत। कार्यमुद्दाटितं कापि मध्ये विघटते, हितो। कमज्वनोह्वाटनं कुर्वते ये। प्रविघाटयिता समुत्पतन् हरिदम्बः कमजाक्रानिन, भार, ४६।

घम्

चह्—भा, या। चलनम्।

प्रवृति। जघहे। घहिता। यघिष्टि।

प्रवृति। जघहे। घहिता। घह, चु,

पा चलनम्। घह्यति, घह्यति मेवी

तायुना दुर्गा। गुष्ताः करघहिताः, भ
१८, २। घहः। या—प्राचातः। याघ

हयामास प्रयाङ्गिस्य तृषी, भा
१०, ३८। प्रत—विचातः। यतिक्रमः।

प्रवृत्ते न कर्यापि धर्मम्। घष्टस्यति

गोष्ठीषु सर्वेषामेत्र यो गुष्णान्। कवि
१६५। वि—प्रभिचातः। द्वारं विघ
हयन्, भारत। तदीर्यमातङ्गचटाविघृतिः, भा १, ६४। सम्—सङ्गष्टैः।
विश्रयं सङ्गहयक्षदमङ्गदेन, र ६, ७३।

घण्—(घणु), तु, छ। दीसि:।
च ब्राष्ट्र—घटि (कुप) चु, पा दीसि:।
च प्रदेशता । घण्डता । (इ) घण्डाते।
च क्रांच्—(क्रांच्), भा, पा । हिंचा।
गति:, वी।

घर्व — (कर्व) भा, प । गति: । घर्वति । र्घष्— घषि, (घषि), भा, पा। षलक्षरणम् । चरणम्, वो। घषिते। घस्— घस्ल, भा, प । भचणम् ।

श्रयं न सार्वितिकः, को ७५। लट् घसित। लोट् घसत्। लिड् घसेत्। लङ् श्रवसत्। लिटि प्रसापयोगः। तृत्व (घद) जवाम, पा २, ४, ४०। लुट् घस्ता। लुट् घत्स्यति, पा ७, ४, ४८। लुङ् श्रवसार्व। शाशिषि, श्रस्थाप्रयोगः, को ७६। लुङ् श्रवसत्, पा ३,१,५५। श्रसारः, पा ३,२,१६०।

वंस चिम, वो। भा, घा। • चरणम्। घंसते। घयं के विच मन्यते, दुर्गा।

घुर्

विस्-वृस्-पृस्-विणि,

घुणि, घृणि। भूा, था। युहणम्। घिषाते। जिघिषो । घुषाते। जुघुषो । घुषाते। नुम् दुत्वच, की ५८। घुषाते न पाद्रव्यम्, किन ३३। जघुषो ।

घु—घुङ् (उङ्) भ्वा, घा। गब्दः। घवते।

घुट्—भा, भा। १ परिवर्त्तनम्।
गतवतः प्रत्यागमनम्। २ विनिमयः,
वो। तु, प। प्रतिघातः। चट् घोटते।
घुटति। सिट् जुघोट। ज्ञुघुटिय।
जुघुटे। जुट् घोटिता। चृट् घोटिधर्ते। जुङ् भघुटत्। भघोटिष्ट। तुः
घुटिता। घुटिष्यति। भघुटीत्। घोटकः।
यस्य व्याघोटते दण्डो नास्ततार्थः जुतसन्। व्याघुटन्ति विवचास यत् सम्मुखसुप्रागताः। कवि १४६।

घुड्र—तु, प, वो। व्याघातः।
घुडितः। जुघोडः। घुडिता। घघुडोत्।
घुण्—स्वा, शा। तु, प। स्त्रमणम्।
घोषते। जुघुषे। घोषिता। श्रधीः
णिष्ट। घुषति। जुघोष। घोषिता।
ग्रघोषीत्।

घुष — घुषि (घिषि) भ्वा, था। ग्रहणम् । घुषते। ज्ञघुषो । घुषिता।

भयानवरमिनिमत्तीभावः। रध्विनः।

३ प्रार्त्तध्विनः। घरति व्याघः (मनुव्याणां भयहेतुभैवति, दुर्गा) जुघीर।
घोरिता। प्रवोशीत्, प्रघोशीच मद्याघोरम्, भ १५, ८८। जुघु द्वारम्, भ
१४, ४०। घोरः।

म्रुष्— म्रुषिर्, भ्वा, प। १ विभव्दनम्। प्रतिज्ञानम्। २ प्रब्दः। ३ वधः, वी। घोषति। नावदां घोषति दारि यस्य का सिदुपद्रवम्। घोषयन्ति पुनः सर्वे दोघंमार्थुयंदास्त्रितः॥ वावि १४९। जुघुषतुः। 😘 घोषिता। सोषिणति। (ईर्) अधुकत्। अघो-षोत्। घुषिर्—चु, प। १ स्तुतिः। २ विशब्दनम्। कथनम्। पाविस्करः णम्। नानाशब्दकरणम्, दुर्गा। घो-षणा। घोषयति। घोषति। अघुषत्, षघोषोत्। खन्तस्य तु, पजूघुषत्। दुषानत इति घुष्यताम्, यकु ६, १८४। चमूरस्य ज्यमघोषयत्, र ८, १०। इति घोषयतीव डिग्डिमः, हितो। ता, घुषितं वाक्यम् (अञ्देन प्रकटीक-ताभिप्रायम्) घुष्टा रज्जुः । घुष्टो पादौ, पा ७, २, २३। ज्याषुष्टकठिनाङ्गुष्ठः, भ, ५, ५७। म्रा—घोष्णा। सततक्रन्द-नम्। श्राङ्पूर्वी घुषि: -क्रान्टमातत्ये इत्याद्यः, को १७८। आघोषयति। षाघोषति योकार्त्तः (संततं क्रन्दति), यभिषेच्ये सुतमित्याघोषयन् दुर्गा । भूमिपति:, भ ३, २। उद्-उचै-प्रोद्-निनादनम्। प्रदिनी प्रोद्घुष्टा क्रोङ्ककुररः, भारत। वि-घोषणा। विषुष्य इतं चौरे:, मनु: ५, २, ३३। सम् - शब्दः। राम संघृषितं नैतत्, भ ५, ६५। संघ्षितं संघुष्ट याकाम्। संघुषिती संघुष्टी पादी, पा 9, 2, 251

घुंष्—घुषि, घसि, घसि, खा, था। कान्तिकरणम्। श्रलक्षरणम्। घुंषते, घुंषते चृन्दनो गाल्लम्, दुर्गा। घंसते, की ७३। ष्टंसते इति प्रदीपः।

वृर्— वृरी, दि, था। १ हिंसा i २ वयो हानि:। घूर्यते। नुषूरे। (ई) घूर्यः। वूर्ण (चुर्ण) भ्वा, ग्रा। तु, प, छ, वो। भ्रमणम्। पूर्णति। • ते। नौधुर्णते चपलेव स्त्री। वायुर्घू र्यंति भीमः। घूर्य-तीव च मे मनः, भारत । घूर्णेते शाव-वस्यापि यद्गुणश्रवण्यक्षितः। ्रित्री-दासीनभूतानां घूर्णतीति किसद्भुतम्॥ कावि २३१। किट् चुर्ण। •णी। जबधिर्जुषूर्णे, राघवपाण्डवीयम्। सुट् पूर्णिता। ऋट् पूर्णिष्यति। •ते । लुङ् अघूर्णीत्। अघूर्णिष्ट। अघूर्णिष्टां चती, भ १५, १८ । मूर्णती, पूर्णन्ती। पूर्ण-मानः। घूर्णितः। घूर्णनम्। मा-चन्न-वद भ्रमणम्। प्राजुवूर्युईरिराचसः, म १४, ७७।

ष्ट—(ग्रः), भ्वा, प। सेचनम्।
घरति। जघार। घर्ता। ष्ट्र, पु, प।
१ सेचनम्। २ प्राच्छादनम्। ३ प्रस्वणम्। ४ स्निवणम्। घारयति। प्रभि—
सेकः। मस्तिष्कास्तवसाभिघारितसद्धामांसाइतीर्जुद्धताम्, भ्वोधचन्द्रोदयम्।
घतम्। घणा। घर्मः।

ष्टण्— ष्टणु, तना, छ। दीप्तिः। ज वर्षोति। वर्षुते। (घणोति। घणुते)। घणु, वर्षोति। वर्णुते। वर्षु, दो। वर्षाति। वर्षुते। (७) वर्षित्वा, घता। धतः। घणिः।

ष्टस्—पृष्णि (घिषि), भ्वा, त्या। ग्रहणम्।

ष्ट्रष्— पृषु, स्वा, प्। संघषेः।
वर्षणम्। हिंसा क्रिले । घर्षति
चन्दनं लोकः, दुर्गा। जचवं। कष्ट्रषतः।
घर्षिता। अघषीत्। (उ) घर्षिता,
घृष्टा। घर्षणम्। **ष्ट्रष्टं स्व**जति न पुन्यन्दनं चार्यन्यः। उट—

जर्हे विषयम्। चूडामणिभिषद्षष्टपाद-पीठं महीचिताम्, र १७, १८। चोर्—घोर्चे, खा, प। गतिचातुर्यम्। घोरति। घोर्चे, ''घोरति"।

्रा चा-भा, प। बाबाणम्। ्र यून्ययहणम्। ज़ट् जिन्नति, पा ७,३, ७८। दोपनिवाणगम्बञ्चन जिल्ला गतायुषः, स्मृतिः। जिल्ट् जन्नो। जन्नतुः जिन्निय, जन्नाय। जिन्निय। लुट् माता। लुट् मार्खात । प्राणिषि, घायात्, घेयात्, ण ६, ४, ६८। लुङ् श्रघात्, श्रघासीत्, पा २, ४, ७८। श्रन्नाताम्, श्रन्नासिष्टाम्। ब्रमुः, ब्रवासिषुः। सन् जिल्लास्ति। यङ् जिन्नीयते, पा ७, ४, ३१। जान्नेति। नाघाति। नाघीतः। णिंच् घापयति। श्रजिष्ठपत्, श्रजिधिपत्, पा ७, ४६। श्रजिप्रपत्रन्यानीषधीः, स १५, १०८। क्ता, ज्ञाणम्, ज्ञातम्, पा ८, ५६। सनोर्श्जघः सपत्नोजनः, कार्व्यप्रकाशः। द्यव, द्या, उप-द्याघ्राणम्। प्रवित्रवेच तान् पिखान्, सनु: ३, २१८। प्राघाय

(ভ)

गन्धम्, रत्ना ३, ५७। प्राघ्नायि गन्धवह-स्तेन, भ २, १०। प्राजघुर्मु धि बालान्

चुचुम्बुम, भ १४, १२। प्रामोदसुप-

जिन्नती, र १, ४४। सूर्वनि तमुप-

जन्नो, र १३, ७०।

डु—डुङ् (उङ्), भा, भा। गब्दः। बट् डवते । बिट् जुङ्वे। बुट् कोता। बुङ् गडोष्टा सन् जुङ्काते, पा। ७, ४, ६२। यङ् जोङ्क्यते। (च)

चक्—भा, था, ड, वो । १ त्रिः। २ प्रतिघातः । चकति । •ते । बिट्

चवाका। चेति। लुट् चिकता। लुड् घवः किष्ट। यिच् (त्रप्ती) चक्रयति, घटादिः। (प्रतिघाते) चाक्रयति, कौ ८३। तः, चिक्रतम्। चक्रीरः।

चकाम् चकास, बदा, प। दीति:।

लट् चकास्ति। चकास्तः। चका-सित, अमराधकासित, भ १८, २४१ चिराय तिसान् कुरवश्वकासित, भां १, १७। लिङ् चकास्यात्। हि चकाशि। चकाजीति केचित्। लेङ् अचकात्। अचकार, पा८, २, ७४। लिट् चका-साञ्चकार मूरं, भ ३, ३०। लेट् चका-सिता। लेट् चकासिष्यति। लेङ् अचकासीत्। अचकासिष्यति। लेङ् अचकासीत्। अचकासिष्यति। शिच्— चकासयति। अचीचकासत्, पा७, ४, २। अचचकासत्, वो। तं दोसिवितान-केन चकासयामीसत्तः, मा ३, ६। चका-स्तं चार् चमूर्चमंगा, मा १, ६।

चर्क् —चिक् —चुक ् —चु, प।

्रव्ययनम्। चक्कयति। चिक्कयति। चुक्कयति।

चन्न, चिन्न , पदा, था। १ कथनम्।
२ दर्भनेम्। लट् चष्टे। चन्नाते।
चन्नते। चन्ने। चन्नद्वे। निन्न चन्नोत।
जन्न भचष्ट। प्रचष्ठाः। प्रचन्नद्वम्। निट्
चन्नो, चन्नो, पा२, ४, ५५। चन्ने,
चन्नो, चन्ने। लुट् स्थाता,
क्याता, पा२, ४, ५४। चृट् स्थात्।
स्थित। ०ते। क्यास्थित। ०ते। प्राः
पिषि, स्थायात्, क्यायात्, क्योयात्।
लुङ् शस्थत्, धन्मासीत्। प्रस्थताम्,
प्रक्यासिष्टाम्। प्रस्थन्, धन्यासिष्ठः।
प्रस्थत, धन्यास्त। कर्मणि, स्थायते,
क्यायते। प्रा—कथनम्। जन्मणि

चन्न, भ ६, २०। जगतामगर्भ स्थामाचवित्तः भा १२, २५। युवमाचचाथाम्, भ ६, ८२। न चाचचीत कस्यचित्, मनुः ४, ५८। प्रत्या—प्रत्याः
च्यानम्। अखीकारः। युक्पुत्रीति
क्षत्वाऽष्टं प्रत्याचि न दोषतः, भारतः।
च्या—व्याच्या। विवरणम्। मेधातिथिगोविन्दराजी तु इति व्याचचाते, मनुटीका १०, ११३। प्र, परि—कीर्तनम्। कथनम्। तं देगं ब्रह्मावर्तं प्रचचते, मनुः २, १९। चिर्ण्यपूर्वं किष्णुं
प्रचत्ते, मा १, ४२। सम्—वर्जनम्।
चिस्मवर्थे क्षाङादेशी न स्थात्। समचचिष्ट। सञ्च्या दुर्जनाः। विचच्याः। न्यचसो राचसा इत्यादयोऽपि।

चघ्—स्वा, प। बधः, वो। चन्नोति। प्रयंवैदिक इति कश्चित्। चञ्च — चन्तु, स्वा, प। गृतिः।

चञ्चति। चवञ्च। चञ्चिता। चच्चात्। ष्यचञ्चीत्। चण्डि चञ्चन्ति वाताः, क्ट-न्होमञ्जरी १८, १। चञ्चद्रभुजभ्ममित-चण्डगदा—, वेणीमंद्वारम्। विषीदति रोदिति चञ्चति, गोतगो ४, ८। च-चिळा, चक्का, चक्कः।

चट्- पटे (कटे), स्वा, प। १ वर्षणम्। २ प्रावरणम्। १ भेदः, वो। चटित्। (ए) बावटोत्। चट्, चु, प। १ भेदः नम्। २ वधः, वो। चाटयति। उदुः उद्याटनम्। अपसारणम्। उद्याटनोयः करतालिकानां दानादिदानीं भवतोभि-रेषः, नै २, ७।

चग-भ्वा, प। १ दानम्।

२ प्रब्दः, वो। चणति। चचाणाः चेणतः। चणिता। ग्रचणीतः, ग्रचा-णीत्। चिचणिषति। चञ्चण्यते। चञ्च- ण्टि। चणयित, घटादिः। (गमनिहं न्यातः) चणयित, चाणयित। श्रचीच- प्रत्, श्रचाणत्, वो। चन्त्र। चन्ति। चणकम्।

चर्ण्ड् — चड़ि, भ्वा, चु, छा। कीपः। चरण्डते। चरण्डयते। ० ति, बो। चरण्डः। चरण्डो। चरण्डानः।

चत् चद् चते, घदे, खा, उ । याचनम्। चतितः। ०ते। चचात। चेते। चतिता। चतिष्यति। ०ते। (ए) श्रचतौत्। श्रचतिष्ट। चद्, चदति। ०ते। चलारः।

चन् (चण्), भा, प, वो।
दानग्रव्दयोः। चनित।
चन्द् चदि भा, प। १ श्राह्मादः।
२ दोप्तिः, वो। चन्दित। चचन्द्रः।
चन्द्रः। चन्द्रनः। छन्दः।

चप् भा, प। १ सान्तुनम्।
२ डपणमः ची। चपिता। चवाप।
चेपतः। चिपता। चप् (चह्र), च, प।
१ शाळाम्। २ चूणीं करणम्, वो। चपयति, घटादिः।

चम् चमु, भा, प। भचगम्।

चमित। चचाम। चेमतुः। चचाम मधु माध्वीकम्, भ १४, ८४। मांसं चेमुः, भ १४, ५३। चिम्ता। चिम-ष्यति। अवमीत्। चिच्मिषति। चञ्च-स्यते। चञ्चन्ति। चाम्यति। अचुचा-मत्। (उ) चिम्तवा, चान्ता। चान्तः। प्रा—ग्राचमनम्। उपस्पर्धः। भच्च-पम्। याचामित, पा ७, ३, ७५। या-चामेत्। विचमित। विराचामिदपः, मनुः २, ६०। अनुणाभिरिज्ञराचामित्, सनुः २, ६०। मण्डमाचामित स्वेद्रज्ञवान चर्

ैमुखे ते, र ८, ६८। १३, २०। समा<u></u> े संशार:। महिषुजासानि प्रकी: पर्या-सीव समाचलाम, भा १७, ३५। चम्प्—चिष, चु, प। गितः। ः चम्पवति। चम्पति। व्यब् (कम्ब्) भा, प। हिंसागत्योः। चय् (अय्) भा, अा। गतिः। े चयते। चेयाः चयिता। अचयिष्ट। ा चर्-भा, प । १ गतिः। भ्रमणम्। िरभवणम्। ३ श्राचरणम्, वो। श्रा-सिवा। लट् चरति, ग्रखूकी नाम तप-खरति, उत्तर ४०। लिट् चचार। चै-रतुः। चचाराश्रमपर्थम्ते त्वनानि, भा-रत । चेरतुः खरदूषगी, भ ४, १। चेर-इंविष्यं भुञ्जानाः कात्यायन्यर्चनत्र-तम्, भागवतम्। लुट् चरिता। चृट् चरिष्यति, परिवादस्ते महास्नोके च-रिष्यति, रामा। लुङ् ग्रचारीत्। श्र-चारिष्टाम्। प्रवारिषुः। सन् चिचरि-न्वति। यङ् (भावगर्षायाम्) चच्चूर्यते, पा ७, ४, ८७, ८८। पञ्चिति। पञ्च यिनोऽभितो बङ्गाम्, भ १८, २५। णिच् चारयति। अचीचरत्। चर्, चु, प। संगय:। ग्रसंगय:, वो। विचारयति यो धर्ममिति इनायुधः। चरित्वा। चरितम्। चूर्त्तिः, पा ७,४,८८। चर-ग्रम्। चरितव्यम्। चर्यम्। चरित्रम्। चरियाः। चरः। चारः। चरगः। चर्मः। श्रति-श्रतिचार:। श्रतिसमस्य गम-नम्। लङ्घनम्। अतिचारं गते जीवे, च्योतिषम्। अनु अनुगमनम्। सद-शसनम्। अस─सन्दाचरणम्। अभि─ अभिनार:। अतिक्रम:। मारणम्। क्क्रनेनाभिचरन्। पति यां वाभिचर-ति, मनुः, ५, १६५। व्यक्ति व्यक्ति वारः। समिववार न तापक्रशेऽनलेः,

नै। ब्रा-बाचरणम्। यद् यदावरति चेष्ठ:, गी ३, २१। जानविष हि मेधावी जड़वत्नोक श्राचरेत्, मनुः, २, ११०। विपान् शूद्रवदावरेत्। समा— अनुष्ठानम्। करणम्। स्नानं समाच-रति चाक नदीपवाही, स्मृति:। उद-उदय:। कुश्रपूरणभव उचवार निना-दः, र ८,७४। तूर्यध्वनिषदचरत् र १६, ८०। समुचरचान्पतिविधिच वनम्, भ २, २४। गुद्दवचनमुच्चरते (छ-स्रद्वागच्छित), पा १, ३, ५३। पय: चीवा उदचरन्त, भ ८, ३१। मवोनि दिवसुचरमाणे, नै ५, ४८। उचरेत् (सूत्रपरीवोत्सर्गे कुर्यात्), मतः ॥, ४८। गिच् उचारणम्। सुखसंहितः नासिकयोचार्यमागोऽनुनासिकः, पा १, १, ८। उप-उपचारः। पूजा। भजनम्। सेवा सुग्रीविवभीषणादीनु-पाचरत्, र १४, १७। ४, ६२। एन मुपाचरत्, र ५, १२। उपचर्थः स्तिया देवतत् पतिः, मनुः ४, १८५। गिरिमः मुपचचार सा, कु १, ६१। परि-परिचर्या। सेवा। ग्रुमूषा। गुरुं परि चरेत्, मनुः २, २४३। प—प्रचारः। ताबद्रामायणकथा सीकेषु प्रचरिष्यति, रासा। वि-विचरणम्। भ्रमणम्। व्यवारीविरङ्गाः, भ १५, ८८। विच चार दावम्, र २, ८। इंसं विचरना मन्तिके, ने १, ११७। णिच्, मोमांसा। पवधारणम्। सर्वेषां गुगदोषी विचा रयेत्, मनुः ७, १७८। विचारयति यो धर्मे विद्विद्वाद्यणेः मद्द। विचारयः त्यस सोके यावचन्द्रोज्यनं यगः। १२५। सम्-गमनम्। सङ्ग कवि णम्। रधेन सञ्चरते, या १,३,५४। धमनरकान्छे समर्थारीदन हिन यानै:

चर्

भ द, ३२, ३६। क्वचित् पथा सञ्चरते स्राणाम्, र २३, १८। सञ्चारयामास जरां पुत्रे, भारत। सैञ्चारिते धूपे, र ६, ८। यूथानि सञ्चार्ये द्विपेन्द्रः, शकु ५, ८ ६

चर्च — स्वा, तु, प। १पिरभाव णम्।
कथनम्। २ तर्जनम्। भर्कनम्।
चर्चति। भर्च्, भर्च्ति। भर्क्ष् भर्क्षिति। भर्म्, भर्भाति। चर्च्, पु, प।
षध्ययनम्। षनुगीननम्। चर्चयिति
वेदं विषः, दुर्गा। (षनुलेपनम्।) पन्दनचर्चितनी नक्षेत्रर, गीतगो १,
४०। चर्चितः। चर्चा। स्गमदक्षतचर्चा, क्रन्दोमञ्जरी १५,४। चर्चरी।
चार्चिक्यम्। भर्भरः।

चर्ने—(कर्न्) स्वा, प। गितः। चर्नति।
चर्ने—स्वा, प। घटनम्। चर्नणम्।
चर्नति। चर्नने। चर्निता। घरनीत्।
चर्ने, चु, प, वो। चर्नणम्। चर्नयति।
चर्नति। रघं वक्तो निः चिष्यं दश्नैयवैयति, चण्डी।

चल्—भ्वा, प। १कामानम्। अस्ये ध्येम्।
२ गतिः, वो। चल् तु, प। विलासः।
क्रीड्नम्। लट् चलित, न चलित
खलु वाक्यं सज्जनानाम्। स्वधर्मान्न
चुलितः मनुः ७, १५। चलेत्यकेन पादेन तिष्ठत्येकेन वृष्टिमान्, दितो।
चल सखि कुञ्जम् गौतगो ५, ११।
लिट् चचाल। चेलतुः। किन्नाश्चेलुः चणं
भुजाः, भ १४, ४०। लुट् चलिता। लुट्
चिल्यित। लुङ् भ्रचालीत्। श्रचालिप्टाम्। भ्रचालिषुः। संपचीऽद्रित्वाचालीत्, भ १५, २४। सन् चिचिलप्रति। यङ् चाचल्यते। चाचल्ति।
णिच् (कम्पने घटादिः) चलयति।
निकृत् चलयन् भ्रनैः, भ ८, ६०। चल-

यन् अङ्गत्यस्तवासकान्, र ८, ५४%। भीलं चालयति (अन्यया करोति)। स्तं चालयति (चिपति)। चालयति इस्तिनं यन्ता, दुर्गा। गोपानी दण्डेन पश्गणान् चालयन्। चालयन् सक्ता पृथ्वीमिति चालभव्दाखिच्। चल्, चु, प। पोषणम्। चालयति। चलिला। चलितः। चलनम्। चनः। चालः। चानकः। तु,चनवी, चनन्ती। प्रहः-ष्टमना सगान्तिकां चिलतः, हिती। उद्-प्रखानम्। स्थितः स्थितामुच-लितः प्रयाताम्. र २, ६। उच्चाल वलभिक्सचः, भ ११, ५१। प्र—गम-नम्। लम्यः। प्रसिद्धिः। रोषात् प्रच-लितो नृपतिसागरः, भारत। वि-सवनन्। चुति:। अस्यैर्थम्। चीभः। व्यचाबीदकामां पति:, भ १५, ७०। धर्माहिचलितं मृपं हत्ति, मनुः ७, २८। तंधमें न विचासयेत्, मनु: ७, १३। सम्-णिच्, सञ्चालनम्। सञ्चा-लयामि निलनोद लतालहरूतम्, प्रकु ३, १२८।

चष्—भ्वा, छ। भच्चणम्। प, वी। बधः। चषति। •ते। चषकः। चषानः। चषः।

चह—भ्या, चु, प। परिकल्कनम्।
ग्रात्यम्। प्रतारणा। चहिता। चचाह।
चहिता। भचहीत्। चह्यित, घटादिः। भचीचहत्। चह, चु, प। भदन्तः। १दभः। २गाळाम्। चह्यित।
भचचहत्।

चाय् चायु, भ्रा, उ, १ र पूजा।
श्राचेमा। श्वाज्ञषञ्चानम्। चायति।

ते। चचाय। •ये। तं पर्वतीयाः प्रमदाश्रचायि भा १२,५१। चायिता।
श्रचायीत् भ्रचायिष्ट। श्विचायिषति।

कते। चेकीयते, पा ६,१,२१। चेकायीति, चे केति। चे कीतः। (ऋ) अचचायत् । ग्रम्, न च ते निचायितुमिभप्रविचिरे (द्रष्टुम्), भा १३, १८। अपचिति:, की श्रपचायितः, पा ४४८। अपचितः। 0, 2, 301

चि

े चि—चित्र, खा, ड, वो। सञ्चयः। ्चिञ्, स्वां च प्रवास्। राशीकर-णम्। लट् चयति। ०ते। वृत्तं पुष्पं चिनोति। चिनुते। चिन्वते। **लि**ङ चिनुयात्। लङ् श्रचिनोत्। श्रचिनु-ताम्। अचिन्वन्। अचिनुत। **चि**ट चिकाय, चिचाय, पा ७, ३, ५८। चि-क्रेय, चिक्रियय। चिक्ये, चिच्ये। लुट चेता। ॡट् चेथिति। ते। श्रामिषि, चीयात्। चेत्रीष्टं।, लुङ् अचैषीत्। अचैष्टाम्। अचैषु:। अचेष्ट। अचेषा-ताम्। अवेषत। भूमावचेषुस्तान् इ-तान, भ १५, ७६। वार्मीण, चोयते। चायिता। चायिषते। चायिषीष्टा. प्रवाधि। प्रवाधिषत। राजहंस तव सैव ग्राम्ता चीयते नच न चावचीयते, काव्यप्रकायः। सन् चिकोषति। • ते चिचौषति। •ते, पा ७, ३, ५८। यङ् चे चीयते। चे चयीति, चे चे ति। षिच चापयति, चाययति, पा ६,१,५8। चिञ, चुं, उ, प, वी। चयनम्। चय-यति। ०ते। चाययति। ०ते। चप-यति। ॰ते, पा ७, ३, ३६। चितः। चेय:, पा र, १, ८०। चेतवाः। चयः। चयनम्। चिन्वन्। चिन्वानः। प्र-राष्ट्राण नैप्रधं चिन्वन्तः, भारत। कायः। निकार्थः। प्रश्निचित्। प्रप-अपचियः। इतिः। स्यः। पूजा। गिन् भवचितः, अवचायितः, पा ७, २, ३०। अपचि । ति गालम्, ग्रामु २, ३४।

श्रवचितद्विष (श्रवचितानां पूजितानां हिष:), भ ८, २२। पूजा नमस्यापिकः तीखमरः। चप-चयनम्। खाना जासुमानि हचान, भ ६, १०। श्रवचितवलिपुष्पा सा, श्रु १, ६०। श्रा--व्याप्तिः। श्राच्छादनम्। सञ्चयः। संयह:। श्राचिनीद् भूमिं इते:, म १७, ६८। श्राचिचाय: यरै: सेनामाचिकाय च राघवी, भ १४, ४६। प्राचिकाते तौ पद्मगै:, भ १४, ४७। उद्-चयनम्। छिचिकिरे पुष्पपसं वनानि, भ ३, ३८। उच्चयः। उप-उपचयः। वृद्धः। उपा-चायिष्ट सामर्थे तस्त्र, भ ८, ३३। प-घोऽधः प्रायतः लख महिमा नोपची यमस्तीमानु चैक्पचितु, हितो। धनर्घ १४। महिमानसुपचिनीति घनघं ३१। नि-निचयः। व्याप्तिः। निचितं खसुपेत्व नीरदैः, घटकपॅरः १। परिणिचिनीति, पा ८,४,१७। निर-निष्यः। अभिषेयं न निष्यिनीसि. प नर्घ ७०। न निश्चिकाय चन्द्रम्, अ १०, ६७'। किरचायि भेदी नौषधीनां तेन, भ १५, १०७। परि-परिचयः। प्रभ्या-सः। परिचेतुसुषांग्र धारणाम्, र ८, १८। प्र-प्रचयः। व्याप्तिः। हृहिः। पुष्धिः प्रचितान् गोष्ठान्, भ २, १४। पचीयमाना सा, र ३,७। वि-सच-यः। चिन्ता। प्रन्वेषणम्। विश्वां वि चिन्वन्ति योगिनो सुत्तये, र १०, २३। वयि धतासवस्तां विचिन्वते, भागव-तम्। सम्—सञ्चयः। सञ्जिकाय तपः, र १८, २। तपः प्रत्यहं सिंहनीति मकु २, ८४ ।

चिक्-(चक्) चु, प। पोड़नम्। 🖤 चिट् स्था, चु, वो, प। परप्रेथम्। ं बेटति। चेटयति। चेटः। चेटौ।

ंचित्-चिती, भ्वा, य। १ मंज्ञानम्। जागरणमा २ जानमा बट् चेतति। णविद्यानिद्रयात्रान्ते जगत्येकः स चे-तति, कवि १२६। नेवृनचेतन्रस्यन्तम्, भ १७, १६। बिट् विचेत। विचि-ततुः। चिचेतिय। चिचेत समस्तत्-क क्म, भ १४, ६२। तद् यात्धाने-श्चिचिते, भ २, २८। लुट् चेतिता। स्टर् चे तिष्यति। लुङ् अचेतीत्। अचे-तिष्टाम्। अचेतिषुः। नाचेतीत्तान्, भ १५, ३८। एवं । तेऽचेतिषुः सर्वे (संज्ञां लव्यवन्तः), भ १५, १०८। सन् चिच-तिषति, चिचेतिषति। यङ् चेचिखते। चेंचेति। । णिच चेतयति। यावदु राच-खर्येतयन्ति न (प्रतिब्धन्ते, खार्थे णिच्), भ ८, १२३। चित्, चु, भा। १ सञ्चेतनम्। धंवेदनम्। ज्ञानम्, वो। चेत्रयते धिया चेत्रयते सर्वे परस्य द्भदये स्थितम्, कवि १२६। सर्वे राजाः नं चेतयध्वम्, अनर्धः १०८। अचीति-तत। चितिला, चेतिला, पौ १. २, २६ । (ई) चित्तम्। चेतनः। चेतना। चित्। चेतः।

मचित्र—श्रदन्तः। चु, प। १ चित्रीकरणम्। पालेखकरणम्। २ चिषिकेचणम्। कदाचिइर्शनम्। ३ चन्नतदर्भनम्, वो। चित्रयति। चित्रा-पयति। चित्रयति प्रतिमां लोकः। चि-वयति राष्ट्रं लोकः (कदाचित् पर्यति), दुर्गा। चित्रे शित्रयति व्योम, कवि १५३। क्रीचपदानीचित्रिततीरा, क्र-न्दोम १५, १। वागदेवताचरितचि-वितचित्तसद्धा, गीतगी १, २ । 🤝 😁 चिन्त्-चिति, चु, प। स्मृतिः। चिन्ता। चिन्तयति । चिन्तति । यां चिन्तया-मि सत्तं मयि सा विरत्ता, नीतियतः

कम १। विद्यामध्य चिन्तयेत्, हितो। सुग्रीवोऽचिन्तयत् कपिः, भ ६, ८६। लिट् चिन्तयामास। लुट् चिन्तयिता। ल्टर चिन्तयिष्यति। लुङ् प्रचिचित्तव। चिन्तयिला। श्चिन्य। चिन्तितः। चिन्तनम्। चिन्ता। परि, वि, सम्—ग्रत्यन्तचिन्ता। ध्यानम्। स्मरणम्। विचिन्तयन्ती यमनन्यमान-सा, शक्त ४, १८। विचिन्तयन्या भव-दापदम्, भा १, ३०।

चिल्-तु, प। वसनम्। चित्रति। चिचेता चेतिता। चेत्रम्। ं चिल्ल-भ्वा, पा १ श्रीथित्यम्। २भावकरणम्। हार्वकरणम्। चित्रति। चित्रः। चित्री।

चीक्-(भीक्) चु, प। आमर्भनम्। सर्भः। चीकयति। चीकति। चन्द्रा-वतीतरङ्गाद्रीसीकयन्ति च यदपुः, इ-लायुधः। भट्टमल्लास्य मर्पणे इति स्मूर्ध-न्यप्रमध्यं पठित्वाः चमार्थमाइ, दुर्गा। चीब्-(चीव्)।

चीम्-चीम्-(श्रीम्) खा, या। कत्यनम् । साघा। प्रभंता, वो। ची-भते। चिचीभे। चीभिता। (ऋ) अचि-चीभत्। श्रोष्ठावकाराद्दिरयमित्येके, दुर्गी। १ व १ व्यक्ति । १०० वि

चीय्-चीव्, चीयृ, बो, चीई, खा, छ। १ प्रादानम्। २संवरणम्। चीयति। ०ते। चीवति। ०ते। चिचीव। ०वे। पवर्गेह्रतीयान्तोऽप्ययम् । (ऋ) अचि-चीवत्। चीव्, चु, प। दीप्तः। चीवयति।

चुक्-(चक्र्) चु, प। पीड़ा। चुच् —(ग्रुच्) स्वा, प। श्रभिषवः 🌓 चुट् तु, चु, प। छेदनम्।

जुटति। चोटयति। जुचोट। जुटि-ता। श्रचुटीत्। चुट्-भ्वा, प, वी। श्रुल्पोभाव: । चीटित नदी ग्रीमो, दुर्गा। चळातीभाव इति पदीपः। चुइ—चु, प। श्रत्योभावः। चुदृयति। चुड्-तुः प। संवरणम्।

चुडति। चुचोड़। चुडिता। अचु-,डोत्।

चुडड् — (चुद्ड्) भ्वा, प। भावकरणम्। प्रभिप्रायस्चनम् । चुड़िति । क्षिप्चुत्।

ा चुण्तु, प, वो । छेदनम्। चुणित। चुचोण। चुणिता। पचु-णीत्।

च गर्-च गड, च टि, च डि, भा, प। ब्रत्योभावः। ब्रव्यक्तीभावः। चुटि, चुडि, चु, पा क्रेद्रनम्। चुडि, वो, भ्वा, मा, चु, प। रोषः। चुण्डति। चु ख्यति। चु ख्ति। चु ख्ति। चु खः

यति। चुण्डति। ०ते। चत्-चुतिर (चुतिर्) भ्वा, प। चुद्-चु,पाप्रेरणम्। चैपणम्।

। चालनम्। नियोगः। प्रश्नः। चोद-यति । अचूचुदत्। चोखमानः सिख-चया, मनुः १, ०५। गरेम मायचोदितैः। तान्। बधे, पार्चोदयत्। चौदयामास तं सभा वे क्रियतासिति। शिथान् समानीयाचार्थ्योऽर्थमचोद्यत्, भारता चोदितः। चोद्यम्। चोदना। प्र, सम्

प्रेरणम्। कथनम्। परिवेषयेत प्रयतो गुणान् सर्वान् प्रचोदयन्, सनुः ३, ३२८। सञ्चीदयामास ग्रीघं याहोति

सार्थिम्, शसा । १००७ वर्षा ।

वुन्द्र-(बुन्द्)। 🗁 🗇 🗁 चप्-स्वा, पा सन्दगमनम्। नगतिः। चोपति । चोषिता। 💛 🗷 🕆

चुक्क् चुकि, भ्वा, प। चुक्कनम्। चट्चुंबति, श्रिषति कामपि च्यन

ति कामणि, गौतगो १, ४४। नीति-

वैक्वा चुम्बतु मन्त्रिणाम्, हितो। सिट् ्चुचुम्ब, चार चुचुम्ब नितम्बवती दिध-तम्। गौतगो १।४६। चुचुम्बुस सत-प्रियाः, स १४,१२। प्रियासुखं किस्पु-क्षयुचुम्बे। व्यतिहारे तङ्, दुर्गा। कु ३, ३८। लुट् चुम्बिता। लुङ् अचुम्बोत्। श्रवुब्बिष्टाम्। भवुब्बिषुः। चुबि, चु, प। चुम्बनम्। चुम्बयति। चुम्बितम्। चु खनम्। चूड़ाचु स्वितक इपत्रम्, मः न्नाना २, ३। उदयाचनचु स्विविस्तं चकास्ति, काव्यप्रकाशः।

चर

चुर्-चु, प। स्तेयम्। चौर्यम्। लट् चोरयति, पा ३, १, २५। चोरति, यो। कर्तुगामिनि पत्ने तु श्रात्मने पदम्। चोरयते, पा १, ३, ७४। यथारिनं चोरयेद ग्रहाद, सितुः ५ २, ३३। लिट् चोरयामास। लुट् चोरियता। ॡद् चोरियव्यति। माः शिषि, चोर्थात्। तुङ् यनूनुरत्, पा ३, १, ४८। अचूनुरचन्द्रमसोऽभिरा-मताम्, भा १, १६।

्चुन्-चु, प । उन्नति:। चोन्नयति। चुनुम्प्—स्वा, प। सीत्रधातुः। 📆 स्रोपः। चुसुम्पति। चुसुम्पाचनार।

चुल्-भ्वा, पं। १ अभिप्रायस्चनम्। ः र दावकरणम्। विचासः। चुन्नति।

चुचुन्नः। चुन्निता। चुन्नन्ति चादनयः नाय सह प्रियेण, कवि ४०। चुन्नी।

कि व्यक्ति चु, प। सङ्गोचः। चूषयति चचुः (सङ्घितं स्यात्), दुर्गा। चर्-चरी, दि, या। दाइः।

चूर्यते, चूर्यते चौरहत्तीन् यः, अवि ८८। चुनूरेन, चूरितात (ई) चूनैं।

ाः चूण् — चु, पा १ पेषणम् । चूणींकरणम् । २ प्रेरणम्। चूणंयति, चूणेंयस्यरिमण्डलं यः, वावि ८८। प्रचुः

£ 3

चूर्णत्। प्रश्नवर्षमचूर्णयं प्ररजातैः, भा-च र्णितै बत्तमाङ्गैः, गीतगी ११, २७। तान् प्राचु चूर्णत् पदाभ्याम्, भ १५, ३६।

चै प्र— स्वा, प । पानम् ।

चूषति। चुचूष। चूषिता। अचूषीत्। तसदा चूषति, अनर्ध १५४।

चृत्—चृती, तु, प। १ हिंसा। रंग्रत्यनम्। लट् चृतति। लिट् चच-र्त्ता चचृततुः। जुट् चिर्त्तता। जुट् च-त्तिंष्यति, चत्र्यंति, पा ३,२,५०। च क्यें न्ति वाल इडान्, भ १६, २०। लुङ् अवर्तिध्यत्, अवसार्त्। लुङ् अच-त्तीत्। धवत्तिष्टाम्। धवर्त्तिषुः। सन् चिचित्तिषति। चिच्रुसति। यङ् चरीचुत्यते। चरीचर्ति। णिच् चर्तः यति। अचीचृतत्, अचुचत्त्त्। चृत्, चु, प, वो। सन्दीपनम्। चर्तवित। चत्तंति। (ई) चृत्तः। '

चृप्-चु, प। सन्दोपनम्। चपैयति। चपैति।

चेल्-चेल् (बेल्) भ्वा, प। १गितः। २कम्पः, वो। चैनिति। (ऋ) प्रचिचेलत्। चेल्, चेल्ति, वो। चेलम्। चेष्ट्-भा, या। चेष्टा। यतः।

व्यापारः। परिस्थन्दनम्। लट् चेष्टते, यदा स देवी जागर्त्ति तदेदं चे ष्टते ज-गत्, मनुः १, ५२। सहमं चेष्टते खस्याः प्रकृतिज्ञीनवानिष, गीतगो ३, ब्रच्ययं नातिचष्टेत, हितो। लिट् चिव है। बुट् चे हिता। बुङ् पचे हिछ। धर्चे ष्टिषाताम्। अचे ष्टिषत । णिच् चेष्ट-यति। यचिचे ष्टत्, यचने ष्टत्, या ७, **८**,ट्रें । योडुमचिने **ट्राववी, भ** १५, ६०। चे ष्टितम्। चे ष्टनम्। चे द्या तं शोणितपरीताङ्गं चेष्टमानं महीः तले। वि-परिस्मन्दनम्। क्षिन्धुतौर-विचे ष्टनैः, र ४, ७०।

च्युत्

चु-चुड्, भुा, या। गमनम्।

पतनम्। च् ति:। भ्रंगः। चरणम्। चवते। उत्पद्यन्ते चवन्ते, मनुः १२, ८६। चुच्वे। चोता। चोषते। अ-चोष्ट। पचीषाताम्। अचीषतः। अ-चोष्ट सत्तानृपतिः, भ ३, २०। चुचू षते। चोच्यूयते। चोच्यवीति। च्याव-यति। अचिचात्तत्, अचुच्यत्। चिः चावयिषति, चुचावयिषति, पा ७, 8, ८१। चु, चु, प। १ इ।सः। २ सङ्-नम्। चावयति। रक्तमन्धुरतम् स ८, ७१। च्युतो विधिः, र २, ४७। र-तिसुरता, र ८, ६७। हृतभार्थी च्युते राज्यात् रामे, भ ७, ८२। प्र-संगः। यावः। गर्भप्रच्युतिदीषेण, भारत्। स्व र्गात् प्रचावेत, स्मृति:।

चुत्-चुत्, चुतिर, चिर, भा, प।

पासेचनम्। ईषदाद्राकरणम्। सर्वत पाद्रीं करणम्। यूचरणम्, वो। बट् चोतति। चौतति पृतं वद्गी यज्वा, दुर्गा। बिट् चुच्चोत। चुच्चततुः। नुट् चोतिता। नृट् चोतिष्यति। नुङ् (इर्) अच्युतत्, अच्योतीत्, या ३, १, ५०। यच् तताम्, यचोतिष्टाम्। यच् तन् प्रचीतिषुः। प्रोपितं सम्पृहारे-ऽच्यतत्, मह, २८३ सैन्यमच्युतत् र-त्तम्, भ १५, ११४। इदं कवचमची-तौत्, भ ६, २८। मन् चुच्चोतिषति, चुचुतिषति। यङ् चोचुत्यते। चोचो त्ति। णिच् चोतयति। धनुचुतत्।

चुत्त, चोतति। चुचोत। चोतिता। अचुतत्, अचोतीत्।

्च्यम्) — (च्युः) चु, प। श्रत्थागः। श्सद्दनम् । श्रद्धसनम् । च्योसंयति ।

(**a**

कुट्—च्, उ। अपवारणम्। शाच्छादनम्। गोपनम्। छादयति। ते। छदति। ०ते। सतं गरैण्डादयन्, सर, १८। चादितः, इनः, पा ७, २, २७। छन्नोऽभ्रेण चन्द्रमाः, भारत। बदीन्द्र' तुङ्गशैलत रच्छनम्, भ ६, ८३। कर्जने घटादिः। छद अपवारणे इति चौरादिकस्य घटादावयमनुवादः। क दयति पुत्रं पिता (बन्देन्तं प्राणदन्तं वा करोति) अन्यत छादयति (अप-बारयति) खार्थीणचि तु, छादय ति (बलोभवति, प्राणोभवति, अपवार-यति वा)। छद, चु, प। अदन्तः। संवरणम्। श्रपवारणम्। ऋदयति, ऋद-यति सुरतोलं यो गुणैर्यञ्च युन्ने सुर-युवतिविमुत्राः इयन्ति स्रज्ञस्, कवि १६। यद, या, प्र— घाच्छादनम्। संदर्णम्। परनोषे: प्रच्छत्रं विरुयम्, भ ७, ५३। ॰ सौतां दिद्वः प्रच्छनः, भ ८, ४३। व्याधी जालं विस्तीर्थ प्रक्रिती भूवा स्थितः, हितो। सम्—ग्राच्छाद-नम्। व्यापनम्। सेना महीं संच्छाद-यामास पात्रिष द्यामिवास्व दः, रामा।

कन्द्—कदि, चू, प। संवरणम्।

गोपनम्। पाक्कादनम्। छन्दयति, इन्दितः। प्रचक्कन्दत्। छदि, छन्द् चु, प। दौप्तिः। छन्दयति, छन्दति। उप-प्रचोभनम्। प्रार्थना। उपक्कन्दयति

मिय प्रयोज्यं लया न प्रतिषेधरी स्थान्।

क्रम्—क्रमु (चमु) भूग, प । भचणम् । क्रम्य्—चम्प, क्रपि, चु, प । गृति:। क्रदुः—चु, प । वसनम् ।

छद्गिरणम्। छदंयति। भवस्यदंत्।, छल् णिजन्तनामधातुः। छल्ना। छल्यति। थिरीषप्रमवावतंसाम्छल-यन्ति मीनान्, र १६, ६१। निभौधे-उभ्येत्य चाकस्मादस्मान् स छल्यिष्यति, भारत। बल्जिं छल्यते तुभ्यम्, गीतमो १, १६। छल्यसि विज्ञमणे बल्लम्, गीतगो १, ८। बेनापि छ्कितस्तातः, सन्वर्ध १२१।

क्रव्, भा, उ। हिंसा। क्रयति। ०ते। क्रियु—क्रियिर्च, उ। क्रेयनम्।

देधीकरणम्। सट् छिनति। छिन्तः। किन्दिना। किनिबा। किन्ते। किन्दान ते। छिन्दते। छिनति नित्यसन्नानम्, कवि २६६। नैनं किन्द्न्ति शस्त्राणि, गी २, २३। किनचा जगदाचरान, स ६. ३६। जिङ् छिद्यात्। छिन्दीत। डिकिन्धि। बङ् चच्छिनत्। चच्छि-न्ताम्। प्रक्थिन्दन्। प्रक्थिनः। प्रक्थि-नत्। अच्छिन्तः। लिट् चिच्छेद। चि-च्छिदे। बुट् छेता। बुट् छेस्यति। ०ते। लुङ् (१र्) अच्छिदत्, अच्छेत्-सीत्। पञ्चेताम्। पञ्चेसुः। प्र-च्छित्त। अच्छिबाताम्। अच्छितात। तेतं दन्तैरिच्छदन्, भा१४, ४३। वा-यव्यास्त्रेण तं पाणिं रामोऽच्छैलीत्, भ १५, ६७। स वचमच्छिदत्, भ १५, ६८। वसीए, क्रियते। अच्छेदि, भ-च्छेदि तेनास्य वित्रीटम्, भ १५, ६४। सन् चिच्छित्सति। •ते। यङ् चेच्छिः

द्यते। चेच्छेति। णिच् छेदयति। प्रचिच्छिदत्। क्विता। ॰ क्विदा। किनः। क्टिति:। छेदः। छेदनम्। क्टिंदुर:। या— प्राक्षय यहणस्। छेदनम्। ज इव्यं जातवेदोसुखादाच्छि-न्ति, क्षेरे, ४६। प्राच्छेत्यास्यंतस्य धनुर्ज्याम्। भर्तारमाच्छेत्साति कामि-नोध्यः, भारत। शव—शबच्छे दः, परि-च्छे दः। विशेषः। उद्—उच्छे दः। एकालनम्। नोच्छिन्यादालनो स्नुलम्, सनुः ७, १३८। एतान्यपि सतां गेहे नोच्छियन्ते कदाचन, सनुः ३,१,१। मूर्व्धान्तरायं सुद्धतिच्छनति, भा १६, था परि—परिच्छेदः। द्वयत्तयावधाः रणम्। निर्णिय:। परिच्छिनप्रभावर्डिने मया, कु २, ५५। तं श्रीर्षच्छे द्यं परि-क्किया, र १५, ५१। परात्मनी: परि-च्छिदा वनावनम्, र १७, ६०। यस्य यमः परिच्छेत्तुभियत्तयाऽलम्, र ६, ७७। वि-छदः। मर्जे विच्छिन्नम् य कु १, १२। विच्छियमाने कु से, भ ३, ५२। सम्—उच्छेदः। ज्ञानसं^{व्}च्छन्न-संगयः, भी ४, ४१।

ि छिद्र प्रदन्तः। चु, प। भेदः। रत्युकरणम्। कर्णस्युकरणम्। हिन् द्रयति । किद्रितः । किद्रणम् । 😘 🎧 कुट्—(चुट्), तु, कु, चु, प। छेदः। कुटति। कोटिका अङ्गुनिध्वनिः। कुड्-(युड्), तु, प। संवर्णम्। ् कुप् तु, प। स्प्रशः। कुप्ति। चुच्छोप। छोप्ता। प्रच्छी-

छुर्-तु, प। छेदनम्। कुरति। चुच्छोर। कुरिता । अशिषि, कुयात्, पा ८, २, ७८। अच्छुरोत्।

प्रीत्।

ता कुरितः (रज्जनम्), प्रशिकिरणच्छु-रितजन्मर, गौतगो ११, २८। प्रजात-च्छ्रितं हृदयम्, गौतगो ८, १०। मनः शिकाविष्य रिताः, कं १, ५६। कुरिका। कुरणम्।

कृद - वकृदिर्ह्त , च। १ दीसिः। इह २ देवनम्। क्रीड़नम् 🗗 ३ वसनम्, 🏲 वो। देवनजिगीवेच्छाव्यवंशारस्तुतियुति-क्रीड़ागतय दति केचित्, दुर्गा। लट् छ्णति। छुन्ते। लिङ् छन्यात्। छ्न्दोत। । सङ्घ्यच्छ्णत्। ग्राच्ड्नाः। बिट चक्दर। चक्दर। चक्दरिये, चच्छ्को। लुद् छदिता। लट् छक्षेप्रति। •ते। इदिष्यति। •ते, पा ७, २, ५७। लुङ् (६र्) श्रच्छृदत्, श्रच्छदीत्। श्रच्छः दिष्ट। सन् चिक्कदिषति। •ते। चि-च्छलीत। •ते। यङ् चरीच्छ्यते। चरीच्छर्ति। छृदी चु. प। सन्दीप-नम्। कदंयति। कदति। कदिता। क्टिंचिति। (ड) कृदिला, कृला। कुसारा ः . . . ं रघ निवाहि । उन्

कृप-(वृष) चु, प। सन्दीपनम्। क्टेर-गदलः। च, प। केरनम्। छो — दि, प। हो दनम्।

क्यति, पा ७, ३, ७१। चच्छी। च-च्छतु:। इता। इत्यति। इत्यात्। श्रच्छात्। श्रच्छासीत्, पा २, ४, ४८। णिच् क्षाययति, पा ७, ३, ३०। यङ् चाच्छायते। चाच्छाति, चाच्छे ति। भविक्छतम्। भवक्छातम्। कुर—कुरङ ्(चुङ्) स्वा, जा। गतिः।

जच्-ग्रदा, प। १ भचणम्। २ इसनम्। सट् जिचिति, पा ७, २,

चितः। जचितः, पा ७, १, ४। जिचिमोऽनपराघेऽपि नरान्, भ ४, ३८। लिङ् जच्चात्। सङ् यज-चतः, यजचीत्। यजच्यात्। यजच्यः। स्ट जच्चा जज्ञः, भ १३, २८। सुट जचिताः। स्ट जिचियति। तुङ् यजचीत्। यजचिष्टाम्। यजचिष्ठः। यज्ञितियति। यङ् जाजच्यते। यज्जिवियति। यङ् जाजच्यते। यच् जाजच्यते। यज्ञज्ञातः।

जङ्ग् — जाच, वा, स्वा, धा। १गति:। २दानम्। जङ्गते। धजङ्गि, धजाङ्गि। घटादि:। (चन्ज्)। जज्ञ् — जन्ज् — जजि, स्वा, प।

शुद्धम्। जजति। जज्जति। ्राह्मास्याः, प। मंदातः।

जटति केश: (परस्परं खमन: स्थात्),

जन् जनी, दि, या। प्रादुर्भावः।

ख्यात्तिः। जननम्। स्पुटौभावः। खट् जायते, पा ७, ३, ७८। गोमयाद्
हिस्तिको जायते, पा १,४,३०। त्वमताजायवाः, म १७,३२। खिट् जज्ञे, पा
६,४,८८। खट् जनिता। लृट् जनिखते। सुङ् भजनिष्ट। भजनि, पा ३,
१,६१।७,३,३५। भजनिषाताम्।
भजनिषति नाजनिष्टास्य साध्यसम्,
भ १५,८८। रज्ञनित्रोऽजनि च्यात्,
भ ६,३२। भावे, जायते, जन्यते। भजनि। सन् जिजनिषते। यङ् जाजायते। जञ्चन्यते, पा ६, ४, ४३। जञ्चन्ति। यिच् जनयति। भजीजनत्।
धटादिः। भपरा वीरमजीजनत् सुतम्,

र ८,२८। यं देवं देवकी देवी बसुदे-

वादजीजनत्, स्मृति:। वैदेश्वा जनयै-

यमानन्दम्, भ ८,५७। बोभो जनयते

त्रवाम्, डितो। जनिला। जातः। जाति:। जननम्। जनकः। जनः। जिता। जन्यम्।,जन्यो घटः। जन्युः। चान:। वीनम्। प्रजा। प्रजन:। प्रज-निष्णुः। षिच् जनयित्वा। जनितः। जनियता। जनियतव्यम्। चिष-उत्-क्षष्टभावः। ब्राह्मयो जायमानी हि (उपरि भवति), पृथिव्यामधिजायते मनुः १,८८। यनु—धनन्तरजननम्। पुत्रिकायां कतायान्तु यदि पुत्रोऽनु-जायते, मनुः ८,१३१। तमजीऽनुजातः (डपस्टलात् सकर्मकता), र ६,७८। त्रभि—डत्पत्तिः। इतिः। प्रभि-जननं। श्रमिजातवाचि। कु। कामात् क्रोधोऽभिजायते, गी २, ६२। तथा-प्यनुदिनं त्या ममैतेष्वभिजावते, भारत। ७५-जननम्। षसिंसु निगुं गोते नापत्यसुवजावते, दिती। सङ्क्षेत्रप्रजायते, गी २, ६२। म-प्रसव:। डत्यित्:। प्रजायन्ते स्तान् नार्थः । सा प्रजन्ने कुमारं मातापित्रोः प्रजायन्ते प्रताः, भारत। वि-प्रसवः। तेन विम्बसडों विजज्ञी। समा समा विजायते इति पाणिनः, ४,२,१२। (मजीनाथः), र १८,२४। तस्य सहधः पुत्रो व्यजायत, रामा। मानात् क्रोधो व्यजायत, भारत। सम्—डत्पत्ति। ततः संजन्तिरे वीराः, भारत । रचणाः द्वलं संजायते राज्ञः, मनुः ८,१७२। 💹

जप्—भ्वा, प । १ जपः । पाठः । कथनम् । २मानसम् । द्वदुचारः । (जिद्वोष्ठादिव्यापाररहितं प्रव्हाययी

शिक्तनम्), दुर्गा। सट् सपति। सिट् सन्ताप। जेपतुः। सुट् सपिता। सट्

जिप्यति। त्लुङ् यजापीत्, यज-पीत्। यजिप्षाम्। यजिप्रः।

सन् जिजिपिषति। यङ् (भाव-गर्हायाम्) जञ्जयते। जञ्जिति, पा ७, - ४, ८६। ३,१, २४। चिच् जापयति। अजीजपत्। जिपत्वा, जम्मा, इत्येके। जप्तः। प्रजप्तः। प्रजपितः इति संचिप्त-सारः। जैपः। जपनम्। जप्यम्। जपन् सन्याम्, भ ४, १४। गायतीं दग्रधा जबा, स्मृति:। जिपला स्तम्, अनुः ११, २५१। इषुवर्षजस—, ने ११, २६। सर्वया जप्तविद्यानां विद्या नाति-- प्रसीदति। प्रभि-प्रभिमन्त्रकम् श्रीवधि मन्तरभिजजाप च, रामा। डप-भेदः। भेदोपजापावित्यम्रः। ्डपजप्यानुप्जपेत्, मनुः ७, १८७। मला सर्हिण्यूनपरोपज्ञप्यान्, भारू, · RR busines in a constant for the

विपरीतरमणम्। जमित। जजाम। जिमतुः। जभिता। यङ् (भावगर्षाः याम्) जञ्जभ्यते, पा ७, ४, ८६।

जम्-जमु (चमु) स्वा, प । सचणम्। जन्म्-जमी, स्वां, ग्रा।

गात्रविनासः। जुक्यणम्। जक्षते, पा ७, १, ६१। जजको। जक्षिता। अज-किष्ट। जिजक्षिपते। जक्षस्यते, पा ७, ४, ८६। जक्षयति। (ई) जक्षः। जिम, वो, स्वा, प। रमणम्। जक्षति। जक्षिता। जिम, चु, प। नायनम्। जक्षयति। जक्षति।

जर्च जर्क — जर्ज — जर्म — जर्म । जर्च जर्क जर्म वो, तु, प। जर्ज् जर्म भा, प। जर्ज् (चर्च) तु, प। १ इति:। २भवा नम्। वर्जनम्। जर्म ति। जर्च्कति। जर्मति। जर्मति। जर्माति। जल्भात्। ए। १ वातनम्।
तेत्याम्। २ जीवनम्। ३ मा च्छादनम्।
४ सम्बद्धाः। जलितः। जजानः। जलितः।
जलिता। प्रजाजीत्।, जल्, चु, पः।
प्राच्छादनम्। प्रप्रवारणम्। जलम्।
यति। जानः। जलम्। जलम्।
जल्प्—(जप्) स्वा, पः। जल्पनम्।

जल्यति, दूतः चर्वे जन्यति, हितो। जल्यिता। अजन्योत्। जन्यतः, स्ट, १२५।

जय्—(कष्), भा, प। छ, बी। हिंसा। जस्—जसु, दि, प। मोचणम्।

मोचनम्। जस्यति। जजास। जेसतुः। जसिता। जजसत्, पुषादिः। प्रजा-सीत्, वो। (४) जसिता, जस्वा। जस्तः। जस्र, द्वः, पः १ हिंसा। रताड़-नम्। ३ प्रनादरः, वो। जास्यति, जसति। एद् उन्मूजनम्। निजीज-सीजासयितुं जगहहाम्, मा १,३७। मन्योद्यजासयासनः, स ८,१२०।

जंस्—जिसि, चु, पा १ र चेषाम्। २ मोचणम्। जंसयित, जंसित। जाग्र—ब्रदा, पा निद्राचयः।

जागरणम्। खर् जागति । जाग्रतः । जागति, पा ७,१,४। निषायां जागति संयमी। जागति भूतानि, भी २,६८। जागति काम्हि कागति काम्हि स्यमी। जागति स्रुतानि, भी २,६८। जागति काम्हि समुः ७,१८। विद् जागरयात्। खद् भजागः। प्रजागरताम्। भजागतः, पा ७,३८३। विद जागरामाम्। जजागार, पा ३,१३८। जागरामाम्तः। जजागरिय। भूप-स्पूर्णजागार, र १७,५१। सुर जागरिय। भूप-स्पूर्णजागार, र १७,५१। सुर जागरिय। स्राम्हि,

नागर्यात्, पा २,४,१०४। नु इ प्रजागरीब, पा ७,२,५। प्रजागरिष्टाम्।
धनागरिषु:। भावे नागर्यते। प्रजागारि, पा ७,३,८५। सन् निनागरिप्रति, पा २,१,२२। पिच् नागरयित,
पा ७,३,८५। जागरिला। ०नागर्य।
नागरित:। नागरणम्। नागरः। ना
गर्या। नागरुकः। नाग्रत्। दिशो निरीस्थापस्य नास्ति नागरती भयमिति
नागरगन्दासिच्। प्र-निद्राच्यः।
प्रवधानम्। प्रजागराञ्चम्वर्शनराः, भ
१४,६१। प्रजागराञ्चम्वरारिरीष्टास्,

ा । जिल्ला, पा १ जयः।

्र डकार्षप्राप्तिः। २ चिसिसवः। न्यूनी-- कारणम्। ३ न्यूनीभावः । ४ स्वीकरणम्। भू प्रतिकाम:। ६ वर्षाकाया। सट् जयति जयति यतून्। देवदत्तं - देव:। ग्रतं जयति। जेस्तुन्तोरन्त इदिति पद्मनासाः । 📮 भनभिषानाद्सात् तु वन्ते: प्रयोगाभावः। विन्तु तयोः स्थाने तिवन्ती इति। किञ्च तुपः स्थाने तातङ् हर्यते। यथा, भावगम्यलयः कोऽपि जयताद् वागगीचरः, दुर्गा। जयति रघुवंगतिस्कः, महाना १,३। जयन्ति यसुनावाले रहः वेलयः, गीत-मो १, १। वपु:प्रकर्षाद्जयद् गुक्म, र वे, २४। सिट् जिगाय। जिग्यतुः, या ७, ३,५७। जिमसिय, जिमेश । ग-जितानन्तरां वृष्टिं सीभाग्येन जिगाय सा, कु २, ५३। व में मार्था जिगाये ब्होरिए, म १४, ४६। सुट् जेता। स्टट् िजेचति। सुराजयं जेचावः, अः १६, ३६। पाणिष, जीवात्। लुङ् प्रजे-्षीत्। प्रजेष्टाम्। प्रजेषुः। त्वमजेषुः। युरा सुरान् भ १५, १२। कार्मीण,

जीयते। जायिता। जायिष्यते। जायि-षीष्ट। अजायि। अजायिषता केन जायिष्यते यमः, भ १६, २। वैपमानः जननीशिरिकदा प्रागजीयत तती मही, र ११,६५। सन् जिगीवति, पा ७,२,५७। यङ् जेजीयते। जेजयीति। जेजेति। गिच् जापयति, पा ६,१, ८८। ७,३,३६। यजीवयत्। जिला। ० जित्य। जितः। जयः। जेतव्यः। जिय:। जय्य:, पा ६, १, ८१। जयी। जित्। जेतुम्। जियाः। जेता। जि-लर:। व्यति—परसाभिभव:। व्यति-जयते, पा १, ३, १४। व्यतिजिम्ये सस्द्रोऽपि न धैयां तस्य गुच्छतः, भ म, 8। प्रधि-स्यूनीकरणम्। विनाध-नम्। रावणवद् वयं सपजानिधजी-यास्रा, भ १८, २। घव-स्त्रीकरणम्। उदारः। अपद्वतं सर्वेखमवजित्वः सनुः ११,८१) निर्-प्रक्षिभवः। पराजयः। ग्रनेकशो निजितराजकस्वम्, भार, ५२। श्रम्नं निर्जित्य, भ ७,८४। परा-पराजयः। पराजयते, पा १: २, १६। प्रसद्दनम्। ाषसिभवः। प्रध्ययनात् प्रशास्त्रवते, पा १। ४, २६। प्रतृत् पराजयते। अपद्रिं खं प्राज्यसान उद्रत्या, स ८,६। सीतां पराजयमाना रावणस्य प्रोते:, भ ८,७१। वि विज-यः। उत्वर्षप्राप्तः। पराजयः। न्यूनी-वर्णम्। वशीवर्णम्। विजयते, पा १, ३, १८। भो त्राजन्। विजयता भवान्, गन्न ५, ७१ । व्यनेष्ठा विष्ट नायकान्, भ ६,६८। विजिन्ये सेनान्, म ३४, १०६। व्यजेष्ट वस्वर्गम, म त्र, १ । व्यानस्त्रस्य अवस्तानी विविध्य भवनेर, भ रह, वस् । 1 ठा कहा । है। र्जिन्व्—जिवि, स्वा, प। ग्रीणनम्।

ंजिन्बति। जिजिन्ब। प्रजिन्बीत्। जिति (प्रजि) चु, पै। दीप्तिः। जिन्ब-यति। दिवि, दिन्बति।

जिम्—जिम् (चम्) खा, प।
भवणम् । जेमिता जेमनं लेप ग्राहार इत्यमरः। (ड) जिमिता जिन्दा।

-जिष्-जिषु, भ्वा, प। सेचनम्। जीव्-भ्वा, प। प्राणधारणम्। जीवनम्। जीविकानिवीहः। लट लिय जीवति जीवासि। जीवति। साहारात् किञ्चिदुबुत्य ददित तेनासी जीवति, हितो। लिट् जिजीव। जि-जीवतु:। इति युधि ससुपत्य न दानवा जिजीतः, बन्दो १३,८। तुर जी-विता। लुङ् अजीवीत। अजीविष्टाम्। घजीविषु:। यावदकीविषम्, भ १५, ११। सन् जिजीविषति। यङ् जेजी-व्यते। जेजीवीति। णिच् जीवयति। प्रजिजीवत्। प्रजीजिवत्, पा ७, ४, ३। कंपीनजीजिवतः स १५, ११। जीवित्वा । श्रीय । जीवितः। 'जीव-नम्। जीवनः। जीवः। जीवी। जीव्यम्। नोविका। श्रति श्रत्यजीवद्मरालः केखरी (अतिकस्य प्रजीवत्), र १८, १५। अनु— धनुजीवनस्। आययः। भनुजीवी। उद्- उज्जीवनम्। पुनर्जी-वनम्। उदजीवत् समितासूः, स १७, ८५। उप-उपजीवनम्। प्राययः। ग्रहणम्। जीवनीपायः। स्त्रीधनानि यो मोहादुपजीवति, मनुः ३, ५२। पर्जन्यसिव भूतानि सहादुसेसिव दिजाः। वान्धवास्त्रोपजीवन्ति सद् स्राचिमिवामरा:। एतद्भार्तं कविभिन्। पजीव्यते, भारत। सम्-जीवनम्। धीलां मायिति शंसन्ती समजीवयत् र

१२, ७४। भसारायीक्षतं वृद्धं विद्यया • समजीवयत्। कीर्त्तः पुरुषं सन्ती-वयति, भारतः।

ज्ञा, प। मौत्रधातुः।

विगगति:। जुङ्, स्वा, घा, वो गति:। ज्वति। वते। णिच् घजीजवत्। जि-जाव्यिषति, पा ७, ४, ५०।

जुङ्—जुगि, स्वा, प। वर्जनम् । "जुङ्क" — जुचि, चु, प। दीप्तिः।

जुड् → तु, प। मिति:।

जुड़ित। जुड़ीड़। जोड़िता। प्रजीहोत्। जुड़, तु, प। बस्यनम्। जुड़ति, तानुच्छुड़नतापमान् मुड़लेन जुड़त्सरी, कवि ११३। जुड़िता। प्र-जुड़ोत्। जुड़, चु, प। प्रेरणम्। जी-ह्यति। प्रज्जुड़त्। दण्डं जोड्यति हिट्सु वसंतेषाच्च जोड़िति; कवि ११३।

जुत्-जुट, भूा, घा। दीप्तिः। जोतते। जुजुते। युटः योतते। जुन्-(जुड्), तु, प। गमनम्। जुन्ति। मक्तो जुनन्ति, की १४२। जुर्वे —जुवी (उवी) भूा, प। वधः।

जुल् चु, प, वो। पेषणम्। चूर्णीकरणम्। कोलयति।

जुष्-जुषी, तु, था। १ मौतिः।
देवः। २ सेवनम्। भजनम्। धाययः।
देवशेगः। लट् जुषते। न कि सुधा
नाकजुषे जुषको, राधवणाङ्गवीयम्
१, ४८। तिविवोध जुष्स च, भारत।
याचमजुषतः, भ १७, ४२। लिट् जुजुथे, रघं जुजुध (चारूदः), भ १४,८५।
लुट् जोषिता। लुङ् धजोषिष्ट। धजोप्रियाताम्। धजोषिषतः। सन् जुजुप्रियते, जुजोषिषते। युङ् जोजुषते।

जुश

जोजोष्टि। णिच् जोषयति। अजूजुपत्। जुष्, च,प। १ पितिर्वभाम्।
जहः। २ हिंसा। ३ पितिर्पणम्। जोषयति। जोषलि। (ई) जुष्टः। ब्रह्मससूइजुष्टः, भ १, ४। धात्रममण्डलं
स्मगणैजेष्टम्, भारत। ऋषिजुष्टजले,
समरः। कश्मलमनार्थ्यजुष्टम्, गी २,२।
प्र-विषयेषु प्रजुष्टानि (प्रसन्नानि), मनुः
२,८६। सजूः। संजुषी।

जूर-जूरी, (यूरी) दि, शा।
१ हिंसा। १ वयो हानि:। जूर्यते।
जुजूरे। जूरिता। भन्ने नखस्यस चिरं
जुजूरे (मुध्यति सा), भ ११, ८। (१)
जूर्यः।

जूष—(यूष्) भा, प। भा, वो। द्विसा। जू—भा, प, वो। न्यकारः।

तिरस्कारः। जरित । जजार । जर्ता । जुम्म् — जृम् — जृमि, जृमी, (जमी) ।

भा, या। गावविनामः। गावभङ्गः। जुकाणम्। प्रकाशः। प्रादुभावः। सट् जुमाते। जुमाते बाला गर्भभरालसा। साद। लिट् जजुमो, मधुर्जजुमो, कु २, २४। जुट् जृभिता। लुङ् पजृ श्रिष्ट। जुश्चितम्। जुभी, जर्भते, वो। (रे) जुन्धः। जुन्ममाणयज्ञुषी परिस्चन्य, प्रनिष्ठ देश भार्थां नेवित चात्रतीं चुवती जुक्समाणां वा, सनुः ४, ४३। **चद्— चद्यः । विकासः । इदिः ।** गौतांग्रक्ज अते, रहा ३, १०२। सुकातः मुज्ज भाते सा, ने २, १०५ । व्याल बाह्यस्यास्तर्नुभिस्सी रोहुं ससु ज्याते, नीतिश्वतकम् ८०। प्रकोज-मुळा काते, अनर्घ २४। वि - जुकाणम्। व्याप्तिः। व्यकृष्मिषतावरे, भ १५. १०८। विजृश्मितस्य अन्यकारस्य, वर्

७, ४२। तूर्यमिखनाः सद्मनि व्यक्तु-भ्रम्त, र.३,१८। १२,७२।

जु जुष, दि, प। जु, क्रा, प। ज्वरा। जीणींभावः। वयोद्यानिः। परिपाकः। विसयः। स्वयः। सर्जी-र्थिति, वचं जीर्थिति विचयः, सहाना प्, प् । श्रीष्ट्रदानि जीर्थन्ति कालेन। द्वचा न जीर्यति जीर्यतः, भारत। जुर्वाति। जुर्वीतः। कायो न जीर्थिति ज्याति न यस्य प्रतिः, कवि ८। बिट् जजार। जजरतु:। जैरतु:, पा ६, ४, जित्रांशा दशाखख, भ १४, ११२। सुट् जरिता, जरीता। खट् जरिष्यति, जरीष्यति। गामिषि, जी-र्यात्। सुङ्दि, घजारीत्। यजात्, पा १, १, ५८। क्रा, अजारीत्। य-जारिष्टाम्। यजारिषुः। यजारीदिव च प्रचा वलं श्रीकात्तयाजरत्, ६,३०। उदरी जरबन्धे तस्त्र, भ १४, ५०। सन् जिजरिषति, जिजरीषति, जिजी र्षति। यङ् जेजीयते। जाजातं णिच् दि, जरयति, घटादिः। क्रा जारयति। जॄ, चु, प। वयोद्यानिः जारयति, जरति। यदिदिवां जरति चेतिस भीगळणा तेषां वपूंषि विधि नेषुच जारयन्ति, कवि ८। जरिला जरोला, पा ७, २, ५५। जवेन निपेतुः याखिनः, स ८,४१ जीर्षः। जीर्षः। जरन्, पा ३, २०४। (ष्) जरा। जर्जरः।

जिष्—जिषृ (एषृ) स्वा, घा। गतिः। जिद्द्—जेह्न, स्वा, घा। प्रयक्षगत्योः। जै—(चै) स्वा, प। चयः। जायति। जजौ। जाता। घजासीत्। 🚽 🎮 २ जापनम्। ज्ञप मिचेति चुरादौ ज्ञापनं मारणादिकञ्च तस्यायं:, की ८४। (मारणाजीकननियानतोषण-स्तुतयः), द्वर्गा। ज्ञपयति, पा ६, ४, ८२। अजिज्ञपतन्। ज्ञीसति, पा, ७, 8, ५५। जिन्नपयिषति, पा, ७, २, ४८ । च्रियतः। च्रप्तः, पा ७, २, २७। प्रतिपज्जिप्तिचेतना इत्यसरः।

ज्ञा-क्रा, प।

अनुपसर्गात् चा, पा १, ३, ७६। ज्ञानम्। बोधः। जानाति, पा ७, ३ ७६। जानीते, गां जानीते, पा १ ३, ७६। सर्पिषो जानीते, पा १, ३, ४५। २, ३, ५१। सन्दर्भग्रां विशा जानीते जयदेव एव, गीतगी १, ४। बिङ् जानीयात्। जानीतः। खङ्, प्रजानात्। अजानीत । अजानत । लिट् जन्नी । जन्नतु:। जन्निय, जन्नाय। जन्निव। यत्री। लुट्। जाता। लुट् जास्यति। वते। आधिष, जायात्, 'ज्ञेकात्। जासोष्ट। लुङ् यज्ञासोत्। यज्ञासिषुः। मा जासोस्व सुखी रामंः, भ १५, भोगेषु रतो विद्युद्धार्थं नाज्ञा-सिषम्, म ७, २६। लुङ् नाज्ञास्यस्व-सिदं सवम, भ ५, ८,। कर्माण, जायते। जन्ने। ज्ञाता, ज्ञायिता। ज्ञास्यते, जायिष्यते। जासीष्ट, जायिमीष्ट। श्रजायि। अज्ञायिषत्, व्यज्ञासत्। ज्ञास्वेऽहं समस्तैर्ज्ञायियन्ते मया, भ १६, ४०, ४१। नूनं नाजायिषि वया, भ ४, ३२। सन् जिज्ञासते, पा १, ३, ६७। जिज्ञासमानी बलमस्य बाह्रोः, भ २, ४३। भावं जिज्ञासमाना सुनि-होमधेनुः, र २, २६। इयस् जिज्ञा-साञ्चित्रिरे, अ १४, ८१। यङ् जाज्ञा- नम्। विज्ञापनम्। पाजापय सोनेषु

यते। जाज्ञीत। णिच् (श्मारणम्, ्र तोषणम्, ३ चाचुषच्चानम्, ४ चाप-नम् ५ तौच्णीकरणम्, एष्वेवार्धेषु जा-नातिर्मित्, की ८४)। भारणादी जा चुरादिघेटादिसेति वो। जपयति। यजित्रपत्। यत्रपि, यत्रापि। त्रपं ज्ञवम्। ज्ञापं ज्ञापम्। ज्ञा, जु, व नियोगः। प्रेरणम्। जापयति । सत्य स्वामी, दुर्गा। पाजापयति यो सत्यान् यज्ञे संज्ञपयत्यजान्। भूषास अस्तिन-स्वामिवीमिविद्यापयन्ति यम्॥। कवि ६८। तज्जापयत्याचार्थः विज्ञापना भन्षु बिडिमेति, की ८४। जिज्ञाप-यिषति, जिन्नपथिषति। ज्ञीसति, पा ७, २, ४८। जाला। • जाय। जातः। जानम्। जेयम्। जाता। चपितः। चप्तः, पा ७, २,२७। चापि-तः। ज्ञापनम्। अनु—अनुज्ञा। त्वाम-नुजानामि न गन्तव्यम्, रामा। तती-ऽनुजन्ने गमनं सुतस्य (कमें णि लिट्), भ १, २३। अनुजिज्ञासति पुत्रम्, धाः १, १, ५८। धनुजिज्ञासता बङ्गाद-र्धनमिन्दुना वदैयत, स.८,३५। चप-भपक्रवा गोपनम्। यतमप्रानीते, पा १, ३, ४४। शालानसपनानानः यथमात्रोऽनयहिनम्, भ ८, १६। घभि—ग्रभिज्ञानम्। सारणम् । जा-नम्। भ्रमिजानासि यत् काश्मीरेष्य-वसाम, पा ३, २, ११२। समाविष्याव एकस्यामभिजानासि मातरि, से ६, १३८। वत्यभि प्रत्यभिज्ञाः अनुभवः। खयूष्यखरान् प्रत्यभिजातते, अनर्घ ८५१ ः भव् अवज्ञा। 🌯 अवसानना । 🦜 घवजानासि। सां यसात्, र १, ७५। भा शिच् यात्रा। भादेगः। यास-

न्रा

यत् बस्पीयम्, स ३, ३। यथाचाप-यसायुषान्, यंज् ९,३८। उप-चा-यज्ञानम्। उपजा ज्ञानमायं खादि-त्यमरः। पाणिनिनोपन्नातं व्यातरः णम् (विनोपदेशेन ज्ञातम्), पा, ४, ३, ११८। प्रति-प्रवगतिः। प्रणिजा-नीहि, माट, १०० । परि जानम्। नियव:। प्रव्हितं परिज्ञाय, दितो। प्रासम्बग् बोधः। प्रतिज्ञानम्। न स्तियं प्रजानाति न कसिद्धासयीवनः, भारत। प्रति—प्रतिज्ञा। प्रतं प्रति-जानीते, पा १,३,४६। प्रतिजन्ने रचसां वधम्, भ १८, ६४। प्रत्यज्ञास्त क्रियाः पहुः, भ म, २६। वि-विधिष्टज्ञानम्। णिव् विज्ञापनम्। विभीषणः प्रगम्य व्याजज्ञवत्, प्रनर्घे १५४। इति विजापितो राचा सुनिः, र १, ७४। सम् चानम्। अवेचगम्। ग्रतं संजानीते, पा १, ३, ४६ । संजानान् परिचरन्(चेतयतः),स ८, २७। (इत्कण्डापूर्वकस्परणम्) मातरं मातुर्वी मंजानाति, पा २, १,५२। णिच् (मारणम्) संज्ञपयति प्रतृत्। । १०० । १०० । क्या क्रा, प। वयोद्यानि के , जरा। बट् जिनाति। जिनीतः। जिनन्ति, पा ६, १, १६ । जिन् यात्। लङ् रैपानिनात्। निट् जिल्यो, पा ६, १, १७। जिन्यतुः। जिन्यये, जिन्याय। जिन्यियाः लुट् न्याताः। नृट् ज्यास्त्रति । सामिषिः, जीयात् । लुङ् प्रच्यासीत्। प्रच्याभिष्टाम्। प्रच्याभिष्ठः।

जिनन्ति, या ६, १, १६ । जिल्ड जिनोन् यात् । जिल्ड द्वाजिनात् । जिल्ड जिल्ड्यो, यात् । तिल्ड द्वाजिनात् । जिल्ड्यियः, यात् । तिल्ड्यतः । जिल्ड्यियः, जिल्डायः । जिल्ड्यतः । जिल्ड्यतः । जिल्ड्यतः । जिल्ड्याद्यति । याधिषि, जोयात् । जुङ् यात् । सिल्ड्याद्यति । याधिषि, जोयात् । जुङ् यात् । सिल्ड्याद्यति । यङ् जाञ्च्यत् । जिल्ह्याद्यति । याद्याद्यति । प्राच्यादि । ज्वावादि । प्राच्यादि । ज्वावादि । ज्वावादे । ज्वावादे । ज्वावादि । ज्वावादे । ज्वावादे

ज्युद्ध, भ्वा, ग्रा, वी। दीप्तिः। ज्यी तति। •ते।

क्यो — क्योङ्, स्वा, घा, ११ नियमः। २ व्रतस्यादेशः। ३ डपनयनम्। क्यवते। ज्ञि—(जि) स्वा, प। प्रसिभवः।

न्यूनीभावः। न्यूनीकरणर्म्। जी, क्राा, प, वी। जि (जू) जी, बी, पु, प। वयोद्वातिः। जोणीभावः। ज्ययति। जिषाति। जिज्ञाय। जेता। भर्जे षोत्। ज्याययति, जययति। जीषः। जीषिः।

च्चर्-भ्वा, प। रोगः। च्चरति। जन्दार। च्चरिता। प्रका-जिञ्चरिषति। जाज्यस्यते। रोत्। जाजूर्त्ति, पा ६, ४, २०,। थिच् ज्वर-यति, घटादिः। चित्रचरत्। ज्वरि तम्। क्रिप् जूः, जुरी। सम्—सन्तापः। सन्ताप्यञ्चरी स मी इत्यमरः। सं ज्वारी। ज्यब् भ्या, प। १ दीसिः। ज्यबनम्। २ कस्यः, वो। सट् ज्वस्ति। राह्ये ज्यबन्ति राष्ट्रीयध्यः, पनर्ध १८। वि-गिदमंश्रकं ज्वलति, रता ४, १८१। बिद् ज्ञान। जञ्चलतुः। जञ्चान सराजा भ १, ४। लुट ज्वलिता। जुट ज्वलि-थति। नुङ् पञ्चानीत्। पञ्चानि ष्ट्राम् । प्रज्वालिषुः । गिरावव्वालिष् राह्री सदीषध्यः, भ १५, १०६। वन् जिञ्च बिषति। यङ् जाञ्च स्रते। जाः ज्यव्ति। णिच् ज्यबर्गति, ज्याब-यति,। उपसर्गात् प्रज्वचयति । प्रज्वाः ल्यतीति तु घवन्तात् तत् करोतीत णो सिद्रम्, जो द्राज्य वितम्। ज्य लनम्। व्यवः। व्याबः। प्रश्निव्यं नन्, स ६, ३२। , छद्- चळवजोभावः। दीसि:। वज्यलगम्। रणाङ्गानि प्रज

(新)

भेट्—(जट्) स्वा, पा संघातः। राशीकरणम्। भटति। जभाट। भटिता।

भाम्-भामु (चमु) खा, प। श्रदनम्। भुभन्-भाक्ष्-भाभ्-(चर्च्)

भ्वा, तु, प । १परिभाषणम् । उत्तिः । २ तर्जनम् । भर्त्षेनम् । भर्त्वेति । भर्च्छेति, वो । भर्भोति ।

भक्त्—(कष्),स्वा,प। हिंसा। भक्ष्,स्वा,उ। १ श्वादानम्।ग्रह-णम्। २ संवरणम्। श्राच्छादनम्। भक्षति। •ते।

भु—भू—भगू—भुङ्, भूङ्, भगुङ्। स्वा, चा। गतिः। भवते वा, 'भावते'। सूष्—(यूष्), स्वा, प। हिंसा। सृ—भृष् (जृष्), दि, भृ (जृ)।

क्रा, प। वयोहानि: । जीलींभूाव:। क्रिकेटिंग, भृणाति। जभार। जमा-रतुः। भारता, भरीता। श्रभारीत्। (ष) भरा। भर्भरः।

(支)

टक्-टिकि, चु, प। बन्धनम्।

्टक्क्यित। टक्क्ति। उद्- उत्तेखः। उद्घक्कितः। नाक्षष्टं न च टक्कितं न नामतं नोत्यापितं धनुः, महाना १। २४।

ु टल्-भ्वा, प । १ वैक स्थम्।

व्याकु ललम्। २ वैक्तव्यम्। विद्व-बीभावः। ठ विता। टटावा। टेवतः। टिवता। श्रद्धाचीत्। दृष् दृवित। टुक्तः। टाकः। दृकः। दृावः। टिक्-टीक् टिक्क, टीक्क, (किक)

भ्वा, श्रा। गति:। टेकते। टिटिके। टेकिता। टोकते। टिटोक्ने। टोकिता। टोका। टोक, टोकते इति कश्चित्। टिप्, चु, प, वो। प्रेरणम्। टेपयित। टुल्—(टल्), भ्वा, प। विक्तवः।

(霉.)・

डप—(डम्प, डम्प, डिम्प, डिम्प), चु, चा, ड, वो। संघात:। डापयति। ॰ते। डपि, डम्पयति। ॰ते। डिम, डम्पयति। ॰ते। डिपि, डिम्पयति। ॰ते। डिमि, डिम्पयति। ॰ते।

डम्ब्—डवि, चु, प, वो। नोदनम्।

प्रेरणम्। डग्बयति। डिवि, डिग्बर् यति, वो। वि—ग्रनुकरणम्। ऋतु विड्ग्बयामास तम्, र १, १८। विड्-म्बना। विडग्बते (स्वि)।

डिप्, दि, तु, चु, प्रच चेपणम्।
प्रेरणम्। डिप्यति। डिप्ति। डिडेपे।
डेपिता। श्राडिपत्। तु, डिपिता।
श्राडिपौत्। डिप (डप) चु, श्रा, ड,
वो। सङ्घातः। डेपयति। ०ते। डिपन्ति
यस्य मातङ्गा डिप्यन्ति च तुरङ्गमाः।
डेपयन्ति मनुष्यास्य युद्धे निम्नोन्नतां
भुवम्॥ कवि ८६।

डिम्ब्—डिबि (डिबि)

डी, डोड्, म्वा, दि, भा। १ उड्डयनम्।
नभीगमनम्। २ गितः, वो १ स्ट्
डयते, डीयते। सिट् इडियो। सुट्
डियता। स्टट् डियथते,। सुड् भडयष्ट। भडियपाताम्। भडियपत। सन्
डिडियपते। यङ् डेडीयते। डेडियोति।
सिन् डाययति। भडीडयत्। क्र

मते भ्वा, इधितः, इधितवान्। इद्-एडडियनम्। उडियेग्ते घरा यस्य कोटियः समराङ्गणे। भग्नानामरि-भैन्यानामुड्डयन्ते रजांि च॥ कवि १४२। उदडीयत पित्तभिः, नै २, ५। प्रोडिडनोड्डीनसंडीनान्येताः खगगति-क्रिया इत्यमरः। प्रव—प्रधोगतिः।

तच

(2)

हुग्हं — हुन्ह, भ्वा, प । प्रन्वेषणम् । हुग्हिति । दुद्धिते गीर्गीपेन । होक्—होक (किक) भ्वा, पा।

गितः। लट् होकते। वदनं होकते (पाहणोति), यकु ३, १८५। जिट् इहीके, यान्तं वने राह्रिचरो इहीके, भ २, २३। इहीकिर्य पुनर्लक्षाम्, भ १४, ७१। लुट् हीकिर्या। लृट् होकिर्यते। लुङ् प्रहीकिष्ट। प्रहोकिष्ठाताम्। प्रहोकिष्ठते। यङ् इहीकिष्ठते। यङ् होकिष्ठते। यङ् होकिष्ठते। यङ् होकिष्ठते। यङ् होकिष्ठते। प्रहाकिष्ठते। प्रहाक

(त)

तक् भा,प। १ इसनम्। २ सइनम्, वो। तकति। तताक। तकितात

तत्त—तत्त्व, भा, प। तन्त्वरणम्।

क्वायोकरणम्। तत्त्रणम्। सद् तत्त्वति,

तत्त्रणोति, पा ३,०,०६। सिट् ततन्त्र।

ततन्त्रतः। ततन्त्रिय, तत्रष्ठ। सुट् त
चिता, तष्टा। सृट् तन्त्रियति, तन्त्रति।

सुङ् यतनीत्, यताजीत्। अत-

चिष्टाम्, श्रताष्टाम्। श्रतचिष्ठः, श्रताचुः। सन् तितचिषति, तितचिति। युड् तातचते। तातिष्टः। णिच् तचयित। श्रतस्वत्। निर्, सम् भर्मिनम्। व्यथनम्। सन्तचित वास्मः, पा ३, १, ७६। सम्चिद्धानी वचसा निरतच-न्नरातयः, सा ११, ४८। तच्, स्नु, प। १ त्वचनम्। श्राच्छादनम्। २ त्वेषो ग्रहणम्। ३ परिश्रहः। तचित। तत्व। तचिता।

तङ्ग, ति । भा । सः च्छ्रजीवनम् । दी:स्यम् । तङ्गति । ततङ्ग । तिङ्गता । यतङ्गीत् । या-धातङः । भयम् । तङ्ग्-तिम् (यम्) भा, प ४ १ गतिः ।

२ ख्वलनम्। ३ कम्पः, वो। तङ्गति। ततङ्गः। तङ्गिता। व्यागः, वङ्गातः, वो।

तञ्च, तञ्च, तन्चू, तन्जू, क, प।
सङ्गोचः। लट् तनि । तङ्कः। तः
चित्तः। तञ्चिता। तनच्मि, तनज्मि।
खङ् अतनक्। लिट् ततच्च। लुट्
तङ्काः, तिच्वता। लुट् तङ्गात,
तिच्चिति। लुङ् अताङ्गोत्। अतिच् क्षाम्। अताङ्कः। अत्रचोत्। अतिच् ष्टाम्। अतिच्छः। सन् तितङ्कति, ति-तिच्चिति। यङ् तातच्चते। तातङ्कि।
णिच् तच्चयति। तक्काः, तिच्वता।
तक्षः। तन्चु (चन्चु) भ्वा, प। मृतिः।
तच्चति। तिच्वता। (उ) तिच्वता।
तक्षा। तक्षः।

तर्—भा, प । उच्छायः । उच्चीभावः । तर्रात । ततार । तरित तरः, चु, प, वो । बाइतिः । तारयति , तड्—चु, प । बाघातः ।

ताङ्नम् । तङ् (घनि) चु, प दीप्तिः । ताङ्यति । घतीतङ्त् । घत ताड़च मुष्टिना (ताड़ं करोतीति णिच्), भ रथ, ७८। शिद्यार्थं ताड़यत्ती, मनु ४, १६४। तं हचैरताड़यत्, स ८, ३२। श्रताड़यन् स्टक्षांस, भ १७,७।

तण्ड्—तिंड्, भ्वा, श्रा। ताड्बम्। श्राघात:। तण्डते। ततण्डे। वितण्डा। ैतन्—ततु, त, उ। विस्तागः।

व्याप्तिः। प्रसारणम्। लट् तनीति, पा ३, १, ७८। तनुतः। तन्वन्ति। तन्वः, तनुवः। तनुते। तन्दाते। तन्दते। तनोति रविरातपम्, कु २, ३३। डि, तनु। तनवानि। बिङ् तनुयात्। तन्वीत। बङ् श्रतनोत्। श्रतनुताम्। श्रतन्वन्। श्रत-नवम्। अतनुत। अतन्वाताम्। अत-न्वत । तरवः पुष्पान्तरानतन्वन्, भ १०, २२। जिट् ततान । तेनतः। तेनिय। तेने। अतृह्लं तस्य ततान, भ २, १९। कुलानि सरोजलच्यीं तेनुः खलपद्म-चासै, भ २, ३। पितुं मुंदं तेन ततान सोऽभंकः, र ३, २५। लुट् तनिता। स्टट् तनिष्वति। ०ती। लुङ् अतनीत्, षतानीत्। षतानिष्टाम्। ष्रतानिषुः। श्रतत, श्रतनिष्ट। श्रतनिषाताम्। चत्रिवत । चत्रवाः । चत्रिष्ठाः, पा २, ४, ७६। प्रतानिष्ठां तमो यथा, भ १५, ८१। कर्मण, तायते। तन्यते, पा ६, ४, ४४। श्रतानि। सन् तितनिषति। •ते। तितांसति। ०ते। तितंसति। ०ते, पा ६, ४, १७। यङ् तन्तन्यते। तन्तन्ति, पा ६, ४, ४४। णिच् सानयति। मतीतनत्। तनु, चु, पं। १ खडा। २ खपकातिः। २ स्राघातः हिंसा वर्जनम् वो। ४ सुनीति: । भ्रं भन्दः । ६ उपतापः, दुर्गा ।

७ (उपसर्गात्) दीर्घीकरणम् । विस्तारः । तानयति, तनति। (ड) तनिला. तला। ०तत्य। ततम्। तन्तिः। तननम्। तान:। तन्वन्। तत्। व्यति - श्रन्थोन्य-विस्तारः। व्यव्यतन्वातां सूत्तीं, भ द, ३। घव-व्याप्तिः। गक्ताताः सन्तिभिरन्तरीचमवतेने, भा १६, ४३। या-व्याप्तिः। जड्तामातन्रोति उत्तर ८१। उद्दे—अर्डु विस्तार:। उत्तान:। परि-सर्वतो विस्तार:। वेष्टनम्। प-विस्तारः। क्रतिभिवीचसार्यं प्रतायते, मा २, ३०। वि-विस्तारः। वितत्य शार् म, भ ३, ४०। कौतुक-क्रियां वितेनतुः, र ११, ५३। कर्म व्यतानीत् (पारव्यवान्), सं १, ११। विततेषु प्रध्वरेषु, कु २, ४६। पिच् दीर्घीकरणम्। विस्तारः। वितानग्रति, वितानयति यः कीत्तिं वितनत्वमलं यमः। वितनीति चयः स्त्रीणां हृदये मन्मयव्ययाम्॥ किति ८२। सम्-विद्यारः। सन्ततम्। सततम्।

तन्त्र्—तित्रि, चु, प्रा।

१ जुटुम्बवारणम्। पोषणम्। २ धारणम्। धरणम्। ३ विस्तारः। तन्त्रयते। प्रजाः प्रजाः स्वादव तन्त्रयित्वा, प्रजु, ५,८।

तन्त्र् तन्त्र, तिव्र, तिद्र, चु, प।

१ सादः। अवसादः। २ मोदः। तन्त्र-यति । तन्त्रीः। तन्द्रयति । तन्द्रीः। सौत्रधातुद्दयमिति केचित्, दुर्गौ।

तप्-भ्वा, प। भन्तापः।

दाइ:। शोकः। तप्, दि, या। १ ऐख्येम्। प्रभुभावः। २ उपतापः, वो। ३ तपःकरणम्। जट् तप्रति। पर्जनार्थं प्रात्मनेपदं यक् च। तस्यते तपस्तापसः

मंचित्र। त्रयं धातुरै खर्ये वा तङ्खनी स्वभते। प्रन्यदातु प्रव्यिकरणः परसी-· पदी, की १२६। तपत्यादित्यवद्याः सा त्त्रपति यः परन्तुपः। तपते रिपुराष्ट्रश्च ताप्यत्यहितं सताम्॥ कवि २८। तपति तनुगाति! मदनस्वाम्, शकु ३, ८८। रविस्तपति निःशङ्कम, भ १६, ६। तपृत्यादित्यवचैव चर्चूष च सनांसि च, मनु'७, ६। तपति न मां किंगलयगयनेन, गीतगो ७, ३१। लिट् तताप। तेपे। लुट् तप्ता। ल्टट् तपाति। •ते। लुङ् प्रतासीत्। प्रता-साम्। यताप्सः। यतसः। यतसाताम्। श्रातपात। वनमतापीच्छनैर्भातुः, भ ८, २। भावकर्मणीः, तप्यते। ग्रन्वतस यापेन, या २, १, ६५ । वर्मकर्त्तर अतस तपस्तापमः। तपति तापसं तपः (दुःखयति)। तप्यते तपस्तापसः (अजयित), पा ३, १, ८८। तेपे तप: क्रवटवासनः, धनुर्ध ३४। सन् तित-प्रक्रि। • वे। यङ् तातप्यते। तातिम। तप्, चु, पादाइः। तापयति। तपति। त्रा। यतीतपत्। ययमात्मनेपदीति केचित्। तापयते, दुर्गा। तप्, भा, छ, वो। दाइ: तपति। •ते। तिपता। अयं सेट् इति वोपदेव:। तसम्। तएनम्। ताप:। तपन:। अनु —श्रनुतापः। पश्चात्तापः। श्रोकः। श्रन्ब-तंत्र पापेन, पा ३, १, ६५। विरहः किसनुताप्रयेदिपश्चितम्, र ८, ८०। यभि उत्ताय:। यभितप्तमयोऽपि मार्दवं भजते, र ८, ४४। आ—आतपे। द्युति:। उदु-(जूत्ताप:। मन्ताप:) दौसि:। उत्तपति सुवर्षे सुवर्णकारः, षा ३, १, ८८। उत्तपते, पा १, इ, २७। उत्तपमान चातपः, भ ८, १४।

उप-उपतापः। निर् उत्तापः। निष्टपति सवर्णम (सलद्रानं स्प्रभंयति)। निस्तपति सुवर्णम् (पुनः पुनरानं स्पर्धयति), पाट, ३,१०२। निष्टक-न्तीसिवात्मानम्, सट, ८५ ।, परि-परितापः। अनुतापः। शोवः। सन्तापः। स्वीजता व्यथा। वां परितापयन्ति, हितो। हितादवेतः परितप्यसे, भा ११, २८। परितप्यते नोत्तमः परव्वदिभिः, भा १६, २३। प्र-प्रतापः। सन्तापः। भासस्तवोगा प्रतपन्ति, गौ ११, ३०। प्रतपतु नरेन्द्र-चन्द्र:, रता १, ८। वि-दीप्ति:। वितपते रवि:, पा १, ३, २०। म ८, १४। सम्-मन्तापः।

तम्—तमु, दि, प। १ श्राकाङ्वा।
२ ग्वानिः, वो क्षशीभावः। ताम्यति, पा ७, ३, ७४। न च दुः विन
ताम्यति, कवि २४५। तताम। तेमतुः।
तमिता। तमिष्यति। श्रतमत्। (श्रतमत्, श्रतामीत्, वो)। पिच् तमयति।
श्रतमिः, श्रतामि, पा ६, ४, ८३। ७,
३, ३४।(उ) तमित्वा, तान्वा। तान्तः।
सदुनतान्तनतान्तमनोकयत्, मा ६,
२। उदरेण ताम्यता, भा ८, १७।
उद्—उत्कर्णा। उत्ताम्यति मे मनः,
रक्षा ३, ८४। सम्—म्बानिः। चिन्तासु
सन्ताम्यति, गीतगो ४, २१।

तस्य — (वस्य) भ्या, प । हिंसा। तय — (षय) भ्या, था। गतिः।

पालनम्, वो। तयते, तयते चत्रहत्तं यः, कवि ४०। तेये। तयिता। अत-यिष्ट। तेये पुरात्, भ १४, ७५। धरि-त्रीं तेये, भ १४, १०८।

तर्क् — (कु.प्) चु,प। १ दी प्तिः। २ वितर्का जदः। ३ संग्यः। स्ट् तर्भधित। वृद्धसेचनाद्वभवती परि-श्वान्तां तर्भधामि। यकु १, २१। जिट् तर्भधामास। जुट् तर्भधिता। जुङ् अततर्भत्। तर्भधित्वा। •तर्क्थ। तर्भित:। तर्भधम्। तर्भः। प्र, वि— वितर्भः। प्रतर्भथवन्यस्गेन्द्रनादान्, भ २, २८।

तर्जं — स्वा, प। मसं नम्।
तर्जंत। तर्त्जं, तं तर्त्जं, स १४,
८०। तर्जिता। अर्त्जोत्। अर्त्जंष्टाम्। अर्त्तिषुः। तिर्तिज्ञंपति।
तार्त्रच्येते। तार्ताक्षां। षिच् तर्ज्यति।
तर्जं, चु, आ। तर्जनम्। तर्ज्यते।
तर्ज्यति भर्म्भयति इत्यपि दृष्यते
कविष्वति आख्यातचिष्ट्रका, रघुटीका १२,४१। अदितान् तर्ज्यविव
केतुसिः, र ४,२८। तावर्त्जयदस्वरे,
र १२, ४१। सेडीमङ्ख्या तर्जयदित्
अक्षुर,१८२। तर्जंते यो हि सूपालान् न तर्जयति संज्ञनान्, कवि
२५६। तर्जंनी।

रप्रदा तजना।
तह — स्वा, प। हिंसा। तदित।
तर्व — स्वा, प। गितः। तवित।
तर्व — स्वा, प। गितः। तवित।
तर्व — चु, प। पितष्ठा।
ताचयित। तवित, वी। भितीत्वव्।
तस्—तस्, दि, प। डपचयः।
वस्त्वा ततास। तिमता। भतसव्।
भातसव्, भातसीव्, वो)।
(ड) तिसत्वा, तस्वा। तस्तः।
तंस्—तसि, चु, प। भवाद्वरणम्।
भावतंसयित। भवतंसित, वो। डत्तंसिष्णिति कचांस्तव देवि। भीमः,
वेणी ११।

ताय-तायु भा, आ। े१ सन्तानः।

प्रवस्थः । विस्तारः । रपाखनम् । जुट् तायते । अमर्षोऽतायतः, स १७, ५० । कामास्तेऽन्यत तायन्ताम्, भ २०, २५ । तायते खकु जत्रम्, किन् ४० । जिट् तताये । जुट् तायिता । जुट् तायि-व्यते । जुड् अतायिष्ट । अतायि, पा ३, १, ६१ । अतायिषाताम् । अतायिषत । अतायि सच्चमस्य (सन्ततम्), भ ६, १३ । णिच् ताययति । (च्ट) अततायत् मायां व्यतायेताम्, भ १७, १०५ ।

तिक्—तिग् खा, पा १ गतिः।
२ श्रास्तन्दनम्। गतिविशेषः। ३ वधः,
वो। तिक्कोति। तिग्नोति। तिक्क (किक्क) भ्वा, श्रा। गतिः। तेक्कते। ते-किता। तिष्ट्—खा, प, वो। घतः। तिक्कोति।

वि — स्वा, पा। वातः। तिन्नाति। तिन् — स्वा, पा। १ नियानम्।

तीत्रणीकरणम्। २ चमा। सहनम्। (जमायां सन्) तितिच्तेऽपराधम्, पा
३,१,५। श्वतिवादांस्तितिच्ते, शनु
६, ४०। तितिचते चमी यस्तु सायराधेषु साधुषु। लिट् तितिचाञ्चक्तं।
लुट् तितिचिता। लुङ् श्वतितिचिए। तिज्, चु, प। निशानम्। तेजनम्। तेजयित। जुसुमचापमतेजयदंशभिर्ष्टिमकरः, र ८, ४१। •तेजयितः
यमाक्रम्यः कवि १६८। छ्ट- उत्तेजनम्। प्रोरणम्। छहीपनम्। व्ययकरणम्। तील्पोकरणम्।

तिप् निष्धं, भा, आ। चरणम्।
च्युतिः। तिपते। तितिपिषे।
तिप्ताः। चीरखामी लैंगं सेट् इति
बंधामा विभाषितेट् इति वोपदेवः।
तिप्दाते। तिप्सीष्टः। अतिप्तः। अतिप्साताम्। दिष्टः, देपते इति कश्चित्।

ू तिम्-दि, प। बार्ट्रीमावः। ्क्कोदनम्। तिस्यति। तितेम। तेमि-ता। तीम्, तीस्यति, वी।

तिल् – तिल् – भूग, प। गतिः। तिन, तु, चु, पं। स्रोडनम्। स्निषी-

भाव:। तेलति। तिलति। तिलति। तेलयति। तेतित्वते शिशुजनी घनिनां

ग्रहेषु। तिज्ञन्ति यौवनमदेन रते युवानः। कवि ४७।

तीक्, तीक्ष (किकि) भूा, घा। गितः। तीम्-(तिम्) दि, प। स्नेदनम्।

तीम्यति।

कार—(पार) चु, प । श्रदन्तः।

श्रातिती-तीरयति। कर्मसमाप्तिः। TO RELATION OF THE PROPERTY.

तीव्-(पीव्), मृा, प। खील्यम्। तीवति। यस्तु नातीव तीवति, कवि Cambal Shains (Pre 1919)

🥕 तु—ग्रदा, प। सीवधातुः।

्रगति:। २ वृद्धि:। पूर्त्ति:। ३ हिंसा। ४ जीवनम्। वृत्तिः, वो। तौति। तवी-ति, पा ७, ३, ८५। तुतः। तुवीतः। तुवन्ति। तुताव। तीता। तोष्यति। यतीषीत्।

तुज् भा, प। हिंसा। तोजति। - तुच्च - तूजि, भूा, पा १ पालनम्। २वलम्। ३ हिंसा । ४ जीवनम्, वो । थ् गाच्या, वो। तुद्धति। तुत्द्ध। तुष्मिता। प्रतुष्मीत्। तुष्मः। तुजि, (क्रुप) चु, प। लेसि:। तुनि, चु, प। १ हिंसा। २वलम्।३ दानम्। ४वासः।

तुद्धयति । तुद्धति । तोजयतीति

केचित्। एवं सजि, सञ्जयति।

तुद्-तु, प। कलहकरणम्। तुर्टति। तुतीर। तुरिता। यतः रीत्।

तुड्-तुड्, भा, प। तुड्, तु, प। तोडनम्। दारणम्। सेदः,। चिंसा। तोडित। तुनोड। तोडिता। तुडित। तुडिता। यतुडीत्।

तुड्ड — भा, प वो। अनादरः। तुष्—तु, प। कुटिनीकरणम्। तुणति। तुतीय तोणिता। चती-गौत।

तुग्ड्-तुडि, भ्वा, श्वा, वो। वधः। निपीड़नम्। तुण्डते पान्यं पिकः, दुर्गा ।

तुख-चु, प। घदन्तः। यावरणम्। तुत्थयति। तुत्थापयति, वो। पांग्र-र्दिशां मुखमतुखयदुखितोऽद्रेः, मां, ५ 199

ु तुद्—तु, उ। व्ययनम्।

पौड़नम्। ताड़नम्। चट् तुदति। •ते, पा ₹, १, ७७। तुद्धि समीपि वाक्षरै:, भारत। चतुदन् शक्तिभि-द्वंदम्, भ १७, १२। ब्रिट् तुतीद। तुतोदिय। तुत्तदे। तुतोद ,गदयारिम्, भ १४,८१। बुट् तोत्ता। बुट् तोत्स्वति। •ते। सुङ् यतीसीत्। यतीत्ताम्। य-तीत्यः। अतुत्त। अतुत्साताम्। अतु स्ता प्रतीत्सः श्रूनः, भ १५, ४। सन् तुतुस्ति। •ते। यङ्तीतुद्यते। तोतीः ति। पिच् तोदयति। अतृतुदत्। तुःखा। तुत्रः। तोदः। तोतृम्। ,विधुन्तुदः। कमंसु निस्तुतोद (व्यय यामांच), भा १७, ४३। श्रृक्तुद:

. उन् (बन्द) ।

्रेतुय् तुर्फे, स्वा, पा हिंसा। तु, पा १ हिंसा। २ स्त्रीयः, वो। तोपति। तुपति। तौफति। तुफति। तुम्फति, वो।

तुम् निया, चा, दि, क्या, प।
हिंसा। वधः। बट्तोभते। तुम्यति।
तुम्राति। तुम्रोतः। तुम्रन्ति। सृष्टिनाऽतुम्रात्तम्, भ १७, ७८। च्रवानतुमात्, भ १७, ८०। बिट् तुतोभ।
तुतुमे। बुट्तोभिता। बुङ् खा, बतुभत्। घतोभिष्ट। दि, चतुभत्। क्रा,
चतोभीत्।

तुम्प, तुम्प, तुन्प, तुन्प, भ्वा, प।
हिंसा। तु, प। १ हिंसा। २ क्ले थः,
वो। तुम्पति। तुम्पति। प्रस्तुम्पति गौः,
पा ६, १, १५। न यङ् लुकि, प्रतोतुम्पौति।

तुम्ब् — तुबि, भ्वा, प। घर्दनम्।
पोडनम्। तुम्बति। तुबि, चु, प।
१ घर्दनम्। २ घर्द्यनम्। तुम्ब्यति।
तुपि, तुम्पति। तुम्पयतीत्येके।

तुर्ब् — तुर्बी (उर्बी), भूा, प।

इननम्। तूर्वति । तुतूर्वे । तूर्विता। (ई) तूर्णम् । क्रिप्तू तुरो ।

तुल् चु, प। जन्मानम्।

परिमाणम्। तोलयित, तोलयित काञ्चनं विणिक्, दुर्गा। तोलित, वो। यस्तोलयित दारिद्राकरंमे पिततान्, कवि २०४। अतृतुलत्। पृथिवो तोल-यिष्यते (जहु चिप्यते), भ१६, १६। तुलयित, तुलना, इत्यादो तुलाग्रच्दात् णिच्, को १७३। त्वदीयं मीन्द्र्यं तुह्निगिरिकन्ये! तुलियित्म् इति मृङ्गरोक्तम्। रामे बृद्रग्रामनं तुलयित्, महाना १, ३१। प्रतः सारं घन तुस-वितुं नानितः प्रच्यति लाम्। मेघ • २०। तोलितम्। तोलनम्। उद् इत्तोलनम्। जद्द्वनयनम्।

तुष्-दि, पं। प्रीतिः। तुष्टिः। बट् तुथति। तुथन्ति ब्राह्मणा नित्यम्, कवि १४८। चिट् तुताय। तुतुषतुः। तुतीषिषा ततीष हत्तंहाः र २, ६४। तुतुषुवीनराः सर्वे, स १४, ११२। लुट् तोष्टा। तोष्टा च भरतः प्रम, भ २२, १८। जुट् तोच्यति। खयम् कस्य तोस्यति, स १६, ३। लुङ् यतुषत्। यतुषत् कुभकणः, भ १५, ८। सन् तुतुचित । यङ् तोतुष्यते। तीतीष्टि। णिच्तोषयति। प्रतृत्वत्। गुरून् सम्यगतूतुषः, भ ६, ६८। मूल्येन तोषयेदेनमाधिस्तेनोऽन्यथा 🛒 🌣 भवेत्, मनु ८, १८४। प्र, परि परितोषः। प्रतुष्यति योत्रसुखैरपर्थैः, स १२, ८२। सम्—सन्तोषः। भोजनविश्वेषे-र्वायसं सन्तोष्य, हितो। Day of the state of

तुम्—भ्वा, प । शब्दः । नोमति । तुर्ताम । तोमिता । श्रतीः मीत् ।

तुइ—तुडिर् (उडिर्) खा, प। चर्दनम्। बधः, वो। तोइति। प्रतु-इत्। प्रतोद्वीत्।

तृष्ड् तृष्डु, भा, प, वो। धनादुरः।
तृष्डु (तुष्डु) खा, प। तोष्डनम्। दार-

तूण, चु, पावी। श्रदकाः। सङ्कोचाः। तूणयति। श्रतुतृषत्। तूणः।

तूर्य-चु, प, वो । सङ्गोचः। क्रिक् तूर्य, चु, घा। पूर्वम्। तूर्ययति । वि ् तूर् तूरी हि, चा १ खरा।

२ इसा। तूर्येते, तूर्येते न कचित् कार्ये, कवि २५५ । तुर्ते। (ई) तूर्णे:।

तूल स्वापा निष्कर्षः।

निष्कोषणम्। जन्तर्गतस्य बहिनिः सारणम्। तृचित । तृत्व । जत्वीत् । तृत्वं, ज्ञु, पः वो । परिमाणम् । तृव-यित काष्वनं बणिकः । तृवयत्यपि देविन्दं संयाम अजविकसातः कवि २०४। तृत्व, जु, जा। पूरणम्। तृत्वयते । तृत्वो। तृत्विका।

तूष-भ्वा, प। तुष्टि:।

तूषित । तूषिता सुबदेवताः, कवि १४८। तुतूष । तूषिता । धतूषीत् ।

काल त्व अवा, प। गतिः।

हचित । तहच । हिचता । घहचीत्।

हण्—हणु, त, उ। भचणम्।

तिणीति। तर्णुते (द्वणोति, द्वणुते)। बहीं वि तर्णोति। हरिणी द्वणुते द्वणम्, प्रनर्ध ३५। द्वणोति प्राप्तत्रं युद्धे, कवि ७४। (उ) तर्णिता, द्वला। द्वतः। तर्णकः। द्वणम्।

ल्द्र- बल्दिर्, क, उ। हिंसा।

्र ग्रनादरः। बट् हणित। हन्ते।
भूतिं हणित्र यचाणाम्, भ ६, ३८।
हि हिस्ति। लिङ् हन्दात्। हन्दीत।
बङ् ग्रहणत्। घटन्ताम्। महन्दन्।
ग्रहणदम्। र्यहन्त। लिट् ततदं, रथाश्वान् रिपोस्तर्दं याजिना, भ १८,
१०८। तहदे। तहदिषे। तहस्ते, पा
७, २, ५७। बुट् तदिंता। बुट् तदिश्वात। ०ते। तहस्येत। ०ते। बुड्
ग्रतर्दं थत्। ०त। मतस्येत्। ०त।

लुङ् (इर्) सतदत्। सतदीत्। सतदिः ष्टाम्। सतदिषुः। सतदिष्ट। सरिमत-दिषुः, स१५, ४४१। सन् तितदिषति। ०ते। यङ् तरीढदाते। तरीतर्ति। सन् तिढलाति। ०ते। तर्देयशि। सती-ढदत्। (७) तर्दिला, ढच्चा। ढणम्। वि—ताडनम्। ममीणि च वित्रस्त्रंति स१६,१५।

म १६, १५। त्य -दि, प। १ प्रीणनम्। तर्पेणम्। २ त्हिमः। त्रिशोभावः। त्रुण्, स्वाः, प। प्रोणनम्। सट् खप्यति। त्रप्रोति, पा ८, ४, ४८। त्रप्रुतः। **त्रप्र**-वन्ति। नाम्निस्तृप्यति काष्ठानाम्। को न त्यप्रित वित्तेन, हितो। कथयस्त न हि हप्यामि, भारत। खन्दीनि हप्यतु संधूनि पिवस्तिवायम्, ने १४, १०८। यस्तृप्रोति पितृन्, वावि १०। ल्प्यति यो धनम्, कवि १५४। खपुयात्। लङ् घढप्रोत्। सिट् ततर्पं, तिखपतुः। , तर्तार्थेय, तत्रप्य, तत्रप्य। तहपित्र, तहम्ब। चुट् तर्पिता, तर्ह्या, व्रप्ता, पा ६, १, ५८। ७, २, ४५। जृट् तपिष्यति, तस्रीति, तसीति, वप्स्रति। खादिः सेट् तपिता। यद तस्रोन्ति मांसादाः, भ १६, २८। जुड अतर्पीत्, अतार्पं सीत्, अवाप्सीत्। बढ्यत्। बतर्पिष्टाम्, बतार्शाम्, बता-प्ताम्, प्रत्यवताम्। पितृनतार्षे सीर्न्धं प रत्ततीयैः, भर, ५२। प्राणीवचाळवत्, म १५, २८। नातापाँद मचयन्, म १५, 8८। सन् तितर्पिवति, तित्रप्सति। यड् तरीलप्यते। तरीतर्प्ति। चिच् तर्पयति। भूतीलपत्, भततपैत्। लप्, चु, प। १ र्हाप्तः। २ प्रीयनम्। ३ सन्दीयनम्। तपैयति। तपैति। तपिता। त्रप्ता। त्रप्ता।

हितः। तर्पणम्। यशस्तर्पयतीव यः

II MAKMA. 1

कवि १५४। इविषा योऽग्नित्रयं तर्पति देवांस्तर्पयति प्रियोपकरणैः, कवि १०। श्रम श्रमतर्पणम्। भोजनाभावः। श्रा श्रातर्पणम्। प्राचेपनम्। परि सस्यक्टितः। प्रावस्तर्भने दिपुः सम् सन्तर्पणम्। यावस्राधने दिपुः स्वामान् सन्तर्पयति, भ १२, ७५ हे

ह्या हिष्तु, पा हिसः। ह्याति। हिष्ति। तिर्पता। अतर्पीत्, कौरपुर।

त्यम् — त्यम्पः, त्यन्पः, त्यन्पः, तः, पः। त्यापः। त्यम्पति, त्यम्पति। नन्तोपेऽपि नुमः, कौ १५१। त्यपति त्यपति, वो। तत्यम्पः। श्रद्धम्पोत्।

दण् जिल्लं, दि, प । त्रणा।
पिपासा। श्राकाङ्का। त्रष्ट्यति। ततर्षे।
तत्रषतः। तर्षिमा। तर्षिष्यति।
श्रत्यतः। श्रतभीत्, वो। चताश्च
कापयोऽत्यन्, भ १५,५१। सन् तितर्षिप्रति। यङ् तरीत्रष्ट्यते। णिच् तर्षयति।
श्रतोत्रष्ट्रपत्। त्रष्ट्रप्ताः।
१,२,२५। त्रष्ट्रप्ताः। तषः। त्र्र्णाः।
त्रण्यक्। श्रत्र- समिनाषः।

हिंसा। बधः। लट् हहति। हणेटि, पा ७, ३, ८२। हण्डः। ह हिन्त। हणेचि। हणेचि, भ ६, ३८। लोट् हणेड्। हण्डि। हण्डानि। हणेटु रामः, भ १, १८। हण्डानि। दुराचारा राचसोः, भ २०, ३। लिङ् हं द्वात्। सहस्रोत्। प्रहण्डान्। प्रह हन्। प्रहण्डम्। प्रहणेट् प्रवृत्, भ १७, १५। प्रह हस्लोमरे, भ १७, १२। बिट् ततहैं। तहहतुः। ततहिंग, ततहं।
बुट् तहिंता, तही। के, तहिंता।
बुट् तहिंथिति, तस्येति। बुड् भहचंत्, भतहींत्। के, भतहींत्। सन्
तितचिति। तितहिंपिति। यह तरीहहाते।
तरीतिहैं। णिच् तहेंयित। भततहेंत्।
भतीहहत्, पा ७, ४, ७। तहिंका,
हृद्वा। हृदः, हृदः सीमितिप्रतिभिः,
भ १४, ३५।

खं च्— त्वन्ह (.तहः) तु, पानि हिंसा। तं हित। ननोपेऽपि नुम्, कौ १५१। तहित, वो। तत्वे हा त्वंहिता, त्वाता। त्वंहिष्यति, त्वह्याति। पाणि, त्वधात्। प्रतं हीत्, प्रता-र्च्चीत्। प्रतं हिष्टाम्, प्रतार्ड्षाम्। प्रतं हिष्ठः, प्रतार्ड्चः। सन् तित्वचितः। तित्वं हिष्ठाता।

ृ तृ स्वा, प । १ ज्ञवनम्।

जलोपरिस्थिति:। २तरणम्। अतिन क्रमणम्। उत्तरणम्। ३, श्रीभमनः, वो। लट् तरति, तरति सकनदुःखं वाकनं भावयेद् यः, दुर्गा। न बाहुभ्यां नदीं तरेत्, मनु ४, ७०। लिट ततार। तेरतु:, पा ६, ४, १२२। तिरिय। जुट् तरिता, तरीता, पा ७, २, ३८। खट तरिष्यति, तरीष्यति। प्रिला तरिष्य-त्युद्वे न पर्णम्, भ १२, ७७। * मिचित्तः सर्वेदुर्गीण मन्प्रसादात्तरिष्यसि, गौ १८, ५८। प्राणिष, तीर्यात्। जुङ् अतारीत् अतारिष्टाम्। अतस्यिषुः। सन् तितरिषति, तितरीषति, तितीषेति. पा ७, २, ४१। यङ् तेतीयंति। तातर्ति । पिच् तारयति। श्रतीतरत्। तीर्त्वा। नतीर्थ। तीर्षः, सच्छ तीर्षः र १४, ६। तरणम्। तरितुम्, तरीतुम्, तत्म्। तरित्यम्, तरीत्यम्

प्रवर्ग . र ..

43

तर्त्रव्यमिति वेचित्। तरः। प्रातरः। व्यति—वितिक्रमः। यतित्रक्येव सत्यं ् श्रुतिपराधवाः, गी १३, ३१। भव-° व्यवतरणम्। र्याद्वतलारं, र १, ५५। विमानं ज्योतिष्यथादवततार, र १३, ६८। स्रभुजास्वतारिता घूः, र १, ३४१ बङ्गराजादवतार्यं चर्चेः र ६, ३०। डर्-इत्तरमम्। उत्तेवनदान्. भ ७, ५५। ६, ८५ १ उदतारीदुटन्वन्तम्, भ १४, १०। जिच् (उदमनम्) भज्ञानभुताम्य, मनु ११, १६०। निर् निस्तारः। श्रतिक्रमः। निस्तीर्थ च दो इदव्यथाम्, र ३, ७। श्रापदं निस्तरेद् यथा, भारत। निस्ता-रवति दुर्गात्, मनु ३, ८८। प्र-णिच् मतारचा। वि-वितरचम्। दानम्। सम्—सन्तरणम्। अत्तरणम्। ज्ञानप्रवेनैव व्यक्तिनं सन्तरिष्यसि, गी ४, ३६। दीडिल एनं मन्तारयति पीलवत्, मनु ८, १३८।

तेज्—भा, प। पालनम्। तेजति। तेप्—तेष्ट (तिष्ट)भा, चा।

् चरणम्। चुितः। २ कम्पनम्। तेप-ते। तेपन्ते यस्य वक्कोन्दोन्दिष्यास्तत-विन्दवः, कवि १६६। संबीच्य तेपते स्त्रीणां बपुः, कवि १६६। तितेपे। ते-पिता। देपते इत्येके।

तेव् तेह, खा, था। १ कोड्नम्।
२ तोदनमिति भट्टमकः। तेवते।
तोड् तोड्, वो। खा, प। धनादरः।
खन् खा, प। द्वानिः। त्यागः।
बट् खडिता। खडि चोमम्, भ ५,
२३। बाषमत्वजत्, भ ६, १२२। जिट्

क्ष। तत्यज्ञित। चुट् त्यज्ञा। चुट्

ख्यति। लुङ् पत्याचीत्। प्रत्याक्ताम्।
प्रत्याच्यः। प्रत्याक्तामायुधानीकम्, भ
१५, ११३। मन् तित्यच्यति। यङ् ताल्यच्यते। तात्यक्ति। त्याजयित। तं प्रापीरितत्यजत्, भ १५, १२०। त्यक्ता।
त्यक्तः। त्यागः। त्यक्तव्यम्। त्यागिमम्।
त्याच्यः। परि—परित्यागः। वर्जनम्।
कस्तस्य धर्मदारपरित्यागिनो नाम
कोर्न्यय्यति, यज्ञ टी ७, ८८। सन्,
वर्जनम्। सन्त्याजयाचनार सीताम्,
भ ५, १०४।

व्रख्—(इख्) भा, प। मति:। व्रख्ति। व्रद्ध—व्रक्ति (कर्ति) भा, घा। मति:। व्रद्ध—'व्रखि' (इख्) भा, प। मति:। व्रद्ध—व्राग्न, वो, भा, प। मति:। व्रद्ध—व्रदि, भ्वा, प। चेष्टा। व्रद्धि। व्रद्ध—व्रपूष्, भ्वा, घा। खळा।

सट् वपते। सिट् वेपे, पा ६, ४, १२२। वेपाते। सुट् व्यप्ति। व्याप्ति। व्याप्ति। व्याप्ति। व्याप्ति। व्याप्ति। व्याप्ति। व्याप्ति। सुड् अवपिष्ट, अवस। अवपिष्ति। सुड् अवपिष्ट, अवस। अवपिष्ति। स्वर्णति। स्वर्णति। व्याप्ति। स्वर्णते। यङ् तावप्यते। तावप्ति। स्वर्णते। व्याप्ति। व्याप्त

त्नस्—त्नसी, दि, प। उद्देगः। त्रासः। जट् त्रस्यति, त्रसति, पा १, १, ५०। त्रसति कः सति नाम्यवना सने, ने ४, १६। त्रस्यन्ति गत्नने यस्मात् त्रसन्ति परदारमाः, वि १९६। तत्रास। तत्रसतुः, त्रेसतुः। तत्र सिय, विसिय, पा ६, ४, १२४। लुट् व्यक्ति। एट् व्यक्ति। लुड् प्रवासीत्, घवसीत्। का वसी, भ ६, ११८। कपेरवासित्रनीदात्, भ ६, ११। सन् तिवसिषति। युड् तावस्ति। तावस्ति। त्राम् तिवसत्। त्राम् वस्ति। व

बंग्-ब्रांस (जुप) चु, पांदीति:। 'त्रा'-श्रदा, प। रचणम्।

द्याति । कैथिददादी द्वा इति पद्यते । तैन द्वाडोति पंचिप्तमारम् । पद्मास्त्रा-(हीति सुग्धबोधम् ।

तुर—तु, प। छेदनम्। भेंदः।
विदीर्णभावः। तुर्वात, तुरुति, पा
३,१,७०। यावस्मम दन्ता न तुर्वात्त तावस्तव पार्य छिनिद्दा, डिनो। तुर्दान्त भवंभन्देडांस्तुर्वान्तः यन्ययो छदि, कवि ३८। तुत्रोट। तुतुरतः। तुरिता। सतुरीत्। तुर्, चु, सा। छेदनम्। न्त्रोटयते। तुरितम्। तुव्बद्दोमधनुः, सहाना १, १०।

्रवुप् न्वुफ् न्दुम्प् न्वुम्फ् —

तुन्प, सुनुफ, (तुप) स्वाः पा चिंसा। स्रोपति। स्रोफति। सुम्पति। सुम्फति।

ते तेड्, सा, पा। पालनम्। त्राणम्। रचणम्। कट् त्रावते, त्रायते वर्णधर्मेञ्च, कवि ४०। त्रावते स्पती स्थात्, गीर,४०। प्राची नरकात् तायते पितरं स्तः, सनु दः,
। तते। ताता तास्तः।
प्रतास्तः चळायाताम्। प्रवासतः।
द्रतमत्रास्तः स्थातो खाळ्ळं थः सङ्गः तः,
भ १५,१२०। सा न तास्याः कतां
पुरम्, भ १२।परि—परित्राणम्। रंचणम्। तातः, ताणः, पा ८, २, ५६।

श्रीम् — त्रीक (किन) स्वा, आ। । गति:। त्रीकते। तुत्रीके। त्रीकिता। भ्रतीकिष्ट। तुत्रीकिषते। तोत्रीकाते। त्रीक्यति।

लच् लच् (तच्) भा, पा

तचयम्। तनृकारयम्। संगीकरयम्। त्वचितं काष्ठं तचा, दुर्गा। तत्वच। त्वचिता, त्वष्टा। त्वचिष्यति, त्वच्यति। यताचीत्, प्रत्वचीत्। तच्च त्वचने तच्चत्, वो।

त्वज्ञ-त्वगि, भा, पा कम्पः। त्वगि (प्रागि) भा, पः गतिः। त्वज्ञति।

त्वच्-तु, प्र। संवर्णम्।
श्राच्छादनम्। त्वचिताः त्वक्।
त्वच-त्वन्चु (तन्चु) मृा, प्र। गितः।
त्वन्चु, ६, प्र, वो। सङ्घोचः। त्वचित्वा,
त्वनित्तः तत्वच्च। त्वचिताः विचित्वा,
त्वा

तर्-जिलरा, भा, पा। लरा।

केगः। चन्नुमः। त्वरते, त्वरंते धर्मे
एव यः, कवि २५५। स्वरस्व वस्ते।
छत्तर २४०। तत्वरे। नातुनेतुमबनाः म तत्वरे। वरिता। प्रतरिष्ट।
विकास विद्यानित्, भ १६, ४८।
विद्यानित्विष्ठी यङ् तात्वर्थिते

त्वरयति । दूतास्वरयन्ति माम्, रामा । श्रतत्वरत्, पा ७, ४, ८५। श्रतत्वरतां बोह्रम्, भ १५, ६०। ब्लिरतः, तूर्णः, या ७, २, ३८१ लरा।

ि त्विष्—स्वा, उ। दीप्तिः।

डज्ज्वलीभावः। त्वेषति। ०ते। विलेष। ति लिषे। वानरास्ति लिषुः, भ १४, ७० । लेषा। लेखाता ०ते। बाधिषि, लिखात्। लिचीष्ट। प्रलि-चत्। •ते। तिलिचति। •त। तेलि-यते। तेलेष्टि। त्वेषयति। लिषव्। व पव-निवासदानदीप्तिषु। अवलेषति। ०ते। (निवसति ददाति दीव्यते वा), दुर्गा । दाननिरसनयोरिति प्रदोषः।

त्सर् अवा, प्र। कद्मगितः।

कपटगमनम्। सट् त्यर्ति। सङ् बसारत्। लिट् तसार। तसारतः। लुट् सरिता। लृट् सरिष्यति। लुङ् श्रीतारीत्। श्रातारिष्टाम्। श्रातारिष्ठः। साराः।

(四)

थुड्—तु,प। संवरणम्। प्राच्छादनम्। थुडति। तुथोड। शुडिता,। अधुडीत्। लेखनवत् योडन-मणि। खुड्, खुडति। खुड्, खुडति। कुड्, कुडति।

युर्वे — युर्वी (चर्वी) भूा, य । इननम्। श्रृवंति। (६) श्रृणम्।

दस्य ना, प्रा । १ हितः । २ वेगः । गौवनरणम्। दत्तते, दत्तते धवं--कार्येषु जुलं दच्चयते हिषाम्, कवि २६६। दरचे। दिखता। अदिविष्ट।

णिच्दचयति। घददचत्। वर्भणि चदचि, चदाचि। गतिहिंसनयी: घटादिः को प्रा दचः। दचा। दिचणा।

दब्-स्ना, प। घातम्।

पासनम्। दन्नोति। कान्दसोऽयम्, की १४८। वीपदेवस्तु भाषायामपि पठितवान्।

> दङ्-दिवि, भा, प। १ पालनम्। २ वजनम्। दङ्गति। दङ्गिता।

दख-भदनः। चु, प।

दण्डनिपातनम्। दण्डयति, दण्डा-पयति, वो। तान् सहस्य दख्येत्, मनु ८, २३४। कीटमाच्यं कुर्वाणान् दण्डियत्वा प्रवासयेत्, सनु ८, १२३। घरतन्तु वदन् दण्डाः स्वित्तसांग्रमष्ट सम्, सनु ८, २६।

दद्-भा, था। १ दानम्।

ूर भारणम्, वो। ददते, ददते द्रविषं ब्राह्मिषेभ्यो यः, कवि १७५। विष्ट विट्यममुं ददस्व तसी, मा ७, ५३। ददरे. पा ६, ४, १२०। इदिता। घददिष्ट ।

दध्-भा, था। १ धार्यम्।

ः २ दानम्, वो । दधते, दधते यः सदा-चारम्, कवि १७४। देधे। दिधता। दन्व्—दवि, स्वा, प, वो। गतिः।

दन्वति। ददन्व। दन्विता। पदन्वीत्। दभ् दभ् दभ् दिस, चु, प, वी।

प्रेरणम्। दक्षि, चु, चा, वो। रागी करणम्। दाभयति। दक्षयति। व्ती दभिषातुष्त्रपठितोऽपि वात्तिकवना स्रोकार्याः । खत् दाभ्यः, की ३१२।

परवचनहेतुयापारः। गर्वः। दभी-ति। ददभ। ददभतः, देभतः, की १४८। दिभाता। दिभायति। दभ्यात्। प्रदमीत्। यदिभाषात्। गजालातेर-दिसिष्ठः (दम्बक्तः), भ १४, १५ सन् दिदिभायति। पा ७, १, ४६। स्यस्वं विष्मुमाह्य राजपुतं दिद-भिषुः, भ ८, ३३। यङ् दादभ्यते। दादब्ब्धि। णिच् दभयति। घदद-भत्। (७) दिभावा, दब्धा। दक्षः।

दम्—दमु, दि, प । १ उपयमः ।

शास्तीभावः । २ यान्तीकरणम् । यासनम् । दमनम् । लट् दाग्यति पा ७,
३, ७४ । यमो दाग्यति, राचमान्, भ
१८, २० । लिट् ददाम । देमतः । लुट्
दमिता । लुङ् घदमत् (ग्रदमत,
ग्रदमीत्, वो) जानुभ्यामदमञ्चान्यान्,
भ १५, ३७ । णिच् दमयति । ०ते, षा
१, ३, ८८ । (७) दमिता, दान्ता, पा
७, २, ५६ । दान्तः । णिच् दान्तः,
दमितः, पा ७, २, २७ । घदान्तास्तिदमेरणि, भ ८, १८ । तमुश्रया कमनीयतामदं दमयन्ती, ने २, १८ ।
दमी, वा ३, २, १४१ । प्र—दमनम् ।
प्रादमयन्त वन्ताः प्रषेषुम्, भ ८, ६३ ।

दय्-भ्या, था। १ दानम्।

र गमनम्। ३ रचणम्। ४ हिंसा। ५ प्रादानम्। यहणम्। ६ द्या। प्रतु-कम्पा। चट्दयते। दयते दीनं दया-जुः, दुर्गा। तेषां दयसे न कस्मात्, भ २, ३३। योऽयिभ्यो दयते धनम्, कृति ८४। सर्पिषो दयते। जिट्दयाचके, पा ३, १, ३७। दयाचके न राचसः भ १,१०६१ जुट् दियता । जुट् द्या श्वते। जुड् भदिषष्ट । भदिषणताम्। श्वदिषत्त । खेषामध्यदिष्ट न, भ ११,६२१ दियतः। द्या। रामस्य दय-मानः, भ दः ११८। न गजा नगजा दियता दियता (इष्टा रिचताः), भ १७,८। दया।

दरिदा-चदा, प। दुर्गतिः क्षेत्रीनावस्थानम्। श्रकिञ्चनीभावः। बट् दरिद्राति। दरिद्रितः। दरिद्रीत, पा ६, ४, ११२, ११४। दरिद्राति यथा इरि:, भ ५, ८६। नेदानीं शक्तवत्तेन्द्री दरिद्धितः, भ १८, ३१। उपये परि प-श्यन्तः सर्वे एव दिद्रति, हितो। जिङ् दरिद्रियात्। लङ् अदरिद्रात्। ४०द्रि-ताम्। •दुः। बिट्दरिद्राञ्चकार। ददरिद्रौ (ददरिद्र, वो) ति मर्भू बम्, को १२५। ददरिद्रतु:। जुट् दरिद्रिता। लुट् दरिद्रिषाति। आधिषि, दरि-द्रात्। लुङ् बदरिद्रीत्, बद्रिद्री-सीत्। प्रदरिद्रिष्टाम्, प्रदरिद्रासि-ष्टाम्। यदरिद्रिषुः, यदरिद्रासिषुः। भावे, अदर्रिष्ट्र, अदरिष्ट्रायि। अवन् दिदरिद्रिषति, दिदरिद्रापति। विष् दरिद्रयति। त दरिद्रितः। प्रच् दरिद्रः, दरिद्रायकः। दरिद्राणम्। हन् दिरिद्रता, की इर्ध। दिरद्रणीयम्। क्रय ददरिद्वान्, ददरिद्रावानित्येके।

दल्—भ्वा, प। १ विषयुणम्।
भेदः। विदारणम्। २ विदीणीमावः।
विकसनम्। सट्दलति, दलति सा हृदि
विरह्मरेण, गोतगी, ७, ३५। सिट् ददाल। देलतुः। ददाल मूः, भ १४, २०। सुट्दलिता। सुट्दलिखाति। सुङ् अदासीत्। अदासिष्टाम्। अदा- लिष्ठः ग्रिलादेष्ठे, भ १५, ३८। विष्
दलयति (दालयति, वो)। दलयस्टै।
कुलन्तास्तः, मद्दाना १, ३३। दल्
पु, प। भेदः। दालयति। मुष्टिनादालयत्तस्य मूर्वानम् भ १७, ७८। दलितः। दलनम्। दानः। कुद्दानः।
दाडिमम्। दलचण्डीयचाप—, मदाना १, ३६। वि—भेदः। विकायः।
तदिष्ठभिष्यदेलिष्यद् वच्चोऽपि, नै ४,
८८। दरविदलितभन्नो, गीतगो १,
३६। ग्रेफालिकां विदलितामवलोक्य
तन्तो।

्रं ह्य् ह्र्य्, भ्वा, प। दंशनम्। ्दन्तव्यापारः। बट् दमित, पा ३, -४, २५ । पदा सृगन्तं दग्ति हिनिष्ठः, र १८, ४। दश्रति विख्यापरं गुक्या-वकः, हुगी। विस्वाधरं दशसि चेद समर प्रियायाः, मजु ६, १८५। लिट् ्ददंग । ददंगतुः । दद्यतुः वी । ददं-भिय, दरं । जुर् दंशा। जुर् दक् चति। प्राधिषि, दथात्। लुङ् बदाङ्गीत्। पदाङ्षाम्। बदाङ्खः, घटाङ्करदयन्, भ १५, ४। १७, १३। कर्मणि, दश्यते। षदंशि। सन् दिद-इति। यङ् (भावगृहीयाम्) दन्द-श्वते, पा ७, ४, ८६। दंदगीति। दन्द-ष्टि। दंदंष्टि, दंदंगीति वो। पिच दंगयति। पददंगत्। द्रिम, चु, भा। १ दंशनम् । २८र्थनम् । दंशयते, दंध-ति। पानुसीयमालनेपदं णिच्स-वियोगेनैदेति व्याखातारः। नयो-पस्तु खादेरैव, बी १७६। नाहिदेश-यते कचिदियर्था गरुडाख्यया, कवि २०५। भद्रमञ्जयते दंशनमित्र स्वादः पदंगयदर्डितशीर्यदंशनास्तन्ः, सा १७, २१। केचित् तु चुरादिक्भय-

पदीषु पठन्ति (टीका)। दिश्व (क्वप) चु,प। दीप्तिः। दंशयति। दष्टः। दंशनम्।

दम् — दसु (तसु) दि, प। १ चयः। वस्तु हानिः। २ छत् चेपणम्, वो। दस्यति । ददास। दसिता। पदसत्। प्रदासीत्, वो। दस् (दंस्)।

दंस् दिस, चु, प, बी। दीप्तिः । दसि, चु, था। १ दर्भनम्। २दंशनम्, सदाप्तः, दन्तव्यापारसः। दंसवित। •ते। दंसति। दस-दित कसिद् दासंयते।

दइ—्भा, प। भस्रीकरणम्। दाइ:। सन्ताप:। बट्दइति, मद-नानको दहित सम सानसम्, गीतको १०, २। बिट् ददाइ। देइतुः। देहिष् ददम्ब। बुट् दन्धा। बुद्ध धचाति। मुध्यम् जुलं धच्चति विप्रविष्ठः, स १ २३। लुङ् अधाचीत्। घदान्धाम्। अधानुः। हङ्गानीदिव हिवः, स १६ २२। कर्मीण, दश्चते। घदानि। गरीर मे दश्चते सद्नास्निना, सद्दाना ४, २८। योकेन देवे जनता, स ३, ११। सन् दिभवति। यङ् (भावगर्डायाम्) दन्दञ्चते, पा ७, ४, ८६। दन्दास। यत् दन्दञ्चते कोकम् मा २, ११। षिच् दाइयत्। पदौद्रवत्। दम्बुर। दक्षः। दाइः। दहनम्। निर्-दाइः। प्रवाद्यः। सन्तापः। एनी निर्देहन्सः॥ तपसा, मनु ११, २४१। दंइ दिख, चु, प, वी। (दाइ!। र दीप्तिः। दंश्यति।

दा दाण, भ्वा, प, बुदाज, ह्वा, छ।

दानम्। वितरणम्। सद् यक्ति,

पा ७, ३, ७८ । ददाति । दत्तः, दद

ति। दत्ते। ददते ब्राह्मका व

षाशिषः, कवि १९५। निङ्दयात्। इदीत। हि, देहि, पा ६, ४, ११८। ख, दत्खा वावंदेडि, म ६, १८। भयानि दत्त सीताये, भ ८, ८६। चड् षददात्। षदत्ताम्। षददुः। पदत्ता रतानि चौददुर्गीय, भ १७, ५३। बिह ददौ। इदिय, इदाय। ददे। श्रस्तजातं तसी ददी, भ २, २२। लुद् दाता। जुट्दास्यति। व्ते। श्राधिषि, देवात्। दासीष्ट । लुङ् भदात्। भदा-ताम्। श्रदुः। श्रदित। श्रदिवाताम्। षदिवत, पा १, २, १७। स्कन्नस्य वियान्तिमदाम्, नै ३, १८। कर्मणि, दीयते। ददे। सुता ददे तस्य सुताय मैथिलो, भ-३। दायिता। दायिषाते। दायिषोष्ट। पदायि। पदायिषत। सन् दिवाति। •ते, पा ७, ४, ५४। यं देदीयते, पा ६, ४, ६६। दादेति। दादाति। णिच् दापयति। पदीदपत्। विणिजो दापयेत् करान्, मनु ७, १२०। तो चपेष दाप्यो दमम्, मन् ८, ५८ । दस्ता। •दाय। दत्तः। दत्तिः। पदत्तम्। प्रतम्। दानम्। देशः। (बु) दिवसः। ददः। दातः। दाता। दायः। चा-चादानम्। यहणम्। स्त्रीकरणम्। बादत्ते, पा १, २, २०। बादत्तः। त्रात्तः, पा ७, ४, ४७। स ६, ८३। नीलस्वादित पर्वतम्, भ १५, ४३। राजानं तेज बादत्ते (नामयति), मनु ४, २, १८। श्रायच्छते, पा १, ३, २८। व्या-व्यादानम्। प्रसारणम्। मुखं व्याद-दाति। नदौ कुलं व्याददाति, पा १, ३, २०। प्र—प्रदानम्। सम्प्रदानम्। प्रक्रष्टदानम्। बन्या पदीयते, मनु प, २०४। सम्य सम्पदानम्। समन्त्रका त्यागः। भायच्छते, •ति क्ष्माद्रज्म्,

पा १, १, १०। सम्—दाखा मासां संयच्छते कामुकाः (दास्य ददाति), या १, १, ५५।

दा—दाप्, घदा, प्। छेदनम्।
दाति, दाति दारिहामर्थिनाम्, कवि
२४। दायात्। घदासीत्। कर्मणि,
दायते। दिदासति। दादायते। का,
दातम्, दितम्। दितिः। दावम्।

दान-भ्वा, छ। १ पार्जवम्।

महजुभावः। ऋजुं करणम्। २ खण्डनम्। नाथनम्। घार्जवे सन् इति भष्टीजिदी खितवी पदेवी। खार्थे इति क्रमदीम्बरपद्मनाभी। दीदां पति, •ते दस्युम्
पा १, १, ६। परार्थे तु दानयित,
दानति, •ते वो। तत्र तिवादयी न
स्युरिति रमानाथः।

दाय्—स्वा, घा, वो। दानम्। दायते, दौनानां दायते नित्यम्, कविष्ठ। (ऋ) घददायत्।

हाम् -दास् -दायु, दास्र, आह हु। दानम्। दाश्वति। ०ते। दास्ति। •ते। दायु, सु, शा, वी। दानम्। दाश्यते। दाखान् सुपुताशिषम्, र।

दिन्द्—दिवि (जिवि) स्वा, प।

्रप्रीणनम्। दिन्वति। दिदिन्व। दिन्विता।

दिप् दिष्ट (तिष्ट) स्वा, भा। चर्णम्। दिम्प् चु, उ, वो। सङ्घातः। (डप) दिम्प् –दिभि, चु, प, वो। प्रिरणम्। चु, भा, वो। सङ्घातः। दिक्सवति। •ते।

हिस् दिवु, दि, प्राः १ क्रीड़ा।

२ विजयेच्छा। ३ व्यवदारः। अय-विक्रयणादि। ४ दीप्तिः। ५ स्तुतिः। ६ दर्षः। ७ मदः। मत्तीभावः। ८ सप्तः।

निद्रा। ट कान्तिः। इच्छा । १० गतिः। लह् दीव्यति, पा ३, १, ६८। द, २, • ७७। अर्थै: अचान् वा होव्यति, पा १, ॥ ४, ॥ ४३ । मतस्य दीव्यति, पां २, ३, ५८। सेहिन दीव्यन्ति विषयान् स ८, ७८। अधिन इं इस्तियों दीव्य भ ५, ३८। , चहीबद्रोदं प्रस्तम्, स १७, ८७। प्राणिद्युतेश दोव्यति, वि ८४। लिट् दिदेव। दिदिवतुः। जुट् देविता। जुट् देविष्यति। प्राणिष, दीव्यात्। लुङ् ग्रदेवीत्। घदेविष्टाम्। बहेविषु:। बहेवीद् वस्तुभोगानाम्, भ द, १२२। सन् दिदेविषति, दुखूषति, पा ७, २, ४८। ६, ४, १८। सगः प्राचिदि-दीवषन्, भ ५, ५७। तेनादुखूषयद्रामम्, म ५, ५८। यङ् देदीव्यते । देदिवीति, देदेति, देखोति, वो । णिच् देवयति । ब्रदोदिवत्। (७) देविला, खूला, पा ७, ६, १६। व्हांच्या खूतम्। खूनः। बाबानः। परिवानः, पाद, र, १८१ देवनुम्। यज्ञा यूताः । मनसा देवी। ग्रचा दोव्यन्ते छात्रेषा न विचेदीव्यते, दुर्गा। प्र-विकायः। प्रादेवौदानासम्पदम्, भ ५, ११३। । प्रादेवीत् प्रांत्रः परिचेषा भ ८, ८। यतस्य यतं वा पदौव्यति, षा २, ३, ५८। दिवु, चु, प। सदेनम्। ूर अदेनम्। पोडनम्, बो। ३ याचनम्। ४ गतिः। देवयति। देवति। दिवु, चु, या। परिकू जनम्। परिदेवयते कश्चित्तस्य राष्ट्रे न दुखितः, कवि ६० । ११ ५० ए स्थिति । दिश्-तु, छ। यतिसर्जनम्।

दानम्। याचा। यादेश:। निर्देश:। कथनम्। जट् दिर्गात। वते। दिग्रेख्को दिशेव या साचिषा, मनु द, भूछ। चिट दिदेश। दिदिशे। दिदेश यानाय

निदेशकारिण:, ने १, ५६। दिदेश कीत्-साय समस्तमेव, र ४, १०। लुट् देश। ल्ट देखात । बती पाणिष, दिखात्। दिचीए। लुड् बदिचत्। बदिचत्। सन्-दिदिचति। •ते। यङ् देदिश्वते। देदेष्टि। विच् देशयति। अदीदियत्। दिष्टः। दिष्टिः। दिष्टा। •दिश्व। देष्ट्रम्। दिव्। देशः। चति—चति देश:। पारीय:। अप-व्यप-व्यप देश:। रोगगान्तिमपदिस्य, र १८, ५४। व्याजः। चा-चादेशः। चनुमतिः। प्राज्ञा । प्रादिचत् तस्य सिंहास-नम्। प्रादिचदस्याभिगमं वनाय, म ३, ८। प्रस्तिशरणस्य सार्थमादेशय, शक्क १, ४४। प्रत्या-प्रत्यादेशः। निरा-करणम्। निवारणम्। खप्रेऽचं प्रत्याः दिष्टा। प्रस्यादिदेशैनमभाषमाणां, र 4, रेपा प्रजानां प्रत्यादिदेशविनर्यं विनिता, र ६, ३८। तव सन्तेः प्रसाः दिश्वनत इव मे गाराः, र १, ६२। उद्-**७हेश: । ्य**भिप्राय: । तस्दिख चितेन संगुड़ेन् श्रमासी इत:, हिती। हप-उपदेश:। हितास:। निर्देश:। बोर्तः नम्। विद्वानेवीपदेष्टव्यः। वानरातुः पदिश्य, हितो। ब्राह्मणस्य वार्मेदसुपः दिष्टम्, सतु २, १८० । ्रनि।। निदेशः। शासनम्। । निर्⊕तिर्देशः। विधानम्। क्षवम् । । चादेशः । पीठमासके निरः दिचच काचनम्, भ १५, ८। प्र-दाः नम्। निर्देशः। उपदेशः। प्रदिश्वि जलं चातकेश्यः, मेव ११७। अदिस्थाः रात् सुतौच्यसुनिकेतनम् भ 8, ६। दाचं प्रदिदेश वानवस्य, से ८, १३७। सुम् 🛨 सन्देशः। हानम्। स्वाते राज्यं मन्दिख, स ६, १४१। प्रसिष्ट्रित काचिः दिति सन्दिरियो, मा ८, ५६॥ 📜 🕖 हिन्नः। हिन्नः। २ लेपनम्, वो। लट् देग्धि। किग्धः। दिन्नः। धेचि। दिग्धे। हि, दिग्धि। ख, धिच्नः। धेचि। दिग्धे। हि, दिग्धि। ख, धिच्नः। खिल् दिग्धे। दिन्नेत। लल् अर्थेक्। प्रदिग्धाम्। प्रदिन्नं । प्रदिग्धः। प्रदिन्धः। प्रदिन्धः। प्रदिन्धः। प्रदिन्धः। प्रदिन्दे। लुट् देग्धा। लट् धेच्यति। ०ते। लुल् प्रधिचतः। प्रदिन्धः। प्रदिन्धः।

दो-दोङ्, दि, या। चयः।

दीनभावः। लट् दीयते। दीयन्ते प्रत्यहं यस्य दुरितानि, कवि ८ । लिट् दिदीयो । दिदीयाते, पा ६, ४, ६२। लुट् दात्रा। लुट् दास्यते। लुङ् श्रद्भस्त, पा ६, १, ५०। सन् दिदीषते, पा १, २, ६। दिदासते, सङ्घ्रिसारः। यङ् देदी-यते। देदयोति, देदेति। णिच् टाय-यति। दोला। दोला। दाय-यति। दोला। द्रायामां।

दील्-भ्वा, श्रा १ सुण्डनम्।

र यजनम्। ३ उपनयनम्। ४ नियम-यहणम्। व्रतानुष्ठानम्। ५ व्रतादिष्ट-विध्यतुष्ठानम्। अभिषेकः। दीन्नते। दिदोन्ने। दीन्तिता। त्रदीन्तिष्ट। दोन्तस्य तुर्गास्वरे, भ २०, १४। दीन्नितः। दोन्नपीयः। दोन्ना।

होधो — दोधोङ्, श्रदा, श्रा। कान्दमः।
. १ दोधाः। "२ क्रोड्नम्।" दोधोते।
दोध्याते। दोध्यते। ऐप्दोध्ये, पा १, १,

६। दीध्याञ्चले। दीधिता, पा ७, ४, ४२। दीधिष्यते। यादीध्यनम्। यादीः । ध्यनः। व्यप् यादीध्य। दीधितः। दीधीविष्योर्ङ्क्विऽपि कान्त्रस्त्वात् व्यत्यः यन परस्रोपदम्। दीध्यत्, विव्यत्, की. १८३। यदीध्यः, दुर्गा।

दीप्-दीपी, दि, भा। दीप्तिः।

ज्वलनम्। शोभा। उज्ज्वसीभावः। बर् दीप्यते, ताराप्रतिदीप्यते, अनुध १४८। बिट् दिदीपे, पुनर्दिदीपे सद दुर्दिनश्रीः, र ५, ४०। सुट् दीपिता। लृट् दीपिष्यते। लुङ् बदौषि। बदी-पिष्ट, पा ३, १, ६१। अदीपिषाताम् । चदीपिषत । ब्रुबीऽदीपि रघुव्यामः, भ ६, ३२। देवा इविष्वदोषिष्ट, स १५, ८८। सन् दिदीपिषते । यङ् देदीयते L दैदीप्ति। णिच् दीपयति। बदीदिपत्, चदिरोपत्, पा ७, ४, ३। लङ्कामिन-नादोदिपन्, स १५, ११०। बन्दावना-न्तरमदीपर्यदिन्दुः, मीतगी ७,१। (दी) दीमः। दीप्तिः। दीपनम्। दीपिता। दोगः। प्रदोवः। चा-ज्वलनम्। मङ्ग-लालीपनम्। चादीप्त लगानुः, भ ३, ३। उद्-उद्दीपनम्। प्रकाशनम्। उज्जन लनम्। उत्तेजनम्। उष, प्र, ज्वलनम्। दाइ: । सम्-सन्दीपनम्। उद्दीपनम्। सन्बिखनव द्वारने: सम्पदीतेन्धनस्य, दीपिका।

दु-स्वा, प। गतिः। दु दुः स्वा, प।

१ उपताप:। उपतिमाव:। र उपतसी तरणम्। परिताप:। पीड़नम्। लट्
दवति। दुनोति, सुखं सव दुनोति
साम्, र ८, ५६। सन्धरेन दुनोसि,
गीतगो ३,८। वार्णिकारं दुनोति निर्गन्यतया स्म चेत:, कु ३,२८। सन्धरेन
संवासी दुनोति सनः, गीतगो ७,४०।

दूष् [गणदपणः]

सङ् शहुनीत्। शहुनुताम्। शहुन्वन्। प्रचिवाः सोऽदुनीत्, र १८, २१। सारिषमदुनीत् स १७, ८८१ लिए हुदाव । दुदुवतु:। दुद्विय, दुदोय । दुदु-विव । चरीव् दुदाब क्रतान्तवत्, भ १४, ट्रं चुट् दोता। दिवता, वो। लृट् दोष्यति। श्वाधिषि, द्यात्। नुङ् बदीषीत्। बदावीत्, वो। बदीष्टाम्। ग्रदीषु:। सन् दुदूषित । यङ् दोदूयते । दोदोति। णिच् दावयति। षदूदवत्। ता, स्वा, डून: । स्वा, दुत: । संदुतया दुतयिति, माघः ६, ५८। वरी २४०। (टु) दवधुः। दावः। दवः। दु:ख-(सुख) घटम्बः। चु, प। दु:खकरणम्। दु:खयति। दु:खा-व्ययति, वो । दुष्व, दुष्वयतौत्यपि । ्रुवे-दुर्वी (उर्वी) भ्वा, प। वधः। दूर्वति। दुद्वे। दूर्विता। 🎠 दुन्—चु, प। उत्चेपः। दोत्तयति, दोत्तयत्विवर्गस्य जीवि-िलागाञ्च यः सदा, कवि २१०। दोलयति धूलिम्, दुर्गा । दुष्-दि, प। वैक्तत्यम्। अगुद्धीभावः। दोषः। सट् दुष्यति,

20

श्राहीभावः। दोषः। लट् दुष्यति,
खादन् मांसं न दुष्यति, मनु ५, ३२।
दुदोष। दुदुषतुः। दोष्टा। दोस्यति।
सदुष्यते। स्रोदाष्टि। पिच् दूष्यति।
(चिम्मदूष्पे) दूष्यति दोषयति चिन्नं
कामः, पा ६, ४, ८०, ८१। तस्याभिधेकप्रभारं दूष्यामास पार्थिवास्रुभिः, र
१२, ४। योऽकामां दूष्येत् बन्धाम्,
मनु ८, ३, ६४। दृष्टः। दृष्णम्। दोषः।

पेतुः, चाडी। प्र-व्यभिचारः। अधर्माभि-भवात् प्रदुष्यन्ति कुलस्त्रियः, गी १, ४०। दुइ-दुडिर् (उडिर्) स्वा, प।

चर्दनम्। दोहति। दोहिता। घटु-हत्। चदोहीत्। दुह्-घदा, छ। प्रपूरणम्। दोहनम्।

व्यक्तीकरणम्। त्तर् दोग्धि। दुखः।
दुइति। घोचि। दुग्धे। दुइति।
दुइते। घुचे। धुग्ध्वे। कामान् दुग्धे,
उत्तर १८८। पयो गां दुइति, भ
१२, ०३। पयो दोग्धि पाषाणम्, भ
८, ८२। प्राणानाक्षानम्, भ ६, ८।
लोट् दोग्धु। दुग्धि। दोइानि। घुन्न।

धग्धम्। दोहै। सिङ् दुद्धात्।

दुषीत। सङ् घषीक्। घदुग्ध। विद् दुदोष्ठ। दुदृष्ठे। दुदोष्ठ गांस यद्माय, र १, २६। रस्नान धरित्री दुदृष्ठः, क १,२। लुट् दोग्धा। खट् घोष्मात। •ते । लुङ् घधुचत्। घदुग्ध, घधुचत। त—धाम्—ध्यम्—विष्णु सङ्बद्धि। घधुचाताम्। घधुचन्त। कर्मण,

दुद्धते। खदोडि। कर्मकर्त्तरि, गोः प्यो दुग्धे, पा ३, १, ८८। खयं प्रदुग्धे वस्ति में दनी, भा १, १८। खदोडीव विषादोऽस्थ (खयं चरित इव), भ ६, १४। सन् दुधुचित। ०ते। दोदुः

ह्मते। दोदोग्धि। णिच् दोइयति। धदूदुहत्। दुग्ध्या। दुग्धः। दोहनम्। दोहः। दोग्धयः। कामदुघा।

दू-टूड्, दि, शा। उपतापः। खेदः। उपतप्तीभावः। उपतप्तीकरः

१२, ४। योऽकामां दूषयेत् वान्याम्, णम्। दूयते, दुर्जनोक्त्या न दूयते, कि अनु ८, ३, ६४। दुष्टः। दूषणम्। दोषः। २५६। क्षयं पश्यन् न दूयसे, र १, ७१ विश्व-ग्रिमियातः। गित्रदृत्यभिद्रिताः हृष्टा भून्यानि दूये सरयूजलानि, न १६, २१ । १, ७१ । दुद्वे । दिवता । भदविष्ट । ऋ, दून:, पा ८, २, ४५ ।

इ—इङ्तु, था। थादरः।

पोत्या सन्धुमः। प्रायेणायमाङ्पूर्वः। श्राद्रियते, पा ७, ४, २८। यः सदाद्रियते धर्मम्, कवि ७३। दद्रे। दद्रिषे। दन्ता। दिव्यते। द्रष्टे। दद्रिषे। दन्ता। दिव्यते। द्रष्टे पा ७, २, ७५। दद्रोयते। दर्दिन्ते। द्रार्थित। श्रदी-दर्ता। श्राद्रतः। श्राद्रतः। श्राद्रतः। श्राद्रतः। श्राद्रतः। श्राद्रतः। श्राद्रतः।

"ह, खा, प। इननम्। क्रा, चु, प। भयम्। हणोति। हणाति। दार-यति।" भवे घटादिरिति कसित्। दरयति।

हप् दि, पा १ इवै: । २ मोइनम्।

गर्वः। दर्पः। हम्यति। दद्पं। दहपतः। दद्पंथ, दद्रप्थ, दद्प्थ।
एवं विजिग्ये तां सेनां प्रइस्तोऽतिदद्पं च, भ १४, १०६। दिपिता, दर्माः
द्रमा। दिपिष्यति, द्रपाति, दप्-स्थिति।
श्रद्धिति, भद्राप्तीत्, भद्रप्यति।
श्रद्धिति, भद्राप्तीत्, भद्रप्रिति, दिहपति। दरीह्यति। दर्दिमः। दप्यति।
दर्पेत्वा, हमः। हमः। दपः। दपंकः।
दप्ता, हमः। हमः। दपः। दपंकः।
दप्ता, हमः। हमः। दपः। दपंकः।
दप्ता, हमः। हपः। दप्ता।
दद्धं। दपिता। श्रद्धीत्। हप्(चृप्)
च, प। सन्दीपनम्। उद्दीपनम्। दपंयति। दपिति।

हम्—हमी तु, प। ग्रन्थनम्। हमति। ददर्भ। दमिता। ग्रदमीत्। हम्, चु, प्रमुक्तिः। रचना। दर्भ-यति। दर्भति वो। हमी, चु, प्रा भयम्। दर्भयति। दर्भति। (ई) हुआ । सन्दर्भः। दर्भः।

्हम्य्—(खप्) चु, ख, वो। सङ्गाताः । इय्—हिम्द्रिस्, स्वा, प्। प्रेचणम्।

े दर्भनम्। ज्ञानम्। साचात्कारः 🗈 चट् प्रस्ति, पा ७, ३, ७८। श्रास्थ-मिव पश्चामि खप्नान् पश्चामि दाइ-णान्, रामा। अई प्रश्नामिः तपसम चिप्रं द्रश्चिस नैषधम्, भारत । प्रशासि त्वां (जानामि)। सोऽपञ्चत् प्रणि-धानेन सन्तते: स्तन्धकारणम्, इ १, ७५। प्रयान् धर्मेण प्रश्नति (निक-पयति), मनु ८, १७५। एवं साङ्ग्राच्छ योगञ्च यः पश्चति स पश्चति, गीं ५, प्र। लिट् ददमें। दहमतुः। ददर्भिय, दद्रष्ठ, पा ७,२,६५। दहिशव। सुट द्रष्टा, पा ६, १, ५८ । जुट् द्रकाति। पाणिक, हम्बात्। लुङ् बदाचीत्, पा १, १, ४० म चदर्भत्, पा ७, ४, १६। चद्राष्ट्राम्, षद-र्भताम्। बदाचुः, बदर्भन्। मा दर्भ-तान्यं भरतञ्च सत्तः, भ ३, १४ । कर्रीण, द्रश्वते। श्रद्धांत स्थावस्तानकस्या, क्षा, २, ५२। दहरी, प्रतीयूषा पुदहरी जनेन, भ २, १८। दर्शिता, दृष्टा। दर्भितारस्वया ताः, भ २२, ४, १०० द्धिष्यते, द्रस्ति। त्रयाच हातार्थी द्रच्यते पतिः, भ ५, ५८। दिशिषीषः, ह्वीष्ट। रचोभिदंशियीष्टास्वं ह्वी-रन् भवता च ते, भ १८, २८। श्रदर्शि। यद्धिषाताम्। यद्धाताम्। श्लेन येऽ-दर्शिषत शतवः, भ १५, ७२। शहचता-क्यांसि नवीत्पद्धानि, भू २, १०। सन् दिह्जते, पा १,३,५०। यह दरीहम्बते। दरीदर्षि। णिच् दर्भयति। •ते। अदीहमत्, अददर्भत्, पा ७, ४, ७। वीयों मा न ददर्भस्वम्, भ १५, १२।

विनतां दर्शियताहे, नै ४, ७१। द्वा। ॰ देखा हष्टः। दर्धनम्। दृष्टुम्। दृष्टा। दृष्टव्यम्। दृष्ट्यम्। दर्शनीयम्। पार्टम्बा। सहक्। अतु यालोचना। यालोकनम्। यथा भूत-ध्यम्भावमेकस्यमनुपश्चति, गी ₹₹, ३०। ग्रसि-बच्चीकरणम्। **डट्** छतुप्रेचगम्। अर्ड्ड दर्धनम्। उत्प-ख्यतः सिंहनिपातसुग्रम्, र २, ६०। ताहृदपश्चदुत्यती जनः, मा १, १५। एप-प्रदर्भनम्। नवे रान्नि सदस्ची-पद्भितम्, र ४, ८। नि-निदर्भनम्। परं ऋपं निदर्भयामास तसी, ३१। परि-परिदर्शनम्। ग्र-प्रदर्भ-बुम्। सम्-सन्दर्भनम्। सम्प्रश्रते, को २४६।

्रहर्-हं ह्—हिंह, स्वा, प। हिंहः। दर्शत्। हं हित्। ता, हदः, पा ७, २,२०।

ा ब्हु∺खात्प, तो। भयम्।

ृ हि, प। विदार: । दृ, क्रा, प।
१ विदारणम्। २ भयम्, वी। लट् दरति।
दीर्थात। हणाति, हणाति च
रिपून् रणे। दरन्तिः दिगधीमाश्व यस्य
दिग्विजयोद्यमे, कवि ७३। हृदयं
दीर्थातीव मे, भारत। न दीर्थो पहस्वधाऽहम्, उत्तर २, २३। न विदीर्थोऽ
हम्, कु ४, ५। इत्यादावालनेपदमपि।
लिट् ददार। ददरतुः, दद्रतुः, पा ७,
४, ११, १२। ब्रह्मास्तेण ददाराद्रिम्,
भारत। लुट्-दिर्ता, दरीता। लुट्
दिख्ति, दरीष्ट्राति। लुट् घदारीत्।
घदारिष्टाम्। घदारिष्ठः। सन् दिद्रिः
वित, दिदरीषति, दिदीषति। यङ्
देदीर्थेते, दादिते। णिच् दार्थित।
च्रदरात्, सृष्टिनाददरत्तस्य सूर्द्यनम्,

भ १५, ८१। अये घटादिः। दरयति।
अयादन्यतः दारयति। कारदेशे
भिष्वार्थोऽनुवादः। घालन्तरभेवेदभिति
भते तु दरति, की ८३। दीली।
०दीर्थ्य। दीर्थः। दीर्थिः दरणम्।
दरः। दारः। दाराः। षव प्यवदारणम्। खननम्। प्रवीभवदारयद्भिः, र
१३, ३। दुतावदीर्थं इत्यमरः। वि—
विदारः। तद्य हृदयं विदद्रे, र १४,
३३। स्तनं विददार काकः, भन्षे
१२२।

'रे—देङ्, भ्वा, शा। पालनम्।

रचणम्। दयते। दिग्ये। दिग्याते, पा ७, ४, ६। दाता। दाखते। दासीष्ट। षदित। षदिषाताम्। षदिषत। षदियाः, पा १, २, १७। दिसते, पा ७, ४, ५४। देदीयते। दादेति। णिच् दापयति। कर्मणि, दीयते। दत्तः।

> देप् (तिष्ठ, तेष्ठ)। देव्-देवं (तेष्ठ) स्वा, षा ।

रेन्देवनम्। क्रीड्नम्। २ रोदनमिति
महमक्कः। ३ दीप्तः। देवतं, देवतं कन्दुः
कर्नित्यम्, कवि ६०। अदेवत यायकः,
भ १७, १०२। दिदेवे। देविता।
अदेविष्ट। अदेविषाताम्। अदेविष्टः
बद्धास्त्रम् (दोततिका), भ १५, ८४।
देवयति। अदिदेवत्। परि—परिदेवनम्।
विकायः। आजीः पर्यदेविष्ट सा पुरः,
भ ४, ३४। १४, ४८। आलनः
परिदेवकी, भ ७, म्६। आदेवकः।

दिष्यति, दरीष्ट्रति। जुङ् अदारीत्। दै—दैप्, खा, प। ग्रीधनम्। ध्रद्वारिष्ठाः। सन् दिद्दिः ग्रंडीकरणम्। दायति। योऽवदायति वित, दिदीषति, दिदीषति। यङ् जीतिंद्य, वावि २४। ददी। दाता। देदीथिते, दादिते। णिच् दार्थति। दायति। दायात्। अदाशीन्। कर्मणि, खददरत्, सृष्टिनाददरत्तस्य सूर्द्धानम्, दायते। दिदासति। दादायते। दादायते। दादायते। दादायते।

दावयति। चदीदपत्। चव-म्ह्रक्षीभाव। चवदातः। म्बिन्दते म्बेतते त्रीणि स्युः मुक्कत्वेऽवद्गायति, भद्टमज्ञः।

दो—दि, प। छेदनम्।

प्रणिखति। ददी। दाता। देयात्। घरात्। दोयते। दिस्तितः दिला। •दाय।दितः। दितिः।दानम्। प्रिरी-ऽवद्यति विद्विषाम्, कवि २४।

द्य-बदा, प। अभिगमनम्। द्यीति। दुद्याव। द्योता। अद्यौषीत्। द्यत्—भ्वा, था। दीप्तिः। प्रकाशः ≯ चोतते। दिख्ते, पा ७, ४, ६०। दिद्युते यथा रविः, भ १४, १०४। चीतिता। चीतियते। चीतिषीष्ट। षद्युतत्। षद्योतिष्ठ, पा १, ३, ८१। दिद्युतिषते, दिद्योतिषते, पा १, २, २६। ७, ४, ६७। देखुत्यते। देखोत्ति। द्योतयति। श्रदिद्युतत्। गोपुनीयं क्रमप्यथं द्योतयित्वा क्रयचन, दर्पणः। सेही मिय द्योखते, वीर २४। युतिला, चोतित्वा। चुतितः। चोत्नम्। द्योतः। द्युतिः। उद्-भीक्षस्यम्। तद्वी: कुलमुखीतयामासुः, र १०, ८०। वि—शोभा। यस्त्रेरची विदिध्ते, भ ८, ३६। विद्योतस्त्र स्त्रियः प्रति, भ द, दद। खद्योतिष्ट सभाविद्यामसौ नर्शिखित्रयी, मा २, ३।

द्यो—भ्वा, प। न्यकरणम्। द्यायति। दद्यो। द्याता। श्रद्यासीत्।

द्रम्—स्वा, प। गतिः। द्रमति। दद्राम्। वानरा दद्रमः, स १४, ७०। द्रमिता। भद्रमीत्। दंद्र-स्पः।

्रदा—श्रद्धा, प्री १ पन्नायनम्। अस्त्र निद्धाः श्रिक्षत्रेये निपूर्व एवेति रमानाथः । द्राति । दद्री । दद्रतः । द्राता । द्रायात्, द्रेयात् । श्रद्धाभीत् । श्रद्धामिष्टाम् । दिद्राभित । दाद्रायते । दाद्राति । दाद्रेति । द्रापयित । श्रदि-द्रेपत् । त्रा, द्रापः नि—निद्रा । तद्रा निदद्राषुपपत्वलं खगः, नैः १, १२१ । निद्रान्, भ १९, ७४ । निद्रालुः ।

द्राख्—द्राखृ (श्रीखृं) स्वा, प।'
१ गोषणम्। २ भूषणम्। ३ सामर्थ्यम्।
१ निवारणम्। द्राखित, द्राखितः
चौणतापनं वपुः, कवि १०८। भ्राखृः,
भ्राखित। राखृः, राखित। नाखुः,
नाखित।

द्राघ्—द्राष्ट्र, स्वा, था। १ सामर्थ्यम्।
२ श्रायामः, वो। दीर्घीकरणम्। ३
प्यमः। द्राघते, द्राघते वपुरत्यर्थे यद्वियोगे सगेह्याम्, कवि १०८।
दद्राघे। द्राघिता। श्रद्राघिष्ट। द्राघयन्ति से शोकं स्मर्थमाणा गुणास्तव,
भ १८, ३३। भ्राष्ट्र, भ्राघते। राष्ट्र, राघते
लाष्ट्र, लाघते। श्रद्धाघः, पा ८,
२, ४५।

क्राङ्च-द्राचि, भ्वा, प।

१ घोरमञ्दः। २ त्राकाङ्घा। द्राङ्गिति। प्राचि, प्राङ्गिति। ध्वाचि, ध्वाङ्गिति। धाचि, धाङ्गिति, न धाङ्गिति जनः कश्चित्, कवि १६४। धाङ्गः।

द्राइ—द्राहु, भ्वा, श्रा। १ भेदः।
२ वधः, वी। द्राडते। श्राहु, श्राडते।
द्राह्—द्राह्, भ्वा, श्रा, १ जागरणम्।

्र निःचेपः। द्राइते, द्राइते च निम्नागमे वसुः, कवि १०८। (ऋ) मददाइत्। दु-(दु) स्वा, प। १ गतिः।

दह

२ द्रवीभावः, वी। ३ प्रवायनम्। द्रवति, द्रवति चन्द्रकान्तः, उत्तरः नदाः पमु-द्रं द्रवन्ति, गौ ११,२८। दुदाव। दुदू-वृतः। दुद्रोध। दुद्रुव। भगाद दुद्रव-स्ते, भारत। द्रोता। द्रोष्वति। द्र्यात्। चटुदुवत्, पा ३,१,४८। रचसाभाग-दुहुवत, म ८,५८ । दुदूषति। दोदू यते। दोद्रोति। द्रावयति। चद्दवत, बदिष्ट्वत्। दिद्रावंशिषति, दुद्रावशि-षति, पा ७,४,८१। दुतः। दुतिः। गुसस्तिधाराभिरिव द्रवः। द्रावः। द्रुतानि भानीस्ते जांसि, भ २, १२। थनु—यनुसरणम्। उप—उपद्रवः। प्र, वि-पनायनम्। भीताः प्रादुद्वन्, म १४,२५।

ृदुड्—स्वा, तु, प, वी। सज्जनम्।
द्रोडति। द्रोडिता। दुड्ति। दुड्ता।
दुर्ण्—तु, प। १डिसा। २ गतिः।
द्रुण्—तु, प। १डिसा। २ गिता।
द्रुणति प्रक्षती यस्य दिख्सुखेषु रिपु-व्रजः, कवि २४०। द्रोषः। द्रोषी।
दुर्णः।

दुइ—दि, प। जिघांसा।

प्रपकारः। चट् दुद्धति, देवदत्ताय दुद्धति, पा १, ४, ३०। चिट् दुद्रोह। दुद्दुह्याः। दुद्रोग्ध। दुद्रोद्ध। दुद्रोह्य। सुट् द्रोग्धा, द्रोद्धा, द्रोह्थिता, पा ८, २,३३० खट् भ्रोच्धिति, द्रोहिष्धति। सुड् घदुहत्, पुषादिः। सन् दुद्रोहि-षति, दुद्दृहिषति, दुघुचति। यङ्दो-दुद्धते। दोद्रोध्धि, दोद्रोढि। पिष् द्रो-ह्यति। घदुहृहत्। द्रोहिला, दुहि-वा। दुग्धा। दुग्धः। द्रोह-पम्। द्रोहः। द्रोही। द्रोग्धव्यम्।

होहव्यम्। द्रोहितव्यम्। धभिन्तिस्य। धपकारः। देवदत्तमभिदुष्णः ति, पा १, ४, ३८। किंसखा योऽसि-दुष्ठतिं, पा २, १, ६४। वि—विद्रोहः। दू — दूष्ण्, स्ना, वो। क्रा, छन १ वधः। २ गतिः, वो। दूषोति। दूषाति। दूण्ते। दृषोते। दूषाति द्रोणवद् युके, कवि २१०। दुदाव। दुद्वे। तं दुद्रा-वाद्रिणा कपिः, भ १४,८१। द्रविता। घट्रावीत्। धद्रविष्ट।

द्रिक् — द्रेक्क, थ्वा, या। १ प्रष्टः। २ एक्साफः। प्रव्होक्साफः। व्रक्षः। छ-व्रतिः। द्रेकते। दिद्रेके। द्रेकिता। बद्रेकिए। प्राद्रेकत च्यविपम् (प्राव्धि-तवत्), भ १७, ८। व्रेक्क, भ्रेकते। प्रदि-भ्रेकत्।

द्रे—भ्वा, प। खप्रः। द्रावति। दिव्—पद्रा, छ। प्रमीतिः।

हेव:। 'निन्दा। विरोध:। सट्हेष्टि। दिष्ट:। दिवान्त। देखि। दिष्टे। हि. विड्उ। सिङ्बियात्। विवीतः। सङ् यहेट्। यहिष्टाम्। यहिष्टः। यहि-षन्, पा १, ४, ११२। पहिष्ट। देष्टि गुणिस्योऽपि, भ १८, ८। दिवन्ति म न्दाबरितं सहात्मनाम्, क्रु, ५, ७५। प्रदिषु: खेभ्य: प्रदिवन् वानरेभ्य:, म १७,६१। बिट् दिवेष। दिवेषिय। दिहिषे। दिहिषिषे। लुट् हेरा। जृट् देखाति। ०ते। शाशिषि, दियात्। हिचीष्टा लुङ् घहिचत्। ०ता मन् दिहिचति। ०ते। यङ् देहिष्यते। देहे रिष्ट। चिच् देवयति। अदिदिषत्। दिष्टा। दिष्टः। हेषणम्। हेषा। हे ष्ट्रम्। द्वेष्टा। द्विद्। देषणः। दिषन् वनेचराग्राणाम्, भ ५, ८०। विक विदेव:। विराग:। स्वग्रत् विदेव बन्, स १२, ३३।

हु-स्वा, प। १ श्राच्छादनम्। २ भनाद्रः । हरति । दहार । दहरतुः । इसी। दरिव्यति। अदार्वीत्। धदा-ष्टीम्। दारम्। दाः।

(ਬ)

भक्क्—चु,पा नाशनम्। भक्कयति। धण्—धन्—(प्रण्) स्वा, प। मन्दः। धणति। दधाण। धणिता। धनति, वो।

धन्व — धवि, भ्वा, प। गतिः। ध्वन्वति। ुधा—बुधाञ्, हा, छ। १ धार्यम्। २ प्रीयानम् । ३ दानम्, वो । लट् दधा-ति। धत्तः। दधति। धत्ते। दधाते। द्धते, दधते ग्रासनं यस्य ग्रिसा च नरेखराः, कवि १७४। काचः काञ्चन-संसर्गांडते मारकतों खुतिम्, इहती। सेषुं चापं धत्ते, भ ४, २६। डि धेहि, पा ६, ४, ११८। स्त, धत्स्त । जिल्द-ध्यात्। दधीत। धर्मे दध्यानानः, मनु १२, २१। बङ् घटधा। घषत्ताम्। भद्धः। भवत्त। भद्यत। लिट् दधी। दिधिय, दधाय। दिधिव। दधे, लाखे समाधि न दघे सुगावित्, भ २,७। द्धुः कुमारानुगमि मनांसि, भ ३, ११। दघतुभुवनद्वयम्, र १, २६। लुट् घाता। सृद् घास्यति। ०ते। न सुदं घास्यति (जनियद्यति), ने ३, १५। श्राधिष, भेयात्। धासीष्ट । लुङ् श्रधात्। भधा-ताम्। श्रधुः, पा २, ४, ७७। श्रधितः।

बिखते। श्रायिबीष्ट। अधावि। अधा-धायिषत । सन् धित्सति । ∙ते, पा ७,०४, प्रश यङ् देघोयते, पा ६, ८, ६६ I. दाञ्जिति, दाभाति। णिच् घाषयति। षदीषपत्। डिला। वधाय। डितः। हिति:। घानम्। घातुम्। घातः। धायः। घेयः। धातव्यः। धान्धम्। बन्तर्, तिरस् — बन्तर्धानम् । बन्तर्धत्-ख रामांत, भ ५, १२ । ख्रामीवास्त-रोदधे, र १०,8८ । पुरम्—पुरस्करणम्। तुरासाइं पुरोधाय, कु २, १। अवत् श्रद्धाः विम्हासः। श्रादरः। सन्धावना। याचे राघवे, र ११, ४२। प्रतः यहध-तेऽयवा हुआः, सा १६, ४०। आपि षाच्छादनम्। पिदद्वं पाणिभिर्देगः, भ ७,६८। ग्रीस—ग्रीमधानम्। पाः ख्यानम्। कवन्धवधसभ्यधुः, भ ७,७८। चेत्रमित्यभिषीयते, गो १३, १। प्रव— भवधानम्। प्रणिवानम्। भवहितो-ऽस्मि। देव ! अवधीयताम्, ष्टितो । व्यव —व्यवधानम्। व्यवधाय देवम्, र ८, ५०। चा-चाधानम्। चर्णणम्। स्था-पनम्। धारणम्। सरिन्मुखाम्बुचय-सादधानम्, भ २,८। समा समाधा-नम्। उत्पन्नामापदं यस्तु समाधत्ते स बुडिमान, दितो। सम्पुति धीमद्भिः समाधीयते, दायभाग १०८। उप-उपधानम्। प्रपंणम्। प्रेते भुजमुपधा-य, रामा। बाइनतीपधायिनी अग्रेत, कु ५, १२। भोमे चोपाधितानने, भ १४,89 हृदि चैनामुपधातुम ईसि, र ८,७८। नि-निधानम्। स्थापनम्। न्यासः। ग्रवमनिने निधाय, भ ३,३५। न्यधायिषातां चरणी भुवस्तले, मा १, अधिवाताम् । अधिवत, वा १,२,१७। १३। प्रेतं निदध्यभूमी, मनु ५,६८। क्रमंणि, धीयते। दधे। धाबिता। प्रति-प्रणिधानम्। अवधानम्। प्रति-

वाव

धालम्। विषत् मिनिहिता तस्य, हिती।

नि-प्रतिनिधिकरणम्।

सचि सबि-

• परि-परिधानम् । वि-विधानम् । करणम्। अनुष्ठानम्। देवं न विदर्धे ननं युगपत् सुखेमावयोः, स ६, १४०4 थंदीमिष्टाभनं सतामनं विधीयते, मनु ३, ११८। सहस्रा विदधीत न कियाम्, भा २,३०। दिषता विह्रितं लयायवा (सर्मार्पितम्), भा २,१०। श्रनुवि-श्रनु-विचानम्। साधनम्। प्रतिवि-प्रति-विधानम्। प्रतिकारः। तथापि ग्रितितः प्रतिविधास्यते, वीर २६। सम्-सन्धा-नम्। योगः। भारोपणम्। धनुषि समर्थत्त सायकम्, र ३, ५३। प्रव्रुणा निष्ट सन्दधात्, तितो। सन्दधानि धनुष्येत योग्यकालेषु सायकाम्, कावि १३२। यनु-यनुमन्धानम्। धर्मीपदेशं यस्तर्जेषानुसन्धत्ते, मनु १२, १०६। चभिसम्-प्रभिमन्धि । प्रभिप्रायः । त्वया श्रमिसन्धीयते कामिसार्थः, शकु ३,९४। धान्-धावु, भ्वा, छ। १ गति:। २ वेग:। शीव्रगति:। ३ मार्जनम्। ग्रुडीभावः। ग्रुडीकरणम्। लट् धावति। वते। यस्य रोषाक्णा दृष्टिभीवते यत्र शाववे। पाश्रपाणिस्वतस्तस्मिन् यमः दृतोऽपि धावति॥ कवि १२८। जिट दघाव। वि। दघावादिय सुस्त्य, भ १४, ५०। नुट्धाविता। नृट्धावि-व्यति। ०ते। लुङ् प्रधावीत्। प्रधा-त्र्यधावीदरिसम् खम्, भ १५, ् ६०। सन् दिधाविषति । उ०ते। यह दाघाव्यते। णिच् धावयति। धदीध-वत्। न पादौ धावयेत् कांस्ये, मनु ४, ६५। (उ) घोला, पा ६,8,१८। धावि-त्वा। भोतः पटः। ग्रस्यजेवे निष्ठायाः धुन्यति। प्रदुध्चत्। सम्-सन्दीपः अप्रयोगः । इर्गा । गती धावित इति नम् प्रशन्निः सन्धुच्यताम् अ २, २५ ।

पद्मनाभः। पद्मादावितोऽचिन्त्यत्, हितो। ब्रष्टिधौतः, र ११,८०। धावनम्। धाववाः। धवतः। अनु-अनुधावनम्। पयादावनम्। र्यनुसन्धानम्। भप-पकायनम्। श्रीम-श्रीमसुखगति:। तं इन्तुमध्यधावत, स ६, ४१। वि, निर्-मार्जनम्। निर्धीतहारगुलिका, र ५,७०। पानीयैविदधाविरेऽस्ननानि. सा ८, ५०।

धि तु, प। धारणम्। दिधाय। घेता। अधैषीत्। धियति । धिच् (धुच्)।

धिन्व्-धिवि (जिवि) भ्वा, प। १ प्रीयनम्। २ गतिः, वो। धिनीति, पा ३, १, ८०। धितुत:। धिन्वन्ति। धिनोमि। धिन्य:। धिन्यः, पा ६, ४, १०७। धिनोति इच्चेन हिरख्यरेतसम्, भा १, २२। दिधिन्व। धिन्वता। धि-न्विषति। प्रधिन्वीत्।

धो- बीर्ड्, दि, श्रा। १ श्राधारः। २ घाराधनम् । ३ चनादरः, वो। घी-यते। दिध्ये। घेता। घेष्यते। प्रचेष्ट। त्ता, धीनः।

धु-धुञ्, स्वा, छ। कम्पनम्। धुनोति । घुनुते । धुनोति चासि तनुते च कीर्त्तिम् कृतस्थितांस्तरूनधुन्वत् वा होणि, स १०,२२। दुधाव। दुधुवे। घोता। दघोषीत्। द्यघोष्ट, की १४६। धुल- विच् स्वा, या। १सन्दीपनम्।

२ लेथनम्। ३ जीवनम्। धुचते। धिवतं। दुध्ये। धुचिता। यधुन्तिष्ट। दुषु चिषते, दोषुकाते। दोषुष्टि। षिच्

धू—धूज्—भ्वा, वो, स्वा, क्रा,उ,धू,तु,प। कम्पनम्। विधूननम्। स्वा, धवति। ॰ते। दुधाव। दुधुवे। धविता। अधा-वीत्। तु, धुवति। धुविता। अधुवीत्। भूनोति। भूनुति। धुनाति। धुनौते। भूनोति चम्पकवनानि धुनोत्यभोकं, चूतं धुनाति धुवति स्मुटितातिमुक्तम्। वायुर्विधूनयति चम्पकपुष्परेणून् यत्-कानने धवति चन्दनमञ्जरीञ्च॥ कवि चिट्दुधाव। दुधुवे। दुधुविजि-नः स्कन्धान्, र ४, ६७। नुट् धोता, धविता, पा ७, २, ४४। खट् धोष्यति। ब्ते। धविष्यति। ब्ते। अधावीत्। श्रधाविष्टाम्। श्रधाविषुः, पा ७, २, ७२। अधीष्ट, अधविष्ट। मा न धावी-दरिं रषी, भ ८, ५०। सन् दुध्रवति। ॰ते, पा ७,२,१२। यङ् दोध्यते, दो-भोति। णिच् भूनयति, की १८१। धूञ्, चु, छ । कम्परम् । धूनयति । भवति। श्वी। धावयतीति केचित्, की १८१। धनुरधूनयनाइत्, भ १७, ६४। घूला। ० धूय। घूत:। क्राा, धूनः, पा द, २, ४४ । ७, २, १३ । धूनि:। अव— निरासः। व्यथामवध्य, र ३, ६३। श्र-वधूनभयाः, र ८, १८। मा-ईषत् कम्पः। डद्—डत्चेपः। रजःक्षेः खुं रोड्ते:, र ८, ६। निर्, वि—निरास:। चयः। ज्ञाननिधूतकल्मषाः, गी ५, १७। विध्तपापास्ते यान्ति ब्रह्मतोक-मनामयम्, स्नृति:।

भूप-भ्वा, प। सन्तापनम्।
सन्तत्रीकरणम्। भूपायति, ०ते, वो।
पा ३, १, २८। भूषायाञ्चकार, दुभूप।
भूषायिता, भूषिता। श्रभूपायोत्, श्रभूपोत्। भूप्, डा, प, वो। दोतिः।
भूष्यति।

धूर्-धूरी (गूरी) दि, शा।

, १ डिंसा। २ गति:। घूर्यते। जाल्या . धूर्य्याय घूर्यक्ते, कवि १३८। दुधूरे। धूरिता।

धूर्व सुर्वी (डर्वी) भ्वा, प। - जनमा धूर्वति । दुधूर्व । (ई) धूर्णः । धूर्तः । धूर्धः । धूर्यः ।

धूग्-धूष्-धूस्, चु, प। कान्तिकरणम्। भूषणम्। धूप्रयति। प्ट— ध्ञ्. स्वा, उ। धारणम्। पृङ्, स्वा, या। १ धवध्वं सनम्। चूर्णी-भावः । २ पतनम्, वो । ३ घविष्वं सनम्। ४ स्थापनिमिति गोविन्दभदः। धुङ्, तु, त्रा। १ प्रवस्थिति:। जीवनम्। २ घार-णम्, वो। स्ट्घरति। •ते। भ्रियते, पा ७, ४, २८। भ्रियते यावदेकोऽपि रिपु:, मा २, ३५। धरते यी धुरं धर्म्यां घैळां धारयति घुवम्। प्रियते यत भी: सन्यक् भियति श्रीय गाखती॥ कावि ३५। लिट् दघार। दघे। लुट् धर्ता। ऌट्धरिष्यति। ०ते। प्रागि-षि, भ्रियात्। ध्रषीष्ट । लुङ् स्रधार्थीत्। श्रधार्ष्टीम्। श्रधार्षुः। श्रष्टतः। श्रष्टवा-ताम्। अध्यतः। कर्मणि, ध्रियते। अ-भारि, प्रभारि पश्चेषु तर्देङ्ब्रिया प्रया, नै १, २०। ताभिगेभे: प्रजास्त्री दघे, र ३, ५८। सन् दिधीर्षति। वर्ते। तु, दिधरिषते, या ७, २, ७५। यङ् देभीयते। दर्भित्ते। विज्ञ धारयति। ॰ते। ऋदीघरत्। ०ते। छु, चु, प, वो। घारणम्। घारयति। धारयन् मस्क-रिव्रतम्, भ ५, ६३। अधारयन् स्तरः कान्ताः भ १७, ५४। ग्टहीतापरिश्री-धनम्। देवदत्ताय प्रतं धारयति, पा

ि अवाद्या । नेव

25

१, ४, ३६ । धारयसिव तस्ये वस्ति प्रवास्त्रत, स ८, ७४। प्रयोक्तरहात लमस्य प्रसिद्धमेव। दण्डधारी सही-पतिः इण्डपयोत्ता इत्यर्थः। ययसइ-मुधारिषं यत्यस इसग्रा इवामित्यर्थः, इति गोयीचन्द्रः। धृता। ष्ट्रतः। ष्ट्रतिः। धरणम्। धर्तुम्। धर्तः व्यम्। धारकः। धर्मः। णिव्, धार-यिता। • षार्था। घारितः। धारणम्। धारणा। अव-णिच्, श्वधार्यम्। रिनश्चयः। निरूपसम्। अवधारय सी-मित्रे भूषणान्तरसास्यतः, सहाना ४, १८। उद्-उदार:। मोचनम्। **घ**ददीधरत् प्रितामचान् भगीरथः, उत्तर। निर्, सम्प्र-निर्दारणम्। नि-खयः। प्रचुरीभवन् न निरधारितमः, मा ८,२०। धृज् - धृज् - धृजि, भ्वा, प। गति:। ष्ट्रष्— धृष्, भ्वा, ष, वो । १ मंद्रति:। २ हिंसा। जि ध्वा, खा, प। प्राग-स्मीम्। दमाः। लट् धर्षति। छन्नाति। न प्रणोति गुरोरग्रेन धर्षति निजाः प्रजा:। तमेव घर्षयत्येकां, कवि ८०। ष्रप्रणीद् रावणः, स १७, ८१। लिट् द्धर्ष। दष्ट्यतुः। वानरा दष्ट्युः, भ १४, १०२। लुट् धर्षिता। ल्टट् धर्षि-ष्यति। लुङ् ग्रथर्षीत्। ग्रधर्षिष्टाम्। प्रविष्ठः। सन् दिधर्षिषति। यङ् दरीध्यते। दरीषष्ट्रि। णिच् धर्ष-यति। श्रद्धवेत्, श्रदोष्ठषत्, पा ७ ४,०। धृष् (धृषा, वा) चु, प। १ प्रस इनम्। २ जमधी । श्रीभमता, वो। घषेणम्। धर्ष, चु, धा, वो। श्रात्तवः व्यनम्। निःशक्तोकर्णम्। धपर्यात। घर्षति। घर्षेवते। न घर्षति निजाः प्रजाः। तमेव धर्षयत्वेकं यस्तासु प्रति- धमिति, पा ७, ३, ७८। काम्बंस तारा

कूलित, इलायुधः। (उ) धर्षिता प्रदा। (था) घरितं ध्ष्टंतेन। (चि) पृष्टोऽस्ति। भ्रष्टः, पा ७,१,१८। धर्ष-तः। धर्षितवान्, पा १,२,१८। प्रवे-णम्।

धृ—(जू) क्राा, प। वयो हानि:। धृगाति। दधरतुः। धरीता, धरिता। धे-धेट्, ब्वा, प। पानम्

बाद्धयति। बिट्इधी, पा ६,१, ४५। तुट् धाता। जुट् धास्रति। माशिषि, धेयात्। लुङ् अधात्, पा २, ४, ७८। अधासीत्, पा ७,२,७३। घदधत्, पा ३,१,४८। श्रधाताम्, य-धासिष्टाम्, श्रद्धताम्। अधादसाम-धामीच किंधरम्, भ १५,२८। लं नो मतिमिवाधासीनेष्टा प्राणानिवाद्धः, भ ६,९८। कर्मीचा, घीयते। श्रघायि। सन् धिवाति, पा ०,४,५४। यह देशी-यते। दाधिति, दाधाति। षिष् धाप-यति । . ेते। धीला। ० थाय, पा ६,8, ६८ । धीतः, की २६१ । धयनम्। धयः। स्तनस्वयः। भे (द) स्तनस्वयो। न वारः येट् गां धयन्तीम्, सनु ४,५८। सम् सन्धिः। न सन्धयति केनापि सर्वेत विजयो नृपः, कवि १३२।

धेक-भदन्तः। चु, प। दर्भनम्। धोर्-धार्स (घोर्स) खा, प।

गतिचातुर्थम्। धोरति। धोरन्याधी रणाक्रन्ता विनीता यस्य वारणा कवि १३८। (ऋ) षदुधोरत्। प्राधी रणः। धोरितम्।

भा-खा, पा १ मन्दः।

्गङ्गाद्वादनम्। २ श्रामनंयोगः। ३ प्रस्ते बळव की करणम्, ुरुगी। बर मधमन्, भ ३, ३४। चिट् दधौ। द-भातः। लुट् भाता। लुट् भास्यति। प्राधिष, घोषात्, श्वायात्। श्रधासीत्। श्रधासिष्टाम्। कर्माण, भायते। अभायि। सन् दिभासति। यङ् देशीयते, पा ७,४,३१ । दाभी ति, टाधाति। गिच् धापयति। पदिधा-पत्। का, भातः। भा—गब्दः। दाहः। स्कोतिः। दर्पाधातः। श्राधातसुदरं ध्यम्, सुश्रुतः।

षाङ्ग् (द्राङ्ग्)।

ध्ये सा, पा चिन्ता। ध्यानम्। ध्यायति, ध्यायत्यनिष्टं चेतसा. मनु ८,२९ । दध्यो। दध्यतुः। ध्याता। ध्या-खति 🖟 ध्येयात्, ध्यायात्। प्रध्यासीत्। भध्यासिष्टाम् । दिध्यासितः। दाध्यायते । दाधाति। विच् धावयति। षदिध-पत्। धाला। •धाय। धातः। धा-नम्। ध्येयः । क्षिप् घीः। विषयान् ध्या-यन् गो ३. ६२। यन चारणम्। चिन्ता। यनुग्रहः। यनुद्रध्युरनुध्येयं (यन तुष्यानसन्त्रप्रहः), र ९७, ३६। श्रासि-जिन्ता । असङ्गल्यः । अध्यवधनसिप्सा । नि - सार्यम्। दर्भनम्। तिवदध्यौ सः, भ १४, ५६। निवैर्णनन्तु निष्यानं दर्भनानोकनेच्यामित्यमरः। चिरं नि दध्यो दुहत: म गोदुह:, मा १२, ४०। भन, भन्न भनि (धनि) स्वा, प। गति: भ्रण्-भ्रन्-(भ्रण) भ्वा, प। शब्दः।

प्रम् चन्नम, क्रा, चु, प।

ड्व्ह्वति:। भ्रस्नाति। भ्रासयति। **डकारो धालक्यकः। उत्तर्याति।** उभ्रसाञ्चनार । 🐫 🚎 💆

्रधाख्—धाख (घोख) स्वा, प।

१ शोषणम्। ३ श्रतमर्थः। आखिति। अाम् (द्राघ्। प्राङ्ग् (द्राङ्ग) माड् (द्राड्) भिज्-स्वा, प, वो । मति: । भेजते । मुंद्र-भू, बो, ब्वा, प। भू, भूव, तु, प। १ गातः। २ खेळेम्। भ्रुवति। भ्रुवति र दुष्राव। दुष्रीव। दुष्रुवतुः। तं दुष्रा-वाद्रिणा कपि: (व्यापादितवान्), म १४, ८१। धु, घोता, घोष्यति, घघी-षीत्। भू, भविता, भविष्यति, भमा-वीत्। तु. भुता, भुखति, प्रभुषीतु, प्रभुताम्। भुव् भुविता, भ्रुविष्यति, यम् वोत्, यभ् विष्टाम्।

ध्वन

म्रेक् (द्रेक्)।

भ्रे-भ्या, प। त्रांसः। भ्रायति। ध्वज्-ध्वज्ञ-ध्वजि (पृज) स्वा, प। गति:। ध्वजिति। ध्वज्ञति।

ध्वण्-(अण) भ्वा, प। शब्दः।

ध्वन् स्वा, प। शब्दः।

ध्वनति। ध्वनन्ति यद्गुणान् मत्यह ध्वनयन्ति च खेचराः, कवि २५५ । दध्वान। दध्वनतुः। दध्वान,मेघवद् भीमम्, भ ८,५। पणवा दध्वनुईताः, भ १४,३। ध्वनिता। ध्वनिष्यति। य-ध्वनीत्, प्रध्वानीत्। दिध्वनिषति। दन्ध्व यते। दन्ध्व न्ति। 😿 ध्वनयति घण्टाम्। प्रन्यतः धानयति (प्रसाष्टा-चरसुचारयति। अदिञ्चला। ध्वन श्रदन्तः। कुत्रपाति शब्दः। ध्वनयति। श्रद्धनत्। धृतितः। धृननस्। ध्रानः। धुनि: िधुनति मधुपसमूहे, गोतनो .47.81

[गबदपंष:]

900

धं स्-धन्स, खा, था। ् श्वसंसनम्। ध्वंसः। श्रध:पतनम्। र गमनम्। ध्वंसते, ध्वंसते यदि भवा-दृशस्ततः, भा १३, ४२। तमांसि भूं-अन्ते, बीर ५। धुंसेत हृदयं सदाः, मा ११,५७। दघुंसे। प्राचा दघुंसिरे, भ १४,१५। धूंसिता। धूंसिवाते। श्रम्भत्। श्रभ्वं सिष्ट, पा १, ३, ८१। प्रस्तमधुसन्, स १५, ८३। सन् दिघुं-सिषते। यङ दनीध्वस्थते, पा ७, ४, ८४। दनीश्रास्ता। गिच् श्रंसयति। षद्धं सत्। मूर्डीनमद्धं सत्ररहिषः। भ १५, ८१। (इ) ध्वंसित्वा, ध्वस्ता। ध्वस्तः। ध्वंसः। षप, षव-चूर्णनम्। निन्दा। वि-निपातः। चयः।

धाङ्ग्—(द्राङ्ग्)।

ध्य-भ्या, प। कुटिकीकरणम्। धरति। दधार। दधरतुः। धर्ता।

(न)

नक् -(धक्) चु, प। नागनम्।

नच् - यच् (ढच) भा, प। गति:। नख्-नङ्-णख्, णखि (उख) भा, पं। गृतिः। नखति। नङ्गति। नज्—योनजी, तु. या, वो। सज्जा। नट्-गट्, भ्वा, प। १ नत्तेनम्। २ इसा, वो। नटति। नटन्ति नाटके यस्य चरितं भरतादयः, कवि १७८। ननार। नेष्टतुः। नटिता। प्रनटीत्, प्रनाटीत्। तृतिनतिगतिषु घटादि-र्णीपदेश एव, की दर्भ नटयति।

नन्द् खन्दनम्। नाट्यम्। श्रीमनयः। यन्-कर्णम्। भंगः, वो। नाटयति। वक सेचनं नाटयति, यकु १,८०। ईम्बर्खा-भिख्यां नाटयत्येष शैनः, मा ४, ६५१ नट, (पांज) चु, य। दीप्ति:। नाटय-ति। उद्-ि इंगा। व्यलस्यो बाटवति पार, ३, ४६। नट:। नाटकम। नड्-षड्, चु, प। स्त्रंगः। नाड्यति। नद्-णद्, भा, प। शव्यत्तगब्दः।

नाद:। लट् नदति। नवाम्बुमत्ताः श्रिकिनी नदन्ति, घटकपैरः २। बिट ननाद। नेदतुः। दुन्दुभयो नेदुः, रामा। सुट्नदिता। स्टट्नदिष्यति। सुङ् चनादीत्, चनदीत्। सन् निन दिवति। यङ् नानदाते। नानति। णिच् नादयति। धनीनदत्। पह चु, प। दीप्ति:। नादयति। छट्, नि-उच्चनादः। प्रमोढ सिंइध्वनिक्वनाद, कु रे, ५७। मदपटुनिनदङ्गीराजदंगैः र ५, ७५।. प्रस्तु दैः शिखिगगो विनाः

नन्द्—दुर्नाद, खा, प। सम्बद्धः। ग्रानन्दः। नन्दति। ननन्द। ननन्द पर्यन् म खनीः, भा ४, २। ननन्तुः

दाते (प्रयोजनिषानन्तस्य सम्मेनलम्),

घटकपॅर:। प्रबद्ति. प्रविनद्ति, प

८, ४, १७। निनदः। निनादः।

स्तत्महभेन तत्समी, र ३, २३। नन्दिता। नन्दिखति। नन्दात्। पन न्दीत्। अनन्दिषुः। निनन्दिषति। नानन्दाते। नानन्ति। नन्दयति। पन

नन्दत्। गोपाङ्गनानृत्यम्नन्दयत्तम्, भ नाव्येन केन नटियश्वति दीर्घमायुः, (३, १६। निन्दला। ॰नेन्छ। निन्दितः।

भनर्ष । प्रचटयति । नट्, चु, प । भवः । नन्दनम् । (टु) नन्दशुः । नन्दनः, ग

अर्म् ।

३, १, १३४। नन्दनः। नन्दः। नन्दा। नन्दी। श्रमि-श्रमिनन्दनम्। सन्धा-वनम्। प्रशंसा। सन्तोषणम्। प्रोत्-साइनम्। कामना। नाभिनन्देत मरणं नाभिनन्देत जीवतम् (न काम-येत), मनु ६, ४५। तत्तत् प्राप्य ग्रभा-गुमं नाभिनन्दति न देष्टि (प्रशंमति), गी २, ५७। वाग्मिः चखीनां प्रियम-भ्यनन्दत्, र ७, ६८। दिवीकसोऽपि सीतादेवीमभिनन्दन्ति, वीर १०४। सेनापते वचनं ते नाभिनन्दामि, शकु २, ४१। ग्रा-ग्रानन्दः। प्रानन्दितार-स्वां दृष्टा, भ २२, १४। पाननन्ददा-नरान्, भ १५, ५८। प्रति—संवर्धनम्। प्रीत्या प्रतिननन्दतुः, र १, ५८। प्रति-नन्छ तथाशीभिः, भारत।

नभ्-णभ् (तुभ) भ्वा, था। दि, क्रा, प।

हिंसा। बधः। नमते। नस्यति। नस्यति। ननाम। नेमे, सतं नेमे, म १४, ३३। नमिता। नमिखति ॰ ते। भ्या, जनमत्। जनमिष्ट। दि; जनमत् क्या। जनमीत्, जनामीत्।

नम् प्रम्, भ्रा, प । १ प्रह्नतम् ।
नम्बीभावः । २ नमस्तरपम् । ३ प्रव्दः ।
प्रव्हार्थां न भाषायाम्, दुर्गा । लट्
नमति, भक्त्या नमति यो देवान्,
कवि २५३ । प्रदर्शनमतु चापम्, वौरः
१३ । नम चितीन्द्रम्, भ १२, १८ ।
लिट् ननाम । नेमतुः । नेमिय, ननत्य ।
सविभ्नमं नेमुः, भ ३, ४३ । लुट्
नन्ता । लुट् नंस्यति । लुङ् प्रनंसीत् ।
प्रनंसिष्टाम् । प्रनंसिष्ठः, पा ७, २,
७३ । प्रनंसीद् भूभेरेणास्यः, भ १५,
२५ । प्रनंसीद् भूभेरेणास्यः, भ १५,
२५ । प्रनंसीद् स्मेरेणास्यः, भ १५,
२५ । प्रनंसीद् स्मेरेणास्यः, भ १५,

कर्त्तरि, ममते। भनंदा दखः खयमेव, पा ३, १, ८८। छन् निमंसति। यङ् नैन-अयते। नंनन्ति। नंनम्यमानाः फलदित्-सरीव सताः, भ २, २५ । णिच् नमयति, गामयति। सोपसर्गस्य तु प्रणमयति।, पनीनसत्। नमयति धनुरैयं यः, महाना १, २३। नत्वा। • नत्य, नस्य। नतः। नतिः। नम्नम्। नन्ता। नद्धः। मन्तव्यः। धव, पा-धवनितः। छद्-उन्नति:। उन्नमति मेघः, सच्छ १६६। ससुबनाम! काचित्, भा १०, ५३। **डप—डपस्थिति:। प्रणित:। अकामी-**पनतेनेनसा, र १०, ३८। परि-सिर-णासः। परिपाकः। परिणमन्ति न पक्षवानि, भा५, ३७। रत्नं चेत् काचि दस्ति तत् परिणमत्यस्मासु शकादिपि, बीर १०। विपरि-विपरिणामः। वि-रुपावस्था। विपरिणमते दीर्जन्यम्, भनर्घ ८२। प्र-प्रणतिः। गुरवे प्रण-म्य, र १६,७०। तामज्ञिकिशः प्रचेसः, ₹ 18, 181 नम्ब्-भ्वा, प, वी। गतिः। नम्बति। नय् — चय् (भय) भ्वा, भा। १ गति:। २ रचा, वो। नयते। नेये। नयिता। नद्-(गद्) भा, प। अन्दः। गर्जनम्। नदेति। ननदे। नदिता। पनदीत्। पनदिंषुः कविव्याघाः, भ १५, १५। प्रनर्देति। प्रनर्देकः, पा ८, ४, १४। कष्टं विनर्देतः, भ ८, १८। नर्ब - भ्वा, प, वो। गतिः। नर्बति। नल् चल स्वा, 'प, । १ गत्थः। बर्दनमिति गोविन्दभद्दः। २ बन्ध-नम्। नलति। पल्, चु, प, वो।

दीप्तिः। नालयति। -

नम्-गम् दि, पन १ नामः।

नह

चयः। सरणम्। र श्रदर्शनम्। तिरो-भाव:। लुकायनम्। पनायनम्। नट् मध्यति। प्रुवाणि तस्य मध्यन्ति, िद्धा। लिट्ननाम । नेमतुः । निधिय, बनेष्ठ। निशिव। निश्व, की १४०। नेश्वानियाचराः, मे १४, ११२। जुट निश्चिता, नष्टा, पा ७, २. ४५ । ७, १, ६०। लृट् नशिखति, निङ्चिति। लृङ् बनिधियत्, पनङ्ख्यत्। पाधिपि, नम्यात्। बुङ् घनमत् (मनमत्, वो)। चेष्टा व्यनगितिखिलास्तराखाः, नै। चम् चनेशम्। सन् निनशिषति, निन क्वाति। यङ् नानश्यते। नानिष्टि। णिच् नामयति। अनीनमत्। चुती रथमनाग्रयत् (दूरमपनीतवान्), भ १७, १०३। तेवामेजानजे तमी भाषा बासि, गी १०, ११। तथो सा नीनगः, मा ११, ३१। नशिला, नद्दा, नंदा, पा इ, 8, हरा नष्टः। नष्टः। नगनम्। नागः। नियतुम्। नष्टुम्। नामकः। नुष्तरा । प्रति—विनामः। प्रणिय-चिति, प्रनृङ्चिति। प्रनष्टः। प्रणायः, पा ८, ४, ३६। प्राणगन्, भ १४, ४८। विनङ्खित पुरी चिप्रम्, स १६, २६।

नस् पसुभा, था। कोटिल्यम्।

नइ—्यह् दि, छ। बन्धनम्। ्र लट् नहाति। •ते। लिट् ननाइ। नेहतु:। नेहिया नगडा नेहे। सुट, नवा, पाट, २, ३४। लृट् नव्याति। ०ते। जनासीत्। जनासीम्। जना-त्सः। अन्द। अन्त्याताम्। सन् निगस्ति। ०ते। यह नागद्यते। नान्छि। णिच् नास्यति। अनीनस्त्। नहा। ॰नहा। नहः। नहस्यम्। नाहः

उपानत्। प्रि पाच्छादनम्। कवर्ष विनद्य, भ ३, ४७। **डद्—डनमय** वस्थतम्। अनक्षमोनवज्राकलायम्, क् ३, ४६३ सम्—भाच्छादनम्। वायः। सिजनम्। समनद्यन् वसेशः, म १०,0 8 । समनात्सीत् सन्यम्, म १४, १११। कुसुमांसव योवनसङ्घेषु सवस्म, शकु १, १०२। परि-परि षा इ:। देर्घम्। पर्याणवम्। निरा चड्म्। पर्यवनदम्। प्रावनदः, पा ५ 4, 3, 35 beach, and a

नाय्-नाथ्-नायृ, नाघृ, भा, था।

ा (प्रार्थना । २ उपतापः । ३ ऐखर्थम् । ४ बाबीवीदः । पष्टार्धश्रंसनम् । प्राप्ति-षि एवः नाघेरात्सनेपटम्, भन्दत्र नायति, की ३२। आधिष नित्यन्, षन्यत्र विभाषयेति नेचित्, दुर्गा। बाट्यायति। ०ते। नाधते। नाधान्त के नाम न स्तोकनायम्, ने इ, २५। नायसे किसु पति न भूसतः, भा १३, प्टा संपिषी नाथते, की २४२। घुला नायस्व वदेशि, स ८, १२०। बिट ननाथ। ॰ थे। सुट्नाथिता। स्टट् नाथियति। '•ते। सुङ् मनायीत्। चनाविष्टाम् । चनाविष्ट् । चनाविष्ट् । नाथयति अनुनायत्। अनु इव प्रार्थेना । दाजानसुवनायति, पा THE THE THE TENE

े नास् + यास्, भूा, या । यव्दः । 🏄

नासते। नासा। नासिका। नस शब्द इत्येन इति प्रदीपः।

निच्-णिच्, भा, प। चुखनम्।

्रिविति, तिच्दि स्तनकचो बनपी लाष्ट्रिमसादिकम् कति १८८ । तिनिच । निश्चित्। निचित्रति। विचित्रति जो भूयः, भ ८,१ ६। प्रशिचणम्। प्रनिचणम्, पा ६, ४, ३३।

निज्-णिजिर्, स्वा, छ। १ ग्रीचम्। निर्मलीकरणम्। १ पोषणम्। लट् नेनिता। नेनिता:। नेनिजिति। नेनित्ती, पा ७, ४, ७५। यत्पादी मीलिरता-गुजालैनेनिक्ता राजवम्, विवि (३०। सीद् नेनिक्तु। नेनिक्या नेनिजानि, पा ७, ३, ८७। सिङ् नेनिच्यात्। निनिजीत। सङ् प्रनिनेक्। पनिनिताम्। बनिनिज्:। बनिनिजम्। बनिनिता। लिट् निनेज। निनिजे। सुट् नेसा। लृट् नेच्यति। •ते। आर्थिष, नि-ज्यात्। निचीष्ट। लुङ् प्रनिजत्। अनेकीत्। अनिजताम्। अनेताम्। यनिता। यनिचाताम्। सन् निनि-चिता •ते। यङ् नेनिच्यते। नेनि-जीति। णिच् नेजयति। अनीनिजत्। निक्का। निक्तः। नेजनम्। अव-अव-नेजनम्। प्रचालनम्। निर्—निर्णेजः नम्। श्रीधनम्। प्रिज्ञिनिशिक्षम्, सनु पू, १२७। चेलनिर्णेनकः। ·

निस्ति (पाति, घटा, घा। यहिः। निस्ते। निनिस्ते। निस्तिता। घनिस्तिष्ट। निद्—नेद्—णिष्ट, णेट, भ्वा, छ।

निद्-निद्-णिट, णहे, स्वी, डी. १ कुसा। २सिनकार्षः। नेदति। •ते। नेदते न परं कच्चित्, कवि १५०।

निन्द्—णिदि, भूग, पा जुला।
निन्दा। निन्दित। तं निन्दित परीवादं परस्य विद्धाति यः, कवि १५०।
निन्दिस युत्तिजातम्, मौतगो १, १३।
निनिन्द। निनिन्दतः। निनिन्द स्पं
हृदयेन पार्वती, कु ५, १०। निन्दिता।
निन्दिष्यति। सनिन्दीत्। सनिद्धि

ष्टाम्। समीण, निन्दाते। धनिन्दि। निनिन्दिषति। यज् नैनिन्दाते। नैनिन्ति। निन्द्यति। धनिनिन्दत्। निन्दिला। ॰ निन्दा। निन्दितः। निन्दनम्। भिन्दनीयम्। निन्दां। निन्दसः। प्रनिन्दति, प्रणिन्दिति, पा द, है। ११६। प्रणिच्चिति नो भूयः, म ८,

निन् (पिन्)।

निस्-िणिल्, तु, प। गडनम्। दुर्वीधः। निस्ति। निनेस्। निस्ति-ता।

ा निवास- घट्नाः, चु, प्रा HADI-

पाच्छादनम्। निवासयति यसितं चीनांग्रकम्। कवि। निग्-िणिण्, भा, प। समाधिः। नेग्रति। प्रणेशित्। निग्रा। निष्-िणिषु, भा, प, वो। सेचनम्। निष्क्-िणिष्क्, चु, घा। परिमीणम्। निष्क्यते।

निस्ते। निस्ते। निस्ते। निस्ते। दिन्दे। निस्ते। निस्ते। निस्ते। दन्तक्कदम्, भ ५, १८। सुखं निस्ते सुखं स्त्रीणां यत्प्रजा, कवि १८८। निनिसे। निस्ता। धनिसिष्ट। प्रणि-सनम्, प्रनिस्तम्, पा ८, ४, ३३। दन्यान्ताऽयम्। धाभरणकार्स्तु ताल-व्यान्त इति बस्ताम, कौ १२३।

नी—षोज, भा, उ। प्रापणम्। नयनम्। लट्नयति। ०ते। प्रजा यामं नयति, गोपः, दुर्गा। नयन्ते यद्गुणाः, सर्वे यस्ताल्यस्ति दिङ्गुखम्, क्षवि १७१। मामपि तव नय, दितो।

(समानने) गास्ते नयते। (ज्ञाने) तत्त्वं नयूते, पा १, ३, ३६। चिट् निनाय। ्निन्यिय, निनेय। निन्यव। निन्ये।, संविष्ट: कुग्रमयने निमां निनाय, र १,८६। लुट्निला। लृट्निष्यति। •ति। प्राधिष, नीयात्। नेषीष्ट। पनेवीत्। पनेष्टाम्। पनेषुः। पनेष्ट। श्रनवाताम्। धनवत। धनवीदाचमान् चयम्, भ १५, ५० । कर्मणि, नायते त्रजा यासम्। प्रनायि। कपिनाऽने वत चयं दिष:, स ८, २२। सन् निनौ-षति। •ते। यङ् नेनीयते। नेनेति, नेनयोति। णिच् नाययात। अनोन-यत्। नीता। ॰नोय। नीतः। नोतिः। नयनम्। नयः। नेतुम्। नेता। नाय-काः। निवम्। नयनम्। अनु — अनुनयः। मारीचारनुनयंस्तासात्, भ ५, ४६। स चानुनोत: प्रणतन पद्यात्, र ५, ५४। प्रप-प्रवसारणम्। शत्रनपने-थासि, भ १६, ३०। श्रीम-श्रीभन-यः। प्रनुकारणम्। कुसुमावचयमभि-नयन्त्यी, शकु ४, १, १२। या-पान-यनम्। तेनाङ्गनाभरानायि सः, १, १०। उदा—उत्सङ्गोकरणम्। बाल कसुदानयते। प्रत्या-प्रत्यानयनम्। प्रत्यानेष्यति प्रतुभ्यो वन्दीमिव जय-त्रियम्, कु २, ५२। उद् डत्चिपणम्। दग्डमुंन्नधतं, पा १, ३, १६। (उन्नात: हाँडः) समुद्रयन् भूतिम्, भा १, ८। **७**प—उपनयनम्। स्थातः। साणवकः स्वनयते, कमकरानुपनयते, पा १, ३, ३६। विदानुपरनेष्ट तान, भ १, १५ (प्राप्तम) प्रार्थिस्यासनसुपनव, संच्छ २७५। अर्घ्य सुर्पनीय, भ ६, ७०। भिचासुपनयात भिचाः करतले, महाना ३, ७१। (उपस्थित:) मलकोग: कथस्पनयेत्, मे ८४। निपाप लंद नुद्रित। •ते। मन्दं मन्दं नुद्रित

यम्। डदकं निनयेच्छेषं पिरहान्तिके. मनु ३, २१८। निर्—निर्णय:। कर्य निणीयते परः, इतो । परि-परिणयः। परिणेषाति पावैती यदा इरः, कु 8. ४२। प्रणयनम्। रचना। णम। सुम्धबोधं व्याकरणं प्रणीयते। तस्यार्घ्यं प्रयोय, भ ५, ०। वि-धर्माद्यु व्यय:। ऋणादिपरिश्रोधनम्। घपनयनम्। यतं विनयते, करं विन-यते, पा १, ३, ३६। क्रोधं विनयते, परस्य क्रोधं विनयति, पा १, ३, ३७। मधुभिविजय-विन्यन्तेस्म तद्योधा अमम्, र ४, ६८। (शासनम्। शिवा) विनेषांचव दुष्टसत्त्वान्, र २, ८। मा चावलायिति गणान् व्यनेवोत्, कु ३, ४१। विनिन्धुरैनं गुरवः, र ३, २८। नील-पोल, भ्वा, प। नीलवर्षः। २ तत्करणम्। प्रणीसते। नीसम्। नोसो।

, नीव्-(पीव) णीव्, वो। भूा, प। स्वीस्थम्। नीवति।

नु—गु, भदा, प। स्तुतिः।

सद नीति। नुतः। नुवन्ति। सिङ् नुयात्। लङ् अनीत्। अनुताम् । बिट् नुनाव। नुनुवतुः। नविता। नीता, वी। सुट् धनावीत्। धनीषीत्, वी। सन् नुनूषति। यङ् नोनूयते। नोनो-ति। ेषिच् नावयति। अनुनवत्। नुला। नृतः। नृतिः। मा—सातवः ग्रुयब्दः। प्रानुते भिवा, की २४३। पर्तात्रणो मन्द्रमानुवानाः, भ ८, ६०। नुड्-तु, प, वो। बधः। नुडति। युद्-पुद्, तु, छ। प्रेरणम्।

शिवणम्। 'निरास:। प्रवसारणम्।

ववनस्वाम्, में ह। पापं नुदति, मीर २३ । जिट् । हनोट । । नुनुदे । संग्रधं। नुनोट, र ६, १९६ं। नृपतेव्येज-नादिभिष्तमो नुनुदे, र ८ ४१। नुद नोता। खर्ट् नोत्यति। वते। श्राधिषि, नुवात्। नुसीष्ट। सुङ् भनीसीत्। भ्रतीत्ताम्। भनीत्सुः। भनुत्तः। भनु-स्याताम्। प्रनुस्ततः। सन् नुनुस्ति। ॰ते। यङ् नोनुद्यते। नोनोत्ति। णिच् नोदयति। भन्तुदत्। नुस्ता। मुद्राः। नुत्तः, पा ८, २, ५६। नुत्तिः। नीदः नम्। नीदः। आत्मापराधं नुदतः ग्रुय-षया, र १६, ८५। भप-अपनीदनम्। षपनुनुदुर्न देइखेदान्, स १०, १३। निर्-प्रताखानम्। खण्डनम्। धा-घातः। पयो मांसं भाकश्चेव न निर्नु-देत्, मनु ४, २५०। प्र-प्रेरणम्। वि-चिच् विनोदनम्। प्रीचनम्। यापनम्। दूरीकरणम्। क खिन्नमा-सानं विनोदयामि, यञ्ज १,२०। विनी-देशिषान्ति सुनिकन्यका खाम्, र १.8, ७७। तापं विनोदय दृष्टिभिः, गौतगो ₹ **• , १३** | ₹ | ₹ |

ं नू गू, तु, प। स्तवनम्। नुवति, नुवति त्रिषु सोनेषु घड्-गुणान् प्रयती जनः, कवि ४२। नुनाव। नुविता। अनुवीत्। परिणूतगुणोदयः, को १५३। इस्रान्तीऽयमिति वर्वाचः।

चत् नृती, दि, प। गात्रविद्येप:। नत्तेनम्। नृत्यति, नृत्यति युवति-जनेन समम् गीतगो। ननर्ता। तुः सञ्चावम्, भ ३, ४३। नर्त्तिता। नत्ंस्वति, नित्तंत्वति। यनत्ंस्वत्, भनतिं वात्, पा ७,२,५७। नृत् स्वन्ति सुदा युताः, १६, २०। अनत्तीत्।.

जनतिष्टाम्। जनतिषुः। निनुकाति, निनर्त्तिवति । नरीनृत्वते, पा द, ४, नहीनार्त्ते। विच नत्त्रयति । ·ति। अननत्तेत्, अनीनृतत्। नत्तिः स्वा। नृत्तम्, नृत्यम्। नत्तेनम्। न-त्तंवा:, नत्तं की। धा-रणम्खम। सब्दिरान जितनशामा नी वस्पनम्। ₹ 4, 82 1

न् - क्या, प। नयनम्। प्रापणम्। नुषाति। प्रापणे, नर्यति, घटाहिः। नीर्षः।

नेद् (निद्) नेष् (एष्)।

पच्-भा, चु, प। परियदः। पचति। पचयति। भदन्तः, वी। पचः। पच्—डुपचष्। भ्वा, छ। पाका।

रन्धनम्। परिणामः। परिणतावस्या। विनाशोनाखीभावः। तर् पचति। ०ते। तराषु लानोदनं पचति। पचारै म्यवं चतुर्विधम्, गी १५, १८। शास पचति। भूतानि क्रानः पचति, भारत। लिट् पपाच। पेचिय, पपक्ष। पेचि-व। पेचे। सुट्पत्ता। स्टट्पस्ति। ॰ते। प्राधिष, पचात्। पचीष्ट। तुङ् प्रयाचीत्। प्रयाताम्। प्रयाचुः। प्र-पता। धपचाताम्। घपचतः। वसेषि, पचते। अपाचि। सद्य एव सुकता काङ्गितं पचाते, र ११, ५०। जन्मी पच्चते घोरे। सन् पिपचित्। ०ते। यङ् पापचाते। पापचीति, पापिता। णिच् पाचयति । अपीपचन्। १्रपच्च । पकाः, पाट, ३, ५२। पक्तिः। पचनम्। पाकः। पाकिसम्। पचा वित्र गिता। पाचनः। पचः, पा

(इ) पित्तमम्। ददर्भमानूरफनं पचे-निसम्, ने १, ८४। परिपाकः। विपा• कः। पच (पच)।

प्रण

पञ्चित । यञ्च पचते, वो। पचित।
पञ्चते। पञ्च पचते, वो। पचित।
पञ्चति इत्यप्ये के। पचि, चु, प। विस्तारः। पञ्चयति। प्रपञ्चय पञ्चमरागम्, गीतगो, १०, १३। यो वाग्मी
वादिनां मध्ये वाज्ञमुचेः प्रपञ्चते। प्रपञ्चयन्ति वत् को चिं दिङ्मुखेषु महाकनाः॥ कवि ४०। पञ्चकः। पञ्चः।
पञ्चनम्। पञ्जितः।

पट्—(ग्रट) स्वा, प। गतिः।
पटित। पट् (ज्ञप) चु, प। १ दीप्तिः।
श्वदारः। छेदनम्। पाटयितः। भपीपटत्। छद्— उत्पाटनम्। प्रांग्रमुत्पाटयामास मुस्तास्तस्वमिव दुमम्,
र १५,१८। विभेदः। केतकवर्षः विपाटयामास नखागैः, र ६, १७। पट,
भू, प। भदन्तः। वैष्टनम्। पटयित ।
पटः। पटी।

पठ्—भ्या, पाकश्चनम्। पाठः।
पठित स्रोकं घीरः। पपाठ। पेठतः।
पेठिश। पठिता। पठिष्यति। सपठौत्,
पपाठौत्। कर्मण्, पठ्यते। सपाठ।
स्रोकः क्ष्य कविरमुख क्षतिनस्तत्
पठ्यतं। पठ्यते। पिपठिषति। पापठ्यते। पापिः। पाठयति। सपौपठत्।
पठिता। पठितः। पठितः। पठनम्।
पाठः। पाठकः। पठत्सु तंषु, नै
१,३४।

पण्निवा, श्रा। श्यवहारः। बाणिक्यम्। श्लुतिः। व्यवहारे, श्रत-स्य पणते, पा २,३,५०। पेणे। पणि-ता। प्रपणिष्टः। प्राणानामपणिष्टः, म

द, १२१। स्तुतावेवायः। द्यायान्तावाः
समेपदम्, की ५८। प्रणायित, पा ३,
१, २८।०ते, वी प्रणायाञ्चकार। पेणे,
पा ३,१,३१। प्रणायितासि, प्रणितासे।
प्रणायिष्यति, प्रणिष्यते। प्राधिष्ठ,
प्रणाय्यात्। प्रणिषीष्ट। अप्रणायीत्।
अप्रणिष्ट। वोपदेवमते व्यवहारेऽपि
प्रायः। न चोपलेमे विणिजां प्रणायाः,
विण्जां प्रणायान् इति जयमङ्कष्टतः
पाठः। प्रणायान् प्रणामान् इति
तस्यार्थः, भ ३, २०। प्रणायित्वा,
प्रिप्ता। ०पणाय्य, प्रणा। प्रणायतः।
प्रणितः। प्रण्यम्। प्रणः। भ्राप्णः।

पण्ड्—पड़ि, स्वा, आ। गितिः। पडि, चु, प। १नाधनम्। २राधीकः रणम्, वो। पण्डते। पण्डयति, पण्ड-ति।पण्डा।पण्डितः।

पत्-पत्लृ, भ्वा, प। १गति:। २पतनम्। स्रंभः। पातित्यम्। इपे-ख्यम्, वो। सट् पतित, पतत्यधो-धास, सा १, २। पतन्ति पितरी छोषां नुप्तिविग्डोदकिक्रियाः, गी १, ४९। सु रापः पतति, स्मृतिः। लिट् पपात। पेततुः। घेतियं। पत्ती पपात खम्, भ ५,१००। भुवि पपात मूर्च्छितः, रामा। लुट् पतिता। स्टट् पतिषति। भानुः रप्यपतिष्यत् स्त्राम्, भ २१, ६। नुङ् अपप्तत्, पा ७, ४, १८। कर्मभावयोः पत्यते। श्रपाति। सन् पिपतिषति, पिकाति, पा ७, ४, ५४। यङ् पनीपः त्यते। पनीपप्ति, पा ७, ४, ८४। पिन् पातयति। प्रयोपतत्। पतिला। ॰पत्य। पतितः, पा ७,२, १५। पतनम्। पातः, पतः। पतितुम्। पातकः। पा तुकः। चैत्पतिषाः। पत्रं पत्रः पा

तासं पत्याः। चनु-चनुपातः। चमि च्यभिसुखपतनम्। चा-चागमनम्। उपस्थिति:। शनैरापततस्तान्, भ ३, ४८। उद्-उत्पतनम्। ७उडयनम्। **डत्पात: । नि—निपतनम्। स्र्धः**प-तनम्। उपस्थिति:। निपतन्ति रणेषु यस्य द्वाणाः, कवि ४८ । मरणव्याधि-शोकानां किसदा निपतिष्यति। णिच् - निपातनम्। ज्योत्स्ना इत्येते म-वर्षे संज्ञायां निपालन्ते, पा ५, २, १8 । कात्यायनीव महिषं विनिधी-तयामि । प्रणि-प्रणिपातः। संनि-मिलनम्। निर्-निर्मः। प्र-निप-तनम्। उपस्थिति:। प्रापप्तन्याकति-स्तव, भ १५, ५३। सम् गतिः। सम्पत्य तत् सनीडे, भ ५, ३१। पत्, टि, चा, वो। ऐष्वर्थम्। पत्यते। चौगीतले-ऽधिपत्यते यः, कवि ४८। पेते। पति-ता। पतः, पत्, बाखोऽदन्तः। हिती-यी इसन्तः। चु, प। १गतिः। पतनम्। २ऐ खर्थम्, वो। चदनाद्वाणिच् पत-यति, पति। पतयन्ति समन्ततो विपचाः, कवि ४८। पताञ्चकार। पतिता। भ्रपतीत्, की १८२। पात-यति। अयोपतत्। चिज्रहितौ पत-स्रवावेव ग्रदन्ती।

पथ् पथे, भ्वा, प । ग्ति:। पथ्—(पृथ्) चु, प। प्रचेप:। (पर्यात । पर्ययसुत्तरापयम्, कवि २३०।) पद्—भ्वा, प, वो। खैर्थम्। पदति। पद ग्रदन्तः। चु, ग्रा। गतिः। पदयते। संपरिचिय्य सच्चाणि पदयन्ते पदातयः। ग्राइवे राजल--च्मीस यस्य सम्पद्यते भ्रुवस्॥ 7001

पड्—दि, श्रा¹ गति:। प्राप्ति:। * ै पदाते। पेदे। पत्ता । पत्स्कते। पत्-सीष्ट। अपादि, पा ३, १, ६०। अप-ब्सोताम्। अपवसता पिक्सते, पा ७,४ ५ 8। पनीपदाते। पनीपत्ति। पा ७, ४, ८३। णिच् पादयति। भपीपदस्। पत्ता। ०पत्य। पतः । पत्तः। पत्तुम्। पत्तव्यम्। णिच् पादितम्। पादनम्। पादियतव्यम्। चतुः, प्राप्तिः। जरां मधीरम्बपद्यत, भारत। चिम-पेदे राधवं मदनातुरा, र १२, ३२। या-वागमनम्। प्राप्तिः । वापत्ना-प्ति:। बापत्ति:। तर्कोपन्यास:। छत्-वितः। निकाचगदावादि खंसः, सा ब, ३१। एव रावणिरापादि (भागतः), भ १५, ८८। व्या-मरणम्। व्याप-वानां गवां, स्मृतिः। व्या-णिच्-व्यापादमम्। इननम्। पात्मानं लवा द्वारि व्यापादयामि, हितो। छद्-उत्पत्तिः। उदपादि भव्या, कु १, २२। व्युद्-व्युत्पत्तिः। नामकदमपि व्युद्-पादि, सा १०, २३। ९५— छपयोगः । सन्मावनम्। सिन्धः। सम्पन्नता। प्राप्ति:। सङ्गति:। भर्मावासीपप-द्यते (उपयुक्ती भवति), नी १३,१८। नैतत् त्वयि डपपद्यते (योग्यं न भव-ति), गीर, ३। पेलिटी चिलयोर्विभेवो नोषपद्यते (न सन्धात्यते), मनु ८,११८। पञ्चमो नीपपदाते (पश्चमस्य तस्त्रस्थे) नास्ति), मनु ८,१८६। पूर्व सखे लया-पण्यमेतत् (सिंहं, कु ३,१२। सभ्युप —श्रवग्रहः। रतिमञ्जूषयत्तुमातुराम्, कु ४, २५ । निर्-निष्णातः। सिक्तः ॥ प्र—गतिः । प्राप्तिः । तणोवनं प्रयेदे, अ 8, १। वी यथा मां प्रवद्यत्ते (भजन्ते),

पर्

पश्

गो ४,११। प्रति—प्रक्लोकारः। प्राप्तिः।
जानम्। सिंदः। प्रतिपादनम्। न
मासे प्रतिपत्तासे मान्नेत, भ ८,८५।
चेतो बालिबधंन प्रतिपद्यते (न प्रत्येनि), भ १६,१११। प्रत्यपद्या हितं न च (नावगतवान्), भ १५,१४।
विधिना। प्रतिपादियद्यता नववैधव्यम्, कु.४,१। विप्रति—विकद्यत्तान्। विरोधः। वि—विपत्तिः। त्ययापि विद्याकि विपद्यते यदि, ने १,१४। त्वमनाथा विपद्यसे, छत्तर ४४। सम्—
हत्पत्तिः। सम्पद्यते वः कामोऽयम्, कु.२,५४। स्वसः सम्पाद्य पाणिगद्यसम्पदनम्। सम्पद्यते वः कामोऽयम्,

े पन्—(पण्) खा, त्रा। स्तृतिः। पनायति। •ते, वो। पनायाञ्चकार। पेने। पनायितासि। पनितासे। अप-नायीत्। त्रपनिष्ट।

प्रम्—पिंग, चु, प। गितः।
प्रम्—स्वा, प, वो। गितः। प्रस्वति।
प्रम्—(श्रय्) स्वा, श्रा। गितः।
पर्य—श्रद्धः। चु, प। इस्तिभावः।
पर्य—स्वा, श्रा। श्रपानशब्दः।
पर्य—स्वा, प। गितः। पर्पति।
पर्व् —स्वा, प। गितः। पर्वति।
पर्व्, स्वा, प, वो। पूरणम्। पर्वति।
पर्व्, स्वर्ष् (वर्षे) स्वा, श्रा। स्वेष्टनम्।
पर्व् —पञ्ज, वो। स्वा, प। गितः।
पर्वान्ति यद्द्विषो दिच्च, कवि २५८।
पर्व् —चु, प, वो। पाल्यनम्।
पाल्यति।

पत्त्र्युल् (बत्त्यूल्)। पम् पष् प्रमुक्ता, ड, वो। १ यन्यनम्। २ पीड्नम्। ३ सर्प्यः।

पश्चित । वते । पश्चित । वते । पश्चित । वर्त । पश्च, पश्च, पश्च, चा, चु, पा बन्यनम् । पाश्चित । सम्पाश्चित यः श्रवून् शृङ्खेः । विपाश्चित चालानम् ॥ कित २३०। पश्चित । पश्चित । चु, पा १गितः । (२विहितः । ३स्थर्भनम् । ४वन्यनम्, वो) पश्चित । पश्चित । पश्चित । सोपस्पंप्योगो माभूत्, दुर्गा। पश्च सीवधातः । यङ् पम्पश्चित, पा ७, ४, ८६ ।

• पंश्—पंस्—पंशि, पसि, चु, प । हर्वे नामनम् । पंश्यति । पंसयति ।

षा-भ्वा, ष। षानम्।

लट् पिनति, पा ७, ३, ५८। पिनसि रतिसर्वस्वसंघरम्, शकु १, १३१। प्रशी-ननिनासाष्टी ये पिवन्ति, स्मृतिः। दु:शासनस्य किथं न पिवास्यूरस्तः, वेगोसं। पिवन्ति मधु, कवि ६५। •िलट् पपी। पपतुः। पपिथः, पपायः। पपिवै। तं पपी लोचनाभ्याम् (दद्यो), र २,१८। लुट् पाता। पामिषि, पेयात्, पा ६,8,६७। लुङ् प्रपात्। प्रपाताम्। चपुः, पा २, ४, ७७। कर्माण, पौयते। चपायिषाताम्। चपासा-अयायि । ताम्। सन् विपासति। यङ् पेपौवते, पा ६,४,६६। पापेति, पापाति। णिच् पाययति। ०ते, पा ७, ३, ३७। श्रपि-प्यत्, पा ७, ४, ४। पीत्वा। ०पाय। पीतः। पीतिः। पानम्। पाता। पायी। पातव्यम्। पानीयम्। पेयम्। सुरापः। रविपीतजला नदी, कु ४,४४।

्षा, घटा, प । पालनम् । रचणम् । पाति । उपभ्रवेभ्यः प्रजाः पासि, र √, धूद्र । यः कोत्तिं पाति, कवि २,६ । बधर्मानां पाचि, भारत पपौ । पाता । पायात् । घपासीत् । कर्माण, पायते । पिपासित । पापायते । चिच् पाल यति । अपोपलत्, पा ७, ३, ३७ । पाला । पातः । पान्ती सुनीन्, भ ६, ८६ । प्रति प्रतिपालनम् । प्रतीचा । धन्यास्त्रो । देवस्तद्वसरं प्रतिपाल-यामि, शकु ५, २६ ।

्पार-श्रदन्तः। चु, प।

कर्मसमाप्तिः। यज्ञिः। पारयति। अपपारत्। कर्मणि, पार्यते। पारितेः। पारणा। जवेन गां पतितुमपारयन्तः (अयक्तुवन्तः), भा ४, १०।

पाल्—चु, प । रच्चणम् । पालनम् । पालयति । पालति भूमिपालः ।

पि—तु, प। गतिः। वियति। पिक्—चु, प। छिदनम्। पिक्तः, वो। पिक्क्—तु, प, वो। बाधः। पिक्क्ति। पिक्क्—पिनि, घटा, घा। १वर्षः।

पिङ्गबीभावः। २सम्पर्कः। १ प्रव्यक्तः प्रव्दः। ४पूजनम्, वो। पिङ्कते। पि-पिञ्जे। पिञ्जिता। पिजि, पिज (तुजि) षु, प। १ इसा। २ बलम्। ३ पादा-नम्, वो। ४ निवासः। दीप्तः, वो। पिञ्जयति। पिञ्जति। पेजयति। पिञ्जरः। पिङ्गलः।

पिट्-भ्वा, पा १ मब्दः । २ सङ्घातः । पेटति । पेटः । पेटौ । पिटकः । पिटा-कः ।

पिठ्—स्वा, य। १ डिंसा । २ त्ते थ:। पिण्ड्—पिडि, स्वा, मा। चु, य। संइति:। पिण्डीकरणम्। पिण्डते। पिण्डयति। पिण्डम्। पिण्डी। अक्ते। पिन्द्र्—पिविं, णिबि, सिवि, विवि, रे भ्वाः प्राः सेचनम् । एक्विति। तिन्व-ति ।

े पिल्-चु, प, वो । प्रेरणम् । ः इप्-पिथ्-तु, प । १ भवयव:।

्रदीपनम् । पिमति, पा ७, १५, ८ | व्याप्ति पिमतु, की १५७। पिपेम । पेमिता ।

पिष्-पिष्ल, क, पा सञ्जूषीनम्। पेषणम्। घर्षणम्। हिंसनम्। सट् विनष्टि पिष्टः। विषन्ति। विनिच्च श्रष्कपेषं पिनस्मावीम्, स ६,३७। पि-नष्टि चीरसा, पा ३,३,५६। डि विक्टि सुन्दरि चन्दनम्। सानिष् विभवासिं। लिङ् पिंचात्। सङ् प्रियनट्। पर्पि-ष्टाम्। श्रापनट्च रथानीकम्, भ १७, ६६। सिट् पिपेष। पिपिषतुः। पिपे-षास्य रथं किपः, अ १४, ८०। लुट् पेष्टा। ऌट्षेच्चति। सुङ् प्रिषत्। कर्मीण, पिष्यते। अपेषि। अपिषातां सहस्रो हो तहें हैन वनी वसाम् भ-१५, ६८। सन् पिपिचति। यङ् पेपिचते। पेषेष्टि। शिक् पेषयति। भेषोपिषत्। पिष्टा। पिष्टः। पेवसम्। पेष्टुम्।

पिम् पेम् पिस्, पेस्, श्वा, प ।
गितः। पिम्, चु, प। १गितः। ३
डिसा । १दानम्। ४पाणनम्। ५वासः,
वो। सुईन्यान्तोऽयमिति केचिन्,
दुर्गा। पेसति। पेसयति।

पिंस-पिसि (क्य) चु, प्। दीसिः।

पी-पीड, दि, पा। पानम्। पीयते। पीयन्ते च क्रियाधरम्, कि ६५ । पिछे। पेचते। पेनीष्ट। प्रपेष्ट। पीला। •पीय। फीतः। क्यां निपीय, नै ४, १।

• पीड्-चु, प। १ खवगा इनम्। . २वधः, वी। क्लोधः। पीड्नम्। पीड्-। यति। पौड्यन्ति जनं घाराः, भ ७,८। पीइतीति इनायुधः। यथा-राष्ट्रं चेडिति नासीयं पौड्यत्यरिमण्डलम्, कवि २५१। पीड्यामास । पीड्यितान श्रविपोड्त, श्रवौष्टिंत, पा ७,४,३। नी समगीपिडच्हरै:, भ १५,८२। क-र्मीण, व्याधिमिः पौद्मते, मनु ५, ५०। ब्रा भूषणम्। क्रेशः। बद् उत्पोद-नम्। उपद्रवः। श्रन्धोऽन्यमुत्पोइयत् स्तनहयम्, कु २,४०। उप, नि-संस्थेष:। पीडनम्। इननम्। निपोद्य पादी, र २,२३। निदंयं निपीडा, मा १६,३। निर्-निष्पोडनम्। पाद्रवस्तादेनि-जिलो बारणम्।

पुग्ड

् पोल्ज् खा, प। स्तकानम्। पीव्—भ्वां, प **! स्थौल्यम्** । पुक् (युक्) स्वा, पा। प्रमादः ।

. • प्रट-तु, प। संश्चेषणम्।

्ष्टति । पुषोट । पुटिता । अपुटौत्। जुट् (कुष) चु, प। १दीसि:। २चूणी-करणम्। पोटयति। पुट, पदन्तः। चु, पाः संसर्गः। पुटयति। पुटितः। पुरम्। पोटा।

्र पुर्-(चुर) चु, प। प्रक्योभावः। ु पुड्-तु, पात्यागः। उक्तषेः। पुर्हात । पुषोड । पुष्टिता । अपुर्होत् । पुर्ये तु, पाधर्माचरणम्। पुणति ग्रमं जोकः, दुर्गा। पोणिता। पुष (पृष)। पुष्सम् । निपुष:। । निवार पुण्ट्—पुटि (प्रजि) चु, प। दोशि:। पुण्ड् पुड़ि (सुड़ि) भ्वा, प। पण्डनम्। चूर्णनम्। पुण्डति। पीड-

तीस्येके। पुण्डुः।पुण्डुकम्। पुण्डरी-कम्।

पुथ्—दि, प। इंगा। पूथ् (कुप)। चु, प। दौप्तिः। पुर्यति। पोययति। पुन्य्—पुष्टि (कुष्टि) भ्वा, प। १ इंसा। २पोइंनम् । पुन्यति । युचि । युन्यति । पुर्-तु. प। श्रयगमनम् पोरिता।

पुन्-भ्वा, तु, चु, प। महत्त्वम्। पोलति। पुलति, वो। पोसयति। पुस्तकः। विपुत्तः।

पुष्—भ्वा, क्राा, प।

पोषणम्। भरणम्। वर्षनम्। उप-चयः। सट् पोषति। पुष्पाति। पुष्पी-तः। पुष्पान्ति। द्वपांन पुषाति यशांसि पुष्यति प्रवार्णेविप्रसनांसि पोषति । सत्यांस यः पोषयतोपातै-र्धनै:, कांव २१ । ई.खरव्याष्ट्रतयो विपरीतमर्थं न पुर्शान्त (बोधयन्ति), क्क २, ६३। डि पुषाया। सिङ् पुष्यी-यात्। संङ् अपुरणात्। अपुरणोताम्। चपुचान्। सिट् पुषोष। पुषुषतुः। पुणीषिय। लावप्यमयान् विश्वेषान् पुषोष, कु १, २५। उत्कलं पुषुषुर्याः, र हु, ११। लुट् पोषिता। लृट् पोषि-व्यति। सुङ् अपोषीत्। अपोषि-ष्टाम्। सन् पुषोषिषति, पुषुषिषति। यङ् पोपुष्यते। पोपोष्टि। णिच् पोष-यति। अपूपुषत्। पोषित्वा। ०पुष्य। पुषितः। पोषणम्। पोष्यः। पोषकः।

पुष्, दि, प। पोषणम्। उपचयः। पुष्यति। स पुष्यतितरां ल्याम्, भ ४, २८। पुष्यति स्वां न शीमाम्, श्रुकु, १, ८१। वर्षे पुष्यत्य-ने के सरयूपवां हा, र १६, ५८। देह-

सपुष्यः सुरासिषैः, भ १७, ७२। प्रुपो-ष। पोष्टा। पोष्यति। अपुषत्, पा ३, १, ५५। अस्त्रानपुषत् स्त्रपोषम्, भ ३, १३। पुपुचित्। पुष्, चु, प। धावणम्। पोषयित आभरणम्। पर-पिण्डेनात्मानं पोषयामि, 'हितो। पुष्टा। पुष्टः। पुष्टिः। बिलपुष्टकुत्तादि-वान्धपुष्टेः पृथास्त्रादिचरेण भाविता तैः, मा २, ११६।

पुष्प — दि, प । विकसनम् । पुष्पाति । ग्रादि पुष्पान्ति , सप्त-• पुष्पाति । पुष्पा । पुष्पम् ।

'पुस्—प्युस्' दि, प।

दाइविभागयोः।

्रिस् 'पुस्'—चु, प। खत्सर्गः। पोसयति।

पुंस—चु, प। १ वर्षनम्। २ मर्दनम्। पुस्त्—चु, प। पादरानादरबन्धनेषु।

पू—पूङ्, स्वा, दि, श्रा।

पूज्, क्राा, जा पवनम्। पित्रीके रणम्। श्रुडीकरणम्। पवते। पवसे इतिः, भ ६, ६४। पूर्वते। पुनाति। पुनोते, पा ७, ३, ८०। होमाम्बयूम-सुरिमः पवते माक्तो सदः। गोदा-वरोतरङ्कादः पुनाति भुवि यत्प्रजाः॥ कवि १८०। जाङ्गवी नः पुनातु। हि पुनीहि। भागीरिष्ठ पुनीहि माम्। सिङ् पुनीयात्। पुनीत। सङ् प्रपुनात्। श्रुप्ति। सुप्ति। सिष्ट् पुपाव। पुप-विष्य। पुप्ति। सुरु पिवता। लृट् पिविष्यि। पुष्ति। जाङ् प्रपात्। प्रविष्यि। जुङ् प्रपावीत्। प्रपित्र प्रपात्। सन् पूङ्, पिषविषते, पा ७, २, ०४। पूज्, पुप्तति। ०ते। यङ् पोप्रयुते।

पोपोति। णिच् पावयति। षपोपवृत्, पा ७, ४, ८०। षूङ्, पवित्वा, पृता। प्रवितः। पृतः, पा १, २, २१। ७, २, ५१। स्तोऽपि गङ्गासिललैः पवित्वा सहास्त्रात्मानम्, स ३, १८। पृज्ञा पृता। पृतः, पा ७, २, ११। विनाशे पृताः यवाः। पृतिः। वपनम्। पवितम्। पावकः। पवमानः, यवितम्। तदी-येयितमेष्टीधरः पावितः, कु ५, ३७। उद्-वस्त्रपृतत्वम्। द्वाणामेव सर्वेषां ग्रह्मत्पवनं स्नृतम्, स्नृतिः।

पूज चु, पं। पूजा। श्रवंना।
समानः। प्रशंसा। पूजयति। साजानं
पूजयति, रता १, १३३। पूजयामास।
पूजियता। पूजियिष्यति। श्रपूपुजत्।
श्रपूपुजन् विष्टरपाद्यमास्यः, भ २,
१६। कर्माण, पूज्यते। श्रपूजि। श्रपूजियाताम्, श्रपुजियाताम्। पूजयिता। ०पूज्यः। पूजितः। पूजनम्।
पूजा। पूजकः। पूजनीयम्। पूज्यम्।
पूजियत्यम्।

े पूर्ण—'पुर्ण' (पुर्ल) चु, प। ाराग्रीकरणम्। पूर्णयति धान्यम्,

दाशाकरणम्। पूर्णयात धान्यम्, दुर्गा। पूर्य—पूर्यी, स्वा, सा। १ भेदः।

२ दुगन्धः। पूयते। (ई) पूतः। पूयः। पूर्—पूरो, दि, चु, भा।

श्राध्यायनम्। प्रोणनम्। पूरणम्। वर्षनम्। पूर्य्यते। पितृन्, पूरवति श्राहे पूर्यन्ते पितरस्तञ्च, कवि १५१। पुपूरे, राज्ञः पुरो भूपतिभः पुपूरे, राघवपाण्डवीय २, ३। निःस्वनैद्यौः पुपूरे, भ १४, ८८। वेणून् पुपूरिरे सुषुमार्ततैः, भ १४, २। पूरिता। भ पूरि। चपृरिष्ट, या है, १, ६१। चपृर रिषाताम्। चपृरिषतः। चु, पूर्यातः, पूरितः। पूरय मधुरिपुकामम्, गौतगी-५,१४। कपौनां मङ्गाताः पूरयन्तो दिशः, भ ७, १०। पूरयन्ति मनोरधान्, चितो । पूरित्वा, पूर्यित्वा। • पूर्यः। पूर्णः। चु, पूर्णः। पूरितः, पा ७, २, २०। पूर्तिः। पूर्णम्। पूरकः। उद्दरं याजीनापि प्रपूर्यते, जितो।

पूर्व पूर्व (पर्व) आ, प।
पूर्व (पूर्व) च प। निवास:।
निमन्त्रवम्, वो। पूर्वेति, पूर्वेयति।
प्रयं वर्ष्यं वान्तोऽपि।

पूर्व भ्या, चु, प। राशीकरणस् । पूर्वात, पूर्वात। पूर्वः । प्यपूर्वो । पूर्वः । पूर्वातः । पूर्वः । पूर्वातः । पूर्वः । पूर्वातः । प

पु (पृ) खा, प। १पालनम्। श्पृर्णम्। प्, खा, प। प्रातिः। प्रीपनम्। एङ्, तु, प्रा । व्यायामः। व्यापारः। प्रायेणायं व्याड्पूर्वः। सट् पिपांत्ते। पिपतः। पिपति। प्रणाति। व्याप्रियते। धर्मे व्याप्रियते नित्यं पिप्रः त्ति पृथिवीच यः । पार्यत्यर्थिनामा-ााम्, कवि ३७। लङ् प्रापपः। प्राप-ताम्। श्रीपपरः। श्रप्रणात्। व्याप्र-जिट पंपार। पप्रतः। पप्रे । तुट् पत्ती। लुट् परिष्यति। ०ते। लुङ् श्रवार्शीत् । श्रवार्षीम् । श्रवार्षीः । श्र-प्त। अप्रवाताम्,। सन् पुपूर्वात । ०ते। वङ् पेप्रोयते। पूर्वति । पिच् पार-व्रति। अपीपरत् १ पृ, चु, प। परि-रिगम्। पारवति पृत्वा। ॰ पृत्य । रतः। परणम्।

एच् एची, घटा, घा। सम्पर्कः। संसर्गः। पृचि, पृज्, पृजि, प्रत्वेते। पृत्ते। पृष्ठ्ते। पृष्ठचे। ०चे। पृष्ठे। ॰ भे । पृत्, पृत्ती, क्, प। सम्पर्कः । संसर्गः। योगः। संस्रोषः। पुणिताः पृक्षतः। पृञ्जन्ति। हि पृक्षि। लक्ष अप्रणक् । अप्रणमन्त्रा गरम्, अ ६, ३८ । जिट् पपर्च । पप्चतुः । पर्चिताः पर्विष्यति। अपर्चीत्। अपर्विष्टाम्। पिपर्चिषति। परीष्ट्यते। पर्चयति। पृच् (युज्) चु, य। १ संयमनम्। बन्ध-नम्। रसम्पर्कः, वो। पर्चयति। पर्च ति। (ई) एतः । प्रतस्तुषारै गिरिनिर्भे राणाम्, र २, १३। सम् सम्पर्कः। योगः । अस्त्रत्रनी असम्चेतास्भयोः (कर्मण जड़), भ १७, १०६। वागर्था-विव सम्प्रती, र १, ११। सम्पर्नी। सस्पृतो नाशियस्तैयः संप्रपत्ति 🖟 न पापिभिः | सम्पर्वयनि न चुट्रैने सम्प-र्चित वच्चकै:॥ ववि २८। सम्प्रक्ते सधुना चूंथे सिषक्।

मृड्नु, पा १सुखनः। २मीणनम्, वो। मृडति। पर्डिता। मृण्नुत, पा मीणनम्। मृणति। मृथ्—सु, पा मच्चेपः। पर्धयति। मृपोप्यत्, स्रपपर्यत्, पा ७, ४, ७।

्रष्यु— पृषु, भ्वा, प । १सेकः । - ३ हिंसा । ३ क्लेपः । पर्षति । पपर्षे । पृष्ठः । पृषितमिल्योगादिकम् ।

पू—स्वा, क्राा, प। १पालनम्।
२पूरणम्। लट् पिपत्तिं, पा ७,४, ७७।
पिपूर्तेः। पिपुरति, पा ७,४,१०२। पिपिभूतिः पिपूर्वेः। प्रणाति। प्रणीतः।

प्रवन्ति। सिङ् पिपूर्यात्। प्रवीयात्। नङ् अपिपः। अपिपूर्त्ताम्। अपिपतः। श्रप्रणात्। श्रप्रणीताम् । श्रप्रणन्। लिट् चपार। पपरतुः। पप्रतुः, पा ७,४,१२। जुट् परीता, परिता। खट् परीखति, परिषति। प्राणिषि, पूर्यात्। बुङ् श्रपारीत्। श्रपारिष्टाम्। श्रपारिषु:। श्रापारीत् स इतश्रेषान् भ्रवङ्गमान्, भ पूर्यते। सन् १५, १००। कार्मण, पिपरीषति, पिपरिषति, पुपूर्षति। यङ् पीपूर्यते, पापत्ति । पृ, चु, पन षूरणम्। पारयति। अधोपरत्। पूर्त्ती। ॰पूर्ये। पूर्तीः, पा ८, २, ५७। पूर्तिः।

घेष (पेष) । पेन्—पेल्ड, भारतिकास्पयोः। पेव्-पेह, भा, आ। सेवा। पेवत । अयं वर्ग्यान्तोऽपि । पेष्-पेष्, स्वा, श्रा विषयः ।

पेस्—पेस् (पिस् खा, प। गतिः।

्ष प्रेम्भा, पा शोषणम्।

ुषायति। पपौ। पाता । पायात्। चवासीत्। चिच् पाययति, पा ७, ३,३० ।

पैण्-पेण्, स्व , प । १गतिः ।

र प्रेरणम्। ३ ऋ वणम्। ४ पेवणम्, वो। पेणु प्रेणु खेणु इत्येकी। पेणित। संयामे यव्हीनां द्विणवितरणैः पेण-यत्विदौस्यम्, कवि १८।

प्याय् - ग्रोप्यायी, भ्वा, ग्रा । हाडि: । स्कोति:। जट् स्यायते। जिट् पिप्ये, पा ६, १, २८। विष्यिते। जुर् प्यापि ता । खद् पारिष्यते। बुड् प्रपायि। भद्राविष्ट, प्राः इ, १, ६१ । अध्यक्त,

वो। अधायिषाताम्। अधायिषतं। •समत्वयायि, भ ६, ३३। भावे, घ्या-याते। भ्रष्यायि। सन् पिष्यायिषते। यक् पेयोयते, पा ६, १, २८। णिच् प्याययति। श्रीपप्ययत्। प्यायिला। ॰प्याया। पीनः, पा ६, १, २८। स्ताङ्गे, पोनं सुखम्। अन्यतः, प्यानः पोतः स्बेदः। सोपसर्गस्य प्रंप्यानः, कौ ३५८। या - स्कोति:। प्रोति:। यापीनीऽस्थः त्राणीनसुधः, की ३५८। त्राप्यानस्कात्य-कण्डांसं रामम्, भ ४, ५६। प्राप्या-यन्ते यतः प्राप्य यज्ञभागान् दिवौ-कसः। प्रभूतधनसम्पत्तेराप्यायन्ते च यत्प्रजाः॥ कवि १३५। णिच्, (प्रीण्-नम्। आप्यायितोऽचे भवतामनेन वच-नासतेन, हितो। सम्-हृद्धिः। मन्य-रस्य समाविष्ये, भ १४, ३२। प्रधाय-नीयः, पा ८, ४, ३४।

प्युष्-प्युषिर्, दि, प, वो। १दाइः। २भागः। सान्तोऽपि। चु प, वो। उत्सर्गः।

🗶 प्ये—प्येङ्, स्वा, आ। दृद्धिः। प्यायते। पर्ये। प्याता। श्रष्यास्त्र।

प्रचर्तु, पाचीला। जिज्ञासा। प्रयः। अनुयोगः। प्रच्छति। अप्रच्छ-बाच्याणं स्रोतास्त्र भ ६, ८। ब्राह्मणं कुगलं प्रक्रित्, मन् २, १२७। निट पप्रच्छ । पप्रच्छतुः । पप्रच्छिय, प्रमुष्ठ । लुट्परा। ल्डट् प्रचाति। प्राणिषि, प्रच्छात्। जुंड् अपाचीत्। अपाष्टाम्। प्रप्राह्या क्षेष्ण, एक्यते । प्रप्रिकः। एक्द्राते पुनरसी: वितिपाल:, सहाना ३, १३ मन् प्रमुक्ति पा १, P, मा अ. उ. ८४। यङ् परीष्ठकाती। गिप्रि विच् प्रच्छयति। अपप्रच्छत्।

प्रदा। • एक्सा। प्रष्टः। पृष्टिः। प्रकान्ताः। प्रदाः। प्रष्ट्रः। प्रष्ट्यम्। प्रव्यम्। प्रव्यम्। प्रव्यम्। प्रव्यम्। प्रव्यम्। प्राटः। प्राटः। प्राटः। प्रकानकां के समाप्रव्यम्। प्राप्रकाते, की २४३। ज्ञाः व्यक्तिः स्वर्धस्य स्वर्धकानम्, रामा। सर्वा सातृरा-प्रकार प्रययुः, सारत।

भी

विख्याति:। प्रसिद्धिः। प्रथते, प्रथते
पृथ्वद् यस्य पृथित्यामुक्तवलं यगः।
प्रथयन्ति प्रथीयां से गुणाः, कि १८८।
पप्रथे, तदाख्यका तथि भृवि पप्रथे, र
१५, १०१। प्रथिता। प्रथिष्यते। पप्रथिष्ट। अप्रथिवाताम्। णिच् प्रथयति,
घटादिः। अपप्रथद् गुणान् भ्यातुः, म
१५, ७२। प्रथ्, च, प। विख्यातिः।
प्रचेपः, वो। प्राथयति। प्रथितम्।
प्रथनम्। प्रथा। पृथिवो।

प्रम् भ्वः, आ। १विस्तारः। इप्रमुवः, वो। प्रसुते। प्रसुवति, घटादिः।

प्रा—बदा, पा पूर्णम्।

प्राति। पप्री। प्राता। प्रेयात्, प्रायात्। धप्रासीत्, श्रप्रासीदिष्ट् भि-स्रुंखम्, भ १५, ६८। कर्मण, पप्रेदी-नेख मेदिनी, भ ४, ४२। णिच् प्राप-यति। त्रप्राणः। प्रातः। प्रायः।

प्री—प्रीज् स्वा, ड, बी। तर्पणम्।
प्रीङ, दि, था। १ प्रीति:। २ प्रीणनम्। ३ कांन्तिः, दो। प्रीज्, क्रा, ड।
१ प्रीणनम्। २ प्रीति:। ३ कामना।
इच्छा। लट् प्रयति। ०ते। प्रीयते, यः
प्रीयते प्रणयिषु प्रस्ते न सत्यान्। कविः
९। प्रकाससपीयत् यज्वनां (पयः, म्।

१,१७। प्रीपाति। प्रीपीते। लिङ् ग्रीयोयात्। प्रीयोतः। जङ् प्रप्रीयात्। भ्रमीयीत। लिस् विमाय। विप्रिये। सरान् पिप्राय पश्यतः, स ४, १०४। पितृन् पिप्रियुः, भ ३, ३८। नदी पर्श्वन् पिपिये, र १५, ३०। लुट् प्रेता। लृट् प्रेष्यति। ०ते। लुङ् पप्रैषोत्। भप्रेष्ट । सन् विप्रीवति । ॰ते । युङ् पेप्रीयते। पेप्रयौति। पेप्रेति। णिच् प्रीज्, प्रीणयति, पा ७, ३, ३७। प्राप-ग्रीयत्। प्रीङ् प्राययति। प्रीञ्, चु, प। प्रीचनम्। प्रीचयति। केचित्तु, प्राययति । प्रयति । •ते । यं प्राययन्ति कविम् त्रिरसायनानि, कवि ९। प्रीतः। प्रीतः। प्रयणम्। प्रीचितः। प्रोचनम्। प्रीणियत्वा। प्रिय:।

पु-पुङ् (चुङ्) भ्वा, घा। गतिः।

प्रवते। पुप्रवे। प्रोता। श्रप्रोष्ट। मा न प्रोद्धं दुतं वियत् भ ८, ७०। णिच् प्रावयति। श्रपुप्रवत्, श्रपिप्रवत्। पुप्रा-वियषति, पिप्रावियषति, पा ७, ४, ८१। प्रावयन्ती वनैरशोकविनका '(व्याप्रवाना), भ ८, ५८।

पुष्-(झुष्) प्रेष् (पैष्)।

प्रेड्डोल-शदन्तः। चु, प। चापलम्।

प्रेष्-प्रेष्टु (एष्टु) स्वा, प्रा। गतिः।

प्रोय्-प्रोयृ, स्वा, उ। १पर्याप्तिः।

परिपूर्णता। २ सामर्थम्, दुर्गा। प्रोथति। ०ते। पुष्रोथः। पुष्रोधे। पुष्रो-यास्मेन कञ्चन, भ १४, ८४। प्रोथि-ता। भंगोथीत्। भंगीयष्टाः नाप्री-

थीदस्य कश्चन, भ १५, ४०।

क्रच्—(अच्) खा, छ। अच्यम्। प्रव्—खा, घा, वो। गति:। प्रति:। प्रिच्—खा, घा। गृति:। प्रेडते। प्रोड दीताविति प्रदीप:। प्रीडा,

म्रो-क्रा, पा गति:। प्रिनाति। म्र-म्रुज्, (चुङ्), भ्या, प्रार

१गति:। लैम्फः। २ उत्तरणम्। ३सन्त-रणम्। प्रवते। प्रस्तुनि मज्जन्यला-वृति ग्रावाणः प्रवन्ते, वीर १३। पुप्रु-वे, सगः पुष्नुवे, भ ४, ४८। पुष्नुवे सागरं नौकया, भारत। स्नोता। स्नोध-ते। अप्लोष्टा अप्लोषाताम्। अप्लोष्ट च निरङ्क्षः भ १५, ४६। सन् पुषु-वते। यङ् पोम्र्यते। पोप्नोति। णिच् प्रावयति । प्रपुप्तवत्, प्रिप्यवत् । प्रपा-विविद्यति, पिपावियिषति, पा ७, ४, ८१। (प्रावनम्) गङ्गा दिवाणां दिशं यावयन्ती, भारत । अव-अधःपतनम् । चा-चवगाइनम्। सानम्। समासा जल पाप्रुता, मह ४, ७७। डेंट्--**उत्तम्फः:। तदबमुत्युत्य. मचया**स्कि हितो। उप—उत्पोडनम्। पौल-स्बोवद्भृता देवाः, र १०,५। षरि-व्याप्ति:। चलनम्। वि-विश्ववः। बि-यत्ति:। ध्वंस । प्रथं विद्वावयन्ति ये, मा २, ५६। सम् हिडा। दुःखानि संद्वान्ते, उत्तर १४२।

मुष्-पुष्-मुषु, पुषु, भा, प।
मुष्, दि, प। दाइ:। भक्तीकरणम्।
मुष्, मुष्, क्रा, प। । स्तेहनम्।
२पूरणम्। २पेवनम्। ४सेचनम्, वो।
१ मोचनमिति । भट्टमक्रः। इदाइ:।,
मोषति। पोषति। मुष्णति। मुष्णाति। पुष्णाति। पाषान् मुष्णातुः वानक्रः।

(दहतु, भातूमामनेकार्थलात्) म, २०,३४। मां भूषाण वहु, भ देल, ३०। पुद्रांष। पुप्रुषतुः। म्रोषिता। म्रोषित्राता। पद्मोषीत्। दि, प्रमुषत्। पद्मोषीत्। व्युष दाहे मुष च दत्यत्र पाठः सिकार्थः, की १४३। (ड) म्रोम् पिला, मुद्दा। भ्राष्ट्रा, मुषितः। म्रोषणम्। म्रोषः।

म्रुम्—दि, पा १दाइइ। २भागः, वो । म्रुखित । श्रमुसत्ह. प्रमोधीत्, वो ।

> म्नेव् मेह, भ्वा, त्रा, वो । सेवा । पा मदा, प । भवणम् ।

साति। पसी। साता। सास्यति । सायात्, सेयात्। असासीत्, मांस-मप्सासीत्, भ १५,६। पिप्सस्ति। पाप्सायते। पाप्साति। साप्यति ॥ अपिप्सपत्। सातः। सानम्। प्रिष्प्-साति।

(**v**r)

पक्—भ्वा, प। १मन्दग्रतिः। २मसदावद्वारः। पक्ति । चपक्काः प्रण्—भ्वा, प्। १गतिः। २निःसेदः।

चनायामोत्पत्तः, दुर्गा। फणति। प्रकारा। फेयतः, प्रकाराः, प्रकाराः, प्रकाराः, प्रकाराः, प्रकाराः। प्रकाराः। फियायाः। फियायाः। प्रकाराः। प्रकाराः। प्रकाराः। प्रकाराः। प्रकाराः। प्रकाराः। प्रकाराः। निःचेहे, पाययतः। फणेवंटाद्विं नेच्छन्तोतः केचित्, को ८७४ ज्ञाः, फार्टः, पा ७, २, १८, प्रकाराः का खासः।

ज फल्—जिपला, स्वा, पं। भेदः। फंल्, स्वा, पा श्रेनिष्यतिः। परि-गामः। = निष्पादनम्। इगमनम्, वीन सर् फर्नित, इद्यं में फनित संदस्या र्मा। बाल्मीकि: फलति स्म दिव्या गिरः, अनर्घ ४। मणीनां रवि-करमंविताः फलन्ति मासः (वर्ड-न्ते') भा थ, ३६। तिट् पफाल । फी-लतुः, पा ३, ४, १२२। कल्पद्रमा योग-बलेन फोलु:, भ ३, ४२ । लुट् फलिता। स्टट् फिलियति। सुङ् अफासीत्। चकालिष्टाम्। चकालिषुः। सन् पिफ-लिव्यति। पम्पुच्यते। पम्पुन्ति पा ७, ४, ८७, ८८। णिच् फालयति। श्रपीफलत्। फलिला। फलितः। जिफला, फल्ल:। फुल्लवान् पाट,२, थेथ्। प्रकुल्ता प्रकुत्त इति फुल्लधाती-रच्। संमुल खतमुल इति पद्मनाभः। फ्लामस्य फलितमस्य। पफुल्तः पफ-नित इति प्रदीपः । प्रति – प्रतिविस्ब-नम्। सुखं प्रतिपालत्, नै ४,१३। च्योतिषि रीम्यभित्तिषु प्रतिप्रस्तित (समा कित), मा ४, ६४।

्रियुक्त - स्वा, प विकास ।

फुन्नति। पुफुन्न। चफुन्नीत्। प्रफुन्नम्। प्रफुन्नितः ।

प्रेंस् अस्त (पेस्ट) भ्वा, प। गतिः।

(बा)र नोष्ट्रणीहर

बट् (वट्) बण् (वण्) बन्। बट्—स्वाः, पा १स्थीत्वम्। १सामर्थम् वो। बठित्। बेठतुः। बट्—"बन्द्" स्वा, पा स्थैर्यम्। बद्ति, बन्दति। बबाद। बेदतुः।

वैदिया बद्धात्। अबदीत्, अबादीत्। बदरो।

वध्-स्वा, था। १ वन्धनम्।

स्वित्तविकारः। ३ निन्दा, वो।
(चित्रविकारे सन्) बीभस्सते, पा ३, १,
६। शीभस्सते परस्तीभ्यः, कवि ५४।
बीभस्साइको। बीभस्सिता। प्रबीभस्सिष्ट। बीभस्सितः। बीभस्सा। ब्रन्थनादी, बधते। भा बिष्ठा जठायुँ
माम् (मा बधीः), म ६, ४१। बध्, चु,
प। बन्धनम्। बधः। बाधयित। बधित।
बाधयन्ति न दुःखार्त्ताः केषान्
यद्दियोयितः, कवि ५४।

बन्ध-क्रा, प। बन्धनम्।

सट् बद्धाति। बद्गीतः। बद्धन्ति। यो बच्चाति निपंरणे, कवि ५४। फर्ल बभ्रान्त नीतय (जनयन्ति), र १२, ६८। सतिं बधान सुग्रीवे, म २०, २२। लिङ् बन्नीयात्। लङ् अबन्नात्। प्रविद्योताम्। अवधन्। तमवधादः ब्रह्म-पाग्रीन, भ'ट, ७५ । बिट् वबन्ध । वब-न्धतुः । वबन्धिय । वबन्ध । प्रभिकार्षे मनो ववन्य, र ३, ४। असे वबन्य क्रितिम् (क्रितवान्), म २, ८। जुट् बस्रा। इट् भन्त्स्रति। श्राधिष् वध्यात्। लुङ् ग्रभान्त् भीत्। प्रवा-साम्। प्रामान्त्यः। कर्माण, बध्यते। प्रवस्थि। हणेगुणलमापने वध्यन्ते मत्तः दन्तिनः, डितो। सन् विभन्त्सति। यङ्बाबध्यते। वाबन्धि। बन्ध् (दध्) चुं, प। बस्वनम्। बस्वयति। अवव स्यत्। बद्धाः विषयः। बद्धः। बिद्धः। वस्वनम्। बस्यः। बस्यम् वस्या। बस्यः व्यम् । र अनु — अनुवस्य । । सम्बन्धः । कृपरित्यागः । अनुवर्तनम्। भक्केऽपि हिणाबानामनुबधान्ति तन्तवः, दिती। भवतो मानसं विषं स्ते हमनुबभाति, चल्हो। श्रा—बस्यनम्। करणम्। नि — निबन्धः। ग्रत्यनम्। रचना। निरोधः। निर्—निर्वन्धः। श्राण्डः। प्र—प्रवन्धः। प्रति—प्रत्विवन्धः। प्रतिबभाति डि श्रेयः पूज्यपूजाव्यतिक्रमः, र्रू, . ८०। सम्—सम्बन्धः।

ेबस्य (वस्य) बर्ष (वर्ष)। बुख (कस्य) भ्या, प। हिंसागत्योः। बुख (क्वर्ष) भ्या, प। गतिः।

बर्इ (बल्ह) भ्वा, या। १ कथनम् १ २ हिंसा। १ शाच्छादनम्। ४ प्राधान्यम्। ५ दानम्, वो। वर्डते। बल्हते। बर्ड, बल्ह (ज्ञुप) चु, प। दीप्तिः। बर्डयति। बल्हयति। वर्ड् (ज्रूप) चु, प। हिंसा। बर्डयति। दन्यादयोऽप्येते। निवर्डयति बुद्धगारीन् तपसायो निवर्डते,कवि२५२। निवर्डितां हसा, मा १। बर्डिणः। वर्डम्।

बल्-भ्वा, प। १जीवनम्।

२धान्यावरोधनम्। ३सम् हिप्रतिबन्धः। बल् (भल्) भ्वा, द्या। १ निरूपणम्। २ हिंदा। ३दानम्। बल्ति। ०ते। बबाल। वेले। बल्तिता। बल्, चु, प। लोवनम्। बल्यिति, घटादिः। प्रदी-बल्त्। चु, द्या, वो। निरूपणम्। बाल्यते। बालः। बल्म्।

बष् (वष्) बस् (वस्)।

्रवेस् – वेहि, भाषा। हिमानिहा वेहते। बवंहे। दन्यादिय।

बाड्—वाडु, भा, श्री। उदाजनम्। सानम्। बाडते। दन्यादिय। स्मीर्ट्

बाध्-बाष्ट्र स्वा, या । सोडनम्। । प्रतिबन्धः

वाधते ॥ दन्खादिय । । सां वाधते नहि तथा विधिनेष् वासः, महाना ३, ३७। स्तहक्रमं बाधते, •बीराणां समयः उत्तर १८३। दबाधे। जनं न सच्चे प्याधिको बबाधे, र २, १४। स १४, 841 वाधिता। प्रवाधिष्ट। प्रवाधि^र बिबाधिषते। बाबाध्यते। षाताम्। वाबादि। बाधयति । अववाधत्। वा-धित्वा। बाधितः। बाधनम्। बाधा। षावाधन्ते मनिसज-षा-दमनम्। मपि कुमार्थः, शकु ३, १३८। प्र-परिपोड्नम्। प्रवाधमानस्य जगन्ति, स १२, २।

बाइ (वाइ) बिट् (विट्) बिड् (विड्)। बिन्द्—बिटि, भ्वा, प। भवयवः। बिन्दति। बिन्दः।

बिल्-तु, चु, प। भेदेः। विलित । बेलिता । बेलियति । बिश्-बेश, बिस्-मेम् (पिस्ट) स्वा, प। गतिः। बेशति। बेसतीर्थे के। बिस्-टि, प। ग्रेरणम्। धविसत्।

बीम् स्वा, पा। स्नाचा। बीभते। हुइ स्वा, प। भाषणम्।

खादिरवः। चु, प। भाषणम्। दुकः ति। बुक्रयति। बुब्कः। बुक्किता। चुक्कोत्।

बुक्र् (बुक्र्) ।

बुट्—चुं, पं, वो । हिंसा । प्रावीटन्ति नखेरक सुखमाबीटयन्ति ये, कवि २२८ ।

्बुड्ता, प्रवी । त्यागसंवरणयोः । बुड्ता । बुबोड् । बुड्ता । अबुडीत्। ोल बुध्-स्वा, प । १ अवगमः । 🚉

रविज्ञापनम्, वी। वोधित। बुबीधा बोडा, वो। बुधिर, भ्वा, वीधित। छ। ज्ञानम्। दोधः। बोधितो ०ते। बीधते ब्रह्मविद्यां यः चत्रविद्याञ्च बोधति, कवि ५३। बीधिता। (इर्) प्रवुधत्। भवीधीत्। भवीधिष्ट। बुध्, दि, भा। बोध:। ज्ञानम्। चैतनम्। जागरणम्। लट् बुध्यते। पटुलं सत्यवादिलं कथा-योगेन बुध्यते। ब्रह्मात्मानच बुध्यते, कवि प्रा निट बुबुधा बुबुधिये। भपि सङ्घितमध्यानं बुव्धे न बुधोपमः, र १, ८८ । लुट् बोडा। लुट् भोस्यति। नामी-क्यात भवानजम्, भ २१, १६। श्राशिष, मुलीष्ट, पा १, २, ११। सीता मुलाध्वम, भ ७, १००। लुङ् अबीचि। अबुद्ध, पा ३, १, ६१। अभुत्साताम्। अभुतात। चमुद्रम्। चबोधि दुःखं वैनोक्यम्, भ इ, ३२। प्रभूक्टीत् प्रनेरवोधि सः, भ १५, ५७। कर्मीण, बुध्यते। प्रवी-धि। सन् बुभुताते। यङ् वीबुध्यते। बोबोडि। णिच् बोधयति। भवूतुभ्त्, चत्व्यत् कस्मानाम्, भ १५,५। (विका सः) सविता बोधयति पङ्गजान्येव, शकु प्, १५६। बोद्या। बुद्धः। बुद्धः। बोधः नम्। बोधः। बोद्धाः। बोद्धयम्। बुधः। किए भूत्। अतु सार्णम्। भाया सम्यगन्बोधितोऽस्मि, यकु १, १५ ध्व—श्रवबोधः। श्रानम्। **उद्—उद्-**बोध:। विकास:। जागरणम्। सार-णम्। नि—ज्ञाणम्। अवणम्। निबी-घ यज्ञाङ्गभुजरमीप्सितम्, ३, १८। निबोध वचनं ससं, भारत विप्र-जाग रणम्। विकासः। ज्ञानम्। तं वेता-लिकाः प्रावीधयन् प्रसि वास्त्रिः, र १

६५। प्रवीधितः प्रामनहारिषा हतः, र १, ६८। प्रवोधयत्यूईमुखैर्मयूखैः, कु १,१६। प्रति, वि—जागरणम्। सप्ता मयैव भवतो प्रतिबीधनीया, रका ३,४७। सम्—जानम्।

• बुन्द्—(बुद्, बुन्ध्, चुन्द्)

उबुन्दिर्, स्वा, छ। नियासनम्। य-वणम्। प्रणिधानम्। बुन्दित। •ते। बुबुन्द। •न्दे। इति बुबुन्द सः, सः १४, ७२। बुन्दिता। अबुदत्। अबु-न्देत्। बोदित। •ते। बुन्दित। •ते। बोधित। •ते, बो। चुन्दित। •ते। बुन्ध्, खु, ष, बों। बन्धनम्। बुन्ध्यति।

बुस् दि, प्र। त्यागः। भवसत्।

वुल् चु, च, वी। सानम्।

ा ह वृद्धाः (पुद्धाः) सु, प्राः पादरातादरकोशः हाल्ला हा

बृह (वृह) बृंह (वंह)।

. हे ब्रु क्रा, प। श्वरणम्।

प्राधंनम् । रभरणम् । वृत्र क्राः, उ । वर्णम् । प्राधंनम् । वृणाति । वृणोते, पाः ७,३,८०। ववार । ववरे । वरिता, वरोता । वृर्धात् । वरिषोष्ट, वृषींष्ट । षवारीत् । प्रवारिष्टाम् । प्रवरिष्ठ, प्रवृष्टे । कर्मण्, वृर्धते । प्रवारि । सन् विवरिष्ठति । ०ते । विवरीषति । ०ते । ववृष्ठित । ०ते । यङ् वोवृर्धते । वावर्ति । व्यक्ति । व्यक्त

वण-भ्वा, प, वो। ग्रब्दः। जगित। ब्रू-ब्रज्, घदा, छ। कथनम्। सट् ब्रवीति, श्राप्त । ब्रुतः, श्राप्ततः। बुवन्ति, चाहु:। ब्रवीषि, चास्य। ब्रुधः, बाइयु:, पाट, २, ३५। ब्रंगा ब्रंती ब्रुवते। लिङ् ब्रुयात्। ब्रवीत। जङ् षत्रवीत्। पत्रतः। सिडादी वचादेगः, पा र, ४, ५३। वच्धातुवत् कृपम्। खवाच। जचे। अबोचत्। •ता इत्यादि।

THE PROPERTY OF THE PROPERTY O भन्, (भन्) स्वा, छ। भन्, प्, भवाषम्। भवति। वते। वभव। **े चे। भचिता। भचिष्यति। ०ते।** यभचीत्। यभचिष्ट। भच्यति। कथमेतन्यांसं सुललितं भच्चयामि, हितो। भचयन्यस्य भचन्ते मांसं भचन्ति घोणितम्, कवि १०२। भच-यामासः। भचयिता। भचयिष्यति। ष्यबस्यत्। भचियता। ०भच्या भ-चितः। भुचणम्। भर्चाधतव्यम्।

- भज्- स्वा, उ। भिता। सेवा। श्रनुरागः। भात्रयः। प्राप्तिः। वि-भागः। बट्भजति। ०ते। इस्थिज। श्रभितप्तमयोऽपि मादेवं भजते, र ८, ४४। भातरं समंभनेरन् पैद्धकं रिक्-यम्, मनु ८, १०४। लिट् वभाज। भेजतु:। भेजिय, बभक्य। भेजिव। भेजे। वनानि भेजतू राववी, भ ६, ७२। मेजु: ककुमो देश, भ ६, १२३। पुनरेव दोलीं भेजे, र २, २३। लुट् भक्ता। व्हिट्भच्चति। व्ते। प्राधिष, भज्यात्। अवीष्ट। जुङ् अभाजीतः। वभाताम्। यभाद्धः। यभन्न। अभन

चाताम् । प्रभन्ता वर्षेष, भन्यते । त्रभावि। सन् विभव्यति। ०ते। येङ् बाभज्यते। बाभिता। णिच् भाजयति। भवीभजत्। दिशोऽरीमभाजवत्, भ १७, ८०। भज्, चु, प। दानम्। भाज-यति। भक्ता। ० सच्य । भक्तः। भक्तिः। मजनम्। भागः। भागी। भाजकः। भजनीयम्। भत्तव्यम्। वि-विभागः। प्रहोरात्रे विभन्ते च्याः, मनु १, ६५१ विभवन् स्वयं पित्राम्, मन् -pin ton 1922 the 185 that

भन्न भन्नो, क, प। भामदेनम्।

भक्षः। सट्भनिता भङ्कः। भद्धः लि। अनिता । कामिनीनाच ह्या मानमनङ्गवत्, कवि १३३। अनत्त्रयुप-वर्ष विषि:, स ८, २। सनज्मि सर्वः मर्थादाः, भ ६, ३८। हि सङ्भि। लिङ् भञ्जगात्। लङ् प्रभनक्। स कन्याशल्कं धनुरसनक्, स ५, ३६। लिट् बमञ्ज। बमञ्जतः। बर्भ खाय, बभक्षा बभच्चर्वस्यानि, भ १, २२। जुट् भङ्जा। लृट् भङ्गाता चा-शिषि, भन्धात्। लुङ् श्रमाङ्गीत्। त्रभाङ्ज्ञाम् । अभाङ्गुः। परिवर्मभा-ङ्गीत, स १४, १२१। अस्य मा भाई प्रतिज्ञाम्, भारत्। कर्मान्, भज्यते। प्रभाजि। प्रभिष्क्ष, पा ६, ४, ३३। धनुरभाजि लया, र ११, ७१। सन् विभङ्गति। यङ् वश्वज्यते। वश्वज्यति। णिच् भञ्जयति। अवभञ्जत्। भन्नि, चु, पा दीप्ता । अन्तर्यति । दीर्थी यो दिवतां दर्ध अंज्ययाञ्चनेयवत्, वावि १३३। भङ्जा, भजा, णा ६, 8, इरा । ०भन्दी । भग्नः। भन्नम्। भक्ता - भक्तम्।

भवत्यन्यदोषं खन्:। भवति खा

भट्-स्वा, पा स्रतिः। भरणम्। भटत । बभाट । क्यटतुः । भटिता । भाटयति। भटयति। परिभाषणी घटादि:। •

भव

, भग्—(भग्) स्वा, प। यब्दः। क्यनम्। भणति। बभाण। बभ-णतुः। क्रीणा च हृष्टा च बभाण सैसी, ने है, ६७। भणिता । प्रभणीत्, यभा-णोत्। सभागोद् युज्ञम्, भ १४, १५। कर्मणि, भण्यते। अभाणि। विभ-णिषति। बन्भायते। बन्भायतः। भाष-यति। यबीभणत्, श्रवभाणत्। भणि-तः। भणितिः। भाषः।

भण्ड्-भड़ि, खा, श्रा। १ परिशासः। रसनिन्दोपालकानम्। निन्दायुक्त-भक्तनम्। भड़ि, चु, पः। १ क स्वाणम्। २ प्रतार्णम्, वो। भग्डते। भग्डयति। भण्डति। भण्डः। भाण्डम्।

भन्द्-भदि, स्वा, चा १क स्वाणम्। रसुखम्। ३प्रीगनम्, वो। भदि, चु, प, वो। कल्याणम्। अन्दते। अन्दयति। भन्दति । - 7 TO 14 MINE 14

सर्द्र-(तर्ज्) चु, या। सत्तेनम्। सर्वयते। वित, वी। न सर्वयित कर्मस्यान् न च भर्त्तयते परान्, कवि 1385

भर्[°] भव्ँ भ्वा, प। हिंसा। भन्न भन्न भ्वा, था। १कथनम्। रिष्टंगा। ३ दानम्। ४ निरूपणम्, वो। भन्, चु, भा। भाभण्डनम्। नि-रूपणम्। भवते। वभने। भवते। वभक्षे। भारत्यते। भारत्वः। भक्ष्वः। भष्-भ्वा, प। १भण्णम्। प्बरवः।

पात्यम्, दुर्गा। भा—प्रदा, प। दीप्तिः । श्रीभा 🕬 भाति। अभात्। अभान्। बभी। बभतुः। विभय, बभाय। बिभवा भाता। भार्यति। भायात्। सभान सीत्। अभासिष्टाम्। अभासिषुः। विभासति। बाभायते। बाभेति। भाषयति। धबौभपत्। भातः। भाति:। भानम्। व्यति—व्यतिभावः। परसरशोभाः। जोकयुगं इशौ रमणौ-गुणा पपि व्यतिसाते, नै २, २२। पा-पाभा। ताः खियो दच्यता दवावभुः, र ३, ३३। प्र-प्रमा। ताः प्रभातम्। प्रभाता शर्वरी, रामा। प्रति प्रतिभा। प्रतिभानम्। धसँ-क्तिवर्गसार: प्रतिभाति, कु ५, ३८।

?, 891 भाज-पदन्तः। च, प। प्रथकर्णम्। भाम् न्या, जा। क्रोधः। भाम-बद्रनः। चु, प। क्रोधः। साम्रते। वाभाग्यते बन्धाग्यते इति न्यासकारः।

विचारमूदः प्रतिभाषि मे लम्, र

्र भाष्—भ्वा, ग्रा। क्रंयनम्।

भाषते। बभाषे। तं वाक्यमिदं बभाः वे। भाषिता। भाषिष्यते। भाषिष्रीष्ट्रं। प्रभाविष्ट । प्रभाविषाताम् । प्रभाविः वता कर्मणि, भाष्यते। अभाषि। त्रपोधनैरित्यमभाषिषातां ती, म २, २७। विभाषिषते। वाभाष्यते। वा-भाष्टि। भाषद्रति। अधीसपत्। अव-भ वत्, चा ७, १, ३ । भाषिता।

•साख। साषितः। साषणम्। साषा।
साषम्। अप—निन्दा। यो सहतोऽपभाषते, कुपं, ४३। • श्रीम—सम्भाषण्म्। नोदकायाभिभाषेत, मनु ४,
५७। श्रा—श्रीमाषणम्। श्रीलापः।
कथनम्। परि—परिभाषा। सङ्कृतः।
परिभाषणम्। यः सनिन्द उपालम्यस्तत्र स्थात् परिभाषणमित्यमरः।
प्रति—प्रत्युक्तिः।वि—विभाषा।विकत्यः।
सम्—सम्भाषणम्।तान् दृष्टा न सम्भाषसे,
स्त्रमराष्ट्रकम् ३।

भाष्—भास्न, भ्वां, चा। दीप्तिः।
भाषते। बभाषे, बभाषे रणे घरैः, भ
१४, ८३। भाषिता। घभाषिष्ट। भाषधति। घबीभसत्, घबभाषत्, पा ७,
४, ३। घवभाषत् स्वकाः घक्तोः, भ
१५, ४२। भाः। भाषः। भास्रः।

भिच्-भ्वा, श्रा। १भिचा।

याय्जा। २ लाभः। ३ लोभोतिः। ४ क्लेगः, दुर्गा। भिचते। गुरोः कुले न भिचेत, मनु २, १८४। भिचमाणा धनं प्रियाम, भ ६, ८। भिचितः। भिचा। भिचः।

िसद्-सिदिर्, त, इ। भेदः।

विदारणम्। भङ्गः। विच्छेदः। त्यागः। खट् भिनत्तः। भिन्दाः। भिन्दन्ति। भिन्दो। भिन्दाते। भिन्दते। भिनद्धिः ज्ञुजपर्वतान्, भ ६, २५। सुभग त्वत्-क्षथारभे भिनस्वङ्गानि साङ्गना, दर्पणः। दूत एव हि सन्धते भिनस्वेव च संहतान्, मनु ० ६६। हि भिन्धि। जिङ् भिन्दात्। भिन्दौतः। जङ्गभिन्न नत्। श्रभिन्दाम्। श्रभिन्दन्। प्रभिन्न नर्। श्रभिन्द। श्रभिन्तः। समयमभिन्न

नत्, र ४५, ८४। खिट् विभेद। विभे-द्विष । विभिद्धि । विभिद्धे, न कार-णात् खाद् बिभिदे कुमारः, र ५, ३०। लुट्भेता। लुट्भेत्स्यति। ०ते। भेत्स्यत्वजः क्रममयोम्खिन, र ५, ५५ । 🛹 यागिष, भिद्यात्। भिसीष्ट। लुङ् (इर्) श्रभिदत्, श्रमैलीत्। श्रभिदताम्, यभैताम्। यभिदन्, प्रसित्सः। यभिः त्त। श्रभिकाताम्। श्रभिकात। श्रभैत् सोत्तं गरै:, भ १५, १९७। कर्माण, भियते। घमेदि। भियते हृद्यग्रीयः भागवतम्। ग्रष्टाकाष्ठच मूर्खंश भिदाते नं तु नम्यते। सन् विभिन्सितः। ॰ते। यङ् बेभिद्यते। बेभेत्ति। णिच भेदयति। भवीभिदत्। कुगलैर्विप्रैः कुन्तीपुत्रान् सेद्यामः, ं भारत। भित्ता। ०भिद्या भिन्नः। भित्तः। भेदनम्। भेदः। भिदा। भेत्तम्। भेता। भिदुरः। भेद्यः। भिद्यो नदः। मेत्तव्यः। ७दु—जड्वं भेदः। उद्भिन्या रत्नग्रानया, कु १, २४1 यावद्रोद्भियते स्तनी, स्मृति:। निर— भेदः। प्रकाशः। श्रायंषि लच्च निर्भिः य, भ ८, ६०। रहस्यं निर्भित्रम्। प-प्रभेदः। प्रति-भर्त्तनम्। निरा-करणम्। प्रत्यभैत्सुरवदन्ख एव तम्यु-विन्द्रभिः, र १८, २२। प्रतिसिख कान्तम, मा ८, ५८। सम्-सिय-णम्। संस्थेष:। कदञ्चस्थितः प्वनः, म ७, ५।

भिन्द्—भिदि (बिदि) स्वा, प। अवयव:।

भिल् (बिल्) चु, प। भेदनम्। - भी जिभी, हा, प। भयम्। लट् विभेति। विभीतः। विभिनः, पा ६, ८, ११५। विभ्यति। न विभेति नरेन्द्रेभ्यः, कवि १२१। खिङ् विभी यात्, विभियात्। लङ् श्रविमेत्। श्रविभीताम्, श्रविभिताम्। श्रविभयुः। विभेतु स्त्रोभ्योऽपि, कु ३, ८। देवाद् बिमोडि, भ २०, २७। लिट् विभाय। विभयाञ्चलार, पा ३, १, ३८। आम-भावपचे विभ्यतुः । विभयिय, विभेष। न विभाय न जिज्ञाय, भ ५, १२। प्रविभयाञ्चकार की जुत्खात, भ ६, २। लुट्भेता। लुट्भेषति। लुङ् श्रभेष्टाम् । अभेषु:। श्रमेषीत्। भैन्नी:। सा भैः, इति पद्मनाभः। सा स्म भैषी:, म ५, ५८। सन् विभोषति। यङ् वेभीयते। वेभयौति, वेभेति। णिच् भाययति। भरैभी रमभाययत्, भ ५, ५१। प्रयोजकाद भये तु, भाप-यते, भोषयते, पा ७, ३, ४०। १, ३, ६८। शत्न भीषधमाणः, भ ५, ५८। भोला। भौतः। भौतिः। भयम्। भेत-व्यम्। भीकः। भीलुकः। भीमः। भोषाः। भोषणः। भयानकः। भो, क्राा, प, वो। १ भयम्। २ भरणम्। भीनाति, भिनाति । भी, चु, प । भयम्। भाययति, भयति। हभी इत्यत्र हमोति धातुदयमिति रमा-नाथ:।

भुन्

े शुज्—भुजो, तु, प। वक्रीकरणम्।

भुज, क, प (चा, चवालने, पा १, ३, ६६)। १ पालनम्। रचणम्। २ अभ्य-वहार:। भाजनम्। उपभोग:। अनु-भवः। बट् भुजीत। भुनिता। भुङ्तः। या भुङ्क्ते भुवनं धर्मे यस्य धीन भुज-

राजा। वृद्धो जनी दुःखयताति भुडती, दुर्गा। अघं स निवलं भुङ्तो यः पच-त्यात्मकारणात्, मनु ३, ११८। रामां भुनिता बुभुजे न च भोच्यतीयः, महा-ना २, ४८। लीट् भुनत्तु। भुङ्खि। भुनजान। भुङ्ख। लिङ् भुद्धात्। भुञ्जीत। लङ् अभुनक्। अभुङ्काम्। ग्रमुञ्जन्। ग्रमुनजम्। ग्रमुङ्ताः ग्रमुः ज्ञाताम्। त्रभुज्ञत। राज्यसभुनक्, र १२, १८। लिट् बुभी ज। बुभी जिय। बुभुजे। बुभुजे मेदिनी बधूमिय, र ८, ७। लुट् भोक्षा। ल्टर्भोर्च्यातो ०ते। त्रागिषि, भुज्यात्। भुजीष्ट । नुङ् त्रभौचीत्। प्रभौताम्। त्रभौचुः। प्रभुतः। त्रभुचाताम्। प्रभुचत। कर्माण, भुज्यते। श्रभोजि। सन् बुभुचति। ०ते। यङ् बोभुज्यते। बोभोत्ति। णिच् भोजयति। • ते, पा १, ३, ८७। अबू-भुजत्। ॰त। भुद्धा। ॰ भुज्य। (प्रा) भुग्नः, पा ८, २, ४५। भुताः। भुतिः। भाजनम्। भोगः। भाजम्। भोता। भोग्या पृथिवो । भाज्यसन्तम्। श्रा-त्राभोग:। परिपूर्णता। उप-उप-भागः। पय उपभुज्यते, र १, ६८। परि, सम्-समागः।

भुगड्—भुड़ि, भ्वा, श्रा। तोड़नम्।

दारणम्। भेदः। भुग्डते। बुभुग्डे। भुग्डा इति प्रदीपकारः।

भू—स्वा, प। १ सत्ता। विद्यसानता।

२ उत्पत्तिः। सम्पन्नता। भावः। भू (प्राप्तिसम्पद-भवा, ड, वो। प्राप्ति:। जनास्तित भद्दमतः)∤ खट् भवति। भुद्धन्ति। भुङ्क्ते। भुद्धाते। भुद्धते। ०ते। भवते दुरितच्च यथोक्तैः ऋतुभि-िर्भावयते व नाक्लोकम्। भवति त्यत्तम्, कवि २५८। भुनित्ति पृथिवीं में तिदग्रैस पूजिती यस्तृणवद् भावयति द्विषय सर्वान्॥ भवि ५०। यागात् सर्गी भवति, की २२। स्रोट् भवतु। ०ताम्। लिङ् भृतेत्। भवेत। लङ् अभवत्। ०त। गर्भीऽभवद् भूधर-राजपत्नग्राः, कु १,१८। सिट् **ब**भ्रुव। बभूवतु:। बभूविय। बभूविव। बभूवे, पा ६, ४, ८८। ७, ४, ७२। लुट् भविता। लाट्भविष्यति। ०ते। श्राति यस्मिन् चेप्स्यसि सन भविष्यति, भारत। प्राधिषि, भूगात्। भविषौष्ट। लुङ् अभूत्। अभूताम्, पा २, ४, ७०। ७, ३, ८८। चभूवन्। चभूवम्। चभू-ब्रुपः, भ १, १। जेकयोतो भरतोऽभूतः, भ १, १४। ब्राह्मणानां चरणचालने क्षणोऽभूत, भारत। भावकर्मणोः, भूवते। बभूवे। भाविता, अविता। भाविष्यते, भविष्यते। भाविष्येष्ट, भवि-षौष्ट। प्रभावि। प्रभाविषाताम्। सन् बुभूवति। ०ते, पा १, २, ८। यङ् बोभू-यते, पा ३,१,२२। बीभवीति, बीभीति। णिच् भावयति। प्रबीभवत्, पा ७, ४, ८०। विभावयिषति। भू, चु, प। १ चिन्ता। २ सिञ्जणम्। ३ ग्राह्यः। भावयति। भू, चु, आ। प्राप्तिः। भावः यते। मनते। मनतीत्रेके। भूता। ० भूय। भूतः। भूतिः। भवनम्। भवः। भाव:। भवितुम्। भविता। त्राद्यमा-विष्णुः। भृष्णुः। प्रभावकः। पाद्यकाः वुकः। परिभवी। स्यव्यम्। ब्रह्मभूयम्। भवनौधम्। भवितव्यम्। भूः। षधिभूः। प्रतिभू:। स्वयस्थः। विसु:। प्रसु:। प्रभु:। भुवनम्। श्रन्तर्—श्रन्तर्भाव: । कमीयोगे सर्वाख्येतर्भवन्ति, मनुः १२, ८७। त्राविस्—्राविभीव:। तिरम्— °कु ३,३७। तिरोभावः। • त्रैणीम्—तुण्णीकावः। न्युक् न्यग्भावः। पुनर् पुनर्भावः। 🎙 भूषणम्। भूषति। भूषयति। भूष

पादुर्-पादुर्भावः। अधि-ऐखर्थम्। युनु अनुभाव:। न वं तेनान्वभाविष्टा नान्वभावि लयाऽप्यसी। यनुभूती मया चासी तेन चान्वभविष्यहम्, भ प्, इप्। प्रभि—प्रमिभवः। जयः 🖻 न्धूनीकरणम्। प्रव्नुमिर्नाभिभूयते, मनुः ७, १७८। श्रीभभवति सर्वभूतानि तेजसा (श्रतिशेते), सनु ७, ५ वि अनमधर्मीऽभिभविष्यति (प्राप्नोति), गी १, ४०। अभ्यभूतिलयं स्नातु, भ ६,११७। उद्-उद्भवः । णिच्-कल्पना ह मायां मयोज्ञाव्य परीचितोऽिंगः र २, ६२। परा—परामवः। न्यूनी-भाव:। न्यूनीकरणम्। परि-अना-दर:। सामां महात्मन् परिभूः, सर् २२। प्र-उत्पत्तिः। ऐखर्यम्। हिम-वतो गङ्गा प्रभवति, पा १, ४, ३१ ह प्रभवाणि, पा ७, ४, १६। प्रभवति निष्ठ दोषो भूरिभावे गुणानाम्, ज्यो-'तिषम्। प्रति—प्रतिक्पत्वम्। प्रति-भूत्वम्। वि—ऐष्वर्थ्यम्। णिच्— चिन्ता। सम्—सम्भवः। घटनम्। उत्-पत्ति:। मिलनम्। भाग्येनैतत् सम्भ-वति, हितो। समृयाभोधिमभ्येति महानद्या नगापगा, सा २, १०० 🛚 णिच् समावनम्। श्रीमनन्दनम्, भव-बोध:। चिन्ता। सानः। सत्कार: । समाखासनम्। बन्धं न सन्धादितः एव केशपाश: (चिन्तित:), र ६, ७। धारां शितां रामपरम्बधस्यः सन्भावय-लुत्पलपत्रसाराम् (मन्यते), र ६, ४२। सम्भावय चिर्प्रसृद्धी ताती, वीर ६२। विश्वेन जायां संभावयामास्र

भूष्—भ्वा, (तिस) चु, प।

याङ्गम्, भ २०, १५। बुभूष। बुभूषते क्षन्या खयमेव । भूषा। भूषणम्।

Æ

स—स्ञ्, खा, उ। भर्णम्।

पारगम्। यञ्चम्। प्राप्तिः। पूरणम्। ३ पोषणम्, वो। प्रतिपालनम्। डुम्डंञ्, ह्या, उ। १ धारणम्। २ पोषणम्। १ दानम्। बट् भरति। ०ते। भरति कुम्भ-सिंह्यजनः, दुर्याः, यो सुजाभ्यां सुवो भारं भरते अरतीपमः। विभक्तिं च यग्रोराशिं भूयां मं यस्य भूरिप ॥ कवि १२०। दरिद्रान् भर कौन्तेय, हिती। विभार्त । विस्तः । विस्ति । विस्ते । बिम्बाते। बिस्तते। हि, विसृहि। चानिष्, विभराणि। लिङ् विस्यात्। विस्त्रीत। साध्वीं भार्यां विश्वात्, मनु ८, ८५। लङ् अविभः। अविस-ताम्। प्रविभतः। प्रविस्त। सन्वास-सविमः, म १७, १८। श्रविभनः गाल्ये वारि सूर्डभः, भ १७, ५३। लिट् विभराञ्चकार। वभार। वस्व, पार्क, २, १३। विभराश्वकी। बभ्ने बस्ये। ध्रं धरित्रा बिभरास्वभूव, र, १८, ४५। बलित्रयं बभार बाला, कु १, ३८। नुर्भर्ता। लट्भरिषति। ॰ते। प्राणिषि, भियात्। स्वीष्ट। लुङ् यभाषीत्। यभार्शम्। यभार्षुः। अस्त। अस्वाताम्। अस्वत। अस्-दुग्। प्रभाषींद ध्वनिना लोकान, भ १५, २४। कर्मण, स्त्रियते। श्रमारि। सन् भी, युभूषीत । ०ते। विभरिषति। ॰ते, पा ७, ०२, ४८। हा, बुभू-र्षति। ते। यङ् वेश्वीयते। बर्भित्ते। णिच् भारयति । प्रवीसरत्। सता। • स्टा स्तः। स्तिः। भर्ता । स्टाः। भार्या। स्वा। भ्राम्। भरः।

भर्षः। अस्तिमप्रिवारी, ३७। सम्—सङ्ख्यः। सञ्चयः। द्वादः। परिपूरणम्। परियोषणम्।

स्त्रम्

सन्-(भन्) स्वा, उ। सन्तपम्। मृज्—मृजी, (ऋजि) भ्वा, श्रा। भर्जनम्। पाकविश्रेषः। भर्जते, तपसा भर्जते पापम्, कवि ८७। बस्जी। भर्जिता। श्रभिजेष्ट। (ई) स्त्रम्। भर्जनम् ।

स्ड्-(मुड), तु, कु, प। मज्जनम्। ं सग्—सग्र, दि, चु, प। संग्र:। संय्—स्था (भाज) चु, प। दीप्तः।

भू-क्रा, प। १ भर्कना।

२ पोषणम्। ३ धारणम्। ४ भजेनम्, वो। भृणाति, कभवीजानि सर्वाणि योगाभ्यासाद् स्याति यः, कवि ८७। बभार। बभरतुः। भरिता, भरोता। भेष्-भेषु, स्वा ७। सयमत्वीः।

भेषैति । •ते । देवेभ्योऽपि न भेषते। भ्यम्—भ्या, श्रा। भयम्। भ्यसते। भ्रत्-भृष्, भा, छ। भवणम्।

स्त्रण् (श्रण्) स्ता, घ। शब्दः ।

स्तम् स्त्रमु, भ्वा, दि, प। १ चलनम् । पादविचरणम्। अनवस्थानम्। अत मणम्। पर्यटनम्। श्रस्मिन्धे सन्तर्भः

कोऽकर्मकस्। २ स्वान्तिः। लट् स्वयति। स्राम्यति, पा ३, १, ७०। कौर्त्ति-क्यीं स्वति यस्बोर्की गुकाः स्वर्गे स्वमन्ति

च, कवि २६२। स्त्रास्यन्यभौताः परितः पुरं नः, स १२/७२। न जाने

°को हेतुर्भ्रमति विधि/ भिच्चक ५वः पुर्गा। अमरोव च में मुनः, गी १, ३०।

भारः। सत्। (ड्) मिल्रमम् (ट्रवो) / विद् वन्त्राम्। वन्त्रमतुः। अनेमतुः

ण ६, ४, १२४। चौग्झामौ त्वयं
सेडिति वस्ताम, कौ ५५। से मु: शिलीचयां तुङ्गान्, भ ७, ५५। जुट् स्निम्निता। ल्टट् स्निष्यति। जुङ चस्तमोत्।
चस्तिष्टाम्। दि, चस्तमत्। चस्तः
मोत्, वा। सन् विश्वमिषति। यङ्
वस्तुम्यते। वस्तुन्ति। णिच् समयति।
चित्रसम्बन्नमत्, भ १५,
५३। स्निम्निता, सान्ता। स्नान्तः।
स्नान्तः। समणम्। समः। सामः।
स्निः। समणम्। समः। सामः।
स्निः। समणम्। समः। सामः।
स्नान्तः। समणम्। मारीचौद्स्नान्तः।ताः, र ४,४८। वि—विश्वमः।
सम्—सस्तुमः। भयम्।

भंग-भंग-भन्य, भन्स (धन्स) स्वा, या। सन्य, स्रय, वो। दि, य। प्रवस्त्रंतनम्। प्रधःपतनम्। भृष-ते। भूमते। भूखिति, पा ६, ४, २४। भुं ग्रते दुरितं राष्ट्रे प्रजास्यो यत्रमान वतः। भुष्यत्यरिपताकिनी, कवि १७६। भृष्यन्ति क्योत्पनग्रययः, सहाना १, ३८। बभुंश। ०शी। बभुंशेऽसी धते:, भ १४, ७१। संयामाद वम् शः (प्बायिताः), भ १४, १०५। मृंशिता। संशिष्यति। ०ते। स्वा, प्रभुंशत्। श्रम्बाष्ट दि, श्रम्यत्। सुग्रीवी-उखामुश्रदु इस्तात्, भ १५, ५८। भावे, भृत्यते। अञ्चलि। विभृत्यिषति। •ते। वाभृष्यते। वाभृष्टि। भृन्स्, बनीभुस्यते। बनीभुं सीति, पा ७, ४, ८४। स्वा, बनीभुखते इति कचित्। भुं भयति। अवभुं भत्। भुं भिला। भुद्धाः। भुष्टीः। भुंशनम्। भुंशः। परि, प्र-च्यु ि:। हानि:। . भूस्ज्—तु, .उप पाकः । भजनम्शे

ं बट् खळति। ज्ते, पा ६, १, १६%।

तेजसारी स सज्जति, कवि ८७। वि वभूजा, वभर्ज, पा॰६, ४. ४०। बा ज्ञिय, बसुष्ठ। बमर्जिय, बसुष्ठ बमुज्जिन, बमर्जित । बमुज्जे, बमर्जे वेभुज योको रावसम्बित्त्, १४, ८६। बुट् भृष्टा, भर्षा। 😎 भृच्यति। ०ते। अच्यति। ०ते। आपि षि, भुज्यात्। भूजीय, भर्जीष्ट। यभाचीत्, यभाचीत्। यभाष्टीम्। यभाष्ट्रं, यभार्ष्टुः। यर ष्ट, प्रभष्टे। सन् विभूचति। • ते विभृज्ञिषति। •ते। विभर्जिषति ॰ते, पा ७, २, ४८। यङ्बरीसञ्चते बाभृष्टि, बाभाष्टे । गिच् भुजावति । भक्त यति । अवभ्जत्, अवभर्जत् । देषं विभ चुरस्ताग्नी, भ ५, ५०। लोकान् विभृद् रिव तेजसा, स ८,३४। सृष्ट्रा। • सृज्य स्टः। स्टिः। भूजनम्, सर्जनम् भृष्टुम्, भष्टुम्।

मान्-मानृ (एन्) रुमानृ,

स्वा, या। दीति:। योभा। भाजते वसाज, से जे, पा ६, ४, १२५। स्व जिता। साजियते। यसाजिष्ट। यस्व जिताम्। यसाजिपतः। यसाजि चयागिवत्, भ १५, २४। विस्ताजि यति। वासाज्यते। वासाष्ट्र। साज यति। यविभुजत्, यवभाजत्, पा ५ ४, ३। यवभाजक्कातं तिसान्, । १५, ८३। (दु) भाजयुः। भाजिण्युः दु भाजृ विभाद्। भाजृ विभाज्, वं ८७, १३५।

भाग—दुभाय, दुभासः। दुभाय, दुभास, भाग दीप्तिः गोमा। भाष्यते, भाषते। सुम्बते भू मृति। भाष्यते, भू प्राति। भू स्यते, भामते, पा ३, १३, १००। बभागे। भू भी, पा ६, ४, १२५। बद्भाष्यन्ते। परं लोके ये भिनावतनारिणः। न् दीन्य दु: खिताः केचिद् भृष्यन्ति यस्य संग्रहले। कवि १६३। भी कार्या, पा १ भयम्। २भरणम्। भिणाति भीणाति। विभाय।

भिणाति 'भोणाति'। विभाग। अभीवीत्।

भृग्—च, या। १ यागा। २ विशङ्का। स्त्रेज्—स्टेज (एजू) स्वा, या। दीप्तिः। स्त्रेष्ट्रेष्ट्र, भ्रोष्, स्वा, छ। भयगत्यीः।

(म)

'मक्त्'(मस्क्) मच् (मच्)। मख्, मङ्, मखि (दुखि) स्वा, प। गतिः। मखित, मङ्गति।

मङ्क् मिकि, भ्वा, श्रा। भूषणम्। गतिः, वो। समङ्किरेऽखाः, स १४, १०।

अभिक् मिंग (श्राम) स्वा, प। गतिः।
मक् मिंघ, स्वा, प। भूषणम्।
सिंघ (श्राघ) स्वा, श्रा।१ गतिः।
२ श्राचेपः। निन्दा। ३ शारमः। गत्यारमः। ०४ जवः। धकतवम्। ६ श्रचक्रोड़ा, दुर्गा। सङ्गति। ०ते।

मच्-भा, पा। १८काः।

२णाळाम्। ३७ तिः। सचते। "मञ्जः सुच सुच।"

मज्ज — दुमम्बो, तु, पा श्रांबः। स्नानम्। अवगाइनम्। मज्जनम्।

मज्जित। समज्ज। समज्जतुः। सम-ज्ञिथ, समङ्थ। समज्जिव। सङ्ताः, पा ७, १, ६०। सङ्घाति। अमाङ्गीत्। श्रमाङ्काम्। श्रमाङ्गः। भावे मञ्जाते । श्रमां जा। सिमञ्जात। सामे जाती। मामङ्क्ति। मज्जयति । ज्ञत्। उद्—उन्मजनम्। सरित्ती गज उन्ममञ्ज, र ५, ४३। नि—निम-ज्ञनम्। एको हि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जिति, कु १, ३। शोकी न्यमा-इनैत्, भ ३, २०। प्राखिनो न्यमा-इंग्स्बुधी, भ १५, ३१। मङ्क्का, मला, पा ६, ४, ३२। सम्नः। सज्ज-नम्। (टु) मज्जयु:। मङ्क्तम्। मङ्क्त-व्यम्। मज्जनीयम्। साधुमक्। मज्जा। मद्गुः। मद्गुरः।

मञ्चमित स्वा, था। १धारणम्। २ उच्छायः। ३ पूजनम्। ५ दीप्तः, वो। सञ्चते। निर्-नीराजनम्। तं निर्भेद्या, नै ७, ४३। सञ्चः।

मञ्च्—सिञ्च्—सिञ्ज, मिञि (कुप)
चु, प। दीप्तिः। मञ्जयति। मिञ्चयति। मिञ, चु, प। ग्रुडिः। मार्जनम्, वो।

मठ्—भ्वा, प। मदनिवासमदेनेषु। मठति। मठः। माठः।

मण्-(प्रण्) भ्वा, प। शब्दः।

मण्ड्—मिट (किटि) खा, आ। शोकः। मण्डेते। ममण्डे। इण्ड्—मिड्, खा, प भूषणम्। सिङ् (विड्) खा, आ। १विभाजनम्। श्वैष्टनम्, वो। मिंड, चु, प। १ भूषा।
२ इषः। मण्डति। ०ते। मण्डयित।
मण्डयित गुणाः सर्वे यो गुणानेव
मण्डितः, कवि २५०। भ्रममण्डत्।
कांपसैन्यैरमण्डयत्, भ १०, १३।
मण्डियत्वा। मण्डितः। मण्डनम्।
वर्षे मण्डियतारः, पा ३, २, १३५।
मण्डकः। मण्डनः। मण्डनः।
मण्डकः।

सथ्—मथे, भ्वा, प। विकोड़नम्। भवति। सनो सथित नारीणां, कवि•६२। सद्—सदी, दि, प। १ इषे:।

२ मत्तीभावः, वो। मार्खात, पा ७, ३, ७०। सर्वे बोकातिशायिन्या विभूत्या नच माद्यति, कवि २४३। ममाद। मेदतुः। इतरा तु ममाद, मा १०, २७। मदिता। मदिर्थात। प्रमदत् (अमादीत् अमदीत्, वो)। सिम-दिषति। मामदाते। सामत्ति। (इर्ष-दैन्ययोः) मदयति। अन्यत, मादयति (चित्तविकारमुत्पादयति)। ग्रमीम-दत्। अमदयत् सहकारतता मनः, र ८, २८। मद्, चु, या। त्रियोगः। त्रशीकरणम्। मादयते, मनो माद-यते यस्य योगाभ्यासरसायनम्, कैवि २४३। मदिला। (ई) मत्तः, पा ८, २, ५७। मदनम्। मदः। मदनः। मादकः। मद्यम्। उद्-उन्नादः। चित्तविकारः। प्र-प्रसादः। अनवधा-नता। धर्मात् प्रमाद्यति खहितात् प्रमाद्यति, भ १८, ८। प्रमाद्यन्ति प्रमदासु विष्यितः मनु २, २१३।

सन्—भ्वा, पे वो। पूजा। गर्वः। सन्, त,•श्रा। ज्ञानम्। श्रवबोधैः।

मनति। मनुवे, मनुवे मनुतुः सी

प्रजामात्मजवत् प्रभुः। पिल्वकान्यते तुच मान्धं जनपदः सदा॥ कवि १५६। .ससान। सेने। सन्ता। सनिष्यति। ०ते। प्रमनीत्, अमानीत्। अमता ध्रमनिष्ट। यमयाः। यमनिष्ठाः, पा २, ४, ७८। मन्, दि, आ। ज्ञानम्। अवबोधनम्। सन्भावनम्। मन्यते। त्रात्मानं मन्यते वित्तनं वली, स ५,२५। को बहु सन्धेत राघवम् (साघेत), भ ५, ६४। न ला खणाय मन्धे, पा २, ३, १७। मन्धे स विज्ञः, नै १, ३२। मेने। सन्ता। संस्थते। मंसीष्ट । श्रमंस्त । श्रमंसाताम । अमं-सत। असंस्त स्थितिसन्तर्मन्वयम्, र २, २७। मिमंसते। मस्यन्यते। मसान्ति। मानयति। श्रमोमनत्। मन्, तु, श्रा। १ स्तमः। २ गर्वः। मान्यते। मन, अदन्तः। चु. प. वो। धारणम्। मनयति। मला। ०मत्य। ०मन्य दत्येके। सतः। सति:। सननम्। सानः। मन्तुम्। मन्ता। मन्तव्यः। दश्रीनीय-मानो भार्थ्यायाः। शूरमानी। शूर-मान्यः। अनु—अनुमतिः। देवराय प्रदातव्या यदि कन्यानुसन्यते, सनु ८, ८०। राजन्यान् स्वपुर्गन हत्त्रये (तु-मेने, र ४, ८०। अभि— अभिमानः सद्यातः। अव-अवमानः। अवज्ञा। अवामंस्त स तान् दर्णात्, भ १५, ६६। चतुर्दिगौशानवमन्य मानिनो, कु ५, प्र। सम्—समाति:। पूजा काली संमन्यसेऽतिथिम्, भ ६, ६५। सममंस्त वन्धून्, भ १, २।

मन्त्—मिति, चु, श्रा। मन्त्रणा। गुप्तपरिभाषणम् । मन्त्रयते, हत्तस्य यां मन्त्रयते, नै ३,१००। श्रममन्त्रते श्रनु, श्रमि—श्रमिन्त्रणम्। मन्त्रतर

चाकृसंस्करणम्। उपाक्ततः पश्चरसी यौऽभिमन्त्रा बते इत इत्यमर:। आ-प्रामन्त्रणम्। कथनम्। प्रस्थानानुमति प्रार्थतम्। संस्वंश्वनम्। निमन्त्रणम्। तसामन्ता जगाम, भारत। पामन्त-यत संक्रुड: समितिम्, भ ८, ८८। श्राम-न्वयेत तान् प्रहान्, भ १८, ७। नि-निसन्त्रणम्। तं न्यमन्त्रयत समात-कतुः, र ११, ३२।

सन्य-भ्वा, क्रा, प। विसोड्नम्। मत्यनम्। गाहः। मंचीमः। मधि, माथि (कथि) भ्वा, प। १ हिंसा। २पौड़-नमां मर्यात, मार्यात। मयाति। मयोतः। मयुन्ति। दिधि मयु।ति प्रतम्। मथाति वादिनः गास्ते ग्ये मन्यति वैरिणाः, कवि ६२। मां मधातीव मनायः, भारत। सिङ् मणीयात्। बङ् समयात्। तस्यामयाचतुरी हयान्, भ १७, ४१। लिट् ममन्य। ममन्यतुः। रयं मूमन्य सहयम्, भ १४, ३६। लुट् स्टर्मिययति। मयात्। मन्यिता। सचि, मन्यात्। लुङ् चमन्यीत्। चम-व्यष्टाम्। शमस्यीत् परानीकम्, भ १५,४६। कर्माण, सध्यते। सिथ, मत्याते। प्रमत्य। देवासुरैग्सतमञ् निधिमेमस्य। सन् मिमन्यवित। यङ् मामध्यते। ममन्ति। णिच मन्य-यति। अममस्यत्। मथित्वा। मस्यि ला। मृथितः। सथि, मन्यितः। सन्य-नम्। सन्यः।

मन्द्-मदि, खा, चा। १स्तुति:। २मोदः। ३मदः। गर्वः। अखप्रः। निद्रा। ध्वान्तिः। इगितः। अड़ी-भावः, वो। मन्दते, मन्दते यो न सुन्दरः, कवि १७६। समन्दे। मन्दि- मंइयित । लच्चीय मंइते, कवि ३४।

ता। श्रमन्दिष्ट। मन्दः। सन्दरा। साम्हरम।

सभ् -(प्रभृ भ्वा, प। गति:। सस्ब-(पाब) भ्वा, प। हिंसा। भय-(त्रय) भ्वः, ग्रा। गति:। मर्च्—(गर्जं) चु, प। शर्ब्दः । सर्व् — स्वा, प, वो। गतिः। मर्-(पर्व) स्वा, प। पूर्णगत्थीः। मल् मस्, भ्वा, था। धारणम। मलते। सञ्जते। मलम्। सलिनम्। माला। श्रामलको। परिमलः। मबिका। मन्नः।

मव् मञ् स्था, प। बन्धनम्। मवति। मर्चाता समाव। मेवः मुक्क बादिसि:, स ८, ८०। मविता। षमवीत, षमावीत्। क्रिप् सू:, सुवी। मग्-मिश्-भ्वा, प। १ शब्दः। २ रोषक्रतग्रब्दः। ३रोषः, वी। सग्र-मेगति। समाय। समकः। मिमेग्रा मेशिता।

मष्क्, सस्क् (क्रिकि) स्वा, श्रा। गतिः। मन् मसी, दि, प। १परिणामः। २ परिमाणम्। मस्यति। ममासः। मेसतु:। मसिता। अमसत्, अमासीत्, वो। (ई) मस्तः। सासः। समी, सस्य-तीत्येके।

सइ — भ्वा, प। मह, बदला । चु, प। पूजा। सहति। अमहीत। महयति। नित्यं महति माहेयीं भत्त्या सहयति दिजान्, कवि ३४। महो। महः। मंद्र-महि (वहि) था, बा। हिहः। ं (प्रजि)'चु, य। दीक्षिः। संइते।

मा पदा, प। दि, या। मानम्। ह्या. था। १परिमाणम्। २थव्दः। ज्ञट् माति। मायते। मिमीते। मि-माते। मिमते, पा ६, ११३। श्रुत्या धर्म मिमोते। यः कचित् सत्या च सायते। कवि ७८। यो सिमौते च मीमांसाम्, कवि १८१। लङ् अमात्। षमुः, प्रमान्। अमिसीत। श्रमिमा-ताम्। श्रामित्र पुरः सखीनामिन-मीत जोचने, कु ५, १५। जिट् ममी। समिथ, समाध। समे। तनौ समुस्तव न कैटभिद्वो मुदः, सा १, २₹। लुट माता। खट् मास्यति। •ते। त्रामिषि, मेयात्। मासीष्ट। लुङ् श्रमानीत्। श्रमानिष्टाम्। श्रमानिषु:। चमास्त । चमासाताम्। चमासत। कर्मणि, सीयते। अमायि। अमायि-साताम्। प्रमासाताम्। सन् मित्-मति। वित, पा ७, ४, ५४, ५८। यङ् मेमीयते, पा ह, 8, हह। सामिति। सामाति। णिन् मापवति। अमीस-पत्। मिला, पा ७, ४, ४०। ॰ माय। मितः। मितिः। मानम्। अनु-अनु-मानम्। मन्तां वेगभङ्गोरन्मीयते, जा २, २५ । इट् उन्मानम्। तोलनम्। उप-उपमानम्। वाक्यार्थेन वाक्यार्थं उपमीयते, दण्डो २, ४३। निर्-नि-मीणम्। निर्माति यः पर्वणि पूर्णसि-न्द्रम्, नै ३, ३२। स्टिस्थितिविलयमजः खेळ्या निर्मिमीते, महाना १,१। तांभ्यां दिवं भूमिच निर्मम, मनु १, १३। परि-परिमाणम्। उदरं परि-माति सृष्टिना, ते २, ३५। भवनरच-नामन्यथा निश्लिमाण, बनर्घ १३। प्र-प्रमाणम्। विश्वयद्भानम्। न प्रमि-मीतिऽनुभवाद्दतिऽल्पघीः, मा १६, ४०।

माङ्ग्-माचि, काचि, भ्वा, या। बाकाङ्वा।

🕈 :मात् — मार्ट, भ्वा, उ। मानम् 🕨

सान्-भ्या, या। •१पूजा।

श्मीमांसा। विचारः, वो। पूजादाः विच् । पूजादाः तिवादयो न स्युरिति रसानाथः। लट् मीमांसते श्रास्तार्थम्, पा ३, १, ६। यस मीमांसते श्रम्में सान-य्यार्थिनो द्विजान्। सानित स्वजनं सर्वे शास्त्रं सानयते परम्॥ कृति ३२। लिट् मीमांसाञ्चक्रे। लुट् मीमांस्ति। लुङ् समीमांसिष्ट। मान् चु, प। पूजा। प्रश्रमा। सानयति। मान् नितः। सानिनो सानयीः, स १८, २८। न सानयसि सामार्थ्यं रदतीम्, भारतः। सानवम्। सानितः। सानतम्। सानीयता। साननीयम्। सोमांसितः। सानतम्। सानीयन्। सानीयम्। सोमांसितः। सोमांसितः। सानीयम्। सोमांसितः।

मार्-च, प। अन्वेषणम्।

प्रतिसन्धानम्। सागैयति। सागैति। यो सागैयति सन्धार्गे सागैति स्रोससानि सनः। नृपतेः स्तमस्पदे वर्रसमागीत्, स १, १३। साग्, चु,प, वी।,१६ स्कारः। २ सप्णम्।

मार्ज् — (गज) चु, प। १शब्दः। २ ग्रंडिः। मार्जनम्, वो। मार्जेयति।

माइ माइ, खा, उ। मानम्। साइति। •ते। माइ इत्येके। मा-दिता, माढा।

मि-डुमिज्, खा, छ। प्रचेषणम्। मीज्, क्रा। हिंसा। विधः। बट्

मान् क्रिया। हिसा । वधः। बट् मिगोति। मिनुते। मीनाति। मीनी-ते। मिनोति मार्गणीन् युद्धे मीनाति दिषती वसम्। यो मायां मीयते सान्यो

धर्मेण मयतेऽधमम्॥ कवि ३८ । जङ् अमीनात्। श्रमिनोत्। श्रमिनुत। ् अमोनीत। लिट् ममी, पा ६, ९, ५०। मिस्बतुः। मसिष्ठ, ममाधः। मिस्यितः। मिस्ये। लुट् माता। लुट् मास्यति। ंति। ग्राशिषि, मौयात्। मासीष्ट। लुङ् ग्रमासीत्। ग्रमासिष्टाम्। ग्रमा-सिंवः। अमास्त्रा अमासाताम्। अमा-सत्। कर्माणि, मीयते। श्रमायि। सन् मित्सति। •ते, पा,७, ४, ५४। यङ् मेमीयते। मेमयौति। मेमेति। गिच् मापयति। श्रमीमपत्। मिला, मीला। ॰साय। सितः। सितिः। सानम्। मातव्यम्। (डु) मिलिमम्। अनु त्रंतुमितिः। उप-उपमितिः। प्र-प्रसितिः। प्रसाणम्। प्रसीगाति, पा E, 8, 941

मिक् तु, प। धत्पीड़ा। मिक्कति। मिक्ज मिजि (कुप) चु, प। दौतिः। मिद्ध मेद, मिथ, मेथ, मिध्, मेध्,

सिंह, मेंह, सिंघू, मेंघू, सिंघू, मेंघू, स्वा, ड। १मेधा। २ इंसा। मेंघू, मेंघू। सङ्गी, वो। मेदित। •ते। मेघित। •ते। मेघित। •ते। मेघित। •ते। प्रजाय ग्रहमेधिनाम, र १, ७। मेदः। मेदकः। मेधा। मेधः।

मिद्- जिमिदा, स्वा, शा। दि, प।
सेहते। सिन्धोभावः। मेदते। मेद्यातः, पा ७, ३, ८२। किञ्चित् किल
ने मेदते। इति व्यायामशीलोऽसी
महाकायो न मेदाति, कवि १३६। सिमेद। सिमिदे। मेदिला। मेदिष्यति।
•त। शमिदत्। शमेदिष्ट। दि, शमि-

दत्। यमेदीत्, वो। मिद्, मिदि, चु. प, वो। सेइः। मेदयति। मिन्दः यति। मिदिला, मेदिला। मिनः।

प्रसिद्धः। प्रमेदितः पा ७, २, १७। प्रमेदिताः सपुत्रास्ते (सिन्धीभवित्तु-मारखाः), भ ८, १७। मेदः।

मिल् तु, थ। संस्ने वणम्।

मिल, तु, छ। सङ्गमः। मिलनम्।
मिलति। ॰ते। मिलति पङ्गमाकुष्यक्ती,
महाना २, ४४। मिलन्ति प्रत्यहं
यस्य वाजिवारणसम्पदः, कवि ६४५।
मिमेल। मिमिले। मेलिता। मेलि॰
धित। मिलिध्यतीति संचिप्तसारः।
अयं जुटादिरिति जुलचन्द्रः, दुर्गा।
अमेलीत्। अमेलिष्ट। मेलयित। अमोनिसल्त्। मिलिता। मेलिन्नम्। मिलन्ता। मिलितः। मेल-नम्। मिलन्मिति पद्मनामः। व्याल-नम्। मिलन्मिति पद्मनामः। व्याल-निलयमिलनेन, गौतगो ४, २।

मिन्व् (पिन्व्) मिश्, मश्।

. सिय चु, प। घटन्तः। सियणम्। सम्पर्कः। सिययिति। सिस्तयिति, वो। सुस्रादिगणे सियपाठः कथं।

मिष्—सिषु (जिषु) स्वा, प। ड, वो।
सेचनम्। मिष्, तु, प। सर्वा। मेषति। वि। मिष्ति। मिमेष। मिमिषे।
मेषिता। समेषोत्। समेषष्टा मिषतामाच्छिनत्ति नः (पश्चताम्), डुः
रं, ४६। डद्—डन्मेषः। नि—निमेषः।
डिमाषिनमिष्विपि, गो ५, ८। मन्माः
सुप्तो न निमिष्ति, भारत।

सिह्—स्वा, प। सेचनम्। चरणम्। मेहति। सिमेह। सिमेहिष्य। सिमेह रत्तम्, स १४, १००। मेटा। सेच्चिति। प्रसिचत्। सिमिचति। सेहयति। सौठः। सेहनम्। सेदुः

मी-मङ्, दि, पा। हिंसा। मीयते। भिन्ये। मेता। मेखते। भ्रमेष्ट। मिस्सते। ज्ञा, मीनः। मी, चु,

य। गतिः। साययति। सयति। मेता। न चानुसाययत्यन्युस्तस्य यचेतसि स्थितम्, कवि १४३। सी, क्राा (मि)। सीम्—(द्रम) स्वा, प। गतिष्रक्रयोः। पथवोऽपि न सीमन्ति यहेर्से दुःख-

घोडिताः। कवि १८१।

्मील्-म्बा, पानिमेषः। सङ्गोचः। मीनति। मीनन्ति रिपुनारीणां मुख-पंद्यवनानि च, कवि। मिमील। त्रस्या सिमीनतुर्नेत्रे, म १८, ५१। मीनिता। मीनिष्यति। प्रमीनीत्। मिमी लिषति। मेमी खते। मेमी ल्ति। मीलयति। प्रमिमीनत्, प्रमीमिलत्, पा ७, ४, ३। मोलिला। •मीला। मीबित:। मोलनम्। उद्-उन्मोल-नम्। उदय:। उदमीलोच कोचने, भ १५, १०२। चन्द्रोऽयमुन्मीलति, सद्दाना ४, २२। नि-निमीलनम्। सुद्रगम्। निमिल्य नेत्रे सचसा व्यव-धात, कु, पूर्वा निमिमील नरीत्तम-पिया (ममार), र ८, ३७ । प्र-प्रमीला। तिन्द्री। वर्षा कर्णा । रेक्षा । अक्ष स्ट्र

मीव्—(पीव्) श्वा, प। स्थीखम्।

मुच्—मुच्छ, तु, छ। मीचणम्।

त्यागः। वियोगः। चेषणम्। वर्षणम्।
कट् मुच्चति, वते। सागरिकाया इस्तः
मुच्चति, रता २, २०, १। लिट् मुमीच।
मुमुचतः। सुमीचिय। मुमुचे।
घेनुस्वेर्मुमीच, र २। मुमुचः कथूपान्, भ ३, ४। (परिधान) उष्णीषं
मुमुचे, भ १४, ८५। लुट् मीता।
स्टर् मोस्कति। वते। मोच्चते सुरबन्दीनां वेणीः, कु २, ६१। प्रामिष,

मुचात्। मुचीष्टा सुड्यमुचत्। भमुता। भमुचाताम्। भमुचता गति तस्यामुचत्, भ १५, ५३। कर्मीन, मुचते। धर्माचि। सूचन्तासभीषवः श्रीकु १, २८। कमकर्त्तरि, सहापात-किनस्तपसैव मुच्यन्ते किल्विषात्ततः, मनु ११, २४०। तसामाची, र १, ७३१६ सन् सुमुचिति। •ते। सीचर्ते। सुमु-चति वलां क्षणः। मोचते सुमुचते वा वत्सः खुयमेव, पा ७, ४, ५७ । यङ् मोस्चते। मोमोक्ति। णिच् मोचयति। यसूमुचत्। सुच, चु, प। प्रसोचनम्। सर्वायसं करिणि सुञ्जति कङ्गपत्रं यसा प्रमोचयति पापचयश्च कार्ये, कार्कि ४८। सुक्का। वस्यः। सुत्तरः। सुतिः। मीचनम्। मोक्षाः। सुक्। अव- इन्हों-चनम्। या-परिधानम्। यामुखद् वर्म, म १७, ६। प्रामुचतीवामरणम् र १३, २१। घट्- उन्योचनम्। विभू-षणान्यसमुत्तः, स इ, २२। निर्-उत्कत्तंनम्। सुतिः। पर्मनिमीच-नेऽपि वा, साति:। सेयं रामभद्रवेजसक एनमो निरमुचत, वीर ८। प्र-स्तिः। पापात् प्रस्चते, सन् ११, २३०। प्रति—परिधानम्। प्रत्यपेणम्। तुरकः प्रतिमोन्तुसर्हसि, र ३, ४०। वि-विमुत्तिः। त्यामः। पुरका वाचे विसुख्य। नादान् विसुद्धति, भारतः मुच्-मुझ् (मच्) मुक् (युक्) सुज्—सुज्ज, सुजि (गुज) भ्वा, प। चु, प, वो। १ गर्दः। र मार्जनस्,

चु, प, वा। र शब्दः। र माजनस्, वो। मोजति। मुद्धति। मोजयति। मुख्यति।

सुर्—भार प। मर्दनम्। 🚜 । सुर्, तु, प। १षाचेवः। २पसर्दनम्।

मोट्रति। सुट्रति। सुट्रति द्विषतां द्रपे तेषां खड़्च मोटति। यो मोटयति राष्ट्रेषु तत्कीर्चाऽमरमण्डपान्॥ कवि १०४। सुमोट। मीटिता। अमोटीत्। तु, सुटिता। यसुटीत्। मोटयति । मोटिति, बो । स में संसारित्यं परि-मोट्यतु, छन्दो। सुटि, सुर्खात, वो। मुड्, मोडति इति अश्वित्।

सुद

सुण् हतु, पा प्रतिका। सोणिता। ुः मुख्-मुटि,भेवा, भा। पाननापस्त्योः। मुग्हते।

मुण्ड्—मुडि, खा, पा खण्डनम्।

नेशमुख्नम्। मुख्, भ्वा, प। मदं-नम्। पोडनम्। मुड़ि, भ्वा, आ। मार्जनम्। ग्रुडिः। मक्तनम्। मुण्डति। १ते। सुण्डितः। सुण्डनम्। सुण्डी। सुण्डः। सद्त्रस्त, या। इपै:। वित्तोत्साहः।

मोदने, बलातं गन्धमाबाय मोदले तत्पुरस्तियः, कवि २१७। समुदे। स्वभावान् गोपाङ्गनानां मुसुदे विसोका, म २, १५। मोदिता। मोदिष्यते। मोदिये कंख सौखी, म १६, २४। श्रमोदिष्ट। श्रमोदिषाताम्। सुमोदि-वते। सुसुदिषते। सोसुदाते। सोसो-ति। मोदवति। अम्मुमुदत्। मोदयध्वं रवृत्तमम्, भ ७, १०१। सुद्, चु, प। मंसर्गः। सिद्यणम्। मोदयति यज्ञन् धतेन । मोदयन्ति यदुखाने माइतं षुष्परेणवः, कवि १००। मोदिला, मुदिला। ॰ मुद्धा मुदितः। मोदितः, षा १, २, २१। मीदनम्। मोदः। सुद्, मुद्रा। सुद्रिर्दे। चनु - चनुमोद- मुद्द - दि, प। विशित्तस्। नम्। पाक्यामनो रामभद्रसाभिषेतं- अतिवैकः। सोइः। स्वारविकीभावः। मनुमोदते, बीच (१६७। की दातमन्त- मुधिति। भीदस्तक न सुद्धति, गी ३, सीदन्त के चैतक् प्रत्यविधयन्, भारत। (३) मुमोद्रा मुसुहतुः। मुमोदिष्ठ,

प्रमुदितवर्यसम्, र 👣

TO BE THE WAY IN THE सुर् सु, पा विष्टनम्। सोदिता। मुर्ह (मूर्ह) सुर्द (सूर्व) सुन् (सून्)। सुषु ना, प। स्तेयम्। चीर्थम्। नुग्छनम्। वचनम्। सट् म्णाति। मुण्णीतः। मुण्णान्तः। तस्य मुण्णाति या शिरा, वावि ११५। हैवं प्रजा स्थाति, भारत। विषयवाह्न्यं काल-विप्रकर्षेस नः स्मृति सुणाति, बीर ६६० हि, सुषाण । सुषाण रतानि, मा १, ५१। जिंड् म्योयात्। जेड् पमुखात्। निट् स्मोव। सुमुवतुः। लुद् सोषिता। लुद् मोषिष्यति। लुङ् षमोषीत्। सन् सुसुविवातः प्राप्त २, ८,। यङ् मोसुखते। मोमोष्टि। णिच् मोषयति। अमूम्पत्रत्। सुषिला, षा १, २, ६। ० सुष्य । सुषितः । सोषः णम्। सोषः। मोषिता। सुट्। सैन्य-र्रेणुमुक्षिताकंदीधिति:, र १ १, ५६) मुषिता धनसम् । (विश्वता), भ 🦠 ८७। ग्रीमं न यात यदि तन्मपिताः स्थ, रता ४,४१। परात्मीयविदेशञ्च प्रामुखात, भ १७, ६०।

मम् मुष् दि, प। खग्डनम्। मुखति। मुखति, वी। मुखति दुःखं यः कि दि १५ विश्वमुसत्। व्यत्। राघ-वस्तामुष्यं कान्ताम्, भ १५, १६। मुर्ष (मृष्) का अपन अपन

मुख्त - चु, प। राशीकरणम्।

मुमोन्ध, मुमोद। स ग्रुश्रवांस्तदचनं मुमोइ, भ १, २०। मोहिता, मोन्धा, मोदा। मोडियति, मोखिति। प्रमु-हत्। सा मुहो मा क्षो(धुना, म १५, १६। सुमोडियति, सुमुडियति, मम्चिति। सोमुद्धते। मोमोर्सि, मो-मोढि। मोडयति। अमूमुइत्। मोडि-ला, मुँहिला, मुग्धा। मूदुा। मुग्धः। मूढः। मोइः। मोइनम्।

स्मू स्टूड, स्वा ग्रा। वस्वनम्। सूत्र—ग्रदन्तः। चु, प। प्रस्नावः। मूत्रयति। यङ् मोमूत्राते, कौ १०६। सूर्क् — मुच्छी, स्वा, प। १मो इ:।

, ३९च्छाय:। वृद्धिः। व्यक्तिः। सूच्छेति। च्योतसाच्छलेन मूर्च्छन्ति यहुगाः प्राप्तानकाने, कवि २३८। प्रासी-चये मूर्च्छति मार्गतस्य न रंडः, र २, ३१। सूर्च्छन्यमी विकारा: प्रायेगै खर्य-मत्तानाम्, शकुष्, ट्या सम्बूच्छं। मृचिंता। सूर्चिष्यति। श्रमूचीत्। तेनामुच्छींदसी चतः, भ १५, ५५। मुम्बिषित। मीमूच्यति। मूर्च्य यति। अमुमूर्च्छत् वीणावादनम्। बीणां मूर्च्छियता, भागवतम्। मूर्तः। मूर्त्तवान्। मूर्त्ता। भावे, मूर्त्ते मूर्चिंत-सनेन। श्रारको, प्रसूत्ती प्रसूत् च्छित:। मुर्च्छित इति तारकादि-लात्। मूर्च्छा। मूः। मुरी।

मुर्व - मुर्वी, स्वा, प। बन्धनम्। मूल्-भा, प्। उ, वो। प्रतिष्ठा।

ः स्थितिः। श्रेचिति। ०ते। मुमूख। •सी। मूलिता मूल्, मुल्, चु, पः। रोपणम्। सूलयति। मोक्षयति, वो। द्रुद्ध-वत्याटनम्। निर्-विनाधनम्।

हवानि नोस्मनयति प्रभन्ननः, हितोन उन्मू जितार: कपिकेतनेन, मा ३,१४ 🛊 उभा नयति यः शब्रुनुन्यूनति तमासि च, कवि २५६ ।

मृष्-भृष्, स्वा, प। स्तेयम्।

मूषति। मोषति, यो मोषति पर-द्रव्यम्, कवि ११५ । स्त्रृषिता । सीषिता । सूषकः । सूषिका ।

मुङ्ग्तु, या। प्राणत्यामः 🔭 🧳 - सरणम्। स्त्रियते, पा १, ३, ६१ । नैकोर्डाप सियते ना:, क्वि १०५। समार 🕩 सम्बतु: । 🎮 समर्थ । समिवन सर्ताम । सरिचति । मुषीष्ट । प्रमृत । घम्षाताम्। घम्षता चम्रुद्वम्। सुमूर्षेति। सेमीयते। मर्मेत्ति । सार-यति । भमोमस्त् । भनु-भनुमस्णम्।

प्रमुख्या । मुख्या । प्रमुख्या । प्रमुख्या । प्रमुख्या । । ।

स्य-बद्रुतः । चु, घा । स्ग्

ं दि, प। अन्वेषणम्। सग्यते, सग्य-ति। यस्मिन् समयते नित्यं जनो धनम्, कवि ८०। रामो सगं सगयते वनवीधि-कास, महाना ३, ५६.। स्वायतीति कण्डादिः, की १८४। मृग्यन्तः पदवीं तथात्यकर्णा व्याधा न मुचन्ति साम्, दुर्गी 🗀 🦭

गा। मुज्-मृज्, घटा, प। ग्रहोभावः।

युदीकरणम्। माजनम्। सद्माष्टि, पा ७, २, ११४। मुद्दः। मुजन्ति, माजेन्ति। मार्चि। मार्छि तीर्थोदकै-नित्यम्, वावि ५५। हि सङ्दि। बिङ् रज्यात्। बङ् धमाटे। अस्-ष्टाम्। अमृतन्, अमार्जन्। सिट् ममार्जे। ममृजतुः, ममाजतुः। ससा-

जिंथ, मेमार्छ। बद्धान् ममाज्य मन्द्र जुश्व परख्यान्, स १४, ८२। चुट् मार्जिता, माष्टी। खट् मार्जियात, माच्चीत। लुंड यमाजीत्, अमान क्रीत्। अमार्जिष्टाम्, अमार्शम्। श्रमा-जियः, श्रमार्चः। श्रमाजीद् भवतोम रम्। श्रमाचीं चासिपतादीन्, भ । १५, १११। कमीर्गा चुन्यते। अमार्जि। मन सिमाजिषति, मिस्तिति, सिमा-र्चतीलेके। यङ् मरीस्ट चते। मर्मार्छ। णिच् मार्जधिता प्रमीस्जत्. प्रम-मार्जत्। सज्जूषु,:प। १ श्रीचम्। २ भूष-णम्ो । मार्जेयति । सार्जेत्, सार्जे-त्यालिपनेर्द्धिनान्। यो मार्जयति सा-म्बाज्यं त्रियशापत्यवाच्यताम्, कवि मार्जिता, मार्छी। सार्जि-त्वाः स्ट्राः • स्वा। स्टः। ः मार्छः । मार्जनम्। सृजा। मार्जितुम्, मार्थम्। मृज्यः, मार्ग्यः। मन्युस्तस्य त्वया माझ्ये सुन्यः ्योक्य तेन ते, भ ६, - भूद्रा परि, वि, सम् गोधनम्। सना पनयनम्। वाचां त्यागेन प्रत्याः परि माष्ट्रम्, र १४, ३४। जलेतः को पने प्रस्ता र १, ४१ | भयमः प्रस्टम, ह, है, : 8१ । प्रावासे सित्संस्ट्रेट अ ते शहर वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा मुख्-मृज्, भ्वा, प। मन्द्र इत्येकी मृड्—(पृड्) तु, प। १सुखनः।

मृड्

मधुरध्वनि:। २ इवै:, वो । संड् (संड्) क्राः प्रा रचीदः। मदनम्। २ इषः। स्डति। संड्याति। अत्रियाः स्ड्ति मृड्णाति संरख्या च ये: सदा, कवि २७१। सम्बं । सम्बत्ः। मर्दिता। मृडितम्। यम्डिला सहस्राचम्, भ ७, ८६ । मुड़: । 💮 💮 🖟 🖽 🖟 वितक्षेत्र विवेकः । स्राप्तः । स्राप्ते । स्राप्तः । स्राप्ते ।

मृग्-तु, प। हिंसा। मर्णिता।

मृणति वारणान्, कवि १०५। मृणा-लम्।

सद्-क्रा, प। चोदः। सद्नम्।

चूर्णीकरणम्। सङ्गाति, सङ्गाति दिवता द्यें यो भुजाभ्यां भुवः पतिः। कवि १४४ कि, सदान । सहीयात्। अस-द्रात्। बनान्यस्द्रात्, र १, ८५। ममदौ मर्दिता। मर्दिषात। मस्दत्:। क्रमदीत्। अमर्दिष्टाम्। अमर्दिषुः। तानमदीत, भ १५, ३५। मिमदिष्ति। मरोमृद्यते। मरोमर्त्ति। मर्दयति। प्रम-मर्दत्, धमोम्दत्। स्दित्वा, पा १, २, ७। स्ट्रितः। सर्देनम्। सर्देः। ग्राभि, प्रव—ग्राक्रमणम्। भङ्गः। दल-नम्। वि— घर्षणम्। सम्—पोडनम्। सञ्जूषिनम्।

सूध्-सधु, स्वा, ७। बार्द्रभावः।

मृश् तु, प। शामदेनम्।

स्पर्धः। प्रशिधानम्। परामगः। चिन्ता। स्थाति। समग्री। सस्यतुः। समिथि। मर्छा, स्त्रष्टा, पा ६, यटा मर्खति, संस्थित। प्रमाचीत्, प्रसा चौत्, प्रमृतत्। प्रमार्शम्, प्रमाराम्। श्रम् जताम्, की १०४। कर्मणि, मृश्यते। षमि । मिस्चिति। मरीस्थते। मरोमर्छि। मर्थयति। प्रमौर्स्यत्। मद्दा। मध्य। सरः। संप्रानम् । मग्री:। या-सर्गाः। यात्रसर्गम्। बाम्छष्टं नः वरैः यदम्, √कु २, ३१। स चमर्डीत्। सङ्खा, पा १, २,०। श्रीरवं दगरथसा बहुमामृगन्, प्रनिधं १२। परा-परामधः। ज्ञानम्। यासकत् परास्थाति, काव्यप्रकाशः। परास्थान् इषेजडेन पाणिना, र ३, ६८। पूर्वोत्तं परास्थाति। वि-परा-सर्थः। वितर्कः। प्रशिधानम्। राम-प्रवासे व्यस्थान् न दोषम्, भ ३।

स्व-स्यु, भा, प। उ, वो १

१सेचनम् । १ चमा । सहनम् । सृष्, दि, उं। समा। मर्पति। •ते। स्थति। ०ते। ममर्ष। मस्वै। मर्षिता। मर्षि-थति। वी। प्राशिषि, स्थात। मर्षि-बोष्टा अमर्बीत्। दि, अस्वत्। अम-षिष्ट। मिमर्षिषति। •ते। मरीमृष्यते। मरीमर्ष्टि। स्व. च, उ। जमा। तितिचा। मर्षयति। ०ते। मर्पति। ०ते। सृष, ग्रदन्त:। चु, प। भ्वा, ड, वो। चमा। स्वयति। स्वति। •ते। स्वः स्वभूव। स्विता। स्विष्यति। जी। धम्बोत्। धम्बिष्टा स्वयति न मृपाणां मृष्यते चोडतानाम्, यनुचितः मनुसातं न दिवां मर्वते यः। अपि शतसपराधान मधेते बाह्मणानां, सित-वसनस्तां यो मर्धयस्यागमजः॥ कवि १५। (ड) समिला, मिलला, सप्ता, पा १, २, २५। पा १, २, २०। स्टम्। सर्वितः, पा २, २। • सर्वेषम्। सर्वः। ्षप-निन्दा। षपस्यितं । वाक्यम् (त्रविसाष्ट्रम्), कौ ३५४। परि—चान्तिः। परिम्राष्ट्रित, पा, १, ३, ८२। मधोने परिम्राचन्तम् (भ्रम्यन्तम्), E, 421

मृ—क्रा, प। इननम्।

् च्णाति, शुद्धे च्णाति शत्रूणाम-खान्, कवि ०५। समार। सूर्य-रतः। सूर्णः , मे मेङ्, खा, षा। १विनिसयः।

नर प्रत्यर्पणम्। सयते। समे।
माता। मास्वते। यहास्ता मिलाते,
पा ७, ४, ५४। मेमोयते। मामाति।
मामिति। मापयति। भपमित्य। भपमाय, पा ६, ४, ७०। ३, ४, १८।
यो निङ्गेनानुमयते सत्समप्यरिचेष्टितम्, नवि।

मेट्—मेत्—भा, प। उन्नादः। मेथ्, मेद्, मेध् (मिट्र), मेप्—मेष्ट, भा, चा। गतिः।

मेव् मेव् (गेह) भ्वा, या। सेवा।

मोच् चु. प। चेपः। सोचनंम्।

मोचयति। मोचति, वो। सङ्घेषु मोचयति यस धरं मनुष्ये, कवि ४८। वि भाषान् मोचयिष्यति, भारतः।

मा-भा, प। बाहितः। बभ्यासः।

पौनःपुन्येनानुगीलनम्। मनित, पा
७, ३, ७८। मनित्त मानिनो ॰ यस्य
यगः, कित ७८। मन्नी। मन्नतः।
स्राता। सास्यित। स्रायात, स्रेयात्,
ग्रमाभीत्। सम्बासिष्टाम्। श्रमासिष्ठः।
मिन्नामित। मान्नायते। मान्नाति।
मान्निति। स्रापयिति। श्रमिन्नपत्।
मान्निति। स्रापयिति। श्रमिन्नपत्।
मान्निति। स्रापयिति। श्रमिन्नपत्।
मान्नित्। स्रापयिति। श्रमिन्नपत्।
मान्नित्। स्रापयिति। श्रमिन्नपत्।
मान्नित्तामम्, म १७, ३०। श्रपयमायती स्रोभादाभनन्यनुजीविनैः, भ
१८, १। त्यामामनित्त प्रकृतिम्, कु

सव - सच - भा,यं। मृचणम्।

्रमङ्गातः । चु, प्राःश्चिक्कनम् । प्रप-थव्दः । २ स्त्रचणम्, वो । ३ स्त्रेड्नम्, बो। स्वति। स्वति। स्वयंति। स्वयति। स्वितः। स्वयम्। स्व इलेके। स्वकादित प्रदोपः।

2 4 4

मद्नम्। मदनम्।

्र स्रदते। स्रदन्ते चरणी यस्त्र, कवि १४४। स्रदयति, घटादि:। षसस्त्र-दत्, पा ७, ४, ८५। सदा।

मुच्-मुझ्-मुचु, मृन्तु, भा, प।

गतिः। स्रोवति । श्रस्यत्। श्रस्रो चौत्, पा १, ६, ५६। स्त्रुति । श्रम् श्रीत्। स्रुचला। स्रोचिला, स्रुजा। स्रुजाः।

मेट्-मेड्-मेट्, मेडु, खा, प।

् जनादः। म्बेटित। में जित। पा— जिन् प्रामेजनम्। पुनः पुनः कथनम्। एतदेव यदा वाक्यमाम्बेडयित देव-राट्, भारत।

स्त्रच्-सुत्र्पा छेदनमिलोने। सुच्-सुत्र्-स्तुच्, स्तुन्च, स्ना, पा।

े गति:। स्तीचित । प्रस्तुचत्। प्रस्ती-चीत्। स्तुचिति। अस्तुचीत्।

स्रोक्-भ्वा, पा १ प्रवासगब्दः।

मस्युटमब्दः। २ पपमब्दः। देखोकिः, वो। बसंस्कृतकथनम्, दुर्गा। स्त्रे च्छति, विद्वान् न स्त्रेच्छति ध्तव्रतः, कवि १८७। ्रिमस्तेच्छ। स्त्रेच्छिता। स्त्रेच्छन् यति। स्त्रेच्छितः,। (अस्सुटमब्दे) स्त्रिष्टः, पा ७, २, १८।

स्ते ट्—स्ते ड्—भ्वा, पा उन्हादः। स्ते व्—स्ते ह (गेह) भ्वा, प सेवा। स्ते—(ग्ले) भ्वा, पा इपेंच्यः। कान्तिसंचयः। ग्लानिः। स्नायिति। मन्तो। तीपिष्य न सस्ततः, र ११,८। स्नाता। स्नार्स्यात। स्नोयात्। श्रम्नासीत्। श्रमासिष्टाम्। स्नानः। स्नानिः। स्नानम्।

(य)

यज्ञ्—चु, श्रा। पूजा। यच्चयते। शिवं यच्चयते भत्त्या, कवि २६७।

यज्—भ्या, च। १ पूजा। यागः। २सङ्गः । ३दानम्। लट् यजति । ०ते। पश्चना, बद्धं यजते। जिट् द्याज। देजतुः, पा ६, १, १७। इयां जय, दयस्र। र्दाजव। रेजे। रेजुर्देवान् पुरोहिताः, भ १४, ८०। तुर् यष्टा। त्रर यच्चति। •ते। भामिषि, इच्चात, पा ३,४,१०४ । यचीष्टा लुङ् प्रवाचीत्। त्रयाष्ट्राम्। त्रयाचुः। त्रयष्ट्रा त्रयचाः ताम। भयचत्। भक्नान्ययाचीदभितः प्रधानम्, स १, १२। तिद्यानयष्ट, स र, २। कर्मणि, इज्यते। प्रयाजि। सन् वियचिति। •ते। यङ् यायज्यते। यायजीति। यायष्टि। पिच् याजयति। प्रयोगन्। इष्टाः। ० इन्य । इष्टः। इष्टि:। यजनम्। यागः। इच्या। या-जवः। यष्टा। यज्ञा। यायज्वः। विवन्तुः। पदीषीत् क्षणावर्तानम् समन यष्टास्त्रमण्डलम्, भ १५, ८६।

यत्—यती, भ्वा, आ। प्रयतः।
चेष्टा। यतते, यतते धर्म एवासी,
कवि ७५। दुतं यतस्य, भ १२, ४।
येते। यतिता।: यतिष्यते। यतिष्ये
तिद्दिनयहे, भ ५, २८ १ अयतिष्ट।
भ्रयतिषाताम्। अयतिष्ठतः। प्रनष्टुः
मरुतिष्ट च, मृ १५, १८,। विस्तिः
वते। यायस्यते। यायत्ति। यत्, द्वः

[गणदर्पणः]

व। १ निकार:। परिभवः। तिरस्कारः। ताडनम्, वो। २उपस्कारः। प्रलङ्कार-णम। यातयति, वातुवत्यनिशं दिषः, कावि अर्। यतित्वा। (ई) यत्तम्। यतितः मपि इंग्रेत, दित संचित्रसारम्। यतः। प्रा-वभोभावः। वर्यं लेया-धतामहे, बीर १५। निर्-प्रत्यपेपम्। धान्धर्धनयो: अतिदानम्। परिवर्त्तः । वैर्तिर्धातनम्। निर्यातयति वैरच, कवि ७५ । प्र-प्रयक्षः । विजेतं प्रयते तारीन, मनु ७, १०८।

यन्त् -यति, चु. प्र। सङ्गोचः।

े बन्धनम् । यन्त्रयति । यन्त्रति । थन्तिनः। यन्त्रणम्। यन्त्रणाः स्नेहकादण्यः भारत। नि-वसनम्। नियमनम्। मेखस्या नियन्त्रितमधी-वामः, महाना २, ३। इधिन्वणामान-गिरे, र ७, २३।

यम् भा, प । अक्षयम्।

्विपरीतरमण्म। यभति। यवाभा येभतुः। ब्रेभियः ययव्याः यव्या यप्यति। भयापीत्। अयासाम्। भयासः। वियसति। वायभ्यते। यायव्या याभयति। प्रयोगभत्।

यम्—भ्वा, प । १डपरमः ।

विरति:। निव्वत्ति:। २ बन्धेनम्। यच्छति, पा ७, ३,००। ययाम । येमतु:। चैमिष्ठ, ययन्य । यन्ता । यस्यति । प्रयं-सीत्। पर्यमिष्टाम्। पर्यसिषुः, पा ७, २,७३। मावै, यस्यते। श्रयमि, श्रयामि। थियंसति। यंदस्यते। यंयन्ति। यम, चु, प । १परिवेष्ट्रणम्। असादेरपंणम्। र अपरिवेषगम्, वे । १वेष्ठतम्। यसः यति (बाह्मणन् भोजयति) प्रवाद्य-

पमर्पेष वेष्ट्रने च घटादिलम्, की ८६। यमयति चन्द्रम् (परिवेष्टते), को १७४। प्रन्यत, प्रायामयति (द्राध-यति) यसयति, यामयतिः अत्र हिजाय ग्रहोति, दुर्गा। यमयति विमार्गात् प्रजा राजिति कवित्। नियमयसि विमार्गप्रस्थितानात्तदण्डः, प्राक् १८। एकइस्तयमिल मूर्डजाः, युद् १। यता। • यत्य, पा ३७, ३८। यतः। बतिः। यमनस्। यमः। यामः। या-पायामः। दीर्वी-करणम्। पायकाते पाटम्, पा १, १, २८। वाषमुद्यतमायंसीत् (उपश्रहतः वान), स ६, ११८। आयच्छति वर्षे मीर्वीमसी यावद्विभित्रया, किनि २१६। प्रायामयति, वते। पा १, ३, द**८ । व्या**—व्यायामः । व्यायच्छमा-मयोस्तयोः, स ६, ११८ । उद्-उद्मा प्रवेशुरुणम् । शक्तिम्दयच्छत्, भारत्रभ १७, ८२ । प्रियपरश्रायं से बाइकुट-यक्तमानः, पनर्ध १००। निस्यमुद्यक्त-मानाः सारमधीगकामस नार्थः, भ ८, ४९। उप-विवाहः । स्त्रीकारः। ड्ययच्छते कन्याम् पा १, ३, ५६ । मोतां - प्रिला ा इयसविष्यनीपर्यमे यदन्याम, र १४, द७। खुङ् उपायत्। उणायंस्त, वा १, २, १६। यस्तान्य पायंसत जिल्लराणि, भार, १६। मि-नियमः। यासनम्। सखिषस्वया नियस्याः, र ३, ४५। सम् वश्वनम्। संयम: योगः। वैशान् संबस्य, भारत । वानरं मा न संयमी:, भ ८, ५०% दाखा मार्का संयुक्त कामकः (दाखे ददाति),या २, ५४, ७५। यस—यसु, दि, प। प्रयक्ष:।

वेष्टा। यस्ति। यसति। संग्रस्ति।

संबस्ति। अत्यव, प्रयस्ति। ्पा । ययाम । येमतः। यसिना । अयमत्। (अयसत, अयसीत्, अयासीत्, वो) यियसिषति। ,यायस्यते। यायस्ति। यामयति। प्रयोयसत्। (उ) यसिर्वा। यस्वा । यस्तः । मा-मायासः । खेदः। षायस्यमि तपस्यन्तो, भ ६,६८। (जिच) पीडनम्। पायामयति। १ते. धा १, ३, ८८। प्र—प्रयास:। उनः युन: प्रायसदुत्रभवाय पः, ने १, १२५। ा बा—श्रदा, प । गमनम् । प्राप्तिः । :: ्य वाति। अयात्। अयुः। चयान् पा र, क, १११ । व्यवीत य्यतुः वयिष्ठ, युवाय । योवन । याता । यास्यति । प्रवासीत्। प्रवामिष्टाम्। प्रवासिषुः। थियास्ति॥ है यायायते। हा व्यायाति ।

यायेति। 🤛 यापयति । 🐃 षयीयपत् । याला। श्याय । ११ यातः। यानम्। यातव्य:। यायावर:। प्रति-प्रति-क्रमः। धतुः भवाणं कुत्र मातियासीः, भ २, ५१ । यतु सहगमनम्। निध-नेऽप्यनुयाति यः, मनु ८, १७। अप-प्रवायनम् । प्राप्ता श्रीम श्राक्रमणम्। क्विरादिभियास्यमानात्, र ५, ३०। था—यागमनम्। प्राप्ति:। उद्—उदय:। इहति:। इति मतिबदयासीत्, नै २, १०८। प्रखुद्-प्रखुद्गमनम्। प्र-प्रवाणम्। प्रायादराखम्, भ ३, RAILPRING TO SEPTIME LOWER

याच् — दुवाचृ, खा, ७। याच्ञा।

प्रार्थना। भिद्या। याचित। ०ते। याचतिमान वरान् वितृन्, मनु ३, २५८। यायाच । •चे । ययाचुरभयम्, भ १४, १०५। याचिता। याचित्रति। ०ते। प्रयाचीत्। प्रयाचिष्टा कर्मणि,

याच्यते वरं देवः। अयाचि । यिया-चित्रति। •ते। यायाच्यते। यायाति। याचयति । श्रययाचत् । याचित्वा । ॰ याचा । याचितः। याचनम्। याखा। (ट) याचयः। याचित्रमम्, वो। याचः मानः श्यवं सुरान्, स ६, ८।

यु यदा, पा १मित्रपम्।

्यमित्रणम्। युज्, क्राः, उ। वन्ध-नम । योति। युतः। युनाति। युनोते। योति वाले कुलस्त्रीभिः चैत्रमलान-वृद्धि। युनाति यौवनस्थोऽप न वैस्था-बन्धकोजनैः । कवि १८५ । युगाव। युर्वे । यिता । यतिर्थात् । यूयात् । चयावीत्। क्रादिरनिद्। योता। योष्ट्रति। ब्रेग प्रयोषीत्। प्रयोष्ट्र। कर्मीण, यूयते। अयावि। सन् यिय-विषति, पा ७, ४, ८०। युयूषति, पा ७, २, ४८। क्राा, युयुष्रति। •ते। योग्यते। योयवौति। योगोति। याव-यति। प्रयोगवत्। यु, चु, पा, वी। निन्दा । यावयते । युतः । युतिः । यवः नम्। यवः। यवितुम्। घदा, याव्यम्, पा २, १, १२६। योतम्। युङ्—युगि (जुगि) स्वा, प।

वजनम् । युक् 'पुक् सुक्, स्वा, प। प्रमादः।

युज्—दि, घा। समाधि:।

समाधानम्। चित्तद्वात्तिनिरोधः। योग्यभावः, दुर्गा। युनिर्, र, योगः। सङ्गतिः। युज्यते योगौ। येन युज्यते लोके बुधस्तत् तेन योजयेत्, हितो। तैलोकासापि प्रभुतं त्वयि मुख्यते, हितो। भ पादैः प्रष्ट ज्यातपूज्य में युज्यतार्कः (नार्हत), सा a. २ । युनिता युङ्काः । युद्धन्ति । युङ्को । युद्धते। यमं युनज्मि कालेन, हि युङ्ग्धि। ख. ₹9.1 युङ्ख। निङ् बुद्धात्। युद्धोतः। लङ् प्रयुनक्। प्रयुङ्का। लिट् युयोज। युगुजे। युगुजुः स्यन्दनानस्रो, भ १४, ८०। गब्दो महाराज इति तस्मिन् युयुजे, र १८, ४२। तुर्योता। खर् योच्यति। अति। प्राधिषि, युज्यात्। युत्तीष्ट । लुङ् भयुजत् । प्रयीचीत्। पयुजताम्। पयौक्ताम्। पयुक्त। प्रयु-चाताम्। कर्मणि, युज्यते। प्रयोजि। स सद्गुनः क्रतोरश्रेषेण फलेन युज्य ताम्, र ३, ६७०, प्रजिताधिगमायः स मन्त्रिभियुँयुजे (सङ्गतः), र ८, १७। सन् युयुचिति । •ते । यु योयुच्यते । योयोत्ति। युन, चु, प। संयमनम्। वस्वनम्। चु गाः, वो। निन्दा। योज-यति। योजति। प्रयोचीत्। योज-यते। युक्ता। ०युज्य। युक्तः। युक्तिः। योजनम्। योगः। योत्रव्यः। योज्यः। योग्यः। युनन्नोति युङ्। युज्यत इति युक्, की १६५। प्रनु—प्रत्योगः। प्रश्नः। साचिणोऽन्युस्तितं, मन् द, ७८ा व प्रसि क्यिंसियोस: № विवाद: । ब्रसियुङ्तो, की २५५। मा संबस-क्त, प्रशंसा। तुरगानायुद्धन्, नम्। भारत। पायुक्ती दूतकमेणि, में दे, ११५। डद्—उद्योगः। उद्युत्ते, की २५५ । उप-उपयोगः । अगिः। सेवा।, उपयुङ्तो, पा १, ३,६४। षाड्गुक्षमुपयुद्धीत, सा २, ८३। नि, प्र- निशोगः। प्रेरणम्। प्रयुक्ती, पा १, ३, ६४। कार्ये गुरुखालसमं नियोक्को, सु ३ १३। परण्ययाने प्रिता मां प्रायुक्त, भ ३,५१। नियुक्तो

गुल्म प्राचाणी नियोजयित रचकान्। यो नियोजिति सामन्तान् स्व्यमानि युज्यते॥ कवि ४२। वि-वियोगः। प्रन्यः प्राचैवियुज्यतेः सितो। सम्

युत्—(जुत्) स्वा, प्रा। दीसिः। युध्—दि, प्रा। सम्प्रदादः।

युदम् । प्रभिभवेष्का । युध्यते । तुष्ट-घातमयुष्यतः भ ४, १०१। युष्यते चीर राजा (हन्ति) दुर्गा। को हि दखेत युध्यति, इत्यादी युधिसच्छतीति काच् की १३०। युगुने। योदा। योत्यते। युत्सीष्ट । प्रयुद्ध । प्रयुत्साताम् । ष्युक्षतः तेऽयुक्षताइवे, स १५,३५। युवसते। योयुध्यते। योयोडि। योष-यति। प्रययुधत्। एकः प्रतं योषयेत् प्राकारस्यः, मनु ७, ७४। योधयिषातिः मंग्रामे राजानम्, भ १६, २८ । युद्धाः । • युध्य । युद्धम् । योधनम् । योधः । युष्। योजा,। योज्ञ्यम्, । नि नियु-इम्। बाहुयुद्धम्। प्रति-प्रतियुद्धम्। कणं भीषामिषुभिः प्रतियोत्सामि गो २, ४।। को दुर्खीघन यता प्रतियी-भवितुं र्गे, भारतः। 🔑 (१०१०) 🔰

धुन्य-(पुन्य)।

युष्-युषु, दि, प्रावि**सो चनम्।** यूष् 'जूष् भूष्' भ्वा, प्राविशः। येष् (येषु) भ्वा, प्रान्वो । यतुः । योट्-'योड्' भ्वा, प्राः योगः ॥

1175 2 12 6天本 118 2

रक्—चु⊭पः।खादः। राकवति। इन्—स्ता,पः। रपाननम्। ् रचणम्। चितनाथनम्। २ रोषः। इत्रंघातः। रचति। प्रात्मानं रचेद्दारे-

्रांष धनैरपि, मनु ७, २१३। सर्व १ नात सन्त्रच संप्रतांच समोदर, मारत।

स्रच। रचितां। रचिष्यति। श्ररचीत्। स्वरंचिष्टाम्। श्ररचिषुः। रपेऽरचीद्रा-

बराच्छाम्। पराच्युः। रणऽरचाद्राः चर्चान्, म १५, ८०। कर्मणः, रच्छते।

चरिचा कार्कस्या रच्यतासन्त्र । दिर-चिष्रति । रार्र्क्यते । रार्रष्ट । रच-

यति। अररचत्। रचिता। ०रस्य।

रचितः। रजणम्। रक्ता। रक्षः। रख्—रङ्क् —(इखि) स्वा, प। मतिः।

्रग्रारी, स्वा, पः। शङ्काः

रगित। रराग। रगिता। (ए) घर-बीत्। रमयित, घटादिः। रग्, रघ् (रक्) चु, प। स्वादः। प्राप्तः, वी। रागयित, राधयित, वी।

ं रङ्, राम (व्यति) स्वां छ। मृतिः।

रेक -रेचि, था, पा। मति:।

रङ्गते। ररङ्गी दारं ररङ्गतुर्धास्यस् (परकोपदं चिनवस्), स १४, १५।

रिष (प्रजि) चु, प । दोप्तिः। रच्चयति । रच-प्रदन्तः। चु, प । रचना ।

प्रथमम्। करणम्। रचयति। पर-रचत्। रघयति गयनम्, गीतमा ७, २३। मया रचितोऽस्त्रस्तिः, रामा। तैन च रचितो राजा, भ १२, ३७। विस्चितानुक्ष्यत्रेगः, र ४, ७६।

रच्च-रन्ज् स्वा, दि, उ। १ राजः।

श्रमुगागः। श्रासिक्षः। २ वर्णान्त्रशिया-दनम्। रज्ति। । ५ते, या ६, ४, २६।

रज्यता वते। चित्तं रजति नारीवां स्वयं ता अनुरज्यते, कवि २६०। वर्ष्णा। राज्ञियं, राष्ट्रया रर्ष्णे। रङ्गा। रङ्च्यति। वते। वर्ष्णात्। वर्ष्णेष्ट।

भराङ्गीत्। भराङ्काम्। भराङ्गः। भरङ्काः भरङ्काताम्। भरङ्कतः। कर्मणि, रज्यते। भरिङ्काः कर्मकर्त्ताः, रज्यति। वर्ते, पा ३, १, ८०। रिरङ्कातः।

्ता रारच्यते। रारङ्क्ति। रच्च-यति। (स्गरमचे प्राखेटके) रजयति

स्मम् (मारयति), घटादिः । अन्यते,

रञ्जयति पचिषः। रञ्जयति समान् तृषदानेन, को १८६। रङ्का, रक्का,

पाइ, ४, ३२ । ०रच्य । रताः । रतिः । रच्चनम् । रागः । रङ्क्तव्यम् । रचनः ।

रजनी। पनु—पनुरागः। स्नाहं-भाष्योवां योऽनुरज्येत कासतः, मनु ४,

१७३ । स्थमन्वरच्यदतुषारकरः, सा ८, ७ । चप—विरागः । उप—उप-रागः । राष्ट्रगासः । वि—विरागः ।

त्रट्-रठ, स्वा, पावश्नम्।

रटित । रहित । माधे मासि रटन्छणः, स्मृतिः । रराट । रेटतः । कन्मा

रेटुः, भ १४, ४ । रिटता । परटीत्, पराटीत् । विश्वासाराटिषुः विवास

म (१) २७।

रण्—(चण्) खा, प। मञ्दः।

रणित। रराण। रेण्तुः। रिणिता। अरणीत्, अराणीत्। रिरणिवित। रंग्छते। रंग्छ। राण्यति। अरी-रणत्, अर्ग्यकृत्। रण् (कृष्) स्ता, पः। गतिः। रणित्। रण्यति, घटार्थः।

्र्ट्—स्वा, पा विशेष/तम्। मेदः।

्रदिति। रिद्रमा। यदः । रहनः।

रध—दि, प। १ हिंसा।

रिनिष्यतः। ३पातः, वो। सर्रध्यः त। लिट्रास, पा ७, १, ६१। रर-बतुः। रास्थिय। •ररहा रास्थिः, ध्व। ररिश्वम, रिश्व। लुट् रिधता, हा, पा ७, २, ४५। स्टर्सिष्यति, त्यति। तुङ्गाधत्। पङ्जिम्। निदितामिति ननीपः, की १४०। प्रस्ति, वो। कर्मणि, रध्यते। प्रस्ति। वन रिरधिवति, रिरत्मति। यङ् रारध्यते। रार्डा जिच् रस्याति। प्रस्मित्। रिधिता, रहा। ० व्यः । रहः। रस्यनम्। रस्यः। रिधितुम्, रहुम्। बच रिधतुमारिमे, म ८, ३८। कास रिधिवान् ।

रप् स्था, पा उत्ति:। रपति। रफ् रम्फ्, रिफ, खा, प्रा गतिः। बधः, वो। रफति। रम्फति। વર્ષાતે' ા

रम्—्साः, पा। रामस्यमः। जत्मुकोमावः, दुर्गा। .fa विचारप्रे-हितः, गोविन्दसदः। रभते। रिम्ने। इच्छा। राष्ट्रधते। रखोष्ट्रा घरव्य। प्रभाताम्। घरपत्। कर्माण्, रभ्य-ते। परिक, पा ७, १, ६३। सन् रि-पाते, पा ७, ४, ५४। यङ् रास्थते। रारकीति, रारख्यि, पा ७, १, ६२। णिच् रक्षयति। अररकात्, पा ७, १, १३। रब्याः ॰ रस्य। रसः । रक्षणम्। रक्षः । रक्षो। रक्षम्। रक्षयम्। प्रा - प्रारमाः। सारव्या बिलिवयहम्, भ ५, ३८। पेष्टुसारिक चितौ, भ १५,५८। परि - परिस्मः। प्रालि-इनम्। इमां जतां त्वत्पाप्तिबुद्या परिरम्भानः र १३, ३२। सम् संर्भाः। वापः।

रम् –रमु, स्वा, चा। क्रीडा।

रमणम्। प्रासक्तिः। रसते। रेमे। बखीनां सध्यगता रॅमे, कु१, २८। रन्ता । नंद्यते । रंघीष्ट । चरंद्धा चरं-साताम्। घरंसत्। व्यरंशीत्। व्यरं-विष्टाम्। स्वर्रामुषुः, पा ७, २, ७३ व प्ररस्त नीती, भ १, २। मा रखाः जीवितन नः, भ ६, १५। रिरंसते। र्रम्यते । रंरन्ति । रमयति । घरीरमत् । कामपि रमयति रामाम्, गौतगी । ४६। मधीगम्बे हचातुर्यो राजानं रम-यामास सा, भारत। रत्वा। रिमला। रान्ता, दुर्गी। •रत्य। •रम्य। रतः। रतिः, पा६, ४, ३७, ३८। रमणन्। रामः। रमः। रन्तुम्। रन्तव्यम्। रमणीयम्। रमणः। पतु, प्राप्ति, पा प्रामितः। प्रतीषु राजाऽभिरेमे, भ १, ८। पारमति, पा १, ३, ८३। पारमन्तं परं सारे, भं ८, ५३। उप-निव्यक्तिः। सर्वम्। उपरमति। ॰ते, पार, ३, ८४, ८५। खवारसि की-वितात, नाव सौतेल्युवारस्त, स ८, ५४, ५५। देवदत्तसुपरमति (डपर-मयति), संचित्र। चर्ष पर्यरमत्त्रस्य दर्भनात्। (तुष्टिमातस्वत्), म प्रंप्र वि निवृत्तिः। विश्वतः। विश्वति। व्यवंसीत सतासर्वेभ्यः, भ १, २१ । ।

्राब्-रभ्-रवि, रभि (विवि)

भ्वा, आ। ग्रब्दः। रिवि, र्वि, रिवि, रिवि, भ्वा, पा शतिः। दस्वते। रकाते। रखति, रखति। विखिति, रिखति।

triapp in the spaper ं रय्-भ्वा, प्रा। गतिः। रयते।

रस् (तुस्) स्वा, प। शब्दः।

त्रमित। रसन्ति मधुरैः कग्रहैः पतत्रिणः, कवि २०१। रसत्। रसन्।,
गातगो १०, ६। ररास। रसतः। प्रवृषं
ररास, र १६, ७८। रेसः पदातयः,
भ १४, ८। रसिता। रसिष्यति।
प्रसीत्, प्रासीत्। गोमायुसारक्रगणा
भीममरासिषः, भ १, २६। दिरसिषति। रारध्यते। रारस्ति। रासयति। प्रीरसत्। रसित कोकिसे,
मा ६, ७०। रस, पदन्तः। चु, प।
१मास्वादनम्। २सेइनम्। रस्यति।
रस्यन्ति सुखायानि तत्करप्रतिपाकिताः, कवि २०२। परस्त्। रसितवती मद्यम्, मा १०, २७। रिरस्थिषति प्रष्यम्, मा १९, १९।

ा वर्ष्ट्रानेग्राह्य, प्राह्म सहस्तः।

चु, प। त्यागः। रहति। राहयति। धरीरहत्। रहयति। घररहत्। रह-यत्यापदुपेत सायतिः, भा २, १४। विरर्हयन् सम्बयाद्भिम्, र ८, २६। रहत्यविदुषां सङ्गं रहयत्यप्रियं सदा, कवि २६२।

रंष्-रिंद, स्वा, प। गति:। रंडति। ररंड। ररंडाखकुद्धरम्, स १४, ८५। १ रंडिखिता रंद्धात्। घरं-डोत्। रिंड (प्रजि) चु, प। दीप्ति:। रंडयित। र्रंड, पदन्तः। चु, प। गति:। न्रंडयित, वो।

रा-घदा प। १ दानम्।

े प्रहणम्, बी,। राति। न राति रोगिणेऽपर्यं वाञ्छतेऽपि भिष्ठकृत्मः। भागवतम्। ररी। रीता। भरासीत्। राख्—(द्राख्) राघ् (द्राघ्)।

राज्-राजु, स्वा, उ। दीप्तिः।

योभा। राजित। ०ते। ति दिव राजिस, गीतगी ४, १२। राजित भैमी सर्वाभरणभूषिता, भारत। रगान। रराजे। रेजे, पा ६, ४, १२४। तास्ती-त्पर्लान रेजुः, भ २। राजिता। राजिष्यति। ०ते। घराजोत्। घराजिन ष्ट। रिराजिषिति। ०ते। राराज्यते। राराष्टि। राजयति। घरगाजत्। रा-जितः। राजनम्। राजा। राट्। वि— स्दीसः। नभीगता देख इव खरा-जन्, मा ३, ४३। निर्, णिच्—निर्म-व्हनम्। नीराजना।

राध्-दि, प। मंबिद्धिः।

निष्यत्तिः। राघोऽकमैकादेव भ्यन्। राध्यत्वीदनः (सिध्यति)। अण्याय राध्यति (क्षण्य दैवं पर्यालोचयति), को १३८। कविरहस्ये स्वर्मकार्दाप यान् दृष्यते। याञ्चनानि च राध्यति को ११४। रराध। रराधतुः। रराधिय। रादा। राध्, स्वा, प। निष्पाद-नम्। राष्ट्रांति बोदनम्, दुर्गा। रराध। रंगधतुः। (हिंसायाम्) रेघतुः। रेघि-य, पा ६, ४, १२३। वानरा भूधरान रेघुः, सं १४, १८। राजा। रात्स्वति। परात्मीत्। प्रराहाम्। प्ररात्सः। रिरात्सति। (हिंसायाम्) रित्सति, को २०३। राराध्यते। राराद्वि। विच् राधयात। प्रशेरधत्। प्रयं चुरादिय, को १३८। बाराध्य सपतीकः सुरमें: सुताम्, र १, ८२। राष्ट्रा । असंध्या राहि:। राधनम्। राह्म्। अप-अप-राधः। द्रोहः। प्रनिष्टाच्यमः। दिसा चन्नहामपराध्यति, मा २, ११। स नापसभिति सिद्यानाम्, भारता स्रास्त्र प्राच्यासमुर्गुरुम्, र १, ५५। अद्यः सुखसाराध्यः सुखतरमाराध्यते विभी-पद्यः, दितो। दृष्यसाराध्यमानोऽपि सिन्द्राति भुवनत्रयम्, कु २, ४०। वि—प्रपकारः। द्रोहः। विराद्य एवं भवता विरादा बहुधा च नः, मा २,

राश्—रास्—(पास्ट) स्वा, पा। श्रदः। राश्रते। रास्ते। रि—(पि) तु, पा, समृतस्य।

परेषोत्। रिरोधति। रिर्धतः। रेखति। परेषोत्। रिरोधति। रेरीयते।

विख्-'रिक्' (इख) खा, पा गतिः। दिक्-रिगि (प्रिंग) खा, पा गतिः। दिख्-रिचिर, इ, उ। विरेचनम्।

स्नीकरणम्। पीनःपुन्धेन प्रीषीस्नाः, दुर्गा। खट् रिणिका। रिङ्तः।
रिञ्जला। रिणिजा। रिङ्तो। रिञ्जाते।
रिङ्तो रिपुर्यदाक्रान्ता धनः, कार्व
८८। रिण्चिम जलधेस्तोयम्, मः ६,
१६। लिङ् रिञ्चरात्। रिञ्जीत। लङ्
प्रराणक्। प्ररिङ्ताम्। प्ररिञ्जन्।
प्रराङ्ता। लिट् रिरेच। रिरिचे। लुट्
रेता। लट् रैच्यति। •ते। लुङ् प्ररिः
चत्, परैज्ञीत्। प्ररिचताम्, प्रगेताम्।
प्रराचन्, परैज्ञः। परिता। प्रराचाः
ताम्। परिचत। कमंणि, रिच्यते।
परिच्यते। रेर्न्ता। णिच् रैचयित्।
प्रराच्यते। रेर्न्ता। णिच् रैचयित्।
प्रराद्यत्। रिर्च्, चु, प। १वियोः

जनम्। १ सम्बंधः । रेच्यति । रेचित ।
रेच्यति । सम्बंधः रेचित ।
रेच्यति च यवारी सोचनान्यश्ववारिभिः, कृति ८८ । रिक्वा । ० रिच्य ।
रिक्तः । रिक्तः । रेचनम् । रेकः । रेचकः ।
प्रति—प्रतिरेकः । प्रतिग्रयः । स्वभावः
प्रवातिरिच्यते, दितो । स्वति—व्यतिरेकः । प्रतिग्रयः । स्तुतिस्यो
व्यतिरिच्यते दूरेणं परितानि ते, र
र, ११ । उद्- उद्रेकः । वि—विरेकः ।

्रिक् श्वा, पा। भजनम्। रेज्ते, वी।

िरफ् तु, प । १कत्यनम्।

श्चामा। श्युदम् । इनिन्दा । ४ हिंगा। प्रदानम् । रिफति । रिफति । रिष्ह्, रिहति। यिश्वं न विम्ना मतिभीरिङ्गि, की १५१।

दिभ्—स्या, प्रा, रवः । रेभति, वो । रिफ् (ऋफ्) रिक्ष् दिख् (रक्ष) । रिक्—(देश्) तु, प्रा, दिख्

रियति। दिरेग्। रिरियतः। रेष्टा।
रेषति। प्रशिवत्। रिरिवति। रेरिः
स्रते। रेरेष्टि। रेग्यति। प्ररोरिः
यत्।

रिष्—(कष, रुष्) भा, दि, ए।

हिंसा। रेषति। रिष्यति। निरेष।
रिरिषतः। रेषिता, रेष्टा, पा ७, २, ४८। रेषिष्यति। प्ररेषीत्। दि, प्ररिष्यते। प्रदेषे। रेरिष्यते। रेरेष्टा रेषिष्यति। प्ररोदिषत्।

रिइ—(रिफ्) खा, प्र। वधः, वी।

री—रोड्, दि, था। श्यवणम्।

ः चरणम्, वो। विरो, क्या, पे।

श्वतः। श्वकणब्दः। श्वथः, वो।
रोवते। रिणाति। रिराय। रियो।
रेता। रेवित। वी। रोयात्। रेविष्ट।
विरोवते। प्रदेष्ट। णिच् रेपयति, पा
७, श, १६। ता, रोणः।

क च

रीव् रीह, बा; उ। प्रचणसंहत्योः। द-दङ्, आ, पा। श्गतिः।

र्शिमा। के, घटा, प। रवः। लट् रवते। रौति। रवौति। इतः। इवौतः। दवल्लि, पा ө, ३, ८८, ८५। लिङ् क्यात्, क्वीयात्। सङ् चरीत्। चर-बीत्। जिट् बराव। दरविष्य। ददवि। क्षत्वाणिवं जिवाः, स १४, २१। नुद्रविता। छद् रविष्यति। ०ते। पाणिषि, रुयात्। रविषीष्ट्र। बुङ् अरावीत्। अराविष्टाम्। अराविष्ठः। परविष्ट। (रोता, रोखति, बरोधीत्, वो) । सन् बृद्धित । •ते। यङ् रीकः यते। चोरवीति। रोरोति। णिच् रावयति। प्रशेरवत्, पा ७, ४, ८०। रावयामास स्रोकान् यत् तसादावण ष्ठचते, भारत। क्ला। •क्ला। क्तम्। कृति:। रव:। रवणः। विराव:। संराव:। ंबा, वि—उच्चै गब्दः। रोदः नम्। स्नाता विरोति ते, भ ५, ५४। विरीमि शुन्ते, म १८, २८।

रूच्-भ्या, मा। (दीपि:।

्रेश्वभिष्रीतिः। श्रन्यकर्तृकोऽभिकाषो विद्याः। देवदत्ताय रोचते मोदकः, पा १,४,३३। वृत्ते। रोचिता। श्रव्यत्। श्रदोचिष्ठ, पा १, १,८१। वृत्त्विषते। वृरोचिष्ठते। यङ् निषेधः। पिच् रोच-

यति। वित । अक्ष्यत्। वित । नारी-चयतात्मानम् भ ८, ६४। यदि वासं रोचयत गुरोः किली, मनु २, २४३। रोचित्ना, किल्ला। किलाः। रोच-नम्। क्षः। रोचना। रोकः। वि— दीप्तः। विक्वचे क्षविष्टतभूभिषु, र ८,५१। व्यक्ष्यन् कुमुदाक्षराः, भ ८,

दुज्—दुजी, तु, प। भक्ष:।

रोगः। क्जिति रोगबीरस्य। नदी

क्किशिन क्जिति, पा २, ३, ५४। तस्य
धर्मरते रोगा न क्जिन्ति प्रजामिष,
किवि १८६। करोज। क्किजुईरिराचसाः,
भ १४, ४८। रोजा। रोज्यति।
रावणस्येच रोज्यन्ति कपयो भौमिनक्रिमाः भ ८, १२०। प्ररोचीत्। धरीज्ञाम्। धरीजः। क्विचित्। रोक्ज्यते।
रोरोज्ञि। रोजयित्। धक्किज्यते।
रोरोज्ञि। रोजयित्। धक्किज्यते।
यः क्जिज्यते। रोजयित्। क्किज्यते।
यः क्जिज्यते। रोजयित्। क्किज्यते।
रोगः। क्जा। रोगी। धर्मारस्यं विक्
जित गजः, प्रजी १, २१०। विक्कोटप्रधारायः कुल्याः, भ ४, २५।

ु बट् कर्ट, स्वा, आ। १प्रतिचातः।

योकादिना पतनम्। पुनर्छननम्,
दुर्गा। २दीप्तः, बो। कट् (कष्) चु, पा
१रोषः। २दीप्तः, बो। रोटते। रोटते,
वो। अवटत्। अरोटिष्ट, पा १,०३,
८१। रोटयति। कठ, बा, प। परिभाषणम्। कठ् (उठ्) स्वा, प। उप-

्र वर्ट्—'क्षड्' स्वा, प्र। स्तेयम्। ्र वर्द्ट्—(चुंगड्) क्षड् (गुंगड्)। ा बद्द-इंदिर् ग्रदा, या बोदतम्।

अञ्चिमा वनम्। अञ्चितिमा चनमात्रे-उनमें का: । बाह्य निविधिष्टरोदने हैं स्वतमेतः। रोदिति, पा ७, २, ७६। कदित:। वदन्ति। हि, वदिहि। ब्दात्। अरोदत्, अरोदीत्, पा ७, इ. ८८। यहिताम्। प्रदर्ग। चरोदः। प्ररादीः। चरोदीद्राचमानीक-मरीदव्युनी पति:, म १७, ४८। करोद । करदतुः। करोदिय। रोदिता। रादिष्यति। अरदत्, अरोदीत्। अर्-दताम्। अरोदिष्टाम्। अवदन्, अरो-दिषु:। नामगाइमरोदीत् सा स्नातरी, भं प्र, प्र। व्रजाखिसिंह मा चंदः, भ ४. ३८। भावे, बदाते। परोदि। वर-दिवति, पा १, २, ८। येड् रीव्यते। रोरोत्ति। णिच् रोदयति। अक्तदत्। वदिला। व्यव । वदितः। रीदनम्। क्ट्र:। अनु चोर्कः। अलिपङ्क्तिगैर-योकामनुरीदितीव माम्, कु ४, १५.। खपा-विनाप:। श्रीकः। कुंमुद्दतीमुपा-बरोदेव तीरततः, भ २, ४। प्र-डचेरोदनम्। राच्यः प्राक्दस्चैः, भ 190,081

वध्-दि, या। यभिनावः।

प्रयमनुपूर्वः प्रयुक्तते। किथन् क्, छ। प्रावरणम्। रोधः। सट् पनुक्त्यते। प्रमुक्त्यस्य मा प्रमुगक्त्यतम्, वीर ६३। कृणित्, पा ३, १, ७८। कृत्यः। कृत्यत्ति। कृणित् पा ३, १, ७८। कृत्यः। कृत्यति। कृणित् रोदमी कोस्या स्वनुमानम्, म ६, ३५। यादवास्त्रोनिधीन् कृत्ये वेलेव मवतः समा, म् १, ५८। लिङ् कृत्यात्, कोट् कण्डां कृत्यः। कृण्यानि। लङ्

पर्यत्। परमाम्। परमान्। यरुगत्। प्रसम्। अक्षः। यह्ने। यहेनाताम्। यहन्तरा यहन्त किल स्त्री बल्लभस्य क्रमासकराभ्यास, मा १०, ६०। लिट तरीध। तरीध्या क्र्च। तमुदद्रन्तं पथि भोजकन्या करोध राजन्यगणः, र ७, ३५। लुट रोडा। खट् रोत्स्वत्। ०ते। मानु-रोत्स्ये जगन्नस्मीम् (नामियिष्ये), स १६, २३। आश्रिषि, कथात् । बत्-मोष्ट। लुङ् अवधत्। अतीत्यीत्। परीहाम्। अरीत्सः। अत्ह। यहत्-साताम्। अद्वसत्। अरीव्भीत् स पुरीसिमाम, मा २, ३८। पुर नः परितीरक्षत्, म १५, १०। कर्मिण, कथ्यते। परोधि। सन् कक्सति। •ते। यङ् रोतध्यते। रोगीदि। णिच् रोधयति। श्रक्षवत्। कृषा। • कथ्य। कदः। रोधनम्। रोधः। रोडा। रोडव्यम्। अनु-अनुक्तनम्। यनुरोधी उनुवर्त्तनिस्त्यमरः। व्यमनु-बुध्यन्ते भवन्तोऽपि, श्रन्धे ८। अप-घवरोधः। घवरणिं या विजम्, पा १, ४, ५१। शोकं चित्तमवी द्वत, भ ६,८। या-यात्रणम्। बन्धता ग्रचमा-क्षत, स १७, ४८। उप-निर्वेग्धः। निवारणम्। निवेधः। आच्छोदनम्। नागैरन्यानुषक्रीध ४, ५३। रेगु-क्वकरीय सूर्यम्, र ७,३८। कासु-परीदं नाभ्युक्सहे, र ६,२२४ नि— निरोधः। नियमनम्। न्यार्कसंबद्ध पत्यानम् सं १७, ४६ । प्रति-प्रति-रोधः। वि—विरीधः। प्रतिकामः। श्रुतिस्रतिविरोधे तु श्रुतिरेव गरी-यसी, सातिः। संग्-प्रतिबन्धः। जिय-मनम्।

ब्य-(युपु) दि, प। विमी इनम्।

क्य तु, पाइननम्।

क्यति। वरीय। रोष्टा। रोचति। पर्वत्। वर्वाते। रोक्यते। रोरोष्टि। वंग्—क्यि (अजि) चु, प। दोप्तिः। वंगयति। वंगति।

बच्-(कव) स्त्र, प। हिंसा।

क्ष, दि, चु, प्रोषः। क्रोधः। द्रोषति। क्ष्यति, यस्मे क्ष्यति तस्यासी क्ष्यति। क्ष्यति, यस्मे क्ष्यति तस्यासी क्ष्यति। क्ष्यति तस्यासी क्ष्यद्रवर्षेच्य राविष्यः, स १७, ४०। क्रोषे। क्ष्यतः। रोषित्या, रोष्टा, पा ७, २, ४८। रोषिष्यति। अरोषीत्। दि, प्रकृषत्। मा क्षीऽधना, स १५, ५६। योषुं सोऽप्यक्षच्छ्वोः, स १५, ५२। क्षिप्यति। क्रो०। रोक्ष्यते। रोरोष्टि। रोषयति। क्रक्ष्यत्। रोषित्वा, क्षित्वा। ०क्ष्य। क्षितः। क्षः, पा ७, २, २८। रोषणम्। रोषः। क्ट्।

कह्—भ्वा, प। १वीजजन्म।

जन्पत्तः। रपादुर्भावः। स्पूर्तिः।
रोहति। याद्यसुप्यते योजं तादृग्
रोहति, मृजु ६, १६। करोह। कक्ष्वतुः। क्रोहिय। रोहा। रोज्ञति।
यक्षत्ता। भावे, क्ष्यते। प्ररोहि।
कक्षत्ता। रोक्ष्यते। रोरोहि। रोहयति। रोपयति, पा ७, ३, ४३। प्रद्वचेषु देशेषु द्वानरोपयन्, रामा।
कृष्वा। क्ष्या। कृदः। कृदः। रोहयम्। रोहः। रोद्यम्। रोहणोयम्।
प्राप्ति, प्रा—पारोहस्यम्। रथवरमिषकृष्ण, भ ५, १०६। योजमाक्रोहाक्ष-

साधनः, र ४, ७४। (खिच) पारीपथम्। धासञ्जनम्। धन् धारोपयाश्वमुराववङ्ग रथादिषु, स १४, ८। धव
— धवतर्थम्। तीमवारोष्टयत् पत्नीम्,
र १, ५५। प्र— डत्पत्तः। न पर्वताग्रे
निलनोः प्ररोहति, सच्छ १२३।
प्रति— थिच् प्रतिरोपणम्। श्वनुबृख्य
प्रतिरोपयन्, र १७, ४२। डत्खातान्
प्रतिरोपयन्, नवरत्नम् ८।वि, सम्—
खननम्। विकद्श्रष्यं गह्नरम्, र२, २६।
प्रेसदुमाः संववहः, स ११,५।

क्च — घरनाः। चु, प। पारुष्यम्।
घिस्यभीभावः। क्चयित नैयः,दुर्गा।
कृष — घरनाः। चु, प। कृषकरणम्।
कृपदर्भगम्। कृपयितः। धनु — घनुकरणम्। नि — निकृषणम्। खक्ष्यक्यमम्। निर्णयः। निष्ययः। दर्भगम्।
प्रय दायभागो निकृष्यते, दायभा २।
न च रामं न्यकृपयत्, भ १७, ६५।
इतस्तोः निकृपयद्धः भावनास्थीन
प्राप्तानि, हितो। वि— विकृपनरणम्।

क्ष्—स्वा, प। भूषणम्।

क्षति। कंष, घदन्तः। चु, प, वी। विस्तुरणम्। क्षयति। घरक्षत्। रेणुकंषितः।

रेक्-रेक्क, भ्वा, था। यद्वा।
रेक्-रेकु (एजु) भ्वा, था। दीतिः!
रेट्-रेटु, भ्वा, छ। कद्यनयाचनयोः।
रेप्-(मेप्र) भ्वा, था। मृतियब्दयोः।

रेभ्—रेस, खा, था। यब्दः। रेव्—'रेह' खा, थां प्रुतगतिः। [मणदर्पेषः]

रैष्—रेषृ। भ्वा, घा, वो। हक्यण्दः। मध्यग्रन्दः, वो।रेषते।

रै—भ्वा, पंै। यद्यः। रायति । ररो । ररतुः। राता। रोड्—रोड्—रोट्—रोड्,

्रेका, प्र। रेडकादः । २मनादरः, यो। रोडति । रीडु, रीटु, यो । स्वा, प्र। प्रनादरः । रीडति । रीटति ।

(ল)

ज्ञक्—चु, प। पास्तादनम्।

restriction Corre

बच्-चु, उ, वो। १दर्थनम्।

ज्ञानमा २ अङ्ग्नम्। चिक्रीकरणम्। बच्च (प्रम) चु, जा। पालीचनम्। कचयति। •ते। चरितान्यस्य बचय्, भारत। यद्भेलेचेय ता गा जचवामास, भारत। न चीमावष्यतस्रोताम्, स १७, १०६। जचियता। । । अस्य। बचितः। बचणम्। बचणा। अनः। हन्तः। पा-पालोकनम्। ज्ञानम्। मद्नावानेयमानच्यते, प्रकु ३, ४८। छप-जानम्। पनुभवः। सम्यग्री-बचितं भवत्या, शकु, १, १८३। (विशे-ष्रयम्) वेशेरपलचितः। (लचणया बोध:) काकेस्यो स्थातामकसिखादौ दध्युपचातवर्त्तृत्वेन म्बादिक्पलस्थते। वि-विद्यायः। विज्ञाचितिस्रातसुधाः मुखाननः, नीतनो २, १८। सम् सम्यग्दष्टि:। परीचा। हेन्न: संबू-खते द्यानी विश्वविः स्वामिकापि का,

The to transfer to the De

लख्—लङ्ग्, लखि, भ्या, य । मतिः । लग्—लगे, भ्या, प । सङ्गः ।

मेबनम्। जगति। इंसस्य प्रवासगिति स्रो, ने ३, ८। जजाग। लगतः। जगता। (ए) अलगौत्। जगयति, घटादिः। जग्, सु, प, वी। १स्वादः। २ फ्रांसिः। स्र, जग्नैः असते। अन्यतः लगितः।

बङ्ग-समि, (प्रमि) स्ता, प्रमि

श्यतिः। २ खद्धाः, वो। सङ्गति। सम्बद्धाः । सङ्गिताः

सङ्—सचि, भ्वा, ए। १श्रीषणम्।

घल्पीकरणम्। २मृतिः, दुर्गा। सचिन् स्वा, घा। १गति:। सङ्गनम्। २भोजन-निवृत्ति:। उपवास:। लङ्गति। •ते। न लङ्कात गुरोराचा न लङ्कयति यः खितिम्। यं व्याधिरतिदीप्तारिकं कदाचित्र न लक्ष्मिम अवि ६०। जन्दा • द्वी । सिंद्यता । अर्बद्वीत् । प्रविद्वार प्रची लबिद्धः ग्रेबान्, भ १५, ३२। लिले (इयति। •ते। लालङ्काते। लालङ्घि। लघि (क्रुप) चु, प । १ बङ्गनम् । २दीप्तिः । बङ्गयति । चलक्षत्। गिरिमलक्ष्ययत्, र ४, प्राविको अवद्गुनर्ने वितु समी-द्यत:, र ३, ४८। उट् वि—उज्ञाह-नम् । हेलोस्राङ्गतवाहिनोपतिः। व्यज-द्वयं गोष्यदवत् ससुद्रम्, सद्दीना ५,

जक् (जञ्क्)।

1 50 ,53

बज्—बज्, श्रीबजी, पोसप्ती।

त्, (सा, वो), पां सका। बीड़ा। सजती सकाते। सकाते न रसना तय,

ने भू, ११७। सेजी। सस्जी। सिजि-पुत्रचे प्राजिताः, स्म १८, १०५। मजिता। मक्तिता। भनजिष्टा, भन-जिए। जानयति। ज्ञायति। जञ् (काल) चु, प। अपवारणम्। लाजयित। बिक्तिता। ॰ नक्ता। स्वग्नः। सिक्तिः मिति लजाग्व्याचारकादिवादितच्। विगलितन जिति जयदेवकविप्रयोगस्त दु:साध्यः, गीतगो १,,३२। जीविताः, स्मीति खिज्जितित रघी १२,७५। कर्त्तरि का इति सजिनाधीलसपि चिल्यम्। सा चोरक गढंतं वसां लक्जयन्तो न लक्जिता, वीर ६६। खन्जा।

एक बज् कच्च स्राज, भ्वा, प।

्रभजनम्। २भर्सनम्, वो। सजति। मञ्जाता निज (सुप) चु, प। दोप्तिः। सञ्चयति। सज, सञ्ज, भदन्ती। चु, प। दोति:। सजयति। सञ्जयति।

कट्—भ्या, प। १वास्थम्।

्रव्यामोद्धः। २ कथनम्। सटितः। WILL THE INTEREST STREET

मेड्—ध्या, पाविकासः।

्र जडति डनयोरेकत्वसारणात् जलति इति साम्यादयः, की ५५। विजननित भनेस्तृप्ताः, कवि १८५। सलाङ। खंडिता के अलंडोत, अखाडीत्। पिच् संख्यति जिह्नाम्। जिह्नोन्मयने घटादि:। उधायनं ज्ञापनम्। जिह्वा धन्देन वहातत्पृह्वः दतोयातत्पृक्षो वा, जड्यात जिल्ल्या, की द्रश्रा बोप देवमते, सह, भा, प। १ पोडितो-भागः। २३त्विसोभावः। १ जिल्ला

व्यापारः। संडति सता वायुगा। संडति , जिहा । बर्दात जिहा सर्पः, दुर्गा। गिच् बड्यात । बड्यित लच् मुझलटत्यमून् (पीड्यति)। कपाटची-चिपात), पनघं ५१। केनासगिरि-स्वालयति (चानयति), प्रमुषं १९०। तावत् खरः प्रखरमञ्जलयाञ्चकार (उत्-पपात, सा ५, ७। अड्, चु, प। १डपसेवा। चलान्तपाननम्। नम् । २कम्पनम् । चाड्यति । चाच-यति। लालयत्यखिलाः प्रजाः, कवि १०३। जालयेत् पञ्चवर्षाण प्रवम्। वालकमुपलालयन्, शकु ७, ८८। लड्, चुं, या। १ई पा। २ लाभः। साडयते। संड, साड, प्रदन्ती। चु, प। याचेपः। बड्यति। बाड्यति। सम्बन्धः (योसंड) चु, प। उत्चेपणम्। सन्डयति। सन्डिति। (घो) ज़िक्तिः। लक्ष्यः, दुर्गा। लिख्, चु, प, वो। क्षथनम्। सण्डयति। लक्डित । स्प् (रप) खा, प। कथनम्।

बय्

् लपति, लपति सम्भया वाचा, विव १८४। लप रे, शकु ५, ८। बलाप। स्वेपतुः। स्वीपयाः सपिताः। सपि-श्रति। प्रल्पोत्, प्रलापोत्। प्रवा-विष्टाम् ।) प्रजाविषुः । जिलपिषति । बाबप्यते। जानप्ति। नापयति। यनीलपत्, यननापत्, दुर्गा। निवला। व्लघा लिपतः। लपनम्। अनु सुहर्भावणम्। १ अष-अयसायः। अप-इवः। अपन्नाव पार्वताम्, ते १,१५। प्रभि-प्रमित्। घः। मनसा सङ्ख्यात वाचोऽभिवयति अविः श्रा—शासाय: । प्र—प्रसाय: । प्रसपत्येष वैधेय:, शकु २, १८। वि — विसाय: ।
परिटेवनम्। पत्नो किसपति कर्णम्,
रता १, ७। बह्ने व विससाय सः,
भ ६, ११। १४, १०१। सम्— मियोभाषणम्।

सम्-इंबमष्, स्वा, प्राा प्राप्तिः। े लाभः। लमते, लमतेऽये ततो भूमिम, कवि २०८१ पुतं सभस्वातागुणानुद् पम्, र ५, ३४ । लीभे । लब्धा। लपाते । लेपा छ। यसस्य। यसपाताम्। प्रलप्ता मोऽनच ब्रह्मणः गस्तम् भ १५, ८६। कर्मणि, सभ्यते। असम्ब घनाभि, पा ७, १,६८। सन् लिपाते, पा ७, ४, ५४। इतां लिपामहे, स ७, ददा यङ जालभ्यते। नानभीति, पा ७, १, ६४। नानव्य । लक्षयति। अलल्यात्। दुंबर्मणि, अलिया बंबाभि, पा ७, १, ६८। सन्धा। ं लभ्य । लब्धः। लब्धः। संभानम्। बाभः। त्राबभः। विपन्तभः। सुबभः। क्रभ्यः। पालकाः। (डु) सब्धिमः। (व्) लभा। विच्, लभयिता। लभितः। ज्ञानम्। या—सर्भः। है हिंसा। गामालभ्य विशुध्यति, मनु ११, २०२। गावसालेभिरे भटः, भ १४, ८१। गामालमेत पालभागा गौः, पा ७, १, हेप्। उपा-मत्सनम्। उचैर्णानव्य स के कयोम, भ ३,३०। समा स्पर्धः। अनु लेपनम् । समाले भे (अनु लेपनं क्षतम्), भ १४, ८२। उप जामः। डपस्कि:। अनुभव:। न घोपसेभे बिणिजां पणाया, भ ३, २७। उपलक्ष्या विद्या, पा ७, १६ ६६। विप्र-विष बसा । प्रतारणा । व व्यवस्था व व्यवस्था

सम्ब-सिव (श्रवि) स्वा, शा। १ शब्दः १ • २ प्रवसंसनम्। लखनम्। जस्वते। सलको। सब्दिता। सब्दिख्यते। अस-स्विष्ट। प्रसस्विषाताम्। प्रसस्विषत्। निर्वाख्यते। लालस्वाते। सासम्प्ति। लस्वयति। प्रजलस्वत्। व्या नम्बयेदाहरणाय हस्सन् र ६, ७५। सम्बद्धाः । अस्यः। सम्बद्धाः । सम्बद्धः नम् । अव—अवलम्बनम्। यात्रयः । यथौ तदोयामवलम्बा चार्ड्स्सम्, र ३, २५। जनस्वासवलम्बते, स १८, ४१। पा पालखनम्। प्राययः। घादानम्। चाललस्वे महास्त्राणि, भ १४, ८५। नालम्बते देष्टिकताम्, मा २, ८६। वि-विजय्वः। विजय्वते, विडम्बते। प्रभातकत्यां रजनीं व्यड्-खयत् (घनुचकार), इति पदीपः। विद्वयन्तं शितिवासस्ततुम्, मा afrancyclen curvier, de &

जिस् - लिशि स्वा पा, वो । यव्दः । जय- (रय) स्वा, पा। मिति: । जर्ब (यर्ब) स्वा, पा गितः । जल् चु, पा। जल, घटनाः । जु, प, वो । ईप्या। प्राप्तमिच्छा ।

न्नाजयते । जन्यति । मन् (जन्)।

सप्ता विश्वितः । २ इच्छा।
स्प्रदा । सप्ति । ०ते। स्प्र्यातः । ०ते,
पा ३, १, ७० । सन्नाधः । सेषे । सप्तिता।
सप्ति । ०ते । प्रस्काधोत्, प्रस्कोत्।
प्रस्किष्ट । सिन्धिता । ०ते ।
सम्बद्ध । सिन्धितः । प्रस्कोन्
स्वत्। स्वितः । स्वितः । प्रस्कि

श्रभिनाषः। सामना। श्रभिन्यति साधूनामुदयं सर्वेतादयः। साधनोकोऽपि निःसीमं तस्थाभिन्यते प्रियम्॥ कवि २२५। तेन दत्तमभिनेषुरक्रनाः मुखासवम्, र १८, १२। भा ८, ५१।

स्म्भाः, पा१ स्रोपणम्।

२ क्रीड़ा। क्रिस्ति। लंबामं। बीमतुः। ब्रिम् व्यति। प्रवसीत्, प्रवासीत्। ब्रम्, ज्ञा लंब, जु, प। प्रिल्योगः। ब्रम् व्याम् । ब्रम् व्याम् । स्वाम् । व्याम् । स्वाम् । प्रवाम । स्वाम् । प्रवाम । स्वाम । स्वा

ला बदा. प। १ दानम् ।

्र ग्रहणम्। साति। केलो । खलुः खड्डान्, भ १८, ३२। बाता । बाद्यति घलामीत्। घलासिष्टाम्। वियहतां ग्रातमनासीत्, भ १५, ५३।

्लाख्—(द्राख्) साघ् (द्राघ्)।

नाज्—साञ्च, साजि, भा, प। १मळीनम्। २ भर्जनम्। प्राक्षिशेषः।

श्वाकति। साम्प्रति। साजाः।

काञ्च्—साहि (सक्) भ्वा, प।

बच्चम्। चित्रीकरणम्। बाञ्छति।

मचाञ्छ। समाञ्कतः। साञ्कितम् साञ्कनम्।

লাভ্(লভ্)।

लाभ-भदन्तः। चु, प। प्रेरणम्।

लिख्—तु, प। अचरविन्दासः। लेखनम्। चित्रोकरणम्। स्र लिखति। लिखति यदि गारदा सर्वेताल

ग्टडिमित्तिकाविषि, नै १, ३८। वि जिलेखा जिलिखतुः। जिलेखिय जिलिखा जिलेख भैमी नखनेख नौमिः, नै ६, ६३। जुट् वेखिता

सिति पुष्पदन्तः। निजाधिनीन

ख्ट् ने खिष्यति । निष्यतीति मेनित मारे । तुङ् प्रनेखीत् । प्रनेषिष्टाम् प्रनेषिषु: । मूर्भा दिवसिकानेषीत्,

१५, २२। कमीण लिखते। श्रेलेख सन् लिलिखिषति, लिलेखिषति पार, २, २६। यङ् सेलिखते। णि

नेष्यति। प्रजीलिखत्। निष्वत नेष्विताः। • निष्य। निष्तः। नेष नम्, निष्ननम्। नेषः। नेषकः।

लिखितव्यम्,। लिखनीयम्, लेखनीयम् लिख्यम्, लेखम्। प्रयं विभाष

बुटादिः, दुर्गा। टनादी बहुलिमि पंचनामः। घमि, घा—कर्षणम् चित्रीकरणम्। हृदयवन्नमोऽभिलिप रतिपतिव्यपदेशीनापह्नतः, रत्ना

द्दं। रतिव्यपदेशीन सागरिकामारि खति, रका २,२६। डद्-डम्रेख कर्षणम्। भेदः। अभिलापः। गिर

खुराग्रेः समुक्तिखन्, क् १, ५९ मासपचितियोनामुक्तेखनमक्तवीयो फलभाग् भवेत्, स्मृतिः। वि—विखे

फलसाग् भवत्, स्मातः। वि—।वश्वः तम्। कर्षणम्। चित्रीकरणम्। पार् विजिलेख पौठम्, र ई, १४। का लिङ्-लिखि, भ्वा, ब, वो। गतिः।

लिङ्क — लिगि (चिगि) भ्वा, प।

गति:। लिगि, चु,प। चित्रोकरणम्।
जिल्ल्यति। लिश्वति। लिङ्ग्यति शब्दं
स्त्रीपंनपुंसकै: प्राव्दिकः, दुर्गा। स्रा—
प्रालिङ्ग्नम्। लच्चीमालिङ्गति से द्वाद् य:। प्रालिङ्ग्यति रक्षांग्रजालैश्च मणि-कुद्दिमम्, कवि २४१। प्रालिङ्गुः यीषितः, भ १४, १२।

लिप्-तु, उ। उपरेहः। वृद्धः।

सिपनम्। सिम्पति। ०ते,पा ७,१,६८। बिस्पतीव तसोऽङ्गानि, सच्च २७। रस्यै र्लिम्पेत वर्णकेस्तम्, स १८, ११। त्र मां कर्माण जिम्यन्ति, गी ४,४। लिलेप। लिलिपतुः। लिलिपे। चन्द-नेन चिलेप सः, भ १४, ८४। चेपा। लेपाति। की। लिप्यात्। लिपोष्ट। श्रांतपत्। श्रांतपता अन्तिप्त, पा ३, १५३, ५४। प्रतिपेताम् प्रतिपानाम्। प्रजिपन्त। प्रजिप्सतः। तस्याजिपत शोकारिन: स्वान्तं काष्ट्रसिव ज्वलन्। श्रातिप्रेवानिल: गीत:, भ ६,२२। कर्माण, बिप्यते। अलेपि। लिप्यते न स पापेन, गी ४, ८। लिलिए मति। •ते। सेलि-प्यते। जैजेपि। जेपयति। अजील-पत्। लिप्तुः। • लिप्य। लिप्तः। लेप-नम्। लेपः। लेपुम्। अव – भवलेपः। गर्व:। भागेव प्रति हि नामाविष्यते, वीर ४१। या, उप, वि-लीपनम्। चोवधीभि: यरीरमालिपन, भ १५, १०८। ग्रंचिं देशैं मोमयेनोपलेपयेत्,

मनु ३, २०६। व्यक्तिपदा गन्धेः, मृ ३,२०।

ं लियु दि, प्रा। पत्यीभावः।

सिश्, तु, प। गति: । सिख्यते-। सिश्मिता सिस्नेगा सिस्ग्मे। सिष्मा। सिद्यति। •ते। सिख्यात्। सिद्योष्ट। प्रसिद्यत्। प्रसिद्यतः। सिद्याताम्। सिस्मित्ताः •ते। सेस्थ्यते। सेस्प्रिः। सिग्मेयति। प्रसीसिंगत्। सेगः।

तिइ— यदा, छ। याखादनम्।

लेहनम्। खट् चेढि। चीटः। बिह-न्ति। सोडे। सिचे। सीडे। सीडि भेषजवित्यं यः पष्यानि, भ १८, ७। कोट् सेटु। सीढि। से दानि। सीटाम्। किङ् विद्यात्। विशेत। या विद्या-इवि:, मनु ७, २१। सङ अलेट्। मलीठ। निट्रालिक। निनिष्ठ। लुट् विदा। स्टर् विद्यति। ब्ते। प्राधिष, सिम्लात्। विचीछ। लुङ् यनिचत्। यनिचतः। यनोट। प्रशिवाताम्। प्रशिवन्तः। प्रशिवा-विकि। सन् सिनिचिति। •ते। यङ् लेलि हाते। लेलेडि। णिच् लेडयति। प्रजीलंडत्। सीद्वा। श्रीक्षा। सीदः। लेडनम्। लेडः। लेहः। 'लेटव्यः। लिट्। अव-अवलेडनम्। मा-वैध-नम्। सेनान्यमालोटमिवासुराख्नैः, र २, ३७। THE PROPERTY OF THE PARTY OF TH

नी-नोङ् दि, पा। नी, क्या, पा

स्रोषणम्। सीनभावः। सट्सीयते। जिनाति। सिनाति-धर्मे एवासी निन्द्र-यार्थेषु सीयते, सदि २६०। स्टबाय

ं सुद्ध् — सुन्प्, सुन्दु, भ्वा, पे।

इदि सीयन्ते दिरिद्राणां मनीरदाः, हितो। जिट्लली। जिलाय, पा 👣 १, ५१। लिखतुः। लिलियय, लिलेय, पाच्चे ललिय, ललाय। लिल्ये। सुट् क़िता, जाता। जुट् जिथित। ६ते। लास्यति। •तै। भागिषि, लोयात्। बेवोष्ट, जामीष्ट। लुङ् प्रलेवीत्। प्रजा-मोत्। प्रजेष्टाम् १ प्रजामिष्टाम्। घलेषु:। प्रलासिषुः। प्रलेष्टः। प्रलास्तः। प्रले-वाताम्, प्रजासाताम्। प्रजीपत, प्रजा-मत। भावे, लोयते। प्रसाधि। ध्वाङ्कः बिरंसि लीयते, भ १८, ११। सन् जिजीषति। •ते। यङ् जेनीयते। ज्ञेलयीति। जेलेति। णिच् (सेइद्रवे) विस्तानयति विसाययति विसासयति विलापयति वा घतम्। लोइं विला-पयति । जतु विचाययति, की १८४। पा ७, ३, ३८। पूजासिसववस्रनेषु चात्मनेपदम्, पा १, ३, ७। जटासि-र्बापयते(पूजामधिगच्छति)। खेनो वर्त्तिका-मुद्धापयते(श्रीभभवति)। वासकसुद्धापयते (वञ्चयति)। जी, चु, पा द्रवीकरणम्। लाययति । लयति । विलयत्यवलानाञ्च द्वदयं मदनव्यया, कवि १८६। खेता। बिष्यति। सीला। ॰ साय, ॰ सीय। लोनः । लयनम्, लानम् । लयः, लायः । बीतुम, 'बातुम्। बेता, बाता। बेतव्यम्,

खातव्यम्। यप-न्यग्भावनम्। न्यक्-

वर्णम्। अवनापयमानः प्रवृत्, स ८,

४४ हडद्(णिच् घा)प्रतारणम्। घ्रामिमवः।

पूजा। नि—पतनम्। निलिख्ये सृप्ति

यधोऽख, स १४, ७६ । प्र-शदर्भनम्।

सह मेघेन तहित् प्रकीयते, कु ४, ३३।

वि - प्रणायः । स्रोपणम् । न भुवि व्यली- ,

यत (नातिष्ठत्), मार, १२। (णिच)।

द्रवीकरणम्।

षपनयनम्। षपमारणम्। उत्पारः
नम्। तुञ्चति। जुजुञ्च। केमान् तुज्जुः,
भ ३, २२। लुज्जिता। जुज्जिति।
प्रतुञ्चीत्। षजुज्जित्। प्रजुञ्चीत्
कर्णनामिकम्, भ १५, ५०। लुज्जितः।
लुज्जिता, पा १, २, २। लुज्जितः।
लुज्

लुक् — लुनि (कुप) चु, प। दीप्तिः। ं सुम्बयति। सुनि, चु, प। (तुनि)। ैलुट्—भ्वा, दि, प। १विचोड्नम्। स्रोटनम्। सम्बन्धीभावः, वो। बुट् (क्ट) भा, भा। (प्रतिचातः । १ दीप्तिः, वो। लोटति। ०ते। लुट्यति। लुट्यन्ति भूमी, भ १८, ११। लुखन् स्थाको भुवि, भ ३, ३२। जुलोट। जुल्हे। सोटिता। लोटिष्यति। •ते। बलो-टोत्। प्रबुटत्। प्रबोटिष्ट। दि, प्रबु-टत्। सुट् (कुप) चु, प। दी सि:। तुट, चु, प। सञ्जूर्णनम्। लोटयति। यन् लुटत्। लुट्यत्यद्दालकान् दुर्गान् कव-चानि च लोटति। रिपूणां लोटय-त्याजी कुन्तराणां घटाच यः॥ कवि 10.5

बुठ्—(उठ्) भ्वा, प। उपघातः।

लुठ् (क्ठ) भ्वा, आ। प्रतिघात:। पतनम्। विचेष्टनम्। लोठित। ०ते।
लाचित् कार्यो न लोठित, कवि ४६।
लुलाठ। लुलुठे, लुलुठे पृष्यकोदरे,
म १४, ५४, ३०। लोठिता। लोठिष्यति। ०ते। लुळात्। लोठिषोष्ट।
प्रलोठीत्। षलुठत्। प्रलोठिष्ट, प्रलोनिठिष्ठ भूष्टे, भ १५,५६। प्रस्य रहसा
प्राक्षिनोऽलुठन्, भ १५, १६।

लुट्, तु, प्रमुसंस्थेषणम्। सम्बन्धीभावः, दुर्गा। लुढति। मणिर्लुटित पादेषु, हिती। हारीऽयं हरिणाचीणां लुठति स्तनमण्डले, दर्पणः। •लुलोठ्। लुलुठिय। नुठिता। नुठिष्यति। धनुठीत्। धनु ठिष्टाम्। धनुठिषुः। नुठ्, पु, वो। चौर्थ्यम्। नोठयति।

बुड्-भ्वा, प। विलोडनम्।

सन्यनम्। नीडिति। नुड्, तु, प, वो। १ यंवरणम्। २ श्लेष:। लुडिति। चुडिता। खाडता। ज्वह-लुटि (दटि) स्वा, प ।

स्तियम्। सुग्टति। सुग्ट, चु, प, वो। १ पवज्ञा। २ चौर्य्यम्। जुग्रयति। खुग्टति । दम्खनकारप्रक्रति: । ट्योगा-मुर्दन्यः। तेन स्वादिपचे यगादौ तक्कोपे खुळाते इति दुर्गादासः। न महिन

ातः नुष्ठ् न सुष्ड्, सुडि, सुडि (१८)

ि श्वा, प। १स्तेयम्। २गतिः। लुठि, भ्वा, पा रिप्रालस्यम्। २ प्रतिवातः। ं सुग्छति। सुग्छति। सुग्छ, सुग्छ, चु, प। स्तेयम्। यो नुस्टति परद्रव्यं र्ताच्छरो च्यउयत्यसी, कवि ४६। जुग्छयति, कौ १७२ । सुग्डयति । जुग्य-जुधि (जुधि) भ्वा, प।

ा १ हिंसा। २ २ मं क्रोगनम्। लुट्यित।

ं नुप्-नुपु (युपु) दि, प।

् विमोद्दनम्। स्याकुलोकरणम्। भाली-भावः, दुर्गा । • लुप्यति । पातुः सुम्यति नावण्यं नेत्राञ्चनपुटेन यः, न्वावि ्र ७३। न्नोप् । नोपिता । नोपियति । अलुपत्। अलोपौत्, वो। लुप्छ,

तु, ख। छेदनम्। उच्छेदनम्। स्रोपः। लुम्पति। ०ते, पा ७, ४, ५८। यो न नुम्पति पूर्वेषां स्थितिम्, कवि १७३। र्जुनोपा सुसुपा को प्राः। को पर्यक्ति। •ते। लुम्यात्। लुप्सीष्ट। अलुपत्। भलुप्त। भलुप्साताम्। भलुप्सत्।. कर्मणि, लुप्यते। त्रलोपि। तस्य भागो न नुप्यते, मनु ८, २, ११। तेषामेकः शिष्यते अन्धे लुप्यन्ते, पा १, २, ६१। लुलुप्सति। •ते। यङ् (भावगङ्गिम्) बोजुप्यते, पा ३, १, ३४। बोबोसि। बोपयति। अलूल्पत्, अलुबोपत्। लुष्ठा। • लुप्य। लुप्तः। जोपः। जोप्त-व्यम्। बोप्तम्। मांमान्धीष्ठावनोध्यानि, भ ५, १८। युवधैर्यं नोपिनं गुणोत्कर-मश्रुणोत्, नै १, ४२।

नुम् सा, दि, प। गार्थम्।

्याकाङ्गाः सोभः। सुभ्, तु, पा विमोचनम्। याकुलीक्रणम्। स्वादे-राक्तिगणलात्। नोभितः इत्यधाद्यः, की १४३। 'लोभति। लुभ्यति। नुभति। नुभत्यर्थे च कामे च धर्मे लुभ्यति यः सदा, कवि २६५ । लुलोभ । जुलुमतुः। जुलोभिय। जुलुभिव। तथापि रासो लुलुसे सगाय, सहाना। लोब्धा, लोभिता, पा ७, •२, ४८। नोभिष्यति। प्रनोभौत्। प्रनोभिष्टाम्। चनोभिष्ठः। दि, चलुभत्। लुलुभिष्ति, लुलो । लोलुभ्यते। लोलोब्धि । लोभ-यति । चलुतुमत् । (विमोइने) तुभित्वा, नोभिला। नुभितः। विनुभिताः केयाः, भन्यव तुच्याः नुभित्वाः, नोभित्वा। लुब्ध:। लुब्धवान्, एर, ७, २, ५४। नोभनम्। नोभः। नोध्ययम्, नोधि-तव्यम्। बोब्धा, बोिधता। बोब्धम,

कोमितुम्। लोभी। लोचनलोमनीया श्रम्यपङ्ज्ञिः, भ २, १३१ कुसुमीमव लोभनीयं योवनम्, शकु।

लुम्ब् लुबि (तुबि) स्वा, पं। ्षादैनम्। लुबि (तुबि) चु, प। १ मट-भेनम्। २ घर्देनम्, वो। लुम्बति। लुम्ब-यति।

जुल् (जुड्) भा, पा विजीडनम्। चलनम्। लोजिति। रोषी लोजिति स्म वचनेषु बधूनाम्, मा १०,३६। ता, जुलितम्। वनं जुलितपज्ञवम्, भ ८, ५६। जुलिताङ्गरागः, र १६, ५८।

खुष्—भ्वा, प, वी। स्तेयम्। लुइ—भ्वा, प, वो। सिप्सा। सोइति। खुलोइ। लोटा। अलुचत्। लू—लूञ्, क्राा, उ। छेदनम्।

बट् बुनाति, पा। बुनौतः। बुनन्ति। जुनीते। जुनाते। जुनते। जुनीहि चन्दनम्, मा १,५। जिङ् जुनीयात्। लुनीत। छङ् प्रलुनात्। प्रलुनीत। ग्ररासनच्या मलुनाद विडीजमः, र ३, ५८। बिट् बुनाव। बुनविध। बुन्वे। नासां तस्या जुनाव, म ८, ८०। जुट् स्विता। लृट् स्विष्यति। ०ते। प्रा-शिषि, सूयात्। लिवषीष्ट। लुङ् प्रला-बीत्। अलाविष्टाम्। अलाविषुः। अल-विष्टी। अनिविधाताम्। अनिविधता क्षोकरनलावीत्, भ २, ५३। कर्मण, लूबते। अलावि। कमेकत्तीर, अलावि। प्रजविष्ट केदार: स्वयमेव। सन् जुल्-षति। •ते। यङ् जोनुयते। जीनोति। णिच् लावयति। अलीलवत्, पा ७, ४, ८०। जिलाविधिषति। लवित्वा। ं जूय। जून:। जुनि:। स्वनम्।

लष्—(रूष्) भ्वा, प। भूषणम्।
लूषित। लूष्, चु, प। १ हिंसा। २ स्तियम्।
लीप्—लीप्ट (मिप्ट) भ्वा, घा। गतिः।
लीप्—लीक्त, भ्वा, घा। दर्भनम्।
लोक्त्—लोक्त, भ्वा, घा। दर्भनम्।
लोक्ते। लुलोकी। लोक्तिता। घलोकिष्ट। घोक्त, चु, प। दीक्तिः। लोकयति। घलुलोकत्। घन, घा—प्रालोवनम्। घालोकन्ते यमबला नालोकयन्ति यस्र ताः, कवि २४८। घालोक्याच्रक्तदिवादरेण, भ २। वि—विकोकनम्।

र २, ११। स्रोच्-सोंचृ, (स्रोक्ष) स्वा, श्रा।

विजोक्यन्यो वपु: (खार्थ विच),

दर्भनम्। पर्यालोचनम्। प्रणिधानम्। कोचते। खुनोचे। खोचिता।
भलोचिष्ट । कोचृ (लोक) चु, प।
दौक्षः। कथनमिति रमानाथः। बोचयति। प्रजुनोचत्, पा ७, ४, २।
प्रा—भांलोचनम्। प्रालोचते सदा
नौतिमालोचयित सत्क्रियाम्, कवि
२४८। इत्यालोच्य हिर्ण्यकविवरसमीपं गताः, हितो। प्रालोचयनौ
विस्तारमभासाम्, भ ७, ४०। तृपः
पूर्व मवालुनोचे, भ १, २३। चेमहराणि
कार्य्याणि पर्यालोचयताम्, भ ६, १०५।

समा—समासोचनम्। सोड्—सोट्—सीड्—(रोड्) भ्वा, प। उत्पादः। सोडति। सोटति। सीड-ति, वो।

्रे लोष्ट्—(गोष्ट) म्बा, घा। सङ्कातः। रायोकस्यम्। कोष्ट्रते। लुलोष्टे। इतोष्ट्रम्। ्र स्वी स्था स्था, प्रवी । स्थापम् । स्वीनाति । स्थिनाति । स्वी, क्ष्मा, प्रवी । क्ति: । स्थिनाति । स्थीनातीस्प्रिष्

वच्-स्वा, पा१ कोपः। ए मङ्घातः। वख्—वङ्क्—विख (उख) स्वा, पा। गितः। वखित। ववखतः। वङ्कि। वङ्क् —विका, स्वा, स्वा। १ कौटिख्यम्। वक्कोकरणम्, दुर्गा। २ गितः, वो। वङ्कते। ववङ्के। स्वङ्कष्ट्रः। वङ्क्—विग (स्विग) स्वा, प। गितः। खङ्कः, वो। वङ्कति। ववङ्कः। विङ्कता। वङ्क् —विच (स्वि) स्वा, सा। १ गितः। २ गताः। स्वाः, वो। १ सारसः। कवः, वो। १ सारसः। वङ्क्ति। विक्दा। १ सारसः। वङ्क्ति।

वच् प्रदा, प। परिभाषणम्।

वार्यनम्। लट् विज्ञा। वज्ञः * * अयसंनित्यरो न प्रयुज्यते, बहुवचनपरः
इत्यन्ये। भित्यर इत्यपरे, को १२०,।
विज्ञा प्रन्यवचनस्थानभिभानमाच्चते
इति प्रदीपः। विज्ञा। वक्ष्यः। वच्मि।
इति सिवञ्च यो विज्ञा, कवि ८४।
कोट वज्ञा। वज्ञाम्। * * विश्वः। लिङ्
वच्यात्। लङ् प्रवक्। प्रवक्षाम्। लिट्
घवाच, षा ६,१,१७, जच्तुः। जचुः।
उविच्य, उवक्या। ज्ञित्व। उवाच
दममुद्रानं वचैः, भ ५,०६। लुट्
वक्षा। लुङ् प्रवोचत्, पा ७, ४, २०।
प्रवोचक्तम्, र १, ४६। लिङाही

ब्रधातीरासनिपदे, जारे । वस्यते । वस्तीष्ट्रा कर्मणि, उचाते। प्रवाचि। एतदु-दैकानां युगमुचाते, मनु १, ७१ । प्रहं-युनाध्य चितिपः ग्रभंयुक् चे वचः, १, २०। सन् विवचति । यङ् वावच्यते। वाविता । णिच् वाचयति । पवीवचत् । वच, चु. प । परिभाषणम् । वाचनम् । पाठ:। सन्देश:। खस्तिवाचनम् । वाच यति । वचिताः न वचत्यन्तरं वचः । नानादेशसमुद्भूतां वाचयत्यखिलां लिपिम्, कवि ८४ । ववाच । ववचतुः 🗈 वता । प्रवाचीत्। प्रयं सेट् इति भट-मनः । विपानवाचयन् (स्वस्तिवाचनं कारितवन्तः), स १७, ११ कथनीय-मबीवचत्, भ ६, ४६ । उत्ता । • उचा उताः । उत्तिः। वननम्। वाकः। वत्तुम् । वत्त्रव्यम् । वचनीयम् । वाच्यम्। वता। वाक्। वच:। अचिवाम्। प्रमू-चान:। णिच्, वाचियत्वा। •वाच्य। वाचितः। वाचनम्। वाचकः। वाच-यिता । अनु - प्रतुकादः। निर्-नि-क्ति:। व्याख्या। प्रकथनम्। वर्षीः नम्। प्रति-प्रतिवचनम्।

वज्—स्वा, पं। गमनम्।

वनति । वयान । ववनतः । वेजतु-रिति चान्द्राः । वजिताः । अवनीत्, धवानीत् । वज्, चु, पः । १ संस्करणम् । २ गतिः । पचादिना वर्गसंस्कार•इति प्राचः । मार्गेणसंस्कारयोरिति वेदित् । वानयति पचैर्वाणं कारण्डकारः, दुर्गः ।

वश्-वन्य (चन्यु) म्बा, प

मृतिः। वस्ति। वस्तिः च मरसर्हः मृत्यो दिसु तद्गुणाः, कि १७८ । वनस् । वनस्राह्यांचितिन्, भ १४, ७४ । वस्ति। वस्त्रियातः। वस्त्रात् ॥

अवृञ्चीत्। अविञ्चिष्टाम् । विविञ्चिषति । विग्र्—विङ, भ्वा, भा। १ वग्रुनम्। वमीवचते, पा ७, ४, ८४। वनीवङ् ति। वनीवतः। वश्चयति। यदि वश्च-यति (परिहर्गि)। वन्चु, च्, चा। विवलमाः। प्रतारणम्। वञ्चना। वञ्च-यते। सृखीस्वासववद्यन्त, स १५,१५। विचला, विचला, पा १, २, २४। चिच् वच्चियला । वच्चनम्। वञ्चना। वञ्चयितव्यम्। वञ्चनीयम्। न वश्वनीयाः प्रभवीऽनुजीविभिः, भा १, ४। (उ) विञ्चला, वक्ता। वतः।

वर्-भा, प। वेष्टनम्।

वॅटति। ववाट। ववटतुः। वटिष्यति। भवटीत्, भवाटीत्। भयं वर्ग्यादिरपि। बटति। बेटतुः। बाटयति। परिभा-षणे घटादि:, वटयति। वट घदन्तः (वेच्हे)। यट:। वाटक:। वाट:। वट्:। वरिका।

वठ्-भ्वा, प। स्थीलाम्। सामयम्। ्वण्—(प्रण्) स्वा, प । ग्रव्हः।

वणति। यवाण। ववणतुः। अयं वर्ग्योदिरपि। वेगतु:। विभिता। अवः णीत्, श्रवाणीत्। वाणयति। श्रवीव-खत्, धववाणत्।

'वण्ट्—वटि, भ्वा, चु, प।

विभाजनम्। वण्टनम्। वण्टित। इराटकं विद्याः, कवि ७५। वग्द न्ति वण्ट्यति, वो। वट, वटि वण्ट श्रदन्तौ। च्, प्राे विभाजनम्। वय्टनम्। वट वेष्टनेऽपि, वो । वटयति । वण्ट्यति । वण्टापयति। वण्टयन्ति च रहानि भूमि वण्टापयन्ति च, कवि ७८। वांट, वांठ, भ्वा, प्राः। ऐक चर्या र सहार्य विना आचरचम् हे असहाय गमनम्। वग्टते, को ५२। वर्छते।

वद्

२ वेष्टनम्। वण्डते। ववण्डे। विण्ड-ता। वांड, चु, प, वो। विभागः। वग्डयति।

वद्—स्वा, प। कथनम्।

लट् वदति। सत्यं वदति अवेत्र, कवि ८८। दीप्तिसान्वनज्ञानोत्साइ-विवादप्रार्थेनासु श्रात्मनपदम्, पा १, ३, ४७। शास्त्रे वदते (भासमानी ब्रवीति) (सम्यग्बीधपूर्वकं वदति)। चेत्रे वदते (डक्साइमाविस्करोति)। बिट् डवाद। उवदिय। जदिव। जरे। सुट्वदिष्यति। ०ते। पाप्रिषि, उद्यात्। वदिषीष्ट। सङ् भवादीत्। चवादिष्टाम्। चवादिषुः, पा ७, २, ३। अवादिष्ट। अवादिषाताम्। अवदि-षत । कर्माण, उदाते। भवादि। सन् विवदिषति। ०ते। यङ् वावद्यते। वावति। णिच् वादयति। •ते। श्रवी-वदत्। •तः। (वादनस्) अवादयन् वेणुः स्टङ्कांस्यम्, अ ३, ३४। भेरोसावी-वदन् श्रभाः, भे १५, ४। वादयते मृदुवेणुम्, गौतगो। वद्, चु, छ। चोत्रानेपदौति केचित्। १ सन्देशवच-नम्। कथनम्, वो। बादयति। ०ते। वदति। ॰ते। सर्वस्य वदते हितम्। यदा सत्यं न च हितं न वादयति तद्वः, कवि ८८। ववाद। वबदे। वदिता। वद्यात्। वदिषीष्ट। डदिला। • उद्या उदितः। उतिः। वदनम्। वादः । वदः । वदितुम् । वदिता । वदौ । वादकः। वाद्यम्। विवद्यम्। अच्छी र्द्यम्। 🖟 स्वीद्यम् । 🗁 र्तप्रयंवदः। । वाव-दूक्ष:। अनु÷अनुवादः। गिरमनुः

वदित शुकस्ते, र ५, ७४। धनुवदते कठ: कालापस्य, पा १, ३ ४८। उत्त-मनुबद्ति। घोषस्यान्वबदिष्टेव सङ्गा पूतक्रतीः पुरः, स ८, २८। अप-अप-वाद:। निन्दा। अपवदति। ॰ते। द्यपवदते धनकामी न्यायम्, पा १, ३, ७३। नार्त्तीऽप्यपवदेत् विप्रान्, मनु ४, २७६। न्यथोऽपवदमानस्य (कुप्य-तः), भ ८, ४५। श्री-णिच् श्री-वादनम्। पादग्रहणम्। प्रणामः। सर्वा-निभवादबे वः, यंकु ५, ७२। उप — सान्त्वना। प्रार्थना। प्रतोभनम्। भृत्यानुपवदते [सान्त्वयति]। परदारा-नुपबद्ते [प्रार्थयते प्रजोभयति वा], पा १, ३, ४०। काञ्चिकीपाविदष्ट. भ द, २८। परि-परिवाद:। निन्दा। परिवदन्नन्यांसुष्टोः अस्ति 🚚 दुर्जनः, प्र-क्षयनम् । कीर्त्तनम्। विप्र—विरोधोिताः। प्रवाद:। वदति। ०ते, पा १, ३, ५०। प्रवदमानै-क्तां संयुक्तां राजसैः, भ ८, ३०। "सम्प-सहीचारणम्। सम्प्रवदन्ते ब्राह्मणाः। सम्प्रवदन्ति खगाः, पा १, ३, ४८। प्रति-प्रतिवचनम्। तान् प्रत्यवादी-दश राघवोऽपि, भ २, २८। वि--वि-वाद:। चेत्रे विवदन्ते, पा १, ३, ४०। उभी विवदेशातां स्त्रिया धने, मनु ८, १८१। केनचिद् व्यवदिष्ट न, भ ८, २८। सम्-संवादः। साष्ट्रश्यम्। षड्जसंवादिनी: केका:, र १, ४०। बाचिकषड़िकौ न संवदेते इति भाष्यम्। विसम् विषंवादः।

वध् (इन्)। । त्रान्त्रकारक

वन् स्वा, पृ। सम्भक्तिः । सेवा।. वन् (ष्टन) स्वा, पं। ग्रब्दः । वनु, स्वा, पा १ व्यापृतिः। ३ हिमा। प्रयन्तुं कायत् कियामाने । इत्यन्ये। वतुं, तं, प्रमापि । वान्द्रमते प्रमापि । याचनम्। वन्ति। चनोति। वन्ति। ववन्नतुः। ववने। वन्तुः। वन्ति। वेनतुः। वन्ति। वन्ति।

. वस्य-वदि, भ्वा, प्रा।

१ मिनादनम्। नमस्कारः। २ स्तुतिः। वन्दते। वनन्दे। वन्दिता। वन्दिषते। वन्दिषीष्ट। वन्दिषोष्ठा दिवोकमः, भ १८, २७। मवन्दिष्ट। मवन्दिषाताम्। मवन्दिषत। विवन्दिषते। वावन्द्यते। वावन्ति। णिच् वन्दयति। भववन्दत्। वन्दित्वा। ०वन्द्य। वन्दितः। वन्दनम्। वन्दाकः। वन्दो।

वन्दावः। वन्दो।

वप्— ड्वण्, स्वा, डा १वपनम्।

चेत्रे वीजपचेपणम्। २गर्भाष्ट्रानम्।

तिषेतः। ३ छेदनम्। मुख्डनम्। वपति।

ते। केणान् वपति। यदि वपति

स्वापः चेत्रमासाद्य वीजम्, स्वृतिः।

डवापः। जवतः। डवप्यतः, द्ववप्यः।

कपे। वप्यति। वतः। उप्यात्। वतः
सीष्टः। प्रवापस्रोतः। स्वापः। प्रवापः।

प्रवसः। प्रवपस्रोतः। प्रवापः। प्रवपस्तः।

कर्मणः, उप्यते। प्रवापः। याद्यस्प्यते

वीजम्, मनु ८, ३६। विवप्सति।

वि

यति। प्रवीवपत्। उद्याः। उपः। उसः। हित: । वपनम् । वाप:। (हु) हित्तमः। चनुश्चिमपानाशिनो, भ ४, ३७। वसुम्। वसा। वापी। वसव्यम्। वीजंन वस-व्यम् परपरिग्रहे, मनु ८, ४२। नि, निर् — उसर्गः। दानम्। पिटदानं निवापः खादित्यमरः। निवपेः सहकारमञ्जरोः, क् ४, ३८। यमायत्तं निक्वाप, भ १४, द्द्रा वसातरीं निर्वपन्ति, उत्तर (३४। चातिष्यमेभ्यः परिनिर्विवप्सीः, भ क् ४२। प्रचियः। प्रशिवपति। प्रव-पाणि वपुर्वे क्री, भ २०, ३६। प्रति— विन्यासः। मीलिं प्रत्युपः पद्मरागेण, र १७, २७। प्रत्युप्तः।

वय्

वस्त् वस्त् (श्रम्न) स्वा, पा गति:। वम् ट्वम्, भ्वा, पं। उद्गिरणम्।

वसनम्। वसति। फणी पीला चीरं वसति गरलम्। ववास। वव-मतुः, पा ६, ४, १२६। भागवत्ती तु वेसतुरित्याद्यदीइतम्। तद् भाषादी न दृष्टम्, की ८८। ववसतुः, वेसतुः, वो। वेमू क्षिरमिति चण्डी, दुर्गी। विमिता। विभिष्यति। अवमीत्। अव-मिष्टाम्। प्रविमिष्ठः, रक्षमविमिष्ठमुँखैः, भ १५, ६२। विविधायति। वंबस्यते। वैवन्ति। वभयति। वामयति। उदमन यति, घटादि:। (ड, वो) विमिला, वास्ता वास्तः। वास्तिः। भावार-मायी: जान्तम, वमितम्। वसनम्। वसः। वामः। वसिः। (टु) वसधः। विमतव्यम्। विद्—उद्गमनम्। वय-नम्। सा वरावुद्ववास, र १२, ५ ।

वय्—(चय) खाः चाः गतिः । वयते। ववये। वयितासे।

्वर- शदन्तः। चु, प। ईप्सा। वरयति। वन्या वरयते रूपम्। वर्ष- खा, या। दीप्तिः। वर्वते। वर्षे— अदन्तः। चु, प। १वर्षे क्रिया।

वल्,

रखनम्। २ विस्तारः। वर्षानम्॥ ३ स्तुति:। ४डद्योगः, वो। ५ दीपनम, वो। सुवर्णं वर्णयति। प्रतिमां वर्ण-यति। क्यां वर्णयति। तन्तुं वर्णयति (विस्तारयति)। इरिं वर्णयति (स्ती-ति)। वर्णयति (उदाङ्को दीप्यते वा), दुर्गा। वर्ष (चूर्ण) चु, प। १वर्णनम्। रप्रेरणम्। ३रागः, वो। वर्णयति। निर्—दर्शनम्। निर्वर्णनन्तु निध्यानं दर्भगाबी वाने चार्यामत्यमरः। अञ्चलताः तिवेष्ये, प्रक्त १, १८३।

वर्ष — चु, प। १क्टेटनम्।

- २पूरणम् ॥ वर्षयति । । वर्षयस्यिति-राणां किन्ताः सूदीनसादवे, वावि ६०। वर्षनं छेदने इत्यमकः । । । । । । । । ।

वर्ष अवार्ण वी। गतिः। बंधः। ्वष् वष् वष् वा भा । संदन् । वर्ष (बर्ष)। Topp into Sept 148

वल्-वज्-भ्वा, या। १संवरणम्।

श्सच्चरणमा वलते। वलते। वलते-ऽभिमुखं तव, मा ६, ११। वनदार्था राधाम्। लदभिषरणरभवेन वसन्तौ, गोतगो १, २६, ६, ३। ईत्यादी परस्मैपदमपि। अवन्ति। ववनिरे (परिहताः), सा ६, ३८। विज्ञा। भवित्र । भवित्रवाताम्। भवित्रत

[गण्डपणः] •

णिच् वलयित, वालयिति, घटादिः। कुवलयं वलयन् मत्दाववी, मा ६. १। सम्—संवलनम्। मित्रणम्। च्टिषि-लिषः संवलिता विरेजिरे, मा १, २१। तिमिरसंवलितेव दीतिः, मा ५, ४८। विक्षः। विक्षः। बालः।

वल्क् — चु, प। डिताः। वल्कयिति। वला् — (ग्रिगि) भ्वाः, प। गितः।

प्रतगतिरिति भट्टमञ्जः। वर्गिति। ववला। ववलगुष पदातयः, भ १४, ८। विलाता। प्रवलीत्।

्वस्य — 'बस्भ' भ्वा, आ। भोजनम्। वस्युल, वस्यूल, ग्रदन्ती। सु, पः।

१ छेद:। २ पवित्रीकरणम्। वल्युन-यति। वल्युनयति। पल्युनयति, पल्यु-न्नयति, वो।

वस् (बस्) वरह (बरह्)। वरह—भ्वा, श्रा, वो। वर्ण्यदा, पा १कान्तिः।

२इच्छा। स्पृडा। अयं छान्दसः, की १२६। लट् विष्टि। उष्टः। उपन्ति। जयाय सेनांन्यसुग्रन्ति देवाः, कु ३, १५। हि, उड़ि। वमानि। लिङ् उप्यात्। **लङ् अवर्। श्रीष्टाम्। श्री**शन्। श्रवसम्। बिट् खवास। जसतुः। खव-शिष्य। ऊशिषव। लुट् विशिता। स्टर् वशिष्यति। श्राशिषि, उधात्। लु ङ अवशीत्, अवाशीत्। सन् विवशिषति। यङ् वावस्यते, पा ६, १, २। वावष्टि। णिच् वागर्यात। प्रवीवमृत्। उमिला। • उम्म । उमितः । उष्टः । वमनम्। वाधः। वश्चित्म। वधः। वर्धः। म्डगोर।

बष्—(कष) भ्वा, प । हिंसा। वस्—भ्वा, प । निवास;।

ं लट् वसति। वसति वने वनमाली, गीतगो ५, द। सिंह उवास । जब्तुः, पा ८, ३, ६०। उवसिथ, उवस्य। उवा-स पर्णेयानायाम्, स ४, ७। लुट् वस्ता। ऋट् वत्स्यृति, या ७, ४, ४८। ल्डङ् अवत्यत्। आधिषि, उष्णात्। बुज् प्रवासीत्। प्रवाताम्। प्रवासः। भावे, उच्चते। अवासि। सन् विवत्-सति। यङ् वावस्यते। वावस्ति। णिच् वामयति। ०ते। अवीव्सत्। ंत। यस्यां वासयते सीताम्, भ ८, ६४। उषिला, पा १, २, ७। • उष्य। राघवः प्रोष्य पापौयान्, भ ५, ८१। तव तामुषिला रजनीं, भारत। उषितः, पा ७, २, ५२। उष्टि:। वसनम्। वासः। वस्तुम्। वस्तव्यम्। वस्तिः। प्रधि, प्रतु, पां—वासः। प्रधिष्ठानम्। यामसधिवसति, पा १, है, ४८। सदा-सनं गोव्रसिदाध्यवासीत्, स १,३। दगडकानध्यवत्तां यी, भ ५, ६। मीऽध्य-वात्सीच गां इतः, भ १५, ६८। शून्यमन्ववसहनम्, भ ५, ७५। ग्रह-स्थायममावसेत्, मनु ३,२। उप-निवास:। भोजनहत्ति:। 'उपवास:। ग्राममुप्रवस्ति, पा १, ४, ४८। एका-दशोमुपवसन्ति निरम्बुभचाः। नि-निवास:। वनेषु वासते येषु निवसन्, निर्-णिच्-निर्वास-भ ४, ८। नम्। प्रवासनम्। प्र—विदेशाव-स्थानम्। प्रवासः। शिच्-निर्वासनम्। भूपतेरपि तथीः प्रवत्यतार्नेस्वयोत्परि-वोष्यविन्दवः, र ११,४। ताम् प्रवासः येद दण्डियत्वा, सनु ८, १२३। प्रवा-

सयति यः ऋदः कुलं विदिवास, कवि १४। परि-क्त, पूर्य्षितम्। प्रति-निवाम:। तस्य कीटरे जरहवनामा रुप्र: प्रतिवमति, हितो । विः—वामः । णिच्-निर्वासनम्। पित्रा यो क्या-्सितो, स ४, ३५। वस्, ऋदा, या। पाच्छादनम्। परिधानम्। सर् वस्ते। वमाते। वसते। वस्ते। वध्वे। लिट् ववसे। वसनं ववसे, मा ८, ७५। सुट् विभिता। खट् विभिष्यते। लुङ् प्व मिष्ट। मन् विविभिषते। यङ् वाव-खते। वावस्ति। वसिला। •वस्य। वसितम्। वसनम्। वस्तम्। वासः। वासीमि वसिता, भ ३, ४५। नि, वि-परिधानम्। निवध्यं माध्यम्, भ ३, ४४। मनोरमे न व्यवमिष्ट वस्त्रे, भ , २०। निवासयति यश्चितं चीनां-शक्तम्, कवि १४। वसु, दि, प। स्तमाः। नम्बतारहितोभावः, दुर्गी। दुपै:। वस्यति। यो वस्यत्यरिषु, कवि १४। ववास । ववसतु:। प्रयं वर्ग्यादिरित्येके। वेमतुः। विसिष्यति। प्रवसत्। प्रव-मत्, भवसीत्, भवासीत् (वो)। वम्, चु, पा १स्त्रेडः। प्रीतिः। २ छेदः। ३ प्रपन्तरणम्। ४ वधः, दुर्गा। वाम-यति। अवीवसत्। वस्, भदन्तः। चु, प। निवश्सः। वस्यति।

वस्त - वष्त् - वक्ष् (कि कि) स्वः, श्रा। गतिः । वस्ति । वष्ति । वक्षते । वस्त् - चु, श्रा। श्रद्देनम् । वस्त्यते । वह्-भ्वा, छ । प्रापणम् ।

वजनम्। धारणम्। वायो गीतः। खन्दनम्। जद् वज्ञति। की। नदी वज्ञति, कौ २४७१ तं जनमस्त्यमस्य वसुधे संयं वज्ञसि, जिलो। वज्ञते विज्ञ-

तागतिवें हुरूपस्य यः श्रियम्, विवि २११। वीर भरं वज्ञासुम्, स ३, ५१। सिट् उवाइ। डवोढ। जहे, पा ६, १, १७। **लुट्** वोढा, पा ३, १,१२। ऌट् वच्चति। ०ते। शामिषि उद्यात्। वन्नीष्ट। जुङ् अवाचीत्। श्रवोढाम्। श्रवानुः। श्रवोढ। श्रव-चाताम्। अवचतः। भवादुम्। युवां भुवनस्य भारं दो भिंश्वांढम्, म २, २०। कर्मणि, उद्यति। अवादि। वसुधा तथो है, स २, १८। जिहिरे। सृधि मिदार्थाः, भ १४, ८१। सन् विवचति। •ते। यङ् वावद्यते। वावोदि। चिच वाह्यति। अवीवहत्। चिप्रं वाह्य रथम्। वाइये तरिम्, भारत । स वाह्यते राजपयः शिवाभिः, १६, १२। जदा। उद्या जढ:। जढ:। वह-नम्। वाहः। वोदम्। वोदा। वाहो। वाष्ट्रकः। •वाट्। वोढव्यम्। वाद्यम्। वद्यम्। वहति मलयसमोरे, गीतगो ५, २। यति-णिच्-यतिवादनम्। नर-पतिरतिवा इयाम्बभूव तियामाम्, र ८, ७०। अप-उत्सारणम्। अपोवाह वासी-उच्चा मार्तः, भारत। श्रा-उत्पाद-नम्। धान्यं शाकच वासांसि गुरवे (न्दर्खा) प्रीतिमावईत्, मनु २, २४६। **खद्—विवाहः। धारणम्। उह**हेत हिनो भार्थाम्, मनु ३, ४। उद्द-सोकतितयेन, भा १०,३६। उददन् परिघं गुरुम, भ ८, ७। तमुद्र इन् धरणिधरेन्द्रगौरवम्, भागवतम्। निर्-निर्वोष्ट:। उत्ति निर्वेष्टति, र, टी, ८, ७५। नगाधिराजलं निर्वोद्धम्, कु, टी १, २। सर्वधा सत्यवचने देही स निवंहित्, भागवतटीका ८, १८, ३२। प्र-वहनम्। प्रवाहः । गम्भोराः प्राव-

वाट्य् । गणदपण ।

इसदाः, भ १७, ६३। वि—विवादः। व्यूहरचना। चमूं व्यूदां द्रुपदपुत्रेण, भी १, ३। सम्—णिच्—संवाहनम्। प्रकृमदेनम्। संवाह्यामि चरणी, यक्क ३, १२८।

वह (बंह)।

वा-श्रदा, प । श्यतिः ।

वायोगैति:। रहिंसा। अयं वर्ग्योदिस। चट वाति। वातः। वान्ति। न वाति वायुक्तत्पार्की, तु २, ३५। बाति वातः पुरे यस्य तावसावेण भीतवत, कवि २१४। वासि वात यतः कान्ता, महाना ४, २८। खङ् घवात्। प्रवाताम्। प्रवान्, प्रवुः। वायवी-उबान् सुदु:सन्नाः, भ १७,८। लिट् वबी। ववतुः। विवय, ववाय। विवद। बुट् वाता। खट् वास्त्रति। बुङ् प्रवा-सीत्। प्रवासिष्टाम्। वायबीऽवा-सिषु भौमा:, भ १५, २६। सन् विवा-सति। वा, चु, प। १ सुखाप्तिः। २ गति:। ३ सेवा। वापयति। प्रवीवपत्। बाला। •वाय। वातः। वनितः। वानम्। वायु:। पा-समन्तती वायुसञ्चल-नम्। पाववृव्यवो घोराः, भ १४, ८७। निर्-निर्वाणम्। श्रीतन्त-त्वम्। निर्वृति:। निर्वाणी सुनिवः ग्रा-दो निर्वातस्त गतेऽनिसे इत्यमरः। तस्य वपुर्जलार्द्रपवने ने निबंबी, मा १, ६५। निरवात क्रणानु:, राघ-वर्षा ८, ४२। दीपनिर्वापकी अन्धः खात, स्रति:।

वाङ्क् — व्यक्ति (काक्ति) स्वा, प। श्राकाङ्का। वाङ्कित। वाङक् — वाङ्कि, स्वा, प। वाञ्का। इच्छा। वीङ्केति। ववाञ्का। वृवा- च्छतु:। बाच्छिता। धवाच्छीत्। धवा-च्छिष्टाम्। वाच्छिता। वाच्छा। वाच्छित:। वाच्छनम्। वाच्छा। वाच्छ-नौयम्। समवाच्छवाधिषः, भ १७, ५३। न राति रोगिणेऽपैष्यं वाच्छतेऽपि भिषतामः, स्मृतिः।

वाड् (वाड्)।

वात—शदन्तः। चुः प। १गितः। २सेवा। १सुखम्। वातयति। शववा-तत्। गतिसुखमिति रमानायः। वातयति पान्यं वातः।

वाध् (बाध्) बाहत् (हत्)। बाग्—वास्, वास्र, वास्र, दि, सा।

यव्दः। तिरसां यब्दः। दन्त्यान्तोऽयमणि, दुर्गो। वाखते। वाखते। ववाधी।
ववाधिरे शिवाः, भ १४, १४। क्रूरा
खाङ्वा ववाधिरे, भ १४, ७६। वाधिता।
वाधिखते। खवाधिष्ट। विवाधिषते।
वावाखते। वावाष्टि। वाध्यति। अववाधित्। उद्—बाङ्वानम्। उद्वाखीमानः
पितरम्, भ ३, ३२।

वास - भदन्तः। चु, य। उपसेवा।
गुणान्तराधानम्। वासयति वस्तः
चन्दनः। ग्रम्बद्दासयति व्रजन् दशदिशः कस्तूरिकासीरभैः, कवि १४।
छिदे चन्दनतव् बीस्यति सुंखं कुठा-

वाइ—वाह (जेह्र) भ्वा, था। प्रयतः।

वाहते। वर्ग्योदिस । वाहते। वाहते वाहिनीं हन्तुं वाह्यस्थामाहवेषु यः, कवि २११। वंशहे। वाहिता। अधीन् वाहयाह्यकुः (व्यापारितवन्तः), भ १४, २३। ता, (प्रतिज्ञास्ययोः) वाढम्। अन्यतं वाहितम्, पा ७, २, १८।

विच्-विचिर्, ह्वा, वो, क्, छ। विविजिय । विजिता, या, १, २, ु पृथक्करणम्। विविति। ,विविते। ॰ विनिता। विङ्त्ते। वेवेति वेदान्तं यास्त्राभ्यामेन मर्वदा। विविन्तिः च गव्यामाजी समहनञ्च यः, व्यवि . १ई४ । अविवेक्। अविविता। अविनक्। षाविङ्ता। विवेच। विविचे। योधान भीवितेन विवेच, भू १४, १०३। विक्ता। वैद्यति। •ते। भविचत्, भवैद्यीत्। प्रविज्ञा। विविज्ञति। ०ते। वेविच्यते। वेविता। वेचयति। प्रवीविचत्। वि— पृथकरणम्। विवेचना। विविनच्मि दिवः स्रान्, भ ६, ३६। धर्माधर्मी व्यवेचयत्, मनु १, २६। विक्-तु, प। रामनम्। विञ्चायति। •ते, वो, पा २, १, ३८। विच्छति, वो। यत्र विच्छति तद्व्यूहः। यत विच्छायति चयम्, कवि १२०। विच्छायाच्यकार। विविच्छ, पा ३, १, ३। विच्छायिता, विच्छिता। विद्यु, (क्रुप) चु, प। दीप्ति:। विच्छ-यति । विज्-विजिर्, ह्वा, उ। प्रथमाव:। वैविक्ता। वैविक्तः । वैविज्ञति । वैविक्तो । वैविजाते। वैविजते। वैविज्यात्। वैविजीत। भवेवेक्। भवेविकाम्। भवे-विज:। विवेज। विवेजिय, ११३। विविजे। विका। विच्यति। ॰ते । प्रविज्ञत, प्रवैचीत् । विविच्चित । ॰ते। विविज्यते। वेविति। वेजयति। षवीविज्ञत्। विजी, तु, पा। प्राये-गायमुत्पूर्व: प्रयुज्यते। प्रो विजी, क, पा १भयम्। उद्देग:। २ चलनम्। ष्ठदिजते। विनत्ति। विङ्ताः। विञ्जन्ति। विङ्क्षि। श्रीवनक्। श्रीविङ्-ताम्। पविञ्चन्। विवेज। विविजे। ४। किङ् विद्यात्। सङ् प्रवेत्

विजिष्यति। •ते। पविजीत्। प्रा जिष्ट। यसाम्रोदविजिष्ठाः, स ६, ६८ भावे, विज्यते। अवैजि। विविजिषित ०ते। विजिला। ०विज्य। (ईपो विग्नः। विक्तिः। वेजनम्। वेग विजितुम्। विजितव्यम्। वेजनीयः मनो नोदिजतै यस्य। उदिन्ति संसारात्, कांवि १ 8 ट। विट्—स्वा, प्र। १यव्दः। २ प्राक्रीयः। याक्रोयवाची पोष्ठग्रादि शित मा वादय:। दन्खादिरिति वोपदेवादाः वैटति। विवेट। वैटिता। भवेटीत् वेट:। विट:। विटप:। विड्—स्वा, प, वो। प्राक्रीयः। विडम्ब-घदन्तः। चु, प। भनुकरणम्। विङ्ग्बयति विङ्ग्बयः

शितिवासंसस्तनुम्। मा १,६। (वि-वित्त-घदन्तः। चु, प, वो। त्यागः। विथ्—वेथ्, विथ्, वेथ्, स्वा, मा याचनम्। वेधते। वेधते। 'विष्

वेधते। विद्—ग्रदा, प। ज्ञानम्। बोधः। ै सट् वेति। वित्तः। विदन्ति। वेति विस्य:। विस्य। विद्या विद्य:। विद्य: पचे वेद। विदत्ः। विदुः। वेस

विद्यु:। विद। वेद। विद्व। विद पा ३, ४, ८३। तस्य ताइका वि विकासम्, भ ५, ३४। सर्वे भवा वेद, र २, ४३। लोट् वेत्तु। वित्ताम्

विदन्तु। पचे विदाङ्गरोतु। विदाङ्ग ताम्। विदाङ्गवैन्तु, पा ३, १, ४१ विदाङ्क्षेन्स रामस्य इत्तम्, म

प्रवित्ताम्। प्रविदुः। प्रविदन्, पा ३, ४, १०८। अवै:। अवैत्, पा ८, २, ७५। लिट् विदाचकार। विदाचकतः, षा ३, १, ३८। पच्चे, विवेद। विवि-दतुः। विदाञ्चकार वैदेही रामादन्य-निकत्सकाम्, भ ६,१। विविदुर्नेन्द्र-जिनार्यम्, भ १४, ४८। जुट् वैदिता। स्टर् वेदिष्यति। लुङ् भवेदीत्। भवे-दिष्टाम्। अवेदिषु:। कर्मणि, विद्यते। प्रवेदि। सन् विविदिषति, पा १, २, ८। यङ् विविद्यते। विवेत्ति। णिच्, वेदयति। प्रवीविदत्। विदिला। • विद्य। बिदितः। विसिः। वैदनम्। वेदः। वैदितुम्। श्रा—णिच्, श्रावेद-नम्। ज्ञापनम्। पाविदितो दिजेन, र ५, २३। नि-णिच, निवेदनम्। सम्-जानम्। संवित्ते, कौ २४६। संवि-दते। संविद्रते, पा ७, १,७। के न संविद्रते वायो मैनाकाद्रि येथा सखा, भ ८, १७। संवित्तः सहयुध्वानी तच्छित्तां, खरद्रपणी (सक्तमं कला द्वाताने-पद्भा), म ५, १७।

विद्, दि, शा। विद्यमानता। सत्ता। विद्यते। स्वर्गे विद्यस्, भ २०, ३३। विविदे। वेता। वेत्यते। विस्तिष्ट। स्वित्तः। श्रेवस्तानाम्। श्रेवस्ता। विदस्त तु, छ। स्वानः। प्राप्तिः। ज्ञानम्। विद्रति। विते, पा ७, १,५८। सीता संस्कर्तारं न .विन्दति, उत्तर २३७। विन्देम देवतां वाचम्, उत्तर १। नचत्रैर्विन्दते दियः, भारता विवेद। विविदे। स्वाप्तम्त्यादिमत्तेऽयं सेट्, चान्द्रादि-मतेऽनिट्, कौ ३१। वेदिता, वेता। विदिष्टाता, वेत्। विद्राप्तिः। विद्राप्तिः।

दत्। भवेदिष्ट। भवितः। विकि दिष्ति। ते। विविद्धाति। ते। विदिलां, विक्ता। विक्तं भनप्रतीतयोः। भन्यतः विक्तः, पा ५, २, ५६। विविदिवान्, विविद्दान्, पा ७, २, ६६। स्थि— भिष्वेदनम्। भिक्तविवादः। नि— पिष्व, निवेदनम्। छत्सर्गः। देष्ठं राज्यञ्च तसौ न्यवेद्यत्, र १५, ७०। निर्—निवेदः। भातावज्ञा। निविदा, ने, १, १२४। परि—परिवेदनम्। क्येष्ठवर्षे दारांग्निकाभः। दाराग्नि-कोत्रसंयोगं कुक्ते योऽयजे स्थिते। परिवेता स विज्ञेयः परिविस्तिन्तुः पूर्वजः॥ मन् ३, १७१।

विद्, क, भा। विचारणम्। मोमांसाः ।
विक्ते। विक्ति। विक्ति। विक्ति। विक्ति। विक्ति। मां विक्ते। विक्ति। विक्ति। मां विक्ते। प्रविक्ता। प्रविक्ता। प्रविक्ता। प्रविक्ता। प्रविक्ता। प्रविक्ता। विक्तः, विक्तः, विक्तः, विक्तः, पाट, र, प्रदा विद्, पु, भा। उ, वो। १चेतनम्। ज्ञानम्। २ भाव्याः नम्। ३ वासः। ४ स्थैर्यम्, वो। प्रव्याः दुर्गा। वेदयति। ४ स्थैर्यम्, वो। प्रव्याः दुर्गा। वेदयति। विक्ते प्रविक्ति। विक्ते प्रविद्यति। विक्ते प्रविद्यति।

विध्—तु, प। १विधानक्षाः

रिक द्रोकरणम्। विधित च्छि द्रिती विद्रे इत्यमरः। कर्णवेधः, दुर्गाः विद्रातः। विवेधः। वेधिता। बेधिष्यति । प्रवेधीतः। धीत्। विधित्वा, वेधित्वा। विधितः। वेधनम्। वेधः। विधिः। वेधाः। विध् (विष्य)।

विष् पु, प, वी। चेपः। विज् तु, प, वो। भाच्छादनम्। परिधानम्। भेदनमिति प्रदोक्तः।

विष् ं गिणदपेषः] वीन् 8 \$ 8 विज्ञति। विवेख। विखिता। भवेनीत्। — ह्वा, छ। पा, वो। व्याप्तिः। वैवेष्टि। विल्, चु, प। प्रेदनम्। वेलयति। विविष्टः। विविषति। विविष्टे। वेदेष्टि विष्टपं सर्वे की तिं येख, कवि १८१। विलम्। विल:। विश्-त्तु, प। प्रवेशः। विविधात्। विविधीत। हि, विविद्धि। ्र अन्तर्गम्नम्। विग्रति। विवेश। भवेवेट्। भवेविष्टाम्। भवेविषु:। भवे-विविशतुः। विवेशिष्य। विवेश कथित्त-विषम्।, प्रवेविष्ट। विवेष। वेष्टा। पोवनम्, जु ५, ३०। वेष्टा। वेच्यति। अविषत्। (अविचत्, वो)। पविचतः ग्रविचत्। श्रविचीत् सदः, भ ११, ४५। पविचाताम्, पा ७, ३, ७२। पवि-विविचति। वेविश्यते। वेवेष्टि। वेश-चन्त। विष:। वेष:। परिवेष:। वेषो यति। प्रवीवियत्। विद्या। • विद्या। मट:। विष्णु:। परि-णिच्, परिवेष-विष्टः। विष्टिः। वैशनम्। वेष्टमुम्। वेष्ट-णमा अवाद्यपममप्रमा वेष्टनमा व्यम्। पा-प्रवेश:। गौरीगुरी गृहर-उपनीय मांसानि परिवेषयेत, मन माविवेग, र २, ६। उप-उपवेशः 🛾 , २२८। विष्—क्रा, प। विषयोगः। नम्। उपाविचदधान्तिके, भ १५, विश्रेष:। विष्णाति। विष्णीयात। द। नि—प्रवेश:। प्रवस्थानम्। णिच् विश्वाति विषवत् प्राणानसी, कवि —संसिवेधनम्। स्थापनम्। निवि-१८१। डि, विषाया। यविष्णात्। शते, पा १, ३, १७। रामशानां न्यवि-विष्क्—चु, पा। इसा। विष्क्रयते। चत, भ ४, २८। निवेधयामाम सैन्धं विष्का, घटन्तः । 😁 यादशनम्। नर्मदारोधसि, र ५, ४२। निवेशया-विष्क्रयति। वेच वेच विष्क इत्यपि मास प्राप्त : द्विरेफान् नामाचराणीव, केचित्। कु 3, २७। प्रभिनि—प्रभिनिवेशः। मनोनिवेश:। निर-निर्वेश:। उप-वी-चदा, प । हुर्गमनम् । भोग:। क्रीड़ारसं निर्विधतीव बाल्ये, ्रव्याप्तिः। ३५ च्छा। ४ चेपणम्। क्क १, २८। परि—्णिच्, परिवेश-प्रवादनम्। इंगर्भग्रहणम्। वैति। नम्। प्रवाद्युपममर्पेणम्। वेष्टनम्। थौत:। वियन्ति। वियन्ति बौरमन्तानं प्र-प्रविधः। स वहद्भनान्तरं प्रविध्य, वडी यस्य कुलाङ्गना, कवि १८८। डि, र ३, १६। सम्-संवेश:। निद्रा। वीदि। वीयात्। पर्वतः। प्रवीताम्। संविष्ट: कुश्रयमे नियां निनाय, र पवियन्। प्रव्यन् इत्येके। विवाय। र, ८५। क्रमेण सप्ता सन् संविवेश. विव्यतः। वेता। बेच्चति। प्रवेषीत्। ₹ €, 281 पवैष्टाम्। पवैषु:। विवीषति। वेवी-विष्-विषु (जिषु) भ्वा, प। यते। वेवधीति। वेविति। वाष्ट्रणीत ै सैचनम्। वर्षणम्। वेषति। विवेष। वापयति वा गां सुरोवातः (गभँ विबेषिय। विविषिव। वेष्टा। वेच्छात। याच्यति), पा ६, १, ४५। यविचत्। विविचति। वैविष्यते। 🦜 ः वीज्-स्वा, प्रा। १गतिः। वेवे प्र। वैषयति अभीविषत्। वेषित्वा, विष्टा। विष्टः। वेषणम्। विषक् ्रकुलानम्। वीजते। नायं वहसस्यतः।

गणदपण:]

वीज, बादम्तः। चु, प। वीजनम्। वायुषञ्चालनम्। वीजयित । तं वीज-याम पचैः, नै ३, २२। वीज्यते स संसुप्तयामरैः, कु २, ३२। सख्यौ मकु-म्तलां वीजयतः। मकु

वीर—घटन्तः। चु, पा, वो। ग्रीर्थम्। उद्यमः। वीरयते। पनि-वीरते। दुक्-दुगि (जुगि) भ्वा, प। त्यागः। दुक्-दुगि (जिग्ट्)।

ह हु हुज, भा, खा, क्या, वो, खा वरणम्। प्रार्थना। हञ्, स्वा, छ। यावरणम्। रोधः। हङ्, क्राः, या। समाति:। सेवा। लट्वरति। •ते। हणोति। हणुते। हणाति, वो। हणीते। व्याते विमृष्यकारिणं सम्पदः, भा २, २। हि, वृषु, वृषीहि। वृषुया-द्दत्वजम्, मनु ७, ७८। जङ् प्रवृणीत्। प्रवृश्यत । प्रवृशात् । प्रवृशीत । हणीते-उध्वरे। तेत्रोभि जंगदाहणोति, वरति चातीन् यथाईं धंने:। सत्कीर्त्तंच वृणाति यो वरयति चैमं यशो बीयते। युद्धे वारयति द्विषो निवरते नित्यं प्रियोपद्रवम् ॥ कवि ११। बिट् ववार । वन्नतः। ववरिष्य, कौ १४६। वहन। वब्रे। वहुषे। वहुबहै, पा ७, २, १३। ववार रामस्य वनप्रयाणम्, भ ३, ६। यदेव वन्ने तदपश्यदाच्चतम्, र ३,६। बुट् वरीता, वरिता। खट् वरीखति। •ते। वरिष्यति। •ते, पा ७, २, ३८। पाणिषि, वियात्। वरिषोष्ट, हृषोष्ट, पा ७, २, ३८। बुङ् पवारीत्। प्रवा-रिष्टाम्। प्रवारिष्ठः। प्रवरिष्ठः, प्रव रीष्टा प्रवृत्, पा ७, २, ४२। कर्माण्, ब्रियते। प्रवारित प्रवारिषाताम।

चवरीवाताम्, चवरिवाताम्, चहवा-ताम्। सन् विवरीषति। •ते। विव-रिषति। •ते। वुव्यति। •ते, पा ७, • २, ४१। ७, १, १०२। यङ् विवीयते। कोवूर्यते। वर्वित्तं। विच् वारयति। प्रवीवरत्। हज्, चु, छ। प, वी ११ पावरणम्। २वारणम्। वारयति। •ते। यवेभ्यो गां वृारयति, पा १, ४, २७। प्रविधन्तं नं कसिदवाग्यत्, भारत । इत्वा । इत्य । इतः । इतिः । वर्णम्। वारः। वरः। वरीतम्, वरि-तुम्। णिच् वारयित्वा। •वार्य। वारितः। वारगम। वार्यितुम्। हतस्व पालेसमितै: (विष्टित:), भ. ४, १०। बप-गोपनम्। विदू-बपवार्थः, रहार, १७३। चा—चावरणम्। गीप-नम्। रोध:। चावरीतुमिवाकार्यं वस्ति वीनिवोखितम्, भू८, २४। प्रा-परिधानम्। प्राबुवृष्टुं स्थेगाजि-नम्, भ ५, ४८। नि-चिच्, निदा-रणम्, निर्-निर्देतिः । वि-विद-रचम्। व्याख्यानम्। प्रकाशनम्। विद्य-खती ग्रेंबसुतापि भावम्, कु ३, ६८। धम् स्तं विद्यखते, ने १, २७। परि-वेष्टनम्। प्रति—निवारणम्। निषेधः। सम्—संवरणम्। योपनम्। निरोधः। संवृश्यिष्ठा स्वं ग्रती: पुराक्रमम्, भ ८, २७। चंतुवर्षुः खमानूतम्, भे ८, २६ । हक्—(कुक) स्वा, था। पादानम्।

वक्—(कुक) स्वा, पा। पादानम्। वक्ते । हकः । वक्तेरः । वक्ते । हकः । वक्तेरः । वक्—स्वा, पा। वरणम्। वृक्ते । वक्—व्यो, क्, प, वो। श्वतिः । श्वक्तम्, दुर्गे । व्यक्ति । वक्ति। । वक्—वृक्तो, पदा, पा। क्, प। - वि—परित्यागः। विज्ञ-वंजि (वनी) बदा, पा।

परि.

वर्जनम्। वङ्त्रो। ववृद्धो। विद्धिता। हण् हणु, त, ७, वो। भचणम्। वर्णोति। वर्णते। वर्णीति। वर्णते। हण् (ष्टण) तु, प। प्रीणनम्। हणित। ववर्ष । वहरी । वर्णिता । (गु) वर्णिता, वला ।

हत् + हतु, भ्वा, था। वर्तनम्।

खिति: विद्यमानता। वर्तते। वहते। वहतिषे। निर्चीन मिन्या वहते, भ २, ३७। पितरि वहतिरे क्रियाः र १२, 🏋 । वर्त्तिता। वर्त्तिष्यते। वर्षस्वति पा ७, २, ५८। डग्रं वर्त्ति-थते यमः, भ १६, १७। अवर्त्तिष्यत । षवत् स्वत्। वं त्रिं वीष्ट । षहतत्। पवर्त्तिष्ट। प्रवर्त्तिषाताम्। प्रवर्त्ति-षत। भावे, हत्यते। प्रवित्तः। विव-

क्तिषती विद्याति, पा १, ३, ८२। सीतान्तिके विद्वत्सन्, स ८, ६०। यङ वरीव्रत्यते । वर्वतीति, वरिव्रतीति, वरीवतीति। वर्विर्ज्ञ, वरिवर्ज्ञि, वरी-वॉर्त्ता णिच् वर्त्तविता अवीष्टतत्, भववर्त्तत्। वृत्, चु, प। दीप्तिः। वर्त्तयति। वर्त्ति। श्यापनम्। श्याबन मम्। करणम्। ३जीवनम्। जीविका। ४ वर्णनम्। एते कविसम्प्रदायप्रयुक्ता प्रयी णिजन्तस्य वृति चीयाः। (उ)वत्तित्व। वृत्ता। ॰ वत्य। वृत्तः। वृत्तिः। चिच् वृत्तितः। वत्तम् अधीतम्, पा ७, २, २६। वर्त्तनम् वर्त्तः। वर्त्तितुम्। श्रति-श्रतिवर्त्तंनम्। प्रतिक्रमः। उज्जङ्गनम्। प्रपत्यकोभात् या स्त्री भर्तारमतिवर्त्तते, मनु ४, १६१। यतु— यतुवर्त्तनम्। यनुगमनम्। यतु-रोध:। सेवा। सङ्गमनम्। प्रजास्त मनुवर्त्तन्ते समुद्रमिव सिन्धवः, मनु ८, १७५। अनुरोधोऽनुवर्त्तनमित्यमरः। चप-चपवत्तनम्। संचित्रीकरणम्। व्यवज्ञजनम्। प्रतिनिवृत्तिः। तसाः दपावत्तेत हूरकष्टा, र ६, ५८। व्यव-निव्वत्ति:। व्यपनर्तत एष :वीर:, उत्तर १०५। घ्रास—द्यासमुखगमनम्। प्राग-मनम्। जगामास्तं दिनकरो रजनी चाभ्यवत्तंत, रामा। या यावर्त्तनम्। षागमनम्। धेनु रावद्यते वनात्, र १, दर्। णिच् पावर्त्तनम्। दुग्धादिपाकः। षावृत्ति:। चण्डी प्रतमावर्त्तेवेद् य स्तु, स्मृति:। अपा, उपा-निवृत्ति:। व्या — व्यावृत्तिः। उद् — उदर्तनम्। प्रतिरेकः। विलियनम्। उद्दर्जनोत्-सादने हे इत्यमरः। उहत्त्याम देवि र्वा नाना सुगन्धिद्रयोग, स्मृति:। चहुतम्। नि-निष्ठत्ति:। स त्वं निवर्तस्व विष्टाय बज्जास, र २, ४०० निर्-

निष्यत्तिः समाप्तिः। प्र-प्रवत्तेनम्। प्रव-त्तितां प्रक्रतिहिताय पार्थिवः, शकु ७, २११। वि - विवर्त्तनम्। परिवर्त्तनम्। घूर्णनम्। भ्रमणम्। क्राग्देवीं व्यवीद्वतत्, उत्तर २१२। सम् सत्ता। भावः। डत्पत्तिः। स्त्रिनाङ्ग्लिः संवत्ते कुमा-री, र ७, २२। हतु, वाहतु, दि, पा। १वरणम्। २सेवा वो। हत्यते। वहते। वर्त्तिष्यते। अवर्त्तिष्ट। वाद्यत्वते। वा-वृताञ्चक्री। वावर्त्तिथते। प्रवावर्त्तिष्ट। वाह्यसाना सा रामगालां न्यविचत' भ ४, २८। इत—इती, तु, प। इंसा। ग्रंथः। इति प्रदीपः।

्रह्मभ्—वृधु, स्वा, या । वृद्धिः । 🗇

वर्दते। यस चौर्वर्दते नित्यं यो-उर्चे वेडियति दिजान्, कवि ८०। वर्डते ते तपः, भ ६, ६८। ववृधे। ववृधिषे। वर्धिता। वर्धिष्यते। वत् स्यति, पा ७, २, ५८। भवर्षिखत। भवत् स्वत्, पा १, ३, ८२। प्राधिष, विदेवीष्ट । भविष्ट। भवृषत्। सुदस्यावृषत्, भ १५, १८। विवर्षिपते। विवृत्सति। वरीवध्यते। वरीवर्डि। वर्डयति। पवी-वृधत्, श्रववर्डत्। वृधु, (कुप) चु, प। दीप्तिः। वर्षयति। वर्षति। (उं) वर्डिता, बद्धा। वृद्धः। (पिच् वर्डितः)। वृद्धिः। वर्द्धनम्। वर्द्धितुम्। वर्द्धिणुः। सम्- णिच्, धंवर्षना। प्रतिपासनम्।

्र द्वश्—दि, प । वरणम्।

हम्मति। ववर्षे। वर्षिता। अहमत्।

१सेचनम् विषयम्। दे हिंसा। इक्रियः। धर्मभण्डणम्। प्रश्चित्र्यम्,

वो। वर्षता गर्जति वारिद्पटची वर्षति .नयनारविन्द्रसवनाथाः। ववर्षे। वह षतु:। वब विषया विषिता। वर्षि-ष्यति। अवषीत्। अव्षिष्टाम्। विव-र्षिपति। वरीहणते। वरीवर्ष्टि। हुण, चु, त्रा। १ प्रक्तिबन्धः। २गर्भाधानस्। इऐख्येम, वो। वर्षयति। बते। प्रवी-ह्यत्। •ता (ड)• वर्षित्वा, हृष्टा। ॰ वृष्य । वृष्ट: । हृष्टि: वर्षेग्रम् । वर्षेम् । वृत्री। वर्षुकः। स्वीर्वर्षका षुष्पचयम्, भ २, १७। वृषः। ह्रषा।

वृह् वृह् वृहिर्, वृहि, (इह)

भ्वा, प। १वृद्धिः। २ गन्दः। वृद्धिः, भ्वा भा, वो। वृद्धिः। वृद्धित। वृद्धित। यस्य वर्द्धति नित्यं . श्रीदानं यतिस द्वंहित्। वृंहित्ति सिंह-वद् यस्य दिपा हृद्वारिवारणम्॥ कवि ८५। ववर्ष। ववृंह। ववृंहि। ववृंहिरी गजपतयः (भाषानेपदं चिन्त्यम् टी), मा १७, ३१ । बर्डियति । वृद्धियति । ते। प्रवृहत्। प्रवहीत्। प्रवृहीत्। पवृं हिष्ट । हिह्न (काप) चु, प। दीप्तिः। वृं इंग्रित। वृं इति, वो। वृं हितं करि-गॅजितमित्यमरः। वृत्त्, भ्वा, प, वो। वृद्धिः। वृद्धिता वृद्धिता। प्रवृद्धीत्। वृद्ध, तु. प। उद्यमः। वृद्धति। ववर्षे। वहहतः। वबहिष्य। वबदै। वहहिब, वहन्न। वर्हिता, वर्दी। वर्हिष्यति, वर्च्यति। अवदीत्, अवस्तर्भ अयं वर्गीदरपि। मित्रमुद्धहर् गुरुम्, भ १७, ८०। विहिंगः। वहीं।

हण् हणु (प्रेषु) भार, पा

्र प्रार्थना। स्त्रीकौर:। वृ, क्रारा/प । १ वरणम्। रमरणम्। बट् हणाति। हणीतः। हणितः। हणीते। हणाते।
हणते। प्रव्र वरं हणीयः, र २, ६३।
छड् पहणात्। प्रहणीतः। सिट् ववारः।,
वविष्यः। ववरे। सुट्वरिता, वरोतां।
स्ट्विष्यितः। वते। वरीष्यितः। वते।
वर्षािष्यि, वृर्योत्। दन्खोष्ठपूर्वीऽपि
पोष्ठापूर्वी भवितः। वरिषोष्ट, वृषीष्ट,
पा ७, २, ११।, सुङ् भवारीत्। भवा रिष्टाम्। भवारिषुः। भविरष्ट, भवृष्टे।
कर्मणि, वृर्योते। भवारिः। भन् विवरिष्ठति। वते। यङ् वोवृर्योते। वाविते
णिच् वार्यति। भवीवरत्। वृर्वो।
व्यर्थे। वृर्णेः। वृर्णेः। वर्णम्। वरः।
वारः। वरितुम्, वरीतुम्।

16

वे-वेज्, भा, छ। तन्तुसन्तानः।

वस्त्रनिर्माणम्। वयति। •ते। यगः-पटं वयति सा तद्गुणै:, ने १, १२। लिट् ववी-। ववतु:। वविष्य, ववाष। ववे। पन्ने, खवाय, पा २, ४, ४१। जयतुः, जवतुः, पा ६, १, ३८, ३८। उविधिय। जाये, जावे। खम्यु वेसुधा मृतुः सायका रज्जुवत्तताः, भ १४, ४८। सुट् वाता। स्टट् वास्वति। •ते। पाशिषि, जयात्। वासीष्ट । लुङ् पवा-मोत्। अवासिष्टाम्। अवास्त। अवा-साताम्। व्यमंचि, जयते। प्रवायि। मन् विवासति। ते। यङ् वावायते। वाबेति, वावाति। णिच् वाययात, पा o, रक्ष् ३०। प्रवीवयत्। छत्वा। •वाय, पा ६, १, ४१। उत:। इति:। (कत-मिति तु कथी इत्यस्य इत्वम्), पा ६, ४, २। वानम्। वायः। वातुम्। वाता। व यकः। वार्यो। तन्तुवायः। वातः व्यम्। वानीयम्। प्र-विधनम्। प्रत्य-नम्। एकार्थतन्तुप्रोतामाला, मा २,

८२। शासपोतं सुनिपुत्रम्, र ८, ७५। वैच-वृची भदन्ती, दर्भने इति केचित्।

वेण्-वेन्, वेमृ, वेनृ, स्वा, छ।

१गितः। २ज्ञानम्। ३चिन्ता। ४नि-श्रामनम्। चाच्यज्ञानम्। ५वाद्यभा-गुड्ख वादनार्थयस्यम्। वादनम् दुर्ग। विषति। ०ते। वेनित। ०ते। वेखिः।

वेष् (विष्)।

विप् — दुवेष्ट, भ्वा, भा। कस्पनम्। विपते। डिमार्त्ते इव वेपते, मकु ४, १२८। विवेपे। वेपिता। वेपिखते। भवेपिष्ट। भवेपिषाताम्। णिष् वेप-यति। भविवेपत्। वेपितः। (दु) वेप-यु:। प्रवेपनम्। प्रवेपनौयम्। भूत-

वेल्-वेल्, वेल्ल, खाप।

जातं प्रविपते, उत्तर १८८।

े वृद्ध विद्वृ विद्वृ (केनृ)। कम्पनम्। विद्यति। विद्वति। उद्देवनि कुम्भीनसाः, उत्तर ७०। विद्वदशका घनाः, काव्यप्र।

वेस-गदन्तः। चु, पं। कालीपदेगः।

ं समयक्षयनम्। वेनयति। पविवेचत् देवी—देवीङ्, छ।न्दसः। पदा, पा।

१गितः। २ व्याप्तः। ३ इच्छा। ४ चेप-पम्। ५ खादनम्। ६ गर्भग्रहणम्। विवोते। वेव्यते ऐप्, वेव्ये, पा १, १। वेव्याञ्चले। वेविता। वेविव्यते। प्रवे-विद्या वेवित्वा। भावेव्या वेवितः। वेव्यनम्। वेव्यकः।

वेष्ट्—भ्वा, पा। वेष्टनम्। वेष्टते। विवेष्टे। वेश्विता। प्रवेविष्ट। विवेष्टियते। वेषेष्टाते। वेषेष्ट्रां वेष्ट्र-यति। स्विवेष्ट्रम्, श्ववेष्ट्रम्, पा ७, ४,८६। वेष्ट्रस्तिः। १वेष्ट्राः। वेष्ट्रतः। वेष्ट्रमम्।

वैम् वेस्, भ्या, प. हो। गति:। वेद्र वेद्व (जेद्व) भ्या, गा। प्रयक्षः। वस्योदि रपि। वेदते। विवेद्वी।

वै— मो वै (पै) स्वा, पा मोषणस्।

वायति । इदायति यथा स्तीणां स्रोदाद्वें वपुः, कवि २१४ । ववी । वाताः । प्रवासीत् । णिच् घूनने । वाययति, पा ७, १, ८८ । प्रस्त्वतं, वापयति । (पी) वानः ।

व्यच् तु, प। प्रतारणम्।

विचित्रं, पा ६, १६, १। विद्याच ।
विविचतुः, पा ६, १, १०। विद्याच्यः,
विविचतः, वो । स्वचिता, जो १५०।
(विचिता, विचिद्यात, पविचीत्, वो)।
स्विचिता, विचिद्यात, पविचीत्, वो)।
स्विच्यात । साधिष, विच्यात्। सैय्यचोत्। विद्याचिषति। वेविच्यते। वास्यचौति। वार्यात्ता। स्वाचिता।
विचित्रं। विचित्रं। विचित्रं ।
विचित्रं। विचित्रं । विचित्रं ।
स्विचतुम्। विचिता। विचित्रं ।
स्वाचनः। उद्याचाः।

व्यय्—स्वा, चा। १ भयम्। २ चलम्म्।

कम्मनम्। १ व्यथा । दुः खानुभवः वो । दुः खेन चक्रनम् । भयेन चक्रनम्, दुगा । व्यथते । विव्यथे, पा ७, ४, ६८ । न विव्यथे तस्य मनः, भा १, २ । व्यथिता । व्यथियते । प्रव्यथिष्ट । प्रव्यथिता । व्यथिष्ट । प्रव्यथिता । भावे, व्यथिता , प्रव्यथि, प्रव्यथि, प्रव्यथि । भावे, व्यथ्यते, प्रव्यथि, प्रव्यथि । विव्यथिति । वाव्यथते । वाव्यथिते । वाव्यथिते । वाव्यथिते । वाव्यथिते ।

व्यवयित, घटादि:। पविव्यवत्। रधे-नाविव्यवृद्दीन्, भ १५, ८६। व्यवित्वानः • व्यव्य। व्यवितः। व्यवनम्। व्यवा। व्यवितुम्।

MAKAM. T

व्यथ्-दि, प। ताङ्तम् । पोङ्नम् ।

विधनम्। विध्यति, पा 👢, 📢 १६ । विष्याधा विविधतः। विष्युद्ध, विष्यु-धिय। विविधु स्तोमरे:, स १४, २४। व्यक्षा। व्यत्स्रति। बाधिषि, विध्यात्। पञ्चात्मीत्। पञ्चादाम्। पञ्चात्सः। च्चदये (व्यात्सीत्, भ १४, 4८। कर्माण, विध्यते। ष्रव्याधि । सन् विव्यत्सति। यङ् वैविध्यते। वाव्यवि। चित्र् व्याधयति। पविव्य-धत्। विद्वा। • विध्य। विद्वः। विद्विः। व्यथनमा व्याधः। व्यवमा व्यादा। क्षिप्, खगावित्। पतु—सम्पर्कः। व्याप-नम्। प्रत्यनम्। इन्द्रनीले मेलामयी यष्टि रत्तविका, र १३, ५8। सरसिक-सन्विषं शैवलेन, शक् १, ८६१ पप-प्रत्याख्यानम्। निरासः। खेपः। धेर-णमा खागानुः प्रभाकरस अपविषय-चाविव, र र•, ७४। बा—चेव:। धारपम्। पाविष्यं च स्त्रजम्, भ २०,

व्यप्—चु, प, वो। चयः। व्ययः। व्यय्—स्वा, च। गतिः।

व्ययति। •ते। यस्य न व्ययते पदम्। व्ययति स्वर्गलोकायं न कोतिः सुका-तासनः, कवि २२१। वव्यायः। वव्यये। व्ययता। व्ययिष्ठति। •ते। प्रव्ययोत्। प्रव्ययिष्टः। कोषास्त्वस्व्ययोः (त्यतः वान्) भ १४, १७। व्यय, चु, पः। चेषणम्। व्याययति। व्यय, चट्नाः। चु, पः। वित्तसमुन्माः। धनव्ययः। व्यययति। धवव्ययत्। बहु व्यय-यति द्रव्यं तद्धं यो व्ययव्यतीन्। व्ययते यद्यमोविम्बं त्रेसोक्यादम्ताः गतम्॥ कवि १९७।

ू व्युष्—वुष्, दि, प,। १दाइ:। "

े र विभागः। खुष्यति। वृष्यति। वृद्योष। व्योषिता। दाष्ठार्थे, षव्योषीत्। विभागे तु, षञ्जुर्वत्, की १४२। प्रय-मोष्ठग्रदिः। व्युम् वुम् पुष् पुम् इत्येके। व्युष्यति। व्युष्, प्युर्ष, पुम्, चु, र्ष। उसर्गः। व्योषयति इत्यप्यन्ये।

बो-बोज, खा, उ। पाच्छादनम्। परिधानम्। लट् व्ययात्। •ते। बिट विव्याय, पा ६, १, ४६। विव्यतः। विव्ययिष, पा ७, २, ६२। विव्याय। विव्यया विव्यव। विव्ये। लुट् व्याता। स्टट् व्यास्ति। •ते। षाणिष, बीयात्। व्यामीष्ट । तुङ् प्रवासीत्। प्रवासिष्टाम्। प्रवास्त। अव्यक्षाताम् । कार्मीक, वीयते । अव्यायि । सन् वित्रासित। •ते। यङ वेबी-यते, पा ६, १, १८। वेवैति। वेव-बीति। षिच् व्याययति, पा 🦦 🤾 ३७। वौला। • व्याय। परिवोय, परि-व्याय, पा ६, १, ४३, ४४। बीतः। वीति:। न्यानम्। व्याय:। व्यातुन्। सम्— पाच्छादनम्। पात्राः संविद्य-रम्बर्श्वकाणि रजः, स्पू, इतः हो।

त्रजति। व्रजि इत्येके। व्रञ्जति। व्यवज्ञाति। व्रजिष्यति। अवा-जीत्, पा ७, २,३। विव्रज्ञिषति।

ग्रज्—(वज्) भ्वा, प। गति:।

वात्रज्यते। वात्रिता वाजयति। वर्ज्, चु, प, वो। १ संस्कार्दः। २गतिः। वाज यति। वज्, बाजयति इत्येके। परि —तीर्थभ्यसणम्। प्र—प्रव्रक्या। वनः प्रस्थानम्। चतुर्देशसमा रामं प्राव्याः जयत्, र १२, ६। परिव्राट्। व्रजः। व्राजः। व्रक्या। प्रवेजितः।

त्रग्—(यंग) स्वा, प। शब्द:।

त्रणिता वत्राणा त्रणिता। त्रण, घटन्तः। चु, पा गात्रविचूर्णनम्। घङ्गमेदः। चतम्। त्रणयित्।

त्रस्—शंत्रसच्, तु, प। केंद्रम्। व्रस्ति, पा ६, १, १६। वत्रस्व। वत्र-सतु:। वत्रस्थि, वत्रष्ठ। वत्रसु:, भ १४, ७७। व्रस्तिता, त्रष्टा। व्रस्थिति,

व्रस्थति। प्राधिषि, व्यात्। प्रवः योत्, प्रवासीत्। प्रवश्यिष्टाम्, प्रवाः ष्टाम्। प्रविषयुः प्रवासुः। विवश्यः पति, विवस्ति। वरीव्यातः। वावष्टि।

वरोड्डबोति। व्रथयति। पवित्रयत्। व्रथित्वा, पा ७, २, ११। व्रथिता

'तरुन्, स ८, ४१। व्ह्वा । हक्षाः, स १२, ७५। व्रबनम्। व्रबनः। क्रिप्, सहर ।

्रेष्ट्री—क्रा, प । वीक्, दि, पा। प्रार्थेनम् । याचनम् । व्रिपाति । वीपाति, वो । वोयते । प्रयं गत्यर्थी-इपि । विद्राय । विविधे । वेता ।

वेष्यति। •ते। चत्रैषीत्। चत्रेष्टः। वोड्—दि, पः। धोरणम्। चेपणम्।

२ बजा। बोद्याता विद्योद्ध । द्रीदिता। प्रवीदोत्। वोद्धिता। द्रीदितः। वोद्धाः

वीस्—वृस्, चु, प, वी। बध:।
(वीस्यति, वोसति। वृस्यति, वृसति।
वृष्यति, वृषतीति कसित्।

बुड्—(चुड) तु, प। १ संवरणम्। १ संक्रितः, वो। इतिसळानम्, वो। बुडिति। वुद्रोड। बुडिता। ग्रेबुडोत्।

्री—क्रां, पागसनम्।

विनाति । विवादा विता। पर्वे वेत्। पिच् वेपयति, पा ७, ६, ६६। क्र, वेनः।

(1)

ग्रक्-रि, उ। मर्वेषम्। चमा।

यतिः। यक्ष्य, स्वा, पा ग्रतिः। सामर्थम्। शकाति •ते इदि दृष्टं भक्ता, की १३८। शकाति वर्ते दःखं दीनः, दुर्गा। मक्कोति। मक्कतः। मक्क-वन्ति। सर्वेषां प्रकाने बचः। प्रक्री-खगका मध्याजी विजेतं ग्रक्त्तेऽप्य-रोन्, वावि ६३। एतकाते छभयपदी। श्रक्तुयात्। भशक्तोत्। श्रशका श्री-विषय, ममक्य। मेके। ममक्य दैवान् जीतुम्, भ ८, ४७। तां धर्मुं न प्रशा क, नै ६, ५२। न शिकतुः के लिरसा-दिरन्तुम्, ने १, १४। यता। यध्यति। •ते। पाणिषि, शक्यात्। शक्योछ। दिवादिस्तु सेट् इति कश्चित्। तन्त्रते यकिता, यकिष्यति, नते, को १३८। सादिनेंट् इति अमदीखाः। सादि-र्वेट् इति वीपदेव:। तन्मते, शक्तिता, यसा। अधकत्। अधका। न योद्-मयनन् केचित्, भ १५, ४८। शिचति, ते, पा ७, ४, ५४। धनुषि, शिचते, की २४२। शाशकाते। शाशकीति। यामति। पिच् प्राक्षयति। प्रशी-यक्ता प्रका । श्रेका प्रता मतः गकितः घटः कर्त्तिति काशिका ।

यिताः । यजनस्। याताः । यज्ञस्। यक्तम्। तत् केंक्रयो सोदु सम्प्रेन् व्यानाः, भ ३, ६। प्रकोऽस्य सन्यु भवता विनेतुम्, र २, ४८। प्रका मखेनापि सुदोऽमराणाम्, न ६,६८। प्रक्र—यिताः, स्रा १ वासः

भयम्। गङ्गा। इसंग्रवारीपः, वौ।
संग्रयः। गङ्गते। क्यां। गण्डले नासीः
कृषि ६१। गण्डे। गण्डले । प्राङ्गिता ॥
गङ्गिष्यते। पण्डल्ड । पण्डल्याताम्।
पण्डल्यते। पण्डल्ड विवस्ततः, स १५,
१८। वस्तृनशङ्गिष्ट विवस्ततः, स १५,
११, ११। वस्तिवते। प्राण्डले।
गण्डला। प्राण्डले। भ्राण्डले।
गण्डला। पङ्गते। भ्राण्डला।
गण्डला। पङ्गते। भ्राण्डला।
गण्डला। प्राण्डला। प्राण्डला।
गण्डला। प्राण्डला। प्राण्डला।
पण्डला। प्राण्डला। प्राण्डला।
पण्डला। प्राण्डला। प्राण्डला।
पण्डला। प्राण्डला।

गच्—स्वा, पा। कथनस्। ग्रवति । गञ्च—गवि, स्वा, पा, वो। गतिः।

भट्—स्वा, पं। १रोगः। २भेदः। श्रमतिः। ४ प्रवसादः। मटितः मट्, सु, पा, वो। साघा। प्रस्टयते।

शाटी। बाटका । व

शक् स्वा, प। १ वेतवम् । सास्त्रम् ॥ मित्रवचनम्। २ हिंसां। १ संक्षे सनम्। दुःषानुभवः। यठिता समाठोत्। यठः॥ प्रिता। प्रमठीत्, प्रमाठोत्। यठः॥ पठ्, वठ, वठि, चु, प। १ ससंस्करः पम्। २ संस्करणम्, वी। ३ गितः। श्रमानस्यम्, वो। • यठ् चु, पा।। स्रावा। याठयित। •ते। व्याठयित।

क्षाद्धित। सर् खर् इत्येकी। प्रदु

- दुवैचनम्, हाको । जिल्लास्यामाव स्टब्स्येन गठवति विक्रियमाव स्टब्स्येन

श्रम् (चण) स्वा, प्राप्त । १ शतम्। श्रमतिः। श्रणति । श्रणयित । दाने घटादिः।

्राच्छ्—प्रहि, स्ना, या।

रोगसङ्घातयोः। शच्छते। प्रच्छः पद्ममच्छः।

शद् - शद्र स्वा, तु, प। श्गितः।
श्यातनम्। छेदनम्। १ विशीर्णता।
पतनम्। पातनम्, दुर्गा। शीयते, पा
७, ३, ५८। शीयते हृदिमानित, स १८, १। श्रीयते हृदिमानित, स १८, १। श्रीयते हृदिमानित, स १८, १। श्रीयते हृदिमानित, स १८, १०। श्रीदिय, श्रीवन्।
श्रीयात्। श्रीद्राः। श्रीदिय, श्रीययाः।
श्रीयात्पति। श्रीयति। श्रीयति।
श्रीयत्पति। श्रीयति। श्रीयति।
श्रीयत्पति। श्रीयति। सङ्गेऽगीशः

यात्वात । अशासतत्। जहु (योश-तहार्षः, १५, ६८। गती तु, गाः प्रा-दयति गोपातः, पा ७, ३, ४२। पा— यद्, स्ता, प, वो। गतिः। प्रामीयते। पायता। पागात्सीत्। मञ्जः। यदः। शादः। शाहतः।

यप्-स्वा, दि, जा १ पाक्रोय:।। उत्तर

विक्षानुष्यानम्। यायः। २ उपाणकानम्। अर्कानाः। ३ यपथवारम् ।
यपिति ०ते। यप्यतिः। ०ते। कृष्णायः
यपते, कौः ३८३। यरौरस्यर्भपूर्वकाः
यपये यावानेपदम्, तेन संख्यः यपासि
यदि किश्विदपि स्वरासि इति सिषम्।
देवानिगुरुष्यः यपते न यः। दासीः
सिष न यप्यति, कवि १७०। सैशिखे
वायपत्, से ६७, ४८। सहस्वानेदसी

श्राप श्रीवया श्री त्वां श्रमाप सा, र १, ७०। श्रमा। श्रमाप्सः। •ते। स्थाप्ति। श्रियामाम्। स्थाप्सः। स्थम । स्थापाताम्। स्थाप्सतः। स्थम। निञ्चवानोऽसी सोताये स्थर-मोहितः, म ८, ७४। तास्योऽश्यप्सतः वासिनः, स ८, २३। श्रियप्सति। •ते। श्राशप्यते। श्रायप्ति। श्राप-यति। स्थीशपत्। श्रमा। श्रापः। श्रमः। श्रमः। श्रपम्। श्रापः। श्रमः। श्रमः। श्रपम्। श्रापः। श्रमुम्। स्रस्यम्। स्थि—श्रभित्रापः। परि—साक्रोशः। पर्यशाप्सीदिविष्यासी, स ४, ३३।

यपथानगप्यत् (जातवान्), भ ३, ३३।

यब्द्—चु, प। १ वाविष्कार:।
रमावणम्। १ प्रब्दः, वी। प्रब्द्यति।
सोपसर्गस्यैवाविष्कारोऽधः। प्रतिश्रब्द्यति (प्रतिश्वत माविष्करोति) प्रशब्दयति (गमीरमधं ग्रिष्यः स्फुटीवरोति)
दुर्गाः। परं प्रब्द्यति द्वाःस्यः, कवि
१८४।

यम्—गर्मः, दि, पः उपग्रमः।

यास्तभावः । निवृत्तः । क्यास्तीन करणम्, दुर्गा । यास्यति, पा ७, ३, ७४ । यास्येत् मत्यपकारेण नोपका-रेण दुर्जनः, कु २, ४० । वृद्धं रकोऽयाः स्यत्, भ १७, ६३ । यथाम । येसतुः । येसिय । यथाम वृष्ट्यापि विना दवाः स्वः, र २, १४ । समत्सरोऽपि यथाम चितिपालकोकः, र ७, ३ । यमिता । यस्याति । प्रयमत् । (प्रयमत्, प्रय-पौत्, वो) । प्रियमिषति । प्रयस्यते । प्रयस्ति । वेजांसि प्रयमाञ्चलः, भ १४॥ ६० । यमयति । प्रयमिष्टाः प्रमयेः

द्पि संपाने यो रिवम, म ६, ८८ ॥

शम्, च, घा, बो, पालीचनम्। प्रणि गव्—(काष) स्वा, व । वधः। ग्रवति भागम्, दुर्गा । गामयते । (उ) ग्रामि-त्वा, श्रान्ता । ग्रास्तः। यान्तिः। विषच् यान्तः, प्रामितः, पा 8, १२३। गगास बह्रन् योधान्, अ ७, २, २७,। वरेण ग्रसितं तस्यः, कु र, प्रा गमी, पार, र, १४१। गम-नम्। ग्रमः। ग्रमितुम्। ७०—निव क्तिः ।, विनाशः १०० नि च्यवणम् । दर्शन बम्बा बाज्ये तं निधम्य प्रतिष्ठितम्, राष्ठ । उपितिध्वनीनावातानान् निश् स्या मार् ८ । पदर्धने घटावि:। प्रणा विनी निशमया स्तरम्, सा ६, १७ । दर्भने तु, रूपं निशास्यति। । अस्त्रिप् प्रचार्याः। निवृत्तिः। । । । उपनाह हो । श्रक् (कस्ब) भ्वा, प। १ हिंसा। २ गितः, वो । , शस्त्र (प्रस्) हु। प Tani perilipinga ira 18.1 क्षा व (पव्) आ, पा । १ विमा है २ गति:, वो ॥ शब् (चर्व) स्वा, पं विसा। गर्वति। गर्वति। हारा ने हा । एक मण्डाका, प। क्रमति। विंगः, वो। ग्रस्, भ्वा, प्रा। १ चन-नम्। २संवरणम्। प्राच्छादनम्। यत्ति। जते। यजन्ते सदगुणा नित्यं गलन्ति च सरालयम्, कवि १०१। ग्राना शेसे। च्यानीत्। च्यानिष्ट। यल् हु, या, वी। साधा। गालयते। उद्-उक्कनम्। पोक्कलक्कोणित, मा ३, ६६ । यस:। यसमः। यससः। श्राका। ग्राचा चा, मा। साचा। प्रस्मते। प्रव् स्वा, ए । १गति:। श्विकारः । अश्—भ्वा, पु । मनगतिः। शम्बि। ग्रेगतुः। भ्रेमिय। ग्रमः।

१ है, १०३। असिता। प्रथमीत, प्रथा-मीत्। गम् (सस्) विश्वसत्युत्पथक्थि तान्, कवि ३२ । मस्यम् । अस्तम्। र्यास्—शिस, स्वा, प्रना । १ इच्छा र पामी: । वष्टार्थ ग्रंसनम्, वो । निख-माङ्गीगः। प्रायंसते । प्रायंसन्ते मसितिषु सुरा जयम्, यक र, ८८। पागगंसे। पाणिवयागगंपिरे, १४, ८०। पार्शनिता। पार्शनिष्ट। षाङ्गिङ्गोऽपि इस्यते। यः संसते सता हात्तम्, कवि २३ ।।। उर्व ।।।।।। भन्तः भाः पाः स्विता । प्राप्तः। तिहंगा । यंसति । न से क्रिया शंसति वाजिदीपितम्, सर्वाक्रिका ममंसतः। प्रमंस बाचा पुनरतायेन र्धर, हद्दा ग्रंसिता १ ग्रंसियति । यखात्। प्रशंभीत्। प्रशंकिष्टाम् । पर्यामिषु:। कर्मणि, अस्ति। प्रमंति। शियं निष्ति। भागस्यते। शामं स्ति। गंस्यति। प्रमासंसत्। गंसिलाः यस्का। भ्यसाः यसाः। व्यस्तिः। र्थं सनम्। यसः। ऋषं सः। असि प्रसि यायः। प्राथादः। मा वा-क्ष्यनम्। पायं सता वाषगति हवाके, कु ३,, ८४ । म प्रमान प्रामानीसं निमान TG HIND AND THE BEST INDEST ्रणायंस् यंस्त्, (संस् संस्त्)। शास् - शास्त्र, भार, प । व्यक्तिः शास्त्रति। (ऋ) भाषास्त्रत्। शास्त्रा। गाड्-गाड्, खा, जा। सावा।

माम्य यस् वस्त । हिंसा ।

• शमिति। शशास । शशसतुः, या ६

ाणवाला जाग् वसाधना प्रकोत्तिनी। इत्यादी तु भीणादिक-ती च्यो करणम्। श्री शांमति । ते बास्त्रम्, पाकः १,६। अन्यव शातयति। श्रीशाः वचा सिवि:। आसु. भ्वा, पदा, पाक सते खद्रनतां ग्रानयत्वाग्रगान् नित्वम्, र प्रच्या । व पामि । प्रशामिमम् नवि ७३। नित्व माङ्योग:। आणामते, िको क्रमारक्या (साम्बः) । 🕾 शार-घडन्तः। चु, प, वो। दीवंश्यम्। ्रिकास माल्-प्राखः स्वा, पा, वो। श्वाचा। गामते। प्रशासी। धनग्रासी। यस संयामधी करतं शासन्ते बादुशासिनः, बाब १०१। यास्—शासु, घदा, पा विश्वासनम्। उपदेश:। शामनम्। षाचा। सट् मास्ति। मिष्टः, पा ६, सनम् । ४, १४। यासति। यास्ति य बाचया राजः स समाट् रत्यमरः। स किंसचा बाधुन यास्ति योऽधिवम्, भा १.५। . यास्वरीन् । धर्ममाणास्ते, ३ रो ० डि, ॰ माबि, पा ६, ४, वप् । निङ् शिषात्। मङ् प्रशात्। षणिष्टाम्। प्रशासः। प्रशात्। प्रशाः। कुर नि:संग्रयं जीक मित्यगात, र ९४, ७८ । जिट् ग्रमाम । ग्रमामतुः। **उर्वी ग्रहामैबापुरी .मिव, र १,। ७०।** शुद् गासिना। स्टट् गासिन्ति। पाणिति, शिषात्। लुङ् प्रशिवत्। राजी राज्य मणिवत्. र १८, ५५ । बर्माव, विष्यते। प्रशामि। सन् शिशा-विवति। यङ् श्रेशियते। शाशास्ति।

शासयति। प्रश्रमासन्,

याप्ति-

पौरवे

षा ७, ४, २। (उ) ग्रासिला, ग्रिष्ट्रा।

• शिख। शिष्टः। शिष्टिः।

रिखीषादिकः। गासनम्।

विच

वो। पात्रास्ते। पात्रासाते। पात्रा-वते। वियमाधावते कोकाम्, 📦 प्रतिक । पामासत**ेततः मान्तिम् स** १७, राज्यामगावा । प्रामासिता ह पायाविष्यते। पात्रामिवीष्ट । पात्रा-मिष्टा (७) पाशासिता, पाशास्वा। पश्चमस्यग्राम्बर्भग्नामर्थात् न स्वप् रति गोविन्द्रभद्दः। बदनुबन्धपतं एन्द्रस्वेव दित धातुपदीयः। पामाद्यः। पामा-सनम्। क्षिप्, बागी:। धनु - धनुमा-या-पादेश:। रचांसि रचितुं सीतामाशिषत्, भ ६, ४। इतं सद्मणायाभिषत्, स ६, २७। प्रमासनम्। वेणे राज्य प्रशासति, मनु ८, ६६। शि - शिज्, स्ता, वा तन्यरणम्। तीच्योकर्यम्। पद्मादेखोजनम्। थिनोति। शिनुतः। शिन्वन्ति। शिनुते। शिशाय। विश्वविष, शिश्रोध। शिथी। भेता। भेषाता भेषाता •ते। पर्भै-षीत्। प्रशेष्ट। शिशीषति। शेशीयते। येथेति। गाययति। प्रशीययत्। शिला। श्रीयत्य। शितः। निश्चितः। सम्—संभितः। संभितव्रतः। निधिनोत्यसिपुतिकाम्, कवि ७६। शिच्—भा, या। शिचा। विद्याप इसम्। शिवते। मक्त् बि-मनापि शिचते, ने १, ७३। पशि-चता कि पितुरेव सम्बद्ध, हर १, ११। वसमती मासितरि, मकु १, १४०। हो मिसा। मैस:।

शिक्ष-शिवि, स्वां, पा पान्नाणम्। श्रिङ्गति। शिश्विङ्ग। श्रिङ्गिता। प्रशि-इत्। शिरस्युविशिष्टितम्, भ १४, धरातं सूर्भावाधिकत्, भारक, टप् शिच्च-शिकि, पदा, चु, वो, पान घव्यतस्वितः। शिङ्तो। पशिङ्ता। शिथिन्ते। शिन्तिता। पशिन्तिष्टा शिक्तयते। शिक्तते। वर्ग्टां दीघं शि-शिष्त्रिरे, भ १४, ४1 शिष्त्रानपतित-संघ:, भ ३, ४६ । स्विमित वस्त्रपर्णानां भूषणानाच धिक्तितम् इत्यमरः। तालेः शिक्षद्वलयसभगे दिखादी परस्रीयद-व्यपि। शिक्षितम्। शिक्षा। बिट्—(सिट्) स्वा, प। धनादर: । लं घेटति निरीच्च यः, वाब २०० १ अधिन्-सिन्-प्रिन्, तु, य। चञ्चम्। कणश्च पादानस्। कनिशादा र्जनम्। छष्तमस्य श्रीवादरणम्। श्रिकति'। सिनत। विकति। प्रकार शिव्−(काव) आनं, पं हिंसा। श्चिष्ट, इ. प। विशेषणम्। विशेष-बारणम् । उपरच्चनम्, दुर्गा । ज्ञाट् येवति । नि:श्रेवं श्रेयति स्रोधात् प्रतिपचचनापतीन्। एकः मेवति योऽयोषभूतानां सर्षे घुवस् ॥ वि १८२। भिनष्टि। ब्रिंग्टः। शिवन्ति। हि, ग्रिन्छ। शिनपाचि। लिङ् ग्रि-षात्। लङ् पश्चिनद्। प्रशिष्टाम् । प्रशिवन्। बिट् विश्वव। श्रिशिवतुः। शिशिषिम। बुट् ग्रेष्टा। बुट् ग्रेस्वति। चुड् प्रशिचत्। र, प्रशिषत्। कर्मा्य, शिकाते। प्रश्लेषा तेषा मेत्रः शिकाते पन्छे लुखन्ते, पा, १, २, ६१। शिशि

चिति। ग्रेशियते। ग्रेगेष्टि। ग्रेवयात चमीकिवत्। प्राष्ट्र, चु, पं। चसवीव योगः। परिशेषीकरणम्। श्रेषयति ग्रेषति। ग्रेष्टा। पश्चित्। शिद्धाः •शिषा। शिष्टः। शिष्टः। ग्रेवणम् ग्रेष:। ग्रेष्ट्रम्। ग्रेष्टव्यम्। स्रव—स्रव ग्रेव:। उद्-उच्छिष्टम्। वि-विशेष:। विधिरही विशिवष्टि सनीर्जम, उत्तर १४८ । प्रस्तात् काणी विशिष्यते। ग्रिंच् अतिशायनम्। विशेषयति विशेषति सम्पत्था भूपं विधिः, दुर्गी। विधिनष्टि सारं नूची त्रिया शक्त विभीवति। विभोषयति यो वास्सी वाचा वाचस्पते वेचः ॥ कवि ८१। सदन-मणि गुणैविशेषयन्ती, सुच्छ ११७। निर्-निःश्रेषयति यः गत्न्। सिःशेष-यति दानेन भाष्णागारं दिने दिने, वाबि, १५१। गी-गीड, पदा, चा। गयनम्। स्तप्रः। शेते, पा ७, ४, २१। ग्रीयाते। भेरत, पा ७, १, द् । भेषे। प्रशीत। ष्यत । प्रयाताम्। प्रयत सा वाहु-सतोपधायिनी, पू, १२। शिखी। मिश्यिषे। मायिता। अधिष्यते। मधि षीष्ट प्रमाविष्ट । प्रमाविषाताम् । " प्रमा-विषता भावे, शयते। प्रशासिः अयानी प्रयनिकाः (प्रयितुं या चन्ते), संचित्रसारम्। शिश्ययिवते। शाययते, ७, ४, २२। शेशयौति। श्रीति। शाययति। श्रशीशवत्। श्रयिता। • ग्रथा। ग्रथितः। ग्रथनम्। श्रियतुम्। गयनीयम्। प्रितेष्यम्। श्रया। प्रयानः । प्रयानुः । प्रायुः । प्रति प्रति काम:। चतिवत्तेनम्। पूर्वीन् मङ्गभाग तयातिश्रेषे, र ४, १८। वची वाचा-

אוויר אורים ארו של עוד או בי או פיז אוני דו היו ש ष्ठानम्। याम् मध्यिते, पा संक्रि ४६। वर्न सिंहोऽधियोते, सा १०. ३५। वाहमान्यिधिश्यिरे (पारुद्वमाः), भ १४, ७४। चनु—गनुग्रयः। हेवः। सम् संगयः। संगया कर्णादिषु तिहते या भा रुत्र । हुइस्तोर पुर ः हि

गीन गील, भा। १सेचनम । श्वातः, वो। ग्रीकृते। प्रिशीके। शिशोक शोणितं व्योम, भ १४, ७४। श्रोकिता। प्रशीकिष्ट। सीका, सीकाते। योक, सीका, इ. पा ्दौिसः। र प्रामधेनम्। सप्री:। श्वामेति भट्टमनः। ४सेकः, तो। श्रीकणति। मोकयित्। चन्द्रवितीतरक्षाद्रीः शोकः यन्ति च यहपः (वायवः स्प्रशन्ति), कवि १८१। योवारः।

ग्रीभ-ग्रीस, भा, पा। कलनम्। ग्रोल्-भ्वा, प्रो समाधिः। प्रवृत्तिः। विवातभावनम्। ग्रीकृति। यः ग्रीकृति सदा धर्मम्, कवि १४५। श्रीज षटलः। इ. पं। १डवधारणम्। ष्यासः। २ पतिगायतम्। पतिगय-करणम्। ग्रीनयति। पश्चिमीलत्। शोबय 'नी जिनचो सम्, गौतगो ॥, ११। दलगोलितमयनम् (वातम्), गीतर्गी ८, ६। निश्चि गहनं श्रीख-तम, भौतगो ७, ४। पनुष्री सनम्।

म स्वा, पी। यति रिखेने । श्व भा, प, बो। गति:। ग्रावति। ग्रवः। ग्रवः।

परिश्रोजनम्। श्रीलम्। श्रीले भवा

प्रवृत्तिः ग्रेबी।

पुत्रादे रदर्शनाद् दुखानुभवः, दुगी। श्राचिर् दंशाचिर्, वो। दि, छ। १पृती-भावः। रश्राष्टः। श्रह्मोदः। बाद्रीभावः। ४मेदः, वो । शोचितः। शच्चितः। वते। मंडि राचमनकानपायित्ते य श्राचित. क्रिवि ३१८। न ग्रोचित सदाः चारी यो स्तानपि बान्धवान, 'कवि १०६। विं गोचते हाभ्युद्ये वता-कान, भ १, १२। पांपनीचरसात्मान-मगोचन, भ ७, ८०। ग्रुगोच। ग्रुगचे। एन मद्रे स्तनया ग्रुगोच, र २, १०। गोचिता। गोचित्रति। वते। षयो वीत्। पर्याचिष्टाम्। पर्याचिष्ठः। रावणोऽयोचीत्, मार्थ्य, मेर्थर गृह (इन्) पश्चत् प्रशोचीत्। प्रशोच्छ। कर्मीण, ग्रुचते। प्रशीच। ग्रुग्राच-वति । युगीचिवति । नते। योश-चाते। योगान्ता। योचवति। प्रशु-ग्रचत्। ग्राचिता, ग्राचिता। । ग्रचा यचितः। (रं)यतः। योचनम्। शोकः। गाचित्मा माचितव्यम्। गोचनीवम्। यक्। याचि:। चनु चनुश्चिनस्। गतास्नगतास्य नानुगाचन्ति पण्डिताः, nit a, too, page of the same

गार्था मुर्च, स्वा, प्रा, प्रसिववः।

ा पवयविश्वाचिनी करणम्। १ सुरासः सानम्। इसानम्। (घीड्नन्। सञ्च-नम्, दुर्गा) मचाति । चुचाति । ग्रयंत्र । मुचिता। पमचौत्। मचो, चुची, वो। स, यसः, वुसः। आ

धर्-गण्-ग्रहि, वा, प। प्रतिघातः । गत्याघातः । प्रांठ, स्वा, प ग्रावणम्। ग्रष्कोभावः। भोडति। ग्र-

। अपन्यपाद ।

कृति। यदे, वि. प्रांत क्षम्। युद्धि, य, प्रांत योषपम्। युक्कवरपमिति स्मानावः। युक्कोमावः, दुगो। योठ-यति। युक्कयति, युक्कति। युक्कः। युक्की।

यण् - यादि, स्वा, पा १ खण्डनम्। १ प्रमद्देनम्। योज्यति। युगुण्डा बण्डिता।

्यभ् दि, पा भीतम्। भूषः। अध्यति। ध्वानाच्य्ध्यति ययानः, । मावि 🕫 📭 रजसा सुध्यते। नारी नही विगेन ग्रध्यति, सनु १, १० द। ग्रगी-थ । याप्रवतः। ग्रोबा। गोत्स्रति। षश्वत्। श्रश्ततः। योश्यते। यो-मोबि। गोधयति। प्रमूखधत्। (छ-मुलनम्) राजा मोक्नुः जएका शोधयति, दर्पणः (४। (ऋणोबारः। चया विसंगोधनम्)। परि-णिच् मा-षोबारः। कण्डकायपसारणम्। का-मादिसंगोधनम्। राज्ञे देखं भागं परियोधयति, पा १, १, १६। तत् सर्वे परिशोधसन्तु गीतगोविन्दतः, गीतगौ १२, २८। वि—ग्रुवि:। परि-संस्करणम ।

भन् तु, प। गतिः। भोतिता।

यस—भा, पा छ, वो। ग्रहः।

यसति। वी। यो मां ग्रस्ति ग्रस्ति ग्रस्ति ग्रस्ति ग्रस्ति ग्रस्ति ग्रस्ति ग्रस्ति। प्रस्ति। प्रस्ति।

गंभ न्या, पा दितिः। योभा । • योभते । बोभते । इपसम्पृत्वोः, कृषि ४१। यसमे। मोमिता। मोभियते। पडमत्। पश्चीभिष्ट, या १, ३, ८१। यंचभिषते, यंगीभिषते । संग्रावी यह-निषेशः योगःपुत्रे तु, योग्रस्थते, की २०६। श्रीमयति। चसुरामत्। सम् खन्भ, सम् सन्म, स्वा, प। १माव-पर्। कथनम्। सभासनम्। दीप्तिः। १ बिंगी। योभति, यभति। मोभति, प्रभागीति कंचित्। हे गोभनम्। योभा। यभम्। यभम्। यभा तियशः। यस् अन्स् तुर्क्षम्। ग्रीभा । यभति, यभति । नजोपेऽपि हुम्, को १४१। अस्ति स्मीतस त्रियाः, वावि। धर्ः।

शतम् चु, प । १ पतिस्तर्भन्म । वर्षनम् । १ सम्बन्धः । १ सिष्टः, वो । यस्त्रयति । यस्त्रम् चु, प । १ मानम् । १ सिष्टः, वो ।

यप् दि, पा भोषणम्।

चेहरिकतीभावः। प्रवातः। श्रावातः। प्रयातः। प्रोहाः। मोक्वातः। प्रावतः। प्रा

ाहित किया है किया है। शूर्ण:। शूर, घटन्तर। चु, घा । विक्रम:। ा श्रे शे से, सा प। पान: 1 खब्मः। शुर्यते। प्रश्रासः। गायति। अयिति। स्रायति, यो। श्रूपे (शुक्त) चु, प। मानस। यथी। यातान याखति। अमासीत् श्राम् भ्वा, प्रतिगः। श्राम्यः। इ सङ्गतः । शूनति । शुशुन । शुनिता । ्युष्—भ्वा, या प्रसंबः । शुवति । ग्रम—ग्रधु (स्धु) आ, उ। अस्तम्। क्षोदनम् । पार्टीभाषः। श्राधित। •ते। श्राधी। श्राधी। श्रीधै-ता। प्राचीत् । युष्, भ्वा, पा। कुत्-सितग्रव्दः 👫 अपानुग्रव्दः । । अगर्धते। ग्रम्बे। गर्घिता । गर्ते खति। गर्धि-व्यति। यधिषति। प्रमत्स्यत्। प्रम-विचत, पा ७, २, १८१ प्रमान्यम् । बाग किए। बिग्त स्वति । ब्रिम विवते, पा १,३,६२। भरोग्रध्यते। म्रीक्धि। ख्यु, खु, प । १पसहनम् । १प्रहस्तम्। गर्धयति। गर्भति। श्रामधेत्। अग्रो-श्रधत्। प्रिक्षा। सुद्धाः सुद्धः। ग्, न्रा, प। इननस्। छेदनस्। मृणाति।। मृणोतः। मृणन्ति। मृणाति श्रीया । यस्तान, भा १४, १३। परमुः सर्वेशस्त्रारं मृणातु, वीर ४,३। श्रार। गणरतुः, पा ७, ४, ११। अञ्चतः, पा न, ४, १२। धर्यारत, प्रश्चित। शरिता, शरीता। शरिवात, शरी-योतति। व्यति। ग्रीयात्। प्रणारीत्। कर्मणि, ग्रीर्थते। 'े प्रमारि। श्रिमरिषति, शियरीषति, शिथीर्षति। येगीर्थते। यायर्ति। यारयति। प्रशीशस्त। भीर्षः। भीर्षिः। ग्रेन् मेख (पेल) आ, पा १गतिः। २ थायः, यो। ग्रेसति। वेस । सेसति।

त्री, त्रपयति। पाने घटादि विक्रि पदीपः । । । । । । । । । । : कार्यो | दिए पृत तन्तर्थम् ता षंखीकरणम्। अस्ति, पा ७,३, ७२। गर्थो। गर्यतः। माता। ग्रास्त्रति। प्रयासीत्, प्रशात्, पा २, ४, ७८। प्रशासिष्टास्, प्रशातास् । विधासति। मामायते । माययति, पा ७, ३, ३७। माला । • मास । मितः मितवान । मातः, मातवान् पा 🦠 ४, ४१ । वते नित्यं मंभितं वतम् (सम्यक् सम्पा-दितम्)। संधितो ब्राह्मणः (व्रविष-यक्तयवात्), को ३५८। नि—निया नस्। तेजनस्। त्यम्यन् मस्त्राचि, भ १७, ४। तमुद्यत निधातासिम् स ५, 84 मा १, 84 । मोण्-मोणु, भा, घ। १वर्णः। ्रागः। रिक्षीभावः। २ मितः। श्रोण-ति। स्थोप। श्रीचता। अमोपीत। थीर — गीड — भा, पा गवः। य: गौटति सभामध्ये, कवि २७०। बुरत् चुत् सुरतिर्, स्तिर्, खा, प। चरणम्। भारीचनम्, वा। स्रोतित। धाराः खातिन्त, उत्तर ११३। सिट् चुस्रोत। चुस्राततुः। चुबरीत व्यानां रत्तम, स १४, ४०। योतिता। योतिष्यति (१र्) प्रया तत्, प्रयोतीत्। रक्षमयोतिषुः च्याः, भ १५, ५१। चुद्योतिषति, चुव्यतिषति। चोब्यत्वते। चोब्योति यातयति । पच्यातत् ।

त्रय स्वा, पं । वध इति कश्चित्। त्रयाति । त्रययति, घटादिः । इसोल् सील् (मील्) स्वा, प्रा,

ग्री शिष्ट, खा, था। गृति। प्राप्ति। प्राप्ते। प्रश्नस्ता का, श्वानः ग्रीतः सर्गः। ग्रीनं एतम्, प्रा ८, ३, ४७। भा ग्रीषणम्। प्रथ-साम्यानकदेमान्, र ४, २५।

गुङ्ग-सङ्ग-सङ्ग, यकि, सकि,

्यक्ति (मेक्त) स्वाः पा। यतिः । सङ्गते । सङ्गते ।

बङ्ग, ज्ञाग (च्राम) भ्या, प । गति। b

त्रणति। श्रणयति, घटादिः। प्रणि-श्रणते, प्रयश्चाणत्। श्रण, पु, पं दानम्। श्राणयति। विश्वाणने वित-रण मित्यमरः। विश्वाणयति यः श्रीमान् विग्रेभ्यो विप्रसं वस्त्राप्रकृति च तेऽप्यको सत्स्वनायः सद्धाशिषः॥ कवि १७०।

अय् (क्रथ) था, पा हिंसा।

त्रथितः। त्रथयित, घटादिः। त्रथू,
इ. पं। १पयदः। १मोचणम्। १पितइषः। प्रतिष्ठः। त्राणेतः त्राययितः प्रियः
(पुनः पुनर्हक्यति, दुर्गा)तः त्र्रथः, वु,
पः। १मोचणम्। १हिसाः। १वन्दः।
वो। त्राययित। त्रथातः। त्रथः(सार)
पटन्तः। वु, पः दीर्वस्यम्। त्रथयितः॥
सार्वा त्राययित स्सुटार्थसपुरं गद्यप्र
पदां सदा भावासङ्गतिपेश्वनं त्रथः
विति सहाचरं नाटकम्। त्रथाति।
प्रवितावदातचरिकः प्रास्तः विचित्वच्यः
सः, इति इनायुक्षः।

यत्र — यति, स्वा, या। ग्रीविस्यम्। यत्र (ग्रस्) क्या, प। सन्दर्भ, । त्रयनम्। (चना। यन्य, क्राः, ए। श्विमोचनम्। स्प्रतिहर्षः। स्रत्यते। श्रविता। अश्रविष्ट्। गयन्ये। त्रथाति । त्रथीतः । त्रथन्त । त्रथी यात्। प्रत्रयात्। लिट् गत्रत्य। गत्रः न्यतः। हरदत्तादीनां मते, प्रयाय। श्रेवतः। से विष्-। उत्तमे तु गत्राय, गत्रयः इति साधवः। तत मूलं मृत्यम्, को १६७। यन्यिता । यन्यि षति। षत्रतीत्। षत्रतिष्टाम्। पत्रम्यात्रः। त्रित्रम्, सु, पा सन्दर्भः । रचना। वधः वो । सन्ययति । स-त्यति। अधिला, अत्यिला, वा १, २, २३। सन्दर्भी रचना गुम्फः अत्यन प्रत्यमं समा इति हेमचन्द्रः।

त्रम् त्रम्, दि, पा श्तपसा। रखेदः। यमः। सान्तिः। श्राम्यतिः पा ७, ई, ७४। शत्राम । शत्रमतुः । वीरी शत्रमत नेच, भ १४, ११० हा विमिता । विमिष्यति । प्रवसत्। नावः मद् प्रत् प्रवक्तमान्। म १५, ४८ । शियमिषति। श्रेयस्यते। श्रेयन्ति। अमयति । इत्तिकारमते, विश्वासयति। षूर्यात् वियामय, र १, ५४। रखी विश्वास वन् राजां खत्रशृत्येषु मीलिवु र अ दर्भ (ह) यमिला, यान्ता ह • अस्य । जास्तः । गुनितः ॥ जसः ॥ अभूषः। समी, पा र, र, १८१। पाचमः। विश्वयः। विश्वाम इति चान्द्रः। वरि-परिश्वमः। व्यथं परि श्राम्यसि वा विभिन्नम्, ने र, हर । विन्वामः। कि विश्वास्त्रिः तथा भोगिभवने, गीतगो इ. १२ । विसामा विपष्पायः, १, ३३ ।

त्रा पदा, व । स्पावाः । स्बद्धः । दाइ: । अषिता श्रीषता, श्रिपता, वमात्रभावः वो। यात। याति मिष्टा । है बेहं इवि:, कवि १८। मुत्री। बाता। श्री—त्रीज्, क्राा, उ। पाकः। श्रास्ति। श्रायात, श्रेयात्। प्रश्रा-चीत्। श्रिश्रासति। ग्रासायते। ग्रा-त्रीचाति । भीषीते प्रमाय मित्रिये। जेता। पर्वेषीत्। प्रेयेष्ट् चाति, भाजति। पाने घटाहिः। मेया १५७४ , चार । । इंड्रेस्ट्रिक १०० येवयति चक्म (भिक्त दयति)। पाका-श्च भा, प। श्यवषम्। श्यतिः। दम्बत, मापवित (स्वदयति)। क्रा श्राणः। चौरडवियोः पाने, श्रतम्, म्युपोति, या १, १, ७४। मणतः। UI 4. t. 20 17 TIEST म्झादित । मृत्यः, मृत्युवः। मु, गतो मध्याहरू में मुख्या भारतीय व्यवति । रेफरहितोऽप्ययमिति वे-कास चदनाः हिचु, पत्रे वो । :मन्द्रीः। चित्। शवति, दुर्गा। हि, ऋणु। ु गुप्तीक्रि:। प्रभिमुखीकरंखम् । साम-मणुयात्। जिल् प्रमणीत्। पन् वति। रजी विश्वासयम् रति दुर्गा गुताम्। प्रमुखन्। स्थाव। स्थ चि-चिन, आ, छ। येवा। वतुः। ग्रमोधः। बसुव, पा ७, २, १३। ययात घोषं न जनीघजन्यम्, स षाक्यः। , वयति। •ते। धिकाव। क, २७। सुर योता। स्टर् गोशति। शियविष्य । शियिये । तुरुवायां शि-न्यात्। तुङ् प्रयोषीत्। प्रयोष्टाम्। श्रिये, र र, अ। अविता। अवि-पन्ने वर्षण, यूवते। प्रभावि। चिति। की। पाणिष, श्रीवात्। व्ययिषेष । चित्रवियत्। •त्, पा है नवीनमञ्जाव का तवाननादिदम्, मे ८, ४१। इतानि चाम्रोवत षट्पदा-१, ४८। ग्रेलं न्यग्रिश्यद्वामा, भ १०। वसीण, श्रीयते। अशायि। नाम, स ३, १०। सन् (सेवा) गुरु शियविषति। •ते। भियोषति। •ते, ग्रमुषते, पा १, १, ५७। ग्रमुषस पा ७, २, ४८। येत्रीयते। प्रेमयीति, ग्रम, यक् ४, १४८। योज्यते। श्येति। अययति। पशित्रवत्। योश्रदोति। योगोति। शावयति। त्रिला, पा ७, २, ११। । विख्या धश्रम्वत, पश्चिम्वत् पा ७, ४, ८१। स्थाविष्यति, भिग्नाविष्यति । ते श्चित्। त्रितवान्। त्रयणम्। त्रयः। य्यातुन्। य्याता। य्यातवाम्। हत्ताना मिश्रयवत्, भ ५, ५१। जुला। संवर्णीयम्। त्रीः। पा—पात्रयः। • शुत्य। युतः। युतिः। गृवणम्। अववानम्। चतो भूतनमाशियायः मुनः। मोतुम्। मोतव्यम्। मा मति पतिचा। विवाध गा गान्यः भ १४, १११। क्रच्यतक च्छाया माखिता, र १, ७६। जद् - उच्छायः। उद चोति, पा १, ४, ४०। बायम्बन मनम्। म प्रश्रयः। प्रवयः। सार्वा। वाताम्, स ८, ३६। कामे राजे प्रति सम् जायाः। जुत्य, र २, ६५। वि विद्यातिः।

त्रिष् सिंबु (प्रषु) स्वार प

न्यप् (सक्य)।

सम्—(पलमंताहालानेपदम्) संयुक्ते, की २८०। हितास यः संयुक्ते स निंग्रभुः, भा १, ४। संयुक्तेति न चीतानि, भ ५, १८। जी हुन् सम-यूकीस् रसतः, भ ६, ४। रजांसीति पुरापि संयुक्ताहे दति सुरारिप्रधीनः १६३ प्रामादिनः, जो १८६।

त्रेक् (सैक्) त्रे (में)।

न्त्रोण-त्रोणुः स्वा, प । संवातः ।

वीषति। बोचिः।

सर् - स्रित (सेत) स्वा, या। गतिः। संस् - स्रिग (यगि) सा, प। गतिः। संय - (स्य) पदनतः। यु,प। योखाम्। स्रयते दीर्घमंसारप्रत्यः, स्रवि १४८।

श्रीष् श्रीषु, (ग्रीखु) खा, प।

क्राघ् काष्ट्र, खा, था। कत्यनम्।

्याचा। प्रमेता। सावते देवदत्ताय, पार, ४, ३४। प्रसावे। साविता। साविष्ये केन, भारू, ४। प्रसाविष्ट। प्रसाविकाताम्। साव्यति। प्रमुखाः

वत्। जावमानः परस्तीभ्यः, ८, ३०।

ञ्चिष् - ञ्चिषु (गुषु) स्वा, प। दाइ:"।

स्रोषति। यसेष । स्रोषता । प्रयं सेट् । सिष्, दि, प । पालिक्षणम् । प्रत्यासितः । योगः । सिष्यति । यः सिष्यति प्रियां प्रेम्णा स्रेषति विषता पुरम्, कृषि ६१ । सिष्यति वृष्यं गीतगो १, ४६ । सिष्यति वृष्यं स्रता, दुर्गा । यसेष । विश्विषतः । स्रेष्टा सिस्मित् । प्रस्थित, प्रवादिः । प्रालिक्षने तु, पश्चिषत्, प्रा १, १,

४६। सान जिल्हा प्रिय प्रिये, स ६,

and that have the

१क मि समीत, सियते। यशित यशियांताम्। यशिकाः। यशिक्दुम्। विश्वितः। यशिकते। यशिष्ट्रम् सेपयति। यशिस्यत्। सिव् पः। सेपयत्। योगः। सेपयति। दुःसेपाणावि सार्याणि विवा सेप-यति चपात्। यवि क्षाः। शिका सिष्टः। सेपयम्। सेवः। विष्या सिष्टः। सेपयम्। सेवः। विष्या सिष्टः। सेपयम्। सेवः। विष्या सिष्टः। सेपयम्। सेवः। विष्या सिष्टः। स्थिताः। विष्या सिष्टः। स्थिताः। सिर्धाः। विष्याः। सम्-संयोगः। समझिवत् जत्वाहम्।

ा शोन् शोल, भा, पा। पंचातः।

प्रवन्ते। प्रथमिनस्य स्थापारः। प्रसिद्धकार्यकः। स्री ४७। प्रव्ययद्व-स्थापारः। इन्द्रीववषाकारणनम्, दुर्गा। स्रोकते। प्रसोदः। स्रोकता। प्रसो-विष्टं। स्रोक्यति। प्रश्रसोकत्। स्रोकः।

ा सीप्, सीप् (श्रोष्) भा, प्रा संपतिः । म्राह्म स्टब्स

मह, यदि (वदि) सा, पा । गति:।

मच-मच-मच, स्वा, चा

गति:। यज्ञ यज्ञि श्रीच रखेते। यज्ञे । यज्ञे । यज्ञे । यज्ञे । यज्ञे ।

खंठ घटनाः। कु प, वो ।

वास-य, पं, वी । १ रन्यारपम्।

यति। विकासनीयताः वपु मतोऽपिः विकासनीयताः वपु यक्ते —(क्ति)। यक्ते — क्वित्रे। यक्ते — क्वित्रे। २ इडि:। स्कीति:। म्बयति। जि ्यत्व (वरक्) दुःपः। वयनम्। यंगाव, पा ६, १, ३०। मुगुवत् ा विश्वम् अद्दा, पापापनस् । । ग्रुगविष । पचे, ग्रिम्बायं। ग्रिम्बयुत् खास:। जीवनम्। खंसिति, पा ७, विष्विय। ग्रंशतु भुजा, स १४, ७ २, ७६। खसित:। ध्वसन्ति। पंचि म्बयिता । म्बयिष्यति । मामिषि, श्या विष्विधित जाब जुमारी, ने ४, ११०। खंखात्। डि, खंबिडि। ध्रायसंत, प्रवसीत, पा ७, ३, ८८, ८८। ध्राय-पशिष्त्रवत्, पा हु, ११ हर् हिष्ट पा का ४। १८ । प्रम्बयीत, पा ७, ४। अवतोऽभिष्वयञ्च सुरास्त्रञ्च सिताम्। अञ्चलन्। प्रमास्। प्रमान तवाख्यीत्। भार्थः १८। ग्रह्मसोद्राम सतुः । अवस्ति। अवस्थित । अव-पची) सकी, भार्य, एर्श कर्मा सीत्। प्रश्विषष्टाम्। प्रश्विषयः, पा श्यते । प्रकायि। शिकायिवति। श्रेष ७, २, ५ । शिष्वसिषति । गाम्बद्धते । यते। भोज्यते, पा इ. १, इ. । भो गाम्बस्ति। खासयति। प्रशिषसत्। वीति, प्रेंग्बेति। ज्ञाययति। प्रा खसिला। ध्यस्य। खसाः। विखसाः यत्, पश्चवत्, पा ६, १, ३१। गुः विखसितः ग्राम्बद्धाः पामस्रित रति वृश्यिषति, शिखाययिषति। खयित्व कलाप्सुमध्वी है। खनाः खित इति श्य (पो) श्नः। श्रातः। खयनम प्रदीप:। भावे, खस्तम खसितपिति (ट्) म्बयशु:। म्बय:'। म्बा।' उद, सम् पद्मनाभा । आसन्स्। आसः। ज्यसि-स्मीति:। सततब्दितो क्यूननयन तुम्। जसन् बदुणाम्, भ ३,१८। मांचीपमीगचंश्नः, म ८, १६। षा, समा पाखास:। सान्द्रना। श्चित् श्विन्द् श्विता, श्विदि, व्रजामिति मा बदः, म ४, १८। भा, पा। वर्षः। ग्रुक्तीभावः। खेतत ततोऽक्रन्दीद् दग्रधीवस्त्रमाग्रिया-वद् ययः खेतते दिन् फ्रिन्ट्ते सदिन्द्रजित, भ १४, ८५। समाग्रसि-स्रास्य, कवि २१६। खिन्दते दि सहामसिष्ठि, मुकु ६, २०३।। उद्-शिष्वते। खेतिता। खेतिषते। परि उच्छातः। पनार्भकवातः। उच्छ-म्बास दीना, म १४, ५५। नि, निद-तत्। चम्बेतिष्ठ, या १, ३, ८१ सदस्तदखेति इसे:, इत्तरने १२, २२ नि:खास:। विद्यमुख्यास:। दीर्घ (घा) खितितम्। खित्तम्। नि:ख्या, यहा ६, १८७। वि- विम्बा-सान विभावस पित्राची समन्तात् LETTINE TO THE BEST OF THE SERVICE OF भ २, २५। न विष्वेरदिविष्वद्व सिति g of an angle न मयो बुक, को १२१ । पालसेयु-गुक् - जक् - जर्ज - (क कि) निमाचरः, दति अहि: । गणकाया-थ्या, पा। गमनम्। पुताते। व्यव

मनिल सिति सिद्यम्, प्रदीवः । ही

श्यातः। १ दीखम्। तदः। माभ्र-

्ष्यव्यति। पुषुक्षे । प्रष्यक्षे । वष्यक्षे । अस्त - व्यक्त रत्यपि केचित्। एक् एक् एकि (स्किंभ) भ्वा, या। प्रतिबन्धः। एकते। रहकी। हकिता। ह्ये स्वा, प, वो। १संबातः। २मन्द्रा द्यायति । दस्त्रो । स्याता । हिन् हिन्, भा, दि, प । निरस्तम्। निष्ठीवनम्। स्थेमादिवस्तम्। कृत् कार इति भट्टमनः। छोवति, पा ७, रे १५। होव्यति, पा ८, २, ०७। पीतमिन्दुं हीवामः भ ११, १८। ढिछेव, तिछेव, की ६८। टिष्ठिवत्ः तिष्ठिवतु:। राचसाव नितिष्ठिवु:, भ १४, १००। छेविता। छेविखति। धा-शिषि, डीव्यात्। घष्ठेवीत्। घष्ठेवि-ष्टाम्। प्रष्ठेविषु:। टिष्ठेविषति, तिष्ठे-विषति । दुष्ट्रावति , तुष्ट्रावति । टेक्टी-व्यते, तेष्ठीव्यते। ष्ठेवयति। (उ) ष्ठेवि-ला, ष्टाला। ॰ ष्टिय। छातः। ष्ट्रातः। ष्ठेवनम् । छेव:। छेवितुम्। नि-निष्ठी-वनम्। निष्ठेवनम्। रह्मा । न्छष्ठीवत्, भ १७, १०।। निष्युतः, मा ३, १०। । होव् होव्, मा, प, वो। निरमनम्। ष्ठीवति। टिष्ठीव । ष्ठी-विता। ष्ठीविला, ष्ट्रांला। ष्ट्रांतः। निष्ठोवनम्। As imple involve peling thing (H) not the pro-

PORT - SECURE

। सग् अगे, स्वा, प। संवर्णम्। सगति। सगिता। प्रसगीत्। सग-यतिवीत । १० ता ताल क्रम्मान

मन् पन् वन् जा, पा हिंसा सन्नोति । सिधतुः। त्रस्मीत्, समा विता । । । विकास विकास विकास

चहिता प्रदेश्यः । जा । प्राम्यवाम्। सक् तयति । सक्केतितः।

713

15

सङ्गाम- बदन्तः । चु, या। युंबम् । सङ्गामयते । प्रसन्त्रामत । सच् वच्, ब्वा, चा । १ सेचनम् ।

श्सेवनम्। वस् भा, उ। समवायः। रायीकरणम्। स्वति िते। सन्।

. १० वीस राज्यासंस्थानसम्बद्धाः षस्ज् षन्च षन्ज्, भार पा गतिः। पंजात। विश्वमातानेपदीति केचित्। पकाते। पासक्षमानेक्या, मनुःर, Red : 1 alka . ask ! ask ! beek

संस् वन्त्र, था, प्रा सङ्गः। संबेद:। योग:। सजति, यो दे, है, १५। समञ्जा समञ्जातः। समञ्जाः पत्त-रेणवो मत्तेभक्टेषु, र ४, ४,०। सङ्का।

सङ्ख्यित । सन्वात्। प्रसाहीत्। प्रसाह्ताम्। प्रसाङ्सुः। भावे, सञ्चते। यसिक्ष । सिसङ्गति । यभिषिषङ्चिति । सामज्यते। सामङ्क्ति। सञ्जयात। असमञ्जत्। स्त्राः। •सज्यः। स्त्रः। सिताः। सञ्जनम्। सङ्गः। सङ्क्षम्। संज्ञी। यन-प्रनुषद्धः। पन्तितस्य पुनदेन्त्रयः। प्रभि-प्रभिवद्यः। पर्रा-

भवः। प्रव—योजनम्। प्रवस्तः। पितु स्तेऽदा मृतः स्तन्वे भुजङ्गमः, भारत। या-चासिताः। योगः। यास-सक्त भयं तेवाम्, म १४, १०४। भुजे

स भूमेर्धर माससञ्ज, र.२, ७४। चार्य-मासम्य कण्हे, कु २, ६८। प्र-प्रसङ्गः। पासितः। प्रसन्धिन्द्रयार्थेषु नरः पतनम् च्हतिः । प्रतिः। पिष्टमं

रणादावि मांसभीजनं प्रसञ्चेत, खातः।

(naghtal statement

```
सर्-भर्, खा, ग्रा अवयवः।
                                   १ । प्रसीद विद्यास्यत् वीरवश्चम्
सर्माधर, चु, पं। विंसा ।
                                   १, ८। प्रति-प्रतिसीदति, पा
  सठ् सठ् (गठ्)।
  ु भव-भट्रकः। चु भा।
 सम्तानिकया।
      सद्-वद्ख, भा, तु, प
   १भेदः। रगमन्त्र । रचनसादनम्।
 विवादः। सीदति, पा ७, ३, ७८।
 न सीदति काचित् कार्ये, वाव ७०,।
तदादी सदे पाठः। प्रतरि तुम् विका
खार्थः। मीदती मीदली। त्र
 बीरावसीदताम् भार्क, ५४। सबाद।
 सेदतः। सेदिय, सत्य। प्रमदाः सेदु-
रेबाम्राबितखे विखिलागिरे:। (इप-
विष्टाः), भ ७, ५८। सत्ता । सत्त्वति ।
चसदत्। 'सिवत्यति। (भावगर्धायां
 यङ ) बासवाते, पा ३, १, ३४। साम्ति।
सादयति। पनीषदत्। (शिंसा)
यै: बादिताः, र ७, ४४। सन्ता।
 • सदान सनः १ सतिः । सदनम् । सादः ।
सत्त्। पव-पवसादः। सहता
किया नित्या किंद्रे नैवावबीदति, भ
ब, २४। मा—बद्, चु, प। प्राप्तिः।
गमनम्। संसिक्षः। पासादयति।
सर्वतासद्ति त्रियम्। पासादयति
विद्यानां यारम्, कवि ७७। पास-
साद। पासत्ता। पासात्सीत्। पासा-
दिती क्यं न गजै:, भ ३,८५। सुवी-
वान्तिश्रयासेदः भ ७, ३१। चद्-
णिच, उक्सलम्। उद्दर्भनम्। उद्दर्भन
मोत्सादने हे दखमरः। उप-प्राप्ततिः।
पाप्तिः। उपसेदु दंशयोवम्, भ
८, ८२। नि उपवेशनम्। विष्णायां
निषीट, र २, ८८। न निषीदिति
पीक्षे, मा २, ८६। प्र-प्रसादः
निर्मसीभावः। दियः प्रसेदः, र ३,
```

१, ६६। विलादः। प्रक्रत विवीदकाः, स ७, प्रा विषयाद, 5 1.151 115 10 18-12 सन् चर् (वन) भा, पा सन्भित्ताः। सवा। वया, त, छ। दानम्। सर्ग समीति। सनुते। समान । सेने। निता। चनिचति। •ते। साव सन्धात, पा ब, ४, ४३। सनिवी पसनीत, परानीत्। परानष्ट, प त, या ६, ४, ४२। पसनिष्ठाः, प था:। कर्मणि, सायते, सत्यते। दि निव्रति, सिवासति, पा ७, ३, ४ संसम्बत, सासायते, पा, ६, ४, ४ संसन्ति। सामयति। असीवण (च) सनिला, साला। सातः। साति सति:। सन्तिः, पा ६, ४, ४५। सप् वप्, स्वा, प । १समवायः। ्रमञ्जूषः । द्रमञ्जातकोषः । सप्ति सभाव अपदन्तः। च, प्राव्धितः १दर्भनम् । १श्वेवनम् । सभाजयति पुष्यंत्रीतः समाजयन्, उत्तर । सम् स्तम् सम्, ष्टम्, स्वा, प। १ पवेकस्यम्। चवित्रलता। २वे स्थम्, वो। समति। स्तमति। सर्मा यवियोगेन मीमन्तिन्यः सारातुर कवि २२३। जम् चदलाः। जु, वेत्रस्यम् । समयति । सम्ब - वस्त्, स्वा, प, वी । गति। च्छ्यं, प्रा चड्यान्यः। साख्यं, प्र रत्येके । सम्बति सम्बयति। सय-षय (पय) मा, पा। गति

सर्ज ्षर्ज (प्रजी) स्वा, प। घर्जनम्। सर्जनि। समर्जे। सर्व - प्रवं (कवं) खा, प। गति:। वर्ष (पर्व) भ्वा, पा हिंसा। सर्वति। सर्वति ।

. सन् पन् स्वा, प। गति:।

चस् - संस्त् - वम्, वस्ति, घदा, पा

संदाः। सस्ति। सस्तः। ससन्ति। मनाम । सेमतुः। समिता। अनसीत्, भसानीत्। सन्ति, पाद, २, २८। सन्तः। संस्तिन्तः। त्रंस्ति संस्तः इत्येके, की १२७। संस्मि, पा प, ४, ६४। समस्ता। समस्ततः। मस्तिता। पसंस्तीत्। इमी वैदिकी। तालवादी दति कसित्।

मञ्चलहा भा, चा। मर्भगम्।

महनम्। चमा। यतिः। सहते। विहे। यवनीमुखपद्मानां सह मधुमदं न सः, र ४, ६१। सिंह्ता, भोढा, पा ७, ४, ८। महियते। क्षयं महियते तत् प्रथम।वतस्थनम्, कु ५, ६६। षपराधिसमं ततः सहिष्ये, ग्रंकु ३, ११८। सन्त्रिषेष्ट। प्रसन्तिष्ट। प्रसन्ति-षाताम्। असिंहवतः। सिसहिवते। मामञ्चते। सामज्ञीति, मामोडि। साहयति। प्रसीवहत्। पर्ध्वसीवहत्, षा'द, ३, ११६। सिसाइधिवात, पा द, इ, ६२। यह, चु, प। सर्वणम्।

भड़नम्। साइयति। सङ्ति। स एवायं नागः सहति कलभेभ्यः परिभवम्। माहयत्याइवे जोभं महति द्रिवृष्-व्ययम्। प्रन्यासं सहते नासौ सहाति

चितिरचणे॥ कवि ३१। सहिता,

मोदुा। सादा इति केचित्। क्स् मोढ: मिन्तम्। साहः बोद्रम्, सहितुम्। सोढा। सहिता सिंडणाः । सोडवाम् । सहितव्यम्

संचनीयः। दुःषदः। तुराषाट्। इद् जलाइ:। राज्यधुरी प्रबोद्ध" বার্ঘ कनीयान इस्त्सहिय, भ र ५४। चणमप्युत्स इते न मा विना, कु ४, ३६। परिषद्ती। निषद्ती। विश्वती। पेखेंबहत, पर्थसहत, पा द, ७, ७१।

परिसोढा। परिसादुन्। परिसोढः, पाट, ३, १।४। वह, युह, दि, प। ९ व्हितः। १ चमा, वो। सञ्चाति। सञ्चाति। सुजाडा असुडत्। सुडितम्। सोहित्यं

तर्पणं तिमिरित्यमरः। साट-प्रदन्तः। चु, प, वी। प्रकाशनम् ।

साध् (राष) बाध्, वो। दि, स्वा, प। संसिष्टिः। निर्धात्तः। निषादनेति गोधिन्दशहः। साध्यति । साम्नीति। ससाध । ससाधतुः । ससाधिय । माजा । मात्स्वति। ग्रमात्सीत्। श्रमादाम्। श्रमात्सः। सिसात्नति, सिषात्मति।

वो। सामाध्यते। सामात्रि। साधयति।

असीसधत्। (१सम्पादनम्। १ स्वधः।

३ पाति:। ४ परीचा। प्रास्त्रम्) प्राधिष प्यम्तनः साधि गैमिस्टाने प्रयुक्तते, दर्पयः। साक्षाः। •साध्यां •साधः। बाधनम्। साबुम्। चिच्, साम्रायित्वा। •साध्य। साधित:। साधना। साधिय-तुन्। प्राथमम्। प्रसाधनम्। प्रसाधनम्।

वार्ष्टकाशोधनम्। वैरनिर्यातनम्। प्रसा-धितोऽलक्तव मूर्षितस इत्यमरः। मेदिनों भी क्षुमंत भेजनिर्जित हिया न प्रसाधितिमस्य के किसता, द (€, ₹1

सान्त्र पानल्य, चु, पाः सान्त्यनाः। चाताम् । प्रसिवन्तं, प्रसिचतः । आसीच् सिचते। प्रमेचि। सिमिचति। •ते। समाखासनम्। सान्वयति। प्रस्तान्, सान्वयः, भ १८, २४। चन्द्रकेती बनानि सान्त्वयं, उत्तर २०६। सान्त्व क्रांचि । अधारिक से अपन् । अस्ति । साम-भटनाः, इतनस्य, वो। 🎉 🥞, प। सन्तिना। प्रियकरणम्। समाजायनम् । सामयति । साम्ब् (सम्ब्)। बार—क्वय—प्रदन्ती। च, प दीवंखम्। सार्यति। क्षप्यति। सि—षिञ्, स्ता, क्रा, च। बर्खनम्। अधिनोति। असिनाति। विनते। विनोते। सिन्यात्। सिनोयात्। सिन्दोत । सिनौत । प्रसिनोत । प्रमिन भात्। असितुत्। असिनीतः। सिषायः। सिषयिय, सिषय। सिष्ये। सेता। बिष्यति। •ते। पसैषीत्। पसेष्ट। सिसीषति। •ते। सेषीयते। सेषयीति। बेषेति । साययति । प्रमीष इत् । मिला । • शित्य। सितः। सिनी ग्रासः खय-मेव, पा ८, २, ४४। सयनम्। सेतुम्। निषितः। विषितः। विषिनोति। परिवितः। निषयः। परिवयः पा ८. 4. 8. 1 77 1 . 1 . 1 . 1 . TERR न्दिन् विच्, तु, छ। चरणम्। सेचनम्। सिख्ति। •ते, पा ७, १, ५८। सिषेच। सिषेचिय। सिषिचे। सिविष्वितिमध्यवादाः, सा १०। सेता। सेच्यति। ०ते। सिच्यात। विचीष्ट। प्रसिचत्। असिचत, प्रसिक्त, पा १, १, ५१, ५8। असिचेताम्, असि-

परिषिषिचति। ०ते, कौ २०५। सीस-चते। पाद, ३, ११२। प्रसिसिचते। सेनेति। सेनयति। प्रमीपिनत्। सिका। रेतः मिका स्त्रीषु, मनु ११, १७०। १ मिचा। मिताः। पावासे सितासंस्ष्टे, सं ५, ८०। सेचनम्। सेक:। येत्रम्। सेत्रा। मंत्राव्यम्। संचनीयम्। श्रवि—चागम्। श्रवि सिच्चे: क्रशानी लंदपम्, स, ८, ८२। प्रास-प्राप्तः घेचनम्। तपेणम्। प्राप्तिष्विति। घभ्यविञ्चत्, पा ८, १, १७, १४। स्नानाभ्यसिचताच्योऽषी तथाभ्यविज्ञ वारोणि णिखभ्यः, भ ६, २३। इष जलेमीमभ्यविचत्, भ ६, २१। १५, ३। राज्येऽभिषेच्ये सुतम्, भ ३, २। सैनापत्थे मा सभिषिच्य, भारत। **डद्—डत्सेकः। गर्वः। न तस्योत्स**-'विचे सनः, र १७, ३। नि-निवेकः। चर्णम्। गर्भाषानम्। सतं निष्यन्त-मिवासतं लिति, र २, २६। सिट-षिट्, भ्वा, प। प्रनादरः। सिध् — विधु, विध्, वी, खा, प। गति:। सेघति। सिषेधः सेधिता। से धिष्यति। प्रसेषीत्। (३) से धिला, मिड्डा। सिड:। पिञ्च, सिचित:, वी। गङ्गां विसेधति। प्रशिरधित गाः, पा ८, ३, ११३। परि—वेष्टनम्। 'दियो घन् परिषेधतः, भ ८, ८८। प्रति-प्रतिषेध:। शिष्यमकार्यात प्रतिषे धति। विध, भ्वा, प। (यास्त्रम्) पतु-यासनम्। २माङ्ख्यम्। सङ्क्षिया। सेघति। सिवेध। सिविधतुः। विषे धिय, सिषेद। सिषिधिव, सिषिध

मेंडा, सेविता। सेव्यति, सेविष्वति। यमैत्सीत्। असैडाम्। धसैत्सुः। असै-भीत्। असे धिष्टाम्। असे धिषुः। कर्मेण, सिध्यते। प्रमिधि। सिविताता सिसि-धिषति, सिरीधिषति। सेषिध्यते। सेवेचि। सेधयति। प्रमीविधत्। चय- खग्डनम्। पापसपसेधति, मनु ११, १८८। मा प्रवरीधः। **डद्—डबो**धः। ः डचीमावः । अः नि, प्रति—निर्छेष: । निवास्मान्। भूतग णान् न्यवें धीत्, भ १, १५) ग्रस्त न्यवेषत् पावकास्त्रेण, भ १७, ८०। तेन न्यमेषि श्रेषोऽप्यन्यायिवर्गः, र. ४। प्रनुष्ठानं कयं प्रतिषेधत्, उत्तर विध, दि प। मंगाजि!। निष्यतिः। जदित्पाठः प्राप्तादिकः, की १९८। सिध्यति। यही स्तते यदि न निर्धात कोऽव दीवः, हिती। सिवेध। सिवेधिया सेदा। सेह्यति। यमिष्यत्। मिषिकाता सेषिध्यते। मैर्वेडि। गिन् साध्यति अत्रम् पा ६, १, ४८ । पारजी किवी तु, सेध-यति नापमं तपः। विभित्वा, सिद्धा। •सिष्याः सिष्दः। सेधनम्। सेधः। भेडुम्। जिन्-साधियला। जनाच्या। साधित:। साधनम्। साधिवतुम्। षाधकः। विमिध्यति, पा ८, इ, ६५। सिन्त्-'सिवि', स्वः, पा सेचनस्। विभ्—मिभ् —विसु. विन्भु, स्वा, प। किंसा। सेमति। सिकाति। मिषिका। सिल् – (यिल्)।

सिव्, षिषु, दि, प। तन्तुमन्तानः। सीवनम्। तन्तुभिर्धस्यनम्, दर्गा। मीव्यति। तद्यम्चा मनोभवः सीव्यति

दुर्यगःगरो, ने १, द०। खेदा-

सक दान्तुः न्तर्मर्माणि सीव्यति, सत्त १५२ । सिषेव। । सिषिवतुः । सेविता सेविष्यति। शीव्यात्। प्रसेवीत्। प्रमेविष्टाम् । कर्मणः, सौब्यते । प्रमेकिः। विवेविषति । चुस्यूषति, वा कृ २, ४८। सेषोव्यते । सेवयति । प्रसीकिन वत्। न्यसीषिवत्, भा ५ ११६। (क) चेविता, स्त्वा। •स्तम्। देवनम्। सीवनं स्वतिरित्यमरः । कि १००० (FF) YOU SEE THE SEE च - व. भ्वा, घटा, प । श्रम्भवः । ष्यनुत्ता। ३ ऐखथम्। स्वादिन गैत्यर्थोऽपि। सवति । सीति। सतः। सुवन्ति । सुषाव । सुषुवतुः । सुषविधः स्त्रीय। सोता। सोव्यति। प्रमीवीत्। षसीष्टाम्। प्रसीष्टुः। पुष्ण्, स्वाः उ. वो। मतिः। षुष्रः, स्वाः, उनः । स्वानम्।

२ स्वयनम्। १पोडनम्। ४स्रासस्या-नम्। ५ योगः, वो। । 4 मन्युनम् । सुवति। वते। सुनोति। सुनते। सुन्बहे, सनुबन्धे। सुवाव । सनुबे। स्रोता। सोष्यति। •ते। स्यात्। सोषीष्टाः प्रसावीत्। प्रसाविष्टाम्। प्रसाविष्ठः, पा ७, २, ७२। प्रसीष्ट। प्रसीपा-

ताम्। असोषता सुत्वति। •ते। मोष्यते। मोषवीति। मोषोति। साव-यति। प्रमुखवत्। सुत्वाः •सुत्व। स्तः। सवनम्। सुत्वा। सुत्वानी।

मोमसत्। राजस्यः। पशि—सानम्। वीन् वारानिभवुत्वते, " जनर्घ **9** 9011

• षुणोति। वश्यपुणीत्। ॰सुप्राव । ॰ सोष्यति। • पसोष्यत्। सुम्यति।

ेस्सः, पा द, हे, ११७ g # : N.

उत्सवः ।

पुष-गदन्तः। चु, पा पुष्ववस्यम्। चराविष्टाम्। चभिषुवति। परिषुवति, सुखयति । एतावद्वश्वापि मां सुख-पा ८, १, ६५। सविता। स्तः। यति, शकु ३, ६०) ि सूच - भदन्तः। चु. प। पेश्रन्यम्। सुर- बुर् (पह) लु, प। १ अनादेव:। व्यक्तीकरणम्। स्वनम्। स्वयति। प्रमुस्तत्। यङ् सोस्चते, को २०६। ्रतीच्छम्। अब्योभावः। सुदृयति। मन्त्रो गुप्तदारी न स्चते, र १७, ५०। 🐑 । सुम्, मुन्म् (यम्)। स्त्र- घदन्तः। चु, प। १वेष्टनम्। सर्- पुर, तु, पा १ रोखर्थम्। े २ विसो चनम् । इयन्यन्म् । स्व-२दौति:। पुरति। सुकोर। सोरिता। यति। प्रमुस्तत्। यङ् मोस्त्राते, मी २०६१ सह (सह) सद्-षूद्, भ्वा, था। १ खरवम्। स्-षंड्, घदा, दि, या। प्रस्तः। श्निरासः, बो। निचेषः। सुदते। प्राणिप्रसंवः। जनमम्। उत्पादनम्। न सुदते मति येख यः स्दयति प्रात-खट् स्ते। सुवाते। सुवते। स्थते। वान, कवि २५६। सुष्टे। स्टिता। विरेष्ट्रजता - पञ्चवं स्ति। सोट् सुवै। बस्दिए। सुस्दिवते। संक्षाते। सुवावहै। मुवासहै, पा ७, ३, ८८। सीवृत्ति। वूद, चु, प। १वरणम्। लुड् यस्त। अमुवाताम्। अमुवत। अस्त सदाः जुमुमान्यंगोवः, जु १६, २ इननम्। ३ निरासः। ४ सञ्चरणम्। प्रक्रेदनम्। स्टयति । **प्रस्**षदत्। -२०। अस्त सा हैनाकम्, क्वा १, २०। लिट् सुयुर्वे। 'सुषुविषे। सुषुविवर्ष, नि-निम्बदनम्। डिसनम्। को १, ३४। जुट् सोता, सविता, पा सर् (गूर्)। ७, २, ४४। खट् छोषते, सविषते। सूर्ज् - वृष्ट्, भा, प। भादरः। षाणिवि, सोबीष्ट, सविबोध। सुड् षशादरः, वं। सूर्धति। सुपूर्ध। असीष्ट, अस्विष्ट। कर्मणि, सुवते। मुमुद्ध, वो। स्विता। अस्वीत्। अवाति। कौगस्यया उसावि सुखेन भवहेलमच्चेग[सत्यमरः। रामः, भ १, १४। सन् सुसूवते, सीषु-सूर्य -(इंथे) खा, प। ईंथी। यते। सोषवीति। सोषोति। णिच मावयति। प्रस्ववत्। सवावयिवति। स्र्विति। सम्र्वी। सृष्क्री, वो। स्वान हैस्य। स्तः। दि, स्तः। सूष्- षूष् (शूष्) खा, प । स्ति:। • प्रति:, प्रा द, ३, दद। सव-प्रसवः। स्वति। सुष्स। नम्। सवः। सोतुम्, सवितुम्। प्र— स्र—स्वा, प। गतिः १ भसतः। प्रासीष्ट मञ्जूष्ट्रम्, स १, १४। किए प्रसः। घू, तु, प। प्रेरणम्। क्सरति (वेगे धावति), पा ७, २, ७८। सुवति। मुवाव। सुवत्तुः। मुवविष्य। समार्रः। सम्बतुः। सम्बन्धः सम्बन् विवता। सिव्यानाः प्रशानीत्। सत्ती सिर्चात, पा ७, २, ७०।

स्वियात्। श्रमाधीत्। श्रमाष्टीम्। गिर सामभू, कुर, ५१। स्टा, पा चनार्षुः। चसरत्, वो, या ३, १, ४६। ७, ४, १६। स्वाति। १ते। एज्यात्। इह लुमगवा गासिना साहच्यात् धवीष्ट। प्रसावीत्, पार् २, ११। सर्वित्ती जी होत्यादिन विव राश्चेते, वसाष्टाम् । बसान्। बस्ट। बस्ट-तेन स्वाद्यो मीड्, को ८७। पद्मनाभ-चाताम्। यस्चत्। यस्राचुः रस्त्रम्, भा मते भ्वादे रैवाङ् ऋस्यास्त्रित स्त्रः ३, १७। पस्ट योऽसान्, भ ३, १३। निर्देशात्। सिमीर्वत्। सेस्रीयते। कर्मणि, सञ्चते। प्रमर्जि। सिस्चिति। सर्वति । सारयति। असीसरत्। छ, •ते। सरीस्र ज्यते। सन्धार्ष्ट्रा सर्जयिता चु, पा १ श्रास्तरणम्। २गितः, वी यमीस्जत्, असमजैत्। सङ्घा। • सञ्च। सारयति। स्वा। ॰स्त्य। स्तः। सृष्टः। सृष्टिः। सृज्यनम्। सर्गः। स्ति:। सरगम्। सर:। सार:। सन्ति। सष्टुम्। स्रष्टा। स्रष्ट्यम्। सर्जनीयम्। सत्त्र्यम्। भनु—भनुसर्यम्। भनुगर्म-विखस्क्। पति पतिसर्भगम्। नम्। अप-अपसरणम्। दानम्। धव-निचेवः। अर्धणम्। चट्-पलाय-नम्। दूर मपसर न चेडन्तव्योऽिं उत्मर्गः। नि—परित्यागः। न स्नामिना मया, हितो। यभि-णिच्, प्रभिमा-निस्ष्टोऽपि श्रूदो दास्यादिमुचते, रणम्। कान्तार्थिन्याः सङ्गतयानम्। मनु ८, ४१४। वि-विस्कृतम्। एषा भवन्त मभिसार्थितुमागता, दानम्। त्यागः। मोचनम्। प्रेषणम्। मृच्छ ३३०। उद-णिच्, डत्सारणम्। विसर्जेयेट् यं स्तनसम्पर्धतः, र ३, दूरी करणम्। उप-ममीपगमनम्। निर्-निःसरणम्। निष्क्रमणम्। प्र, २०। चोकान् व्यसजैयत्, स २,४३। विस्न श्द्रमुनी कपाणम्, उत्तर २, वि—व्याप्तिः। विस्तवरी विस्निर १०। सम् संसर्गः। सङ्गतः। इत्यमर:। सम्-संगरणम् । हिंडधार-सप् सप्ल, भा, प। गतिः। षम्। भूनानि संसारयति चन्नवत्, सर्पति । समर्पे । सस्वतुः । समर्पिथ । मनु १२, १२४। चर्ता, स्त्रमा, पा ६, १, ५८। अपार्वत, स्ज्-तु, प, दि, भा। १विसर्गः। स्त्रप्राति। शस्यत्, त्यागः। श्रीमीणम्। करणम्। यसामीत । श्रकाप्सीत्, वो। श्रस्यकाम्, श्रमा-स्टि:। व्यद्भ्यां परस्वागार्थः। सन्यत र्ताम्, पद्माप्ताम्। विस्पृत्ततः। सरी-सम्यते। सरीमप्ति। भर्षयति। पसी-तु करोत्वयः। स्जाता स्वयते। भूगानि काल: सजिति, भारत। डपा-बावत्, प्रममर्पत्। समा। •सूत्य। मनामिल पितुः सा सृज्यते, नै १. स्तः। सर्पेणम्। सर्पः। सर्गुम्। स्नप्तुम्। ३४। संपूर्वोऽय सक्तर्मकः। सङ्गमार्थः। सिंप:। धनु— धनुगमनम्। धप— धप-संस्कृत सर्भिजरक्षांग्रभिने निया-सरणम्। तदगहनेनापसपति, उत्तरं १६८। उद-विस्तारः। उद्वल्लनम्। प्रयासमीपे गमनम्। प्र, विस्तिस परिचासवायुं, र ४, ६८। की १३७। घनुषा बाण सस्जत, र ११, ४४। समर्जे। सस्ट जतुः । समर्जिय, सस्रष्ठ, पा गमतम्। वृद्धिः। कमे प्रस्पेत्, स र् ९२.६८। सस्जे। सस्जिषे। सस्जे २८। सम्-संचारः।

वृत्तु, वृत्तु, स्त्रिम्, स्त्रिन्यु, स्वा, प। हिंगा। समेति। मुश्राता सेमति। स्थित। ...

OF CHARLES AND THE COURT OF THE

रेव-स्रेव-श्रेव-स्रेव-

सेखा, श्रेज, भ्या, था। गतिः। सेकते। पवीपदेशला ब हः। सिसेने। की Traffer Harry II 1725

सेल् (ग्रेल्)।

बैव-भोव-बेह, घेह, (बेह)

भा पा। इ, वी। सेवा। पाराधना। भिताः। १ खपयोगः। पात्रयः। स्वते। भेवते। सैवति। •ते, वो। नीचं सम्ब-प्रपि बैवति नीच एव। खाधीने विभवे उप्योची नरपति सेवन्ति कि मानिनः, दुर्गाः। सिषेवे। सिषेविषे। तं पक्ना सिषेवे, र २, १३। तं यान्तं क्रयादः सिवेविरे, भ १४, 103 सैविता। सैविष्यते। सेविषीष्ट। प्रसे-विष्ट । परिविधाताम् । परिविधते । कर्मण, रिव्यते । परिवि । सिरेविधते । बेषेध्यते। बेवयति । प्रसिषेवत् । प्रयं दन्खाद्य। प्रसिववत्, वो। सेवित्वा। •सेव्य । सेवितः । सेवनम् । सेवा। सेवित्म। सेविता। सेवकः। सेविन तव्यः कि सेव्यः। त्रेच्या नितस्बाः किस् भूधराणा सत् सारसेरविकासिनीनाम्, काव्यपकार्यः। या-उपभोगः। यद्वायः किराते रामेव्यते, कु १, १५। नि-सेवा। पात्रयः। उपभोगः। पतित एव निषेया कि वास्त्रीम, ने ४, ७०। निषे-वते। विषेवते। परिषेवते। न्यषे-

1 12 3 12 12 13 13 13 13

ा के वे (के) भा, प। चय:। संयति। ससी ि साता। सायात् घनामीत्। विवासति। विसासति

71/1777) 41 E

वं ।

सी - बी, दि, प। चन्तवमें। विनायनम्। स्वति, पा ७, १, ७१ षभिष्यति, घा ८, १, ६५। पत्री चिमस्ते। साता। सास्यति। सेयात्, पान्द, ४, ६७। प्रवात्। प्रवासीत् पा २, ४, ७८। अमाताम्। प्रशासि ष्टाम्। नर्सणि, मीयते। असावि। सिवासति। सेवीयते, ६, ४, ६६। सामेति। साययति, पा ७, १, १७। सिला। •साय। सितः। सितिः। सातम्। सायः। पव-प्रवसानम्। समाप्ति:। प्रवसेयाः कार्याणि धर्मेण पुरवासिनाम्, भ १८, २८। वच्छव-सित, सु २, ५१। प्रध्यव - प्रध्यवसायः। उकाइ: । पर्यव-पर्यवसानम् । परि-णामः। स्रोकान्तरं पर्यवसितासि, उत्तर १७२। प्रत्यव प्रत्यवसानम्। भोजनम्। व्यव-व्यवसायः। उदामः। र्वेष्टा। पात्ं व्यवस्यति। अनुवाव-घनुव्यवसाय: । बुडार्थस्य पुनर्बीधः। स्कान्द् —स्कान्दर्, भ्वा, प। १गति:। रंगोषणम्। स्वन्दति। चमकारः। चस्कन्दतुः। चम्कन्दिय, चस्कन्यः स्तन्ता। स्तन्त्यति। प्रस्कन्त्यत। चामिषि, स्कदात्। (इर्) प्रस्कदत्, प्रम्कान्त्मीत्। प्रम्बद्धाम्, प्रका-न्ताम्। यस्कदन्, यस्कान्तसः। कर्मण्, र्खायते। प्रमुकन्दि। चिस्कत-स्था चनीस्कदाते, पा ७, ४, ८४।

चनौस्कन्ति। स्कन्दयति। नरितः स्कन्दयेत् कचित्, मनु २, १८०। अच-स्कन्दत्। स्कन्ता, पा ६, १, ३१। यन्भो मूर्जि स्कन्ता भुवं गता गङ्गा, भ २२,११०।० स्कन्छ। स्कनः। स्कन्तिः स्वन्दनम्। स्वन्दः। स्वन्तुम्। स्वन्तयः। पव—श्रवरोधः। पाक्रामणम्। पुरी मवस्कन्द, मा १, ५१। दहति यद-वम्कन्य इदयम्, इत्तर १४७। ल-मप्यपरः प्रभविष्णु रिव मामवंस्क-न्हरसि, वीर ४३। पा—प्रमाति-विश्रोष:। श्रमिममनम्। पीड्नम्। सर्वानास्कन्दन् रिषृन्, भ २७, ११। पास्करन् लक्षाणं वाणै:, भ १७, ८२। परि-परिश्वमणम्। परिम्कन्दति, परिष्वन्दति, पा ८,३, ७४। प्ररिम्बद्धः, परिष्कासः। परिष्काच दति केचित्। मेवनादः परिस्कन्दन् परिस्कन्दन्त-मरिम, भ ८, ७५। प्र-पतनम्। रथात् प्रमुकन्छ। तस्य रेत: प्रचम्कन्छ, भारतः। वि—परिस्नसणम्। विस्कतः। विष्कान्तुम्, विस्कान्तुम्, पा ८, ३, ७३। विष्कन्तुन् परिघेगाइन् कपि-दिषा, भ ८, ७४। स्कन्द् (स्कुन्द्)। स्तन्द—स्तन्ध—शदन्ती। चु, प, वो। चमाइति:। स्कन्दंयति। स्कन्धयति। कार् स्कास, भा। प्रतिबन्धः। सामा:। रुषीकरणम्। स्कन्भु, सीव धातुः। क्राा, प। १ रोधनम्। २ स्तन्धः। स्केश्वते। स्कन्नाति। स्कन्नीति, पा ३, १, ८२। चस्कमा । को। स्कामिता पस्कभौत्। प्रस्किष्ट। वि-प्रति-बन्धः। विष्कसाति। विष्कसीति। विस्कबाते, पांद, १, ७७॥ गृहोतो विस्काभातं. समर्थोऽवि नाचलद्

प्रजारिष्टं विष्वासाति परोदयम्। विस्कन्नोति परीद्योगं तपः गीर्थ-क्लोन यः॥ कवि प्रशासका स्तु स्तुज्, क्राा, छ। १ पा प्रवनम्। २ शावरणम्। इडबारः। स्कृताति ख्तुनोति, पा ३, १, ८२। स्तुनौते। स्कृतते। रास मुभ्कृतादिष्वष्टिभः, भ १७, ८२। चुस्काव। चुस्कुवे। स्कोता। पस्कोषीत्। पस्कोष्ट। चुस्कूषति। •ते। चोस्कूयते। चोस्-कोति। स्कावयति। भ्रमुस्कवत्। स्कृनाति च स्कृनीते च स्कृनोत्गाप्नव-तेऽपि च। स्वन्दते स्वुन्दते चापि वडा-प्रवनवाचिनः॥ इति भट्टमञ्जः। प्रत्य-स्कुनोइग्रयीवम्, भ १७, ८३ 🕞 ख,न्द्—स्तन्द्—स्तुदि, स्त्रदि, वी। स्वा, चा। चाप्रवणम्। छत्युत्य गम-नम्। २ उद्वारः। स्कृन्दते। स्कृत्दते स्कुन्दिता । स्तु भ - स्तुन्भ, सीवधातुः। ना पा १ रोधनम्। २ धारणम्, को १48। स्तुमाति, स्तुमोति, पा ३,१, ८२। वुस्कुमा। स्कुमिता। भ्यात्। पस्त्नात्। स्वद्-भ्वा, शा । १स्वद्रम्। विद्रावणम्। २ स्थैर्थमिति रामः। ३पाटनमिति गोविन्दः। 🗸 8°क्ते गी-गोयीचन्द्रः। ५ हिंमिति त्पादनमिति रमानायः । स्वदते । चम्खदे । स्वदिता । खबदयति, घटादिः। विष्युतिः भ्यान्तु, प्रवस्तादयति, परिस्तादयति । न्यासकारमते, प्रवस्ताद्यति, बद्धागीरवात्, भ ८, ७०। विष्कं अते दि । प्रत्यत्र, प्रवत्यति। कातन्त्रः

सत, भवपारभ्यामन घटा।दल्बम्। यावन, काव २४५। तस्ताम। स्तमिता र्भवस्वदयति, परिष्वदयति। श्रसमीत्। ष्टम् शदन्तः। व प, वो। वैक्तव्यम्। स्तमयति। शत स्वल् स्वा, प। १ सञ्चननम्। - ° स्तमत्। २ खलनम् । १ सच्चयः, वो। खलता। स्तभ्-एभि (स्तभि) खा, शा, इतः प्रेमा भग्नः सदसि रिव सन्धि स्तमः। जड़ीभावः। जड़ीकरणम् न सभते समेतापि प्राय: खुबसति प्रतिबन्धः। क्रियानिरोध इति भीमः खलु यह रिप धतः, दुर्गा। यात्यकः दोषविदिति, गोविन्दभटः। विशे सात् सवतन्ती, महाना १, १६। चम्खान। चम्ब्रुल्तुः। विवादसम् खाल विवास्तिय नार्थवानाम्, र १/८, 8 **३ । रथा: प्रचन्**खलु: साम्बा:, म १४, ८८। सर्वासर्थात । प्रस्तानीत्। चिव्यक्तिवति। चास्तस्यते। चास्तस्ति। स्वलयति। खनासयति। खनिखा। सवस्तित:। सवुड् (युड्)। स्तन् - एक्, भा, प। प्रतिघात:। य्तकति। तस्ताक। स्तकिता। स्तक-यति, घटादि: । प्रतिष्टकत्। अति-स्तकल्, वो ।° स्तग (स्वग्)। स्तन् प्रन्, स्वा, प। प्रक्दः। स्तनति। तस्तान। तस्तनुः चताः, भ १४, ३०। सानिता। पदानीत्, अस्तानीत्। तिस्तानवित। तंस्तन्यते। तंस्तन्ति। स्तनयति, स्तानयति। पतिष्टनत्। प्रतिस्तनत्, वो। स्तन-श्रद्रन्तकः चु, प। मेघग्रन्दः। स्तन-यति। अतस्तनत्। स्तनयित् र्वेलाइन दलसर:। प्रिनि:सानात सुदङ्गः, पा . ८, ३, ८६। श्रुभिष्टानः। वि—शब्दः। जम्बो दध्यो वितस्तान, स १४, ६०) . जम् - छम् (वम्) खा, प। ः १ प्रवेकलाम् । २ वेक्क व्यम्, वो । विश्व-जीभावः। स्तमति। नच स्तमति

करणम्, दुर्गा। स्तकाते। धनेन स्तकाते सर्वः स्तन्तात्यन्यस विद्यया। धनविद्याः सम्बोऽपि न स्तन्तीति स सज्जनः। कवि ८२। तस्तको। गाचं तस्तको (काष्ठविश्वसम्भूत्), स १४, ५५। स्तिका। यस्तिकष्ट। ज्ञ, स्तिकातः। स्तन्भु (मीलधातुः) क्रा, पाड, वो। १रीधनम्। यावर्णम्। श्रिकोष-णम्। स्तमाति। स्तमोति, पा ३,१, ८२। स्तमीते। स्तम्ते। हि, स्तमान, स्तम् हि । सोऽस्तमात्त् सदुर्जयम्, स १७, ४५ । तस्तका तस्तका । स्त-भिला। प्रस्तकीत्। प्रस्तभत्, पा ३, १, १८। पदाभिष्ट। तेवां सामर्थ सीइस्तकीत् विक्रम मस्य नास्तमन्, म १४, ३१। तिस्तिकाषति। •ते। यङ तास्तभ्यते। तास्तभौति। स्तभः यति। यतस्तकात्। (उ) साकाला, सव्धा। •सभ्य। स्तबः। स्तबः। स्तकानम्। स्तकाः। स्तकात्रम्। स्तको। स्तिकता। स्तिकतव्यम्। स्तकायम्। स्तब्धा भयात्, भ १४, ११) वन-पालस्वनम्। सामीयम्। भवष्टकाति । अवष्टकोति । अवतष्टका। पवातस्तकात्। पर्यवतस्तकात्, पा ८, ेर, ११६। धनु रवष्टभ्य, उत्तर् ७५। यष्टि सवष्टभ्यास्ते, पा ८, ३, ६८। प्रव-ष्टभा गी: (निवदा समीपे बाखे)। षभि - षभिभवः प्रश्रष्टकात्। प्रभि

तप्रभा उद्-उत्तिता। उत्तिभ-\$39 यत् च नः चंदा, भ पू, १४। विङ् तुम्, पा ८, ४, ६१। उप—उपष्टमः। तृष्टोव। तुष्टोय। तुष्टुक, पा %, २, डपक्रमः। परि-निरोधः। परिष्ट-१३ । तुष्ट्वे। बुट् स्तीता। स्तिबता, भाति। पर्यतस्तकात्, या ट, १, ६७, वो। स्तोष्यति। •ते। पामिष, स्तू-११६। निः, प्रति - श्रीभवः। प्रति-यात्। स्तोषोष्ट। जुङ् पस्तावीत्। बस्यः। निस्त्रकः। प्रतिस्त्रकः, पा ८, पस्ताविष्टाम्, पा ७, २, ७२। पस्ती-१, ११४। बाह्रप्रतिष्टकाविवृह्मन्युः, ष्ट । प्रस्तावाम्। प्रस्ताविष्ठः सुरा र २, ३२० । प्रातिस्तव्यविकान्त मनि-रामम्, भ १५, ७०। अमंणि स्तूयते। स्तबो महाहवे, भ ८, ८८। वि— पस्तावि। सन्। तुष्टूषति। ॰ते, पा ८, निवारणम्। अवलखनम्। आक्रम-र, इ.१। तोष्ठ्रयते। ताष्टीति। विच षम्। विष्टभाति। विष्टभौति। व्यष्ट-स्तावयति। स्तुत्वा। ॰स्तुत्व। स्तुतः। भत्, व्यष्टकीत्। तं व्यष्टभात्, सट, स्तुति:। स्तवनम्। स्तवः। स्तीवम्। ७२। विसादवन्त मस्ताणि व्यतस्त-सुत्यम् । प्रसावः । संसाव रकन्दोगाः भात, भ ८, ८१। सम् संस्तासनम्। नाम्। परि-श्रेयः। परिस्तीति निरोध:। संस्त्रभ्यात्मान मात्मना, गौ (चरति), भा ३, ७। प्र—प्रारकाः। By 84 to head of the same प्रस्तावः। प्रतृष्टुवुः कर्भ ततः, भ २, स्तिष्-ष्ठिष्, स्ना, पा। २८। प्रास्तावीद्राम्बकथाम्, भ ८, 10 m is 1 to 2 10 12 17 १०३। पस्तूयतां भोः, इतर ६। सम् षास्त्रज्ञनम्। मंद्रातः। परिचयः। असंस्तृतेषु भयेषु स्तिप्—स्तेप्—ष्टिष्, ष्टेष्ट (तिष्ट) जायित खली रिष पचपातः, सा भा, त्रा। चरणम्। स्तेष्, च, प। 28 1 खुच्- हुच्, म्वा, षा। प्रसादः। स्तिम्-स्तीम्-ष्टिम्, हीम् (तिम्) पाच् रत्येके। पयं सेचनार्थः, वी। हि, पा पार्टीमावः। स्तिस्वति। स्म- हुम, हुम, वी। श्वा, शा। ह्वीस्थति। तिष्टेम। स्तेमिता। ज्ञा, स्तिमाः। जडीभावः। जडीकरणम्। खिमितः। विश्वित्यंकायसिमितीः क्रियानिरोध इति भौमः। दोषविष् पतारे निते, कु ३, ४७। स्तिमिती रिति गोविन्ह्सहः। स्तोभते। तुष्ट्मे। नियलाईयो रिति मेदिनी। स्तोभिता। ,विष्टीसते। स् - षुज्, भदा, छ। स्ति:। खुम्भ — खुन्भु (सीवधातः)। नगा, पं। पर्यमा। सट्सीति। पिमशीति। छ, बो। १ शादरयम्। रोधनम्। जुतः। स्तुवीतः। स्तुति। स्तुवीते। रनिष्कीषणम्। सुभाति। सुभीति। बङ् सुयात्। सुवीत। सङ् प्रस्तीत्। या ३, १, ८२। सुन्नीतै। सुभ्वते। स्तवीत्। प्रस्यक्रीत्। पर्यक्रीत्। खूप्- ष्ट्रिपर्, ख्रुपिर्, दि, प, को। थंस्तीत्। पस्ततः। पस्तवीत्। स्तीवि े चु, व ा उच्छायः। रामी**करण**

.सूर्यात । तष्ट्रपः स्तूपिता । अस्तू असारीत्। असारिष्टाम्। असा षु:। श्रस्तरिष्ठ, श्रस्तरीष्ट, श्रह योत्, त्रस्तूपत् । सूप्, तुस्तूप । अतः को १६५। तिस्तरिषति। ०ते। स्तूपव्यः विकासिक विकास विकास राज्य स्तरीषति। •रो। तिस्तीर्षति। स्तृ - स्तृअ, सा, छ। प्रांच्छादनम्। तै स्तोर्थिते। तास्तर्श्ति। स्तार्य स्तृ, स्वा, प, वो। १पीतिः। २ यद्या। त्रतस्तरत्, पा ७, ४, ८५। स्तीत भगाणनम्। स्तृणोति। स्तृणते। स्तृणगात्। स्तृणीत। चस्तृणोत्। ष्रुसृष्यतः। तंस्तारं। तसारिष्य, तस्ता-र्श्वा तस्तरे। श्लारोभि मंडी तस्तार, र ४, ६३। स्तर्ता। स्तरिवातन ०ते। स्तर्यात्। स्तरिषीष्ट, स्तृषीष्ट्र। धस्ता-पीत्। प्रस्ताष्टीम्। प्रस्ताषुः। प्रसन् रिष्ट, प्रस्तृत, वा ७, २, ४३। कर्माच, स्तर्थते। अस्तारि। तिस्तोर्धति। •ते तास्तर्थते। तास्तर्त्ति। स्तार-बति। पतस्तरत्। प्रतिस्तरत्। भूमि सतस्तरहतैः, भ १४, ४८। स्तृता। •स्तृतः। स्तृतः। स्तृतः। स्त्रंपम्। सारः। या, परि-मासारणम्। परि-दुस्ततः, भ १४, ११। वि-विस्तारः। शब्दशमूहे तु विस्तर:। शासने विष्टर:1 स्तृच् (ढच्) खा, प। गति:। स्तृइ - स्तृइ (त्रइ) तु, प। वधः। स्तुइति। तस्तुइ। तस्तुइतुः। तः स्तर्हिय, तस्तर्ह सिता, स्तर्हा। स्ति चियति, सार्चिति। पस्ति हीत्, प्रस्तृह्यत्। स्तृह्र पृष्ठ, वो। स्तृहति। स्रस्तृहीत्, पस्तृचत्। स्तु – स्तूब, क्राा, ७। या च्छादनम् । स्तृषाति। स्तृषीते। स्तृषीयात्। स्तृषीत। । अस्तृषात्। । अस्तृषीत। तसार। तस्तरे। स्तरिता, स्तरीवा। फ़रिष्वति, स्तरीष्यति। स्तीर्यात् १ स्तिषिषेष, स्तीर्षीष्ट, पा ७, २, ३०।

•स्तीर्था। स्तीर्णः। स्तीर्णः। स्तरण स्तृह् (स्तृह) स्ते प् (स्तिष्)। स्तेन - अदन्तः। चु, प। चौर्थम् स्ते - है, स्वा, पा १वेष्टनम्। २ योभा। स्तायति । स्ये ची, था, प। श्यब्दः। २सङ्घात: १ १ शब्दसङ्घात: । स्याव् यत्कीत्तं: स्यायति चिती, ४०। का, स्वानः। प्रस्तीतः। प्रस्ती पा ८, २, ५४। संस्थानः। स्त्री। स्तोम—धदन्तः। चु, प । श्लाधा ्र खग्—ष्ठगे, खगे, वो। (षगे) खा, संवरणम्। जोपनम्। स्वगति। स्थागिता। (ए) प्रस्था खाग। णिच् स्थायति, घटादि:। स्था जलदाः, मा ४, २४। (ख्या पा दने इति चौराटिकः) महीन खगयति मोइ:, उत्तर ११७। ता रजोभि दिंशः, भ १२, ६८। स्थल्-भ्वा, प। स्थिति:। खलति ृस्या — ष्ठा, भ्वा, प। पर्श्वविशेषे प स्थिति:। गतिनिवृत्ति:। प्रवस्था विद्यमानता। तिष्ठति। •ते, प २, ७८। चलत्येकीन पारेन तिष्ठत बुडिसान्, दितो। सा देवता

पेण तिष्ठति, संनु ७, ६। क

हये तयोः, चण्डो। तस्यो। परितष्ठो। तिस्थिय, तस्थाय। तस्थित। तस्थे। तः, मनु १०, ६८। क्ट्रि व्यवस्थायः तस्यो सिसंयामयिषु: भ ३, ४७। समाध्यिक्षं मनः, 🐧 ३, ५०। प्रा-खाता। खाखति। •ते। खेवात् पा ६, ४, ६०। खाबीष्ट। खोयाः पितेव धरि प्रतिपाम, र १, ८२। प्रस्थात्. षा २, ४, ४७। श्रखाताम । श्रख्ः। चिख्ता चिख्याताम्। पश्चिषत्र घा १, २, १७। भावकर्मणोः, स्थीयते, पा ६, ४, ६६। स्थायिता। स्थायि-चते। खायिषीष्ट। प्रसायि। प्रसा-विवाताम । तिष्ठास्ति । •ते, पा ७, ४, दशा तेष्ठीयते, पा द, 8, द्दाता-खाति। तास्थेति। खापयति। प्रति-ष्ठिपत्, पा ७, ४, ५। खिला। ० खाय। स्थित:। स्थात:। स्थानम्। खायः। खातुम्। खायो। खाता। ० खा:। खातव्यम्। खानीयम्। खे-यम। खासाः। तस्थिवान्। स्थावरः। खायुक्तम्। (प्राथयप्रकाशने) क्षणाय तिष्ठते, पा ।, ३, २३ । स-न्द्रेडनिर्णेश थे मात्रयणे) मंत्रय जर्णी-दिषु तिष्ठते यः (मन्दिग्धार्थे कर्णादौन निर्णेहलेनाययति), भा ३, १४। व्यधि प्रिष्ठानम्। प्राप्ति:। पारी-इंगम। ग्राम मधितिष्ठति, पा १, १८, 8६। जनो निकायं तेऽधितिष्ठति, भ ह, १६ । साधिष्ठा निर्जनं वनम्, भ ८, ७८। प्राखिन: केचिद्ध्यष्ठ:, १४, ३१। रथीऽध्यष्ठीयत रामेण, म १७, ८८। अनु—अनुष्ठानम्। कर्णम्। यस्य ग्रैनाधिपत्यं प्रजापतिः खय मन्वति-ष्ठत, कु १, १७। यव— यवस्थिति:। अवितष्ठते, पा, १, इ, २२। जण-मवितिष्ठस्व, भू ८, ११। न अन्यने उवास्थित यो गुरूणाम्, भ र, ११।

(प्रतिचायाम प्रव्हं नित्य मातिष्ठते, की (४३) प्राप्तयः कृद्णमं प्रवलस्ब-नमा संयम यत मातिष्ठेत, सनु रू ८८। समाधि मास्याण, क्रांपं, सा उद्योगः। मुक्ताव्चिष्टते, पा १, रू २४। पौठाद्तिष्ठति। प्रामाच्छत मुत्तिष्ठति। उत्तिष्ठमानं मित्रार्थे, सः ८, १२। उदस्थादासमात्, भ १५, ७ 🌬 उद्यानम्। उद्यितः, पा ८, ४, ६१ 🗈 प्रत्युत्यानम्। एनं प्रत्युत्यायाभिवाद-येत्, मनु २, १८ । उप-उपस्थितिः। भोजनकाली उपतिष्ठते, पा १, इ, ३६ छ (मन्त्रकरणकपूजनम्) ऐन्द्रग नाईपत्यः सुपतिष्ठते, पा १, ३, २५। (परिचर्या) पति सुपतिष्ठति यौवनेन। विनया-द्रपास्यः म ३, ४३ । (देवपूजा) चाहि-त्य सुपतिष्ठते, की १४४। न त्रास्वका-दन्य सुपास्थितासी, भ र, ३। (सङ्ग्रस:) गङ्गा यसुनासुपतिष्ठते। (सित्रकरणम्) रियको रियकानुपतिष्ठते। (वर्लगतिः) षर्य पत्या: कागी सुपतिष्ठते। लिप-सयोपगमनम्) भित्तुकः प्रभु सुपति-ष्ठति। ०ते, की २२४। प—प्रवानम्। प्रतिष्ठते, पा १, ३, २२। प्रास्थिवता-द्रीन्द्रम, म ७, १०२। श्रायमाय प्रत-खें, भर, २४। प्रति—प्रतिष्ठाः सं-स्थापनम्। अश्मापि वाति देवलं महिक्क: सुप्रतिष्ठितम्, • हितो । वि-चवस्थानम्। वितिष्ठते, पा १, इ, २२। सम्-संस्थितिः। अवस्थानस् सन्तिष्ठते, पा १९ ३, २२। न तस्य वाक्यें सन्तिष्ठते जनः, सञ्क २८ 🗠 🐣

व्यव-व्यवस्था। इति धर्मी व्यवस्थि-

73 × NG X ख्य-पद्रमः। चु, था। प, वो। ं परिष्टं चयम्। बीदः। स्थूजविति। खस्-पासु, दि, प। निरसनम्। स्रा-चान, घटा, प। शीचम्।. द्वानम्। द्वाति। स्राति गङ्गाजलै-निखम्, कवि २१८। स्नायात्। प्र-स्रात्। प्रस्:। प्रस्तान्। सस्रो। सस्र-तः। स्नाता। सास्यति। स्रेयात्। बायात्। असासीत्। असामिष्टास्। पदाधिषु:। पिषासति। सास्नायते। साम्राति। साम्रेति। स्वयंगति। साप-यति। प्रसापयति। असि श्वित्। सप-यति दूदयेशं दृष्टिः, उत्तर। द्वाला। •साय। सातः। सातिः। सानम्।

साता। सानीयम्। निशातः मा-खोषु नदीच्यातः, या द, ३, ८८। सिट्-चु, प।१सेहः। २गतिः।

स्निह्—िष्पाइ, दि, प। प्रीति:। सेष:। सिद्याति। नच सिद्याति कस्य-चित्, भ १८, ८। सियोह। सिया-इतु:। सियोहिय, सियान्स, सिया-द। संग्धा, सेदा, सेहिता, पा, ७, २, ४५ । ८, २, ३३ । खेखति, खेडि-

वति। अधिहत्। सिस्नेडियति, सिम्बिटियति, सिम्बिज्ञति। सेर्पिश्च-ते। सेण्येभिः, सेण्यंदि। स्रेड्यातः। बिंबियहत्। ब्यिह, चु, प। स्नेह-

नम्। सिन्धोभावः। सेहयति वर्तिः का तैलेल, दुर्ग। चे दयत्यात व श्रुष्, कवि २८४। चेहिला, सिहिला, ब्रिका, बोढ़ा। शंबद्या बिक्ष:।

स्रोद्धः। स्रोहतुम्। सेखुन, खेड्न्। किए खिन, खिट्,

र्वाच्यक्।

C. A LALIA L MEAN सावः। स्रोति। स्ताः। सुवन्ति।

सुणाव। सुणावतः। सुणाविष्य। सुणा-विव । स्निवता, प्रा ७, २, ३६ । स्निव-व्यति। स्यात्। प्रस्नावीत्। प्रसावि-

ष्टाम्। धरनाविषुः। कर्माण, प्रस्वयते। प्रस्तोता, या ७, २, १६। प्रस्तीव्यते । प्रस्तोषीष्ट । प्रास्तावि । प्रसुति गीः स्वय-मेव। पारतोष्ट मी: ख्यमेव, पा ३, १८८। सस्तूषति। सोच्यायते। सोच्या-वीति। सोणोति। स्नावयति। प्रमु-ष्पवत्। स्वतः। • स्वतः। स्वः। स्ति:। मुत्रनम्। मृतः। सृतितुम्।

सूच् (सुच्)।

स्म-पास, दि, प। १ बदनम्। २ मादानम् । ३ मदर्भनम् । सुस्रति। च इ— पाइ. दि, प। उद्मिर्णम्। २वमनम् । सुद्धात । सुन्ती । सुन्तीः

हिंघ, सुन्तीमा, सुन्तीह । सुन्तु-हिव, सुणा हा। स्नाहिता, स्नोन्धा, स्रीढा। मीडियति, मीखति। बस्तु-इत्।

स्रे-णौ, भ्वा, प। वेष्टनम्।

स्मवति। विच् भूपयति। सूरव-यति ।

सन्द्—सदि, खा, शा।

किश्चित्तनम्। देषत्कस्पनम्। स्पन्द-नम्। स्कुरणम्। स्यन्दते। सन्दते दक्ति-यो भुजः, युक्क २०४। पर्यन्दे। पर्य-न्दे वामनयनं जानकीजन्मदम्बयी:, महाना १, २८। खन्दिता। खन्दियते। यसन्दिष्ट। प्रसन्दिषाताम्। प्रसन्दिः षत्। असिन्दिष्टाचि वामन् १५, २०। विस्ति विद्याते। पास्ति । स्वास्ति । स्वासि विद्यासि । स्वासि विद्यासि विद्यासि

, सर्ध् —भ्वा, मा। सङ्घर्षः।

परामिभविच्छा। सार्वा। सार्वत।
पसर्वे। सार्विता। सार्विधाते। प्रसाविष्ट। बसार्विवाताम्। प्रसार्विवत।
प्रसार्विष्ट रामेख सच सः, म ५, ६५।
पिसार्विषते। पासर्वाते। पासर्वि।
सार्वेवत। धपसर्वत्। सार्विता।
० सार्वेरा। सार्वितः। सार्वितः।
वान् बास्यवी। सार्वेतः।

सम्बर्म सर्म - चु, घा। १म्बर्म । २ इते वसम्। सामयते। सर्मयते। सम्बर्भ स्वा, छ। १स्प्रमेनम। २ पीड्-

नम्। १यन्यनम्, वो । ९ स्पर्यात । ०ते (स्पर्यः।

स्पर्वे (पर्वे)।

स्ध - स्वा, प। १प्रीतिः। श्यासम्।

श्चलनम्। श्रजीवनम्। स्रणोति। पस्पार।स्मृ, स्मृणोति। रमी छान्द्रसा-धित्याडुः, कौ १४७। प्रदीपमते स्त्रा

स्थ्य — तु, प । स्पर्थः । पामर्थनम् । स्थ्यति । प्रसर्थे । पस्प्रमतः । पस्प

र्थिय। पस्पृथिव। इस्तेन पस्पर्ध तदकः मिन्द्रः, कु ३, २१। स्पष्टा, सर्था, पा ६, २, ५८। सम्बति, सर्व्धति। बस्य-स्वत्, प्रसन्धत्। बस्याचीत्, प्रस्था-

चत्, प्रसन्धत्। प्रसाचीत्, प्रसा-चीत्, प्रसम्चत्, की १०४। प्रसाद्यम्,

प्रसादी प्रस्कृताम्। पस्रात्तुः, प्रसादीः, प्रसृचत्। कर्मणि, स्राह्यते। प्रसिद्धं विष्णुचित । परिस्पृत्यंती।
परीस है। सामैयति । प्रपस्पर्यते।
परीस है। सामैयति । प्रपस्पर्यत्।
प्रिष्णुम् । (दानम्) सामैन प्रतिपादत्त सित्यस्यः । ताः नीटिमः सामैयता घटोष्नीः, र २, ४८ । सामैनम् ।
स्युष्य । स्यूष्टः । सामैनम् ।
सामैः । स्यूष्ट्रम् । एव चप-

स्त्रयः। प्राचमनम्। उपस्तर्यः स्त्राः सन् मिलसरः। १ सृष्ट-पदनः। चु, प्राचैवसा।

प्राप्ती च्छा। स्रोभः। स्पृष्टयति। प्रष्येभ्यः स्पृष्ट्यति, पा१, ४,
३६। स्पृष्ट्यति च विभेति प्रेमतो
वासभावात्, स्ष्टाना २, ४४। तव
जनन्ये स्पृष्ट्यास्त्रभूव, सर्वाना २,
१८। स्पृष्टा। स्पृष्ट्योग्यः। स्पृष्ट्यानुः।
स्पर्ट-स्प्तास्त्र, स्प्तिट, स्वा, प, वो।
विश्वरणम्। भेदः। स्पर्टति। स्प्तप्ट-

ति। स्मिटितम्, दुर्गा। स्मिटः। स्मिटा। समग्ड (समृग्ड्) समन्, समज् (स्मृन्)। समज् (समज्) तु, प। सञ्चलनम्।

स्मृतिः। सम्बद्धि। प्रस्मानः। सम्बन्धिः ता। प्रा—प्राम्पाननम्। चालनम्। ताडनम्। ऐरावतास्पाननकर्त्रभन इस्तेन, क्षा ३, २२। ग्राम्पानितवन्न-

कीगुणः, सा १,८१ घनु रास्पाञ्चितम्, मदाना १,३२। पास्पानितं यत् प्रमदाकलग्रेः, २१६, १३॥

स्कार्य स्कायी (जीप्यायी) भ्वा, जार विद्या स्कायते। जमूकायतास्य वीर-त्वस, भ १७, ५०। पल्काये। तयीः

प्रसुकारी यस्त्रताचर्तम्, स् १५, १०८ । स्कायिता। शस्कायिष्ट्र। शस्कास्त्र, हो ।

णिच स्मावयति। स्पिम्सवत्, पा

६,२,३१। प्रिप्पयम् बन्धनां विका मम् स ४, ३३। स्काधित्वा। स्काय्य। स्कीतः, स्कातः, वो । स्कीतवान् पा है, १, २२। स्कायनम्। स्कायः। रफार्थितुम्। स्फातिः। स्फातिवेदावि खमरः। स्काति विति णिजन्तात् सहीतगब्दात् इ:, त्री ४४८। यांच परिगतिक बम्फोतिरास्ताद-नीया। काव्यप्रकामा 📜 अवस्ति 👣

स्किट्-चु, पा। १ हिंसा।

२ शावरणम्। ३ वधः। ४ श्रनादरः। स्केटग्रति।

ां स्मार्म (वह्) चु, पा दिसा।

सहट -सहिटर, स्वा, प।

श्विधारणम्। मेदनम्। रविकसनम्, हुगी। स्कुट्, स्वा, घा। तु, प। विक-सनम्। प्रफुक्तीभावः। स्कोटति। ॰तै। स्फुटति। यमक्टद्रविमख्लम्, स १७, ह। यस्योद्यानतरे समुद्दान्त सततं बन्नोषु पुष्पच्छ्टाः, स्माटन्ते नवर्काः द्वानानि कुटनाः प्रायेषु हचेषु च। क्लोटांन्स दिवता श्रिशंसि । सहस्रा ग्रसामियं सुर्वतां, यसाम्फोटयति स्मुटन दमदिमः सुर्वेश्वरे: पूरिताः॥ का व १३ । पुस्फोट। पुस्फोटिश। तु, पुरुष्टिय। पुरुष्टि। मनो मे न यत् पुस्फोट सहस्रवा, स १४, द तुरेकाः पुच्फुटु भीताः, म १४, ५६। स्कोडिता। ते स्कृटिता। स्कोटिश ति। ॰ते। तु, स्फ्टिंशति। तुङ् (१९) बस्फुटत्, बस्फाटीत्। बस्फोटिष्ट। तु, धस्फुटोत्। अस्फुटिष्टाम्। प्रासी-उम्फीटीन् तखोरिंग, म १५, ७७। पुम्फुटियति। ०ते। पुम्फोटियति। त्ता योस्पुद्यते। योस्पुष्टि। क्रीट-

यति । अपुस्पाटत् । त्स्पुद् (चट) चु, प्। भेदनम्। स्लोटयति। स्सुट, नु, प, वो। हिंसा। बाहुताइनस्। शाङ् पूर्वीऽय मिति दुर्गीदामः। प्रास्फोन टयति। बाह्न चास्फोटयच्छनेः, भार-त । वेचिटास्फोटयाच्च जुः, भ ३,२८। स्कोरिता, स्कृटिता। स्मुटा स्कृ रितः। स्फृष्टिः। स्फोटनम्, स्फुटनम्। स्फोटः। स्फोटितुम्। स्फुटितुम्। स्फुटः। स्मुटताम् (पंत्रायमानाम्), भ १०० ८। स्फुट-अटन्तः। हु, प। विस्कुर-ग्राम्। विक्रमनम्। स्फुटयति। अपुस्-**फु**टत् । म् महार्थाः समुद् (चुड़)।

समृह् - पु, प, को। धनादरः।

स्फुराट् स्फुटि, स्वा, प । विभारणम्।

े मेटा। समुण्डति । पुम्पुण्ड। समुण्ड-ता। स्फुट स्फुडिस्फडि, चु, प, वो। नमें। परिहासका समुख्यति। समुख यति । समण्डयति । समृद्धि, स्वा, पा, वो। विकसनस्। समुण्डते।

स्मर्-स्मुन, स्मर्, सान्-तु, पा १समुरणम्। स्फूतिः। प्रकायः। दीप्तिः। १ सञ्चलनम्। कम्पनम्। स्यन्दनम्। स्फुलितः सञ्चारार्थः, वो। स्पुरति। स्फुलितः स्फारितः स्फलित। सप्ति मगडलं स्फुरति, मा ११, ३। सव्यं नैवं स्पुरति, सन्द्र २७४। स्पुरत क्रव-कुमारो वपरि मणिमद्भरी, गीतगी १०, ६। पुस्कोर। पुसक्तुरतः। पुरुष-रिथा चाइ पुच्कीर बाइ: अ २,२०१ पुस्पुत वेवसाः परम् भ ४, ८। स्पु िता। समुरिष्यति। वार्शिम् समू र्थ्यत्। अस्फुरीत् । अस्फुरिष्टास्। पुम्कुरिषति। पोम्कूर्धते। ध्योक्

THE CLE SHIP STORES CHESCHIST TO 6371 ।वासाकाय काकाः, र कः ६ म । र प् ५४। अपुस्कत्त्। अपुम्फुरत्। अनु-(प्रयोजकात् सारी) विस्नापयते, पा बपुस्फुग्ट् गुक, भ १५, ८६। निःष्फु १, ३, ६८। ६, १, ५७। प्रस्तत, वि-रति, निः स्फ्रिति । निः य्यु चिति, निः स्-साययति। रामं विसापरीत कः, स फुलति, पा ८,३, उँ६। वि—कस्पनम्। ४, ^{५६।} मनुष्यकाचा विस्नायधन् विम्पुरित, विष्पुरित। विम्पारयन् राजानम्, र २, ३३। धतुः। क्रीधविम्पारितेच्यः, भारत। ि क्षिट्— चु, प। १ अनादर:। स्फुरित्वा। ॰स्फूर्य। स्कुरितः। स्फूर्तिः। २क्षेड:, वो। अप्रेटयति। श्रीसिम-स्फूर्णम्। स्कारः। स्कालः, पा 🛦, १, टत्। ४०। स्फूितुन्। स्फुल् (स्फुर्)। 😘 Franklight transfer and the re-स्मील् (स्मील्। क्ष्मुक्—स्वूक्—स्क्की, स्वुकी, स्वा, प। सा – भ्या, पा चिन्ता। ध्यानमा विस्तृति:। समुर्च्छति, स्र्वृच्छति, धारणम्। सारति। मातरं सारति वी। प्रेम्फुच्छे। स्फूच्छिता। (प्रा) स्फू च्छेतम्, स्फूर्णम्। किप् स्फूः मातः सौरति, पा २, ३, ५२। ससीर। स्मृती। स्मृच्छेति प्रदीपमते समृती। सस्मरतुः, पा ७, ४, १०। सस्मर्थ। सस्मिरित। सस्मार वार्णपतिः, मा स्फूर्ज् टुचीस्फुर्जा, भ्वा, प । 🖙 बज्रनिधीयः। वज्रकतृ कग्रव्हः। १४५। सती। सरिष्ट्रति। सर्थात्, स्मृजैति। पुस्पूर्जं। स्मृजिता। यस्-पा ४, २८। श्रमावीत्। श्रमार्ष्टीम्। श्रमार्षुः। श्रमार्षीद् श्रम्लास्त्रम्, स फूर्जीत्। पुस्फूर्जिवति। पोस्फूर्ज्यते। पाम्फृति । स्मृ र्रियति । (या) स्मृ जितम्, १५,८४। कर्मण, संख्ती काषोष्ट। स्मूर्णम्। स्मूर्णः। (दु) स्मूर्जयः। सारिषोष्ट, षा ७, २, ४३। सुस्मूर्वते, सिम-सिङ, भ्वा, श्रा। ईषडसनम्। पा १, ३, ५०। साम्ययेते। साम्मान्। स्मारयति। उत्कर्णापूर्वकस्मर्गे घटादिः। स्मयते। सिधिये। स्रोता। स्रोयते। सारयति। अमसारत्, पा ७, ४, श्रक्षेष्ट। श्रक्षोबाताम्। श्रक्षोवतः। ८५। गुरु शिष्यं भास्तं सारयति, सिसायिषते, पा ७, २, ७४। सेमी-यते। सेषायीति। स्नाधयति। स्निः दुर्गा। तेन यस्त्र मसार्थ्यतः सः, भ ७, १०८। स्राता। सात्या स्मतः। चु, था। धनादरः। जुगुएसा। स्नाय-यते। स्मिला। ॰ सिला स्मितः। स्रातिः। सारणम्। स्रात्म्। स्रात्ते। सारकः। तद्दानं साचिकं स्रांतम्, मी स्मिति:। स्मयनम्। स्मय:। स्मेतुम्। ७, २०। तेन कारायणः स्मृतः, मनु स्रायो। स्रोता। स्रोरः। काञ्जत्स्य १, १०। वि-विसारणम्। प्रसिन् देवत् आयमानः, भ २, ११। वि-च षे खलु विस्तृतं मयैतत्, प्रकु १, विसाय:। व्यसायन्त प्रवङ्गाः, भ १७, ७०। उद्दोश्य को भुवि न विसाधते १८। शस्त्राणां व्यक्षरम्, स १७, १०। The same नरीशम्, मी ४, ८। तथीः प्राविष्येन स्म (स्पू)।

स्वन् सन्दू, था, पा। स्वगम्।

चरपेम्। स्राप्टते। एसम्दे। सस्य-ल्हिबे,। सस्त्रत्ती। सस्त्रत्वे गोणितं व्योम, भ १४, ८८। खन्दिता, खन्ता। चन्दिषते। सन्त्यमि। •ते, पा इं,० १, ८२ वालं रवे: खन्त्यति, भ १२, ७७। तोवं मेघै: खन्दिखते, भ १६.७। प्रसन्धितः। प्रसन्धत्। •त। खन्दिषोष्ट, 'खन्त्मीष्ट। **पर्य**-दृत्। प्रसन्दिष्ट, प्रस्थेला। प्रसन्दि-षाताम्, प्रस्तन्त्याताम्। प्रस्तन्दिषत, प्रस्कत्तमत। सिखन्दिषते। सिखन्त-•ते। साखवते। साखन्ति। खन्दयति। प्रसस्तन्दत्। स्वन्दिता, •सन्ध। ध्यन्ता, पा ६, ४, ६१। खबः। खाताः। खन्दनम्। खन्दः। श्चन्दितुम्। स्थन्तुम्। स्थन्दी। खन्द-श्रभि-द्वीभावः। चरणम् । 1025 प्रमिखन्देत द्वदयम्, उत्तर

प्रभिष्यन्दते प्रभिष्यन्दते दुग्धम्। निष्य-क्ते निष्मन्दते न्मध्। परिस्नन्दते परिषद्ते एतम्। विखन्दते विष-म्हते तैनम्। • संन्दते मत्सः, पा E, 8, 971

खम्--खमु, स्वा, प। तु, प, वी। गब्दः। खेमति। संखाम। संख्यम-तुः। खेमतुः, पा ६, ४, १२५ संख्यमु-रशिवाः खग्नः, भ १४, दश्। इतिगा-चसाः खेमः,ूभ १४, ७३। खमिता। खमिषति। प्रसमीत्। सिस्यमि-

षति। वैविय्यते, पान्द्, १, १८। स्वम-यति। प्रतिस्थयत्। स्यम्, भु, भा। वितर्वा:। खामयते। 'खामयति, वी।

प्राम, पदन्तः। चू, प, वी। शब्दः।

खमयति ।

सम् यस् सन्म, यन्म । आ,

() 那() 那()

💌 ब्रा। प्रसाद:। बनवधानता। सन्धते। अक्षते। सद्यक्षी अस्तिका। पस्न-

श्रिष्ट। सन्भु, भा, था। विम्बासः। शङ्कार दिती भाव:। प्रारीणार्थं विपूर्व:।

विस्मात। तालव्यादि रय सिलेके। विश्वभाते। सुङ् प्रसमत्। प्रस्थिष्ट। (उ) स्थाला, सब्धा। स्थः। स्थ-

पम्। स्त्रभः। विस्त्रभः। संस्—सन्स (धन्स) था, या।

भवस्त्रंसनम्। चुति:। अध:पतनम्। स्वलनम्। भ्रंथः। प्रसन्नीभावः, वो। तालव्यान्त इति कश्चित्। इति । गाण्डीवं संसते इस्तात्, गी १, ३०। सस्ते । स्नामता। संसिष्यते। श्रह्ममत्,

पा १, १, ८१। ३, १, ५५। प्रकृतिष्ट (प्रमादे, शक्तंमिष्ट, वो)। नास्त्रसत वारियां ग्रेवम्, र ४, ४८। अस्मदाः इतः। तेऽसं सबताक्षुनाः, भ १५,८।

बन्धेन, स १४, ७२। सिस्तंसिषते। सनीस्त्यते, पा ७, ४, ८४। सनी-संस्ति। संसयति। अससंसत्। वाती-उपि नास्त्रंसय दंशुकानि वाणिनीनाम,

भावे संख्ते। असंसि। संसंधि गर-

रः, अ। (उ) संमिला, स्राला। ०स्था सराः। सस्तः। स्रांतनम्। संस:। सदां नितस्वात् काञ्चीम्,

कु २, ५५। संह सन्ह. खा, या, वी।

विश्वासः। संहतं। सस्हि। स्मिम्, सिम्भ् (स्म)।

स्विव्-स्विवु, दि, प। १ गतिः।

रथोषणम्। स्राव्यति। सिस्रेव। से-विता। जिए सं, स्वी, पा कु 8, २०।

स्—भ्वाः प। १गतिः। २पवाषः।

श्रमरणम्, वो। स्वति। स्वाव।
स्वति। स्वीय। स्वति। स्वाव।
११। यक्तमूतं स्वतु भेषात्, भारत।
स्वोता। स्वीयति। स्वयात्। स्वस्ववत्, पा १, १, ४८। योणित मस्स्वत्, भ १५, ५६। स्वप्नवि। सोस्नयते। सोस्नोति। स्वावयित्। प्रसुसवत्, पास्त्वत्। स्वावयित्। सस्साविषति, पा ७, ४, ८१। स्वला।
०सुत्य। स्वतः। स्वतः। स्वणम्।
स्वावः। स्वः। स्वितम्।

स्रोक (सेक) स्रो (ग्री)।
सङ्घित (किक) स्रा, प्रा। गृतिः।
सङ्घित (किक) स्रा, प्रा। गृतिः।
सङ्घित स्रा, प्रा, वो। गृतिः।
प्रातिष्ठनम्। स्रवते, पा ६, ४, २५।
स्रातर मस्रवते, र १३, ७०। सस्रवे, सस्रविषे । सङ्ग्रीः। प्रस्वविषे । सङ्ग्रीः। स्रविष्ठते। सास्रव्यते । सास्रव्यते । सास्रव्यते । सास्रव्यते । सास्रव्यते । सास्रव्यते । परिष्यविष्ठने । परिष्यविष्ठे , परिष्रस्विष्ठे , परिष्ठिष्ठे , को १०२। परिष्यविष्ठे , परिष्ठिष्ठे , को १०२। परिष्ठे , परिष्ठे , को १०२। परिष्ठे , परिष्ठे , को १०२। परिष्ठे , परिष्ठे , को १०२। परिष्ठे ,

सह (गह)।
सह सह सह स्वद्, खर्, खा, शा।
पास्तादवम्। प्रमुभवः। कृषिः।
प्राप्तादवम्। प्रमुभवः। कृषिः।
प्रोतिकरणम्। रसोपादानम्, दुर्गा।
सदते। सदिते। सदिते वारिधारा
(रोवते), ने ३, ६३। सदस्त ह्यानि
(प्रमुष्ते)। सदि विविधं साह,
कृषि ११८। सम्रदे। सहिता। सदि-

ष्वते। प्रख्रिष्ट् । निख्रद्विषते । सा-बहाते । सालांत्र । खद्, चु, प । १ मा-जादनम् । रमोपादानम् । २क्वट्रम् । वो । जादयति । असिजदत् । जाद-यन्तः प्रजरमम्, भ ७, ४० । प्रास्ता-दयति मविषा विषयाणां सुवानि यः; मुनि १९६ । अध्यापन होते हिसि ं खन् (ध्वन्) भ्वाः, प । शब्द्ः।।।। खनति। संखात्र । संखनतुः। खेन-तुः, पा ६, ४, १२५। वानराः खनः म १४ ७० । पूर्णाः पेराः सस्तनः, भ १४, १। खनिता। प्रखनीत, प्रखा-नीत्। सिखनिषति। पंचार्यते। संखन्ति। खनयति । खानयति, वी। प्रसिखनत्। भूष्यार्थी 💆 घटादिः। श्रम्यत, स्तामवीत घंग्टाम्। अव, वि—भग्रष्टभोजनम्। प्रविष्यिते। विष्वणति। प्रवाष्वणत्। अष्वणत्। शब्दार्थि ते विस्तर्गति सदङ्गः, पा द ३, ६८:ि अवध्वापा तिवष्याण, पा ८, (३, ६८) । भा- भन्दः। सदका भीर मास्त्रेतः, भ १४, ४। सा, प्रास्त्रा-्तः, प्रावितः, पा ७,३,३८। खन, घदन्तः। चु. प, वो। प्रब्दः। खन बति। स्वप्, जिप्पप्, श्रदा, प। श्रयनम्।

द, ३, ६८। भा-भ्रव्हः। सदका धीर मास्तेतः, म १४,४। ज्ञ, पाद्धा-तः, पा ७,३,१८। स्त्र, प्रदक्तः। सु. प. वो। प्रवदः। स्त्र बति। स्वप्, ज्ञिष्वप्, प्रदा, प। प्रवनम्। तिद्राः। स्वपिति, पा ७, ३,७६। स्वपितः। स्वपिति, पा ७, ३,७६। स्वपितः। स्वपिति, ते, काञ्यप्रकामः। स्वपितः वास्त्रा ति ते, काञ्यप्रकामः। स्वपितः वास्त्रा में (दोर्घनिद्रां प्रविप्रति ते, काञ्यप्रकामः। स्वपितः वास्त्रा में (दोर्घनिद्रां प्रविप्रति ते, भ १६,१९। स्वप्रात्। प्रस्तुपत् । प्रस्ताः। प्रस्तुपतः। प्रस्तुपतः। प्रस्तुपतः। प्रस्तुपतः। प्रस्तुपतः। स्वप्ताः। स्वप्ताः।

(अमी पितताः), म १४, १०१। स्वता।
स्वप्स्वति। स्प्यात्। सस्वाप्सीत्।
सस्वाप्ताम्। प्रस्वाप्साः। भावे, स्प्यते।
सस्वापि। स्वप्प्तति, पा १, २, ६।
सोद्यते, पा ६, १, १८। सास्वति।
सावयति। पस्युपत्, पा ६, १, १८।
सोटी बीचे रस्युपत्, भ १५, ८८।
सुव्यापियवति। स्वा। स्प्या। स्तः।
स्वाम्। स्वप्रम् । स्वाः। स्वाः।
साम्। स्वप्रम् । स्वप्ताः। स्वाः।
साम्। स्वप्रम् । स्वप्ताः। स्वाः।
साम्। स्वप्यात्। स्वप्तः। विद्याः।

ब्बर—पदन्तः। चु, य । पाचेयः। ब्बर्न् — चु, य । १गितः । २तदः, वो । सभयस्थितिः। ब्बर्नेवित । खर दिखेतिः।

.सद्[°](सद्)। स्नम्—षद्ध (पेस्व) स्वा, प । गति:। स्वस्कू —स्वा, प्रा, यो। गति:। स्वाद्—स्वा, षा। स्वाद् (ष्वद्)

ुषु, पा श्राखादनम्। खादते। स-खादे। खादयति। श्रीसखदत्। सि-खादयिषति।

सिद्-जिष्वदा, खा, षा।
१ से इनम् १ २ मो चनम्। १ मो इनम्।
से दते। सिष्वदे। सिद्याः से दिघते। पसिदत्। पसिद्यः, पा १, १,
८८। '॰ सिद्यं सिद्यामस्य। ष्वदा,
दि, प। गालुमचरणम्। घमे चुतिः।
से इदियोऽपि, वी। सिद्यति। न च
सिद्यति तस्याङ्गः स्थायामार्जितमेदसः,
कादि २१२। सिष्वेद्दाः सिष्विदतुः।
सिष्वेदिय। से ता। स्रोत्स्थति। प्रसि-

दत्। प्रवताधिवता खिदम्, स १५,

प् । सन् सिष्वित्सित, दिशदिरिनट्। सिखेदिवते, सिखिदिवते। सेष्विदाते। सेष्वे ति। खेदयति। प्रसिष्विदत्, सिखे-दयिषिति, पा ८, ३, ६२। खेदिला, सिचा। खिन्नं खेदितं तेन, पा १,२,१८। ७, २, १६। खन्निः। खेदनम्। खेदा। खिन्नाष्टुलिः संवहते सुसारी, र ७, २२। खिन्नमनसुदाह्मतम्, सृतिः। खिन्नतिसु खिदितः को ३५४।

स्र क्ष्र्ं (स्क्रूक्ट्रं)।

खु—भ्या, प। १ प्रव्हः । २ उपतापः । स्वर्ता । सस्वरः । सस्वर्ताः । स्वर्ताः । प्रवादि । स्वर्वितः । पा ७, २, १८ । सास्वर्यते । सास्वर्ति । स्वर्ताः । स्वर्ते । सास्वर्ति । सार्वितः । स्वर्ते । सास्वर्ते । सार्वितः । स्वर्ते । सार्वे । स्वर्ते । स्वर्वे । स्व

खु क्या, प। प्रनम्। खृणाति। खेक् (सेक्)।

(夏)

चरु—भ्वा, प। दीप्तिः। इटति। इाटः। इाटकम्।

इट्—भ्वा, प। १मुति:। २ माळाम्। ३ बजात्कार:। ४ कोले बन्धनम्, वी। इडिता। जहाड। इडिता। अहडीत्, अहाडीत्। इडः।

इट्-भ्वा, जा। पुरीषोक्षमः।
भावत्यागः। उभयपदोति कथित्। इदति। ०ते। जहुदे। इसा। इत्-खर्ते। इक्षोष्ट। प्रदत्त। प्रदक्षाताम्

घरतात। जिल्लाते। जग्हयते। जा-भूयो हृदयानास्ट्रेजयै:, भ ६, ७८। इति। हादयति। अजीहदत्। इबः। प्रनः प्रतार्थेखते । १ धनार्प्रन्ति, पा हिन्-अदा, घ। १ हिंसा। ८, १, २२४। घन्तर्धनी देश:। अप-गपदातः। स्त्रंसनम्। भपहालि श< श्गतिः। श्रम्भारः। ताड्नम्। गती न प्रयुज्यते। सुरस्रोतिस्त्रनी मेव इत्ति तिम्, उत्तर ५५। धिम-प्राचात: [(याति) सम्पृति सादरम् इत्यादी भस-प्रहारः। वादनम्। प्रय—सण्डनम्। सर्यवदोषः। इन्ति। इत:। प्रस्ति, षा-पश्चातः। प्रकार: विवादमभ । पा ७, ३, ५४। इंसि। हि, जहि, पा पाइते खंवतः। लुङ पाइत, पह €, ४, ३६। मा धर्म ज्हि, भारत। ₹, ₹, ₹81 ₹, 8, 881 माण्डीवी ष्ट्यात्। यष्टन्। यष्टताम् । यप्नन्। क्षनक्षशिकानिसं भुजास्य। चक्नम। सूयस्तमत्तन्, भ, ८, ३३। विषमविनोचनस्य वचः, सा ११, ६३ । जघान । जन्नतुः । जन्ननिष्य, जन्नन्य यातानेपदं चिन्तान। तुर्थमाजञ्च -रन्धे भ १, २७। व्या-व्याघातः। तान जवान, भ र, ३१। विशिखिन क्षको जञान, र ५, ५०। जञ्चरस् प्रतिबन्धः। न काचिट् व्याष्ट्रकान्ते छ-कटाचै, मा ३, १६। इन्सा। इनि-त्तर २२७। उप-उपदातः। विदातः। ष्यति, पा ७, २, ७०। बध्यात्, पा २, इविहेंयङ्गवीनञ्ज नाप्यपन्नतिल -राज-४, ४२। भवधीत्। भवधिष्टाम्। साः, म ५, १२। धनुषन्नन् पिलद्रः चविषयु:, पा २, ४, ४३। पाविषय। व्यम, मनु ८, २०८। नि-निष्दर्गम्। षावधिषाताम्। पावधिषत्। प्राप्ततः। वादनमा बर्स तस्य निहान्त, भ ५, षाइसाताम्। पाइसत, पा २, 8, २०। कीचे भेव्यी निजिश्चिर, स १४, 88। कर्मणि, इन्यते। अप्रे। एन्ला, १२। प्रणि-चौरसा प्रणिहन्ति। षानिता। चानिष्यते तेन महान् विष-चौरख निप्रणा चौरख निइन्ति, पा चः, भ १, २२। घानिषीष्ट, बिषधी-२, १, १६। राज्यांमां प्रणिक्तिष्य-ष्टा पञ्चानि, पश्चिम । प्रविष्याताम्, ति, स ८, १२१। अक्षांत्र स्रे प्रणि-प्रवस्तात्, प्रचानियाताम्। प्रवधि-इब्सि, म २, ३५। परा-प्राचातः। षत, प्रस्त, प्रधानिषता प्रधानि प्रदार:। प्र-विश्वमनमः प्रवृक्तिः ताडका तैन, भ १, ४०। नियासति, प्रकार, पा ८, ४, ३३। प्रकेखात् । या ६, ४, १६ । जक्षन्यते (हिंसा-प्राचानिवत रचांसि येन, सं ८, याम्) कें घ्रोयते, की २०८। जहाँका। १०२ । वि-विधातः । विज्ञान्त र बीसि षातयति। सार्थे विच, की १६७। वने कार्युंस, सं १, १८। नीई कि पा ७, ३, ३२। श्रजीधतत्। इत्वाः में प्रकृष्ट विद्रन्तुम्, र २, ५८। सम्-॰ इता । इतः । इति:। इननम् । घातः । स्थात:। योग:। संइत्य इस्ती, मनु वधः। इन्तुम्। इन्ता। घाती। घात-2, 011 मः। घातुकः। बधाः। घात्यः। इन्त-• इम् (इम) झा, प। गति:। व्यः। इननीयः,। जिल्लाम्, जवन्वान्, इय् खा, पा श्गतिः। २ हामः। या ७, २, ६८। माखिमि इर्ग इता १ मिला। ४ मन्दा। उपता अवाय ।

इय, भा, प। श्रातिः। देवारिकः। हर्यत । जहर्य । इर्यिता । चुड्यीत्। इल-भ्या, प। विलेखनम् कावणम्। इक्षति। जहासा। इक्षि-

इस—इसे, खा, प्। इसन्म । ्षप्वप्रतीत्या, कपोशस्य विकसिती-कर्यम्। उपहासः। उपहासे सक-संकः। इसति। इधन्ति साधव सी-रम्, दुर्गा। जुडास्। जुडसतुः। इसि-ता। इसिव्यति। (ए) प्रहसीत्, पा ७, २, ५। जिडांसपति । जाडस्ति। जाहिति। शासयति। प्रजीवसत्। इतिला। इसा। इसितः। इसनम्। हातः । इसित्म । हास्यं वचस्तद् यद्दं विवृद्धः, र २, ४३ । इसन्त-मन्तवस्य मवेता रवेः, न १, ६१ । प्रव, इप—इपद्मसः । परि—परिहासः । प्र, विचयतिहासः। विहसति युवति-सभा तव स्वाना, गोतगो ८, ५। डा-बोडाल, डा. प्रात्यागः जहाति। जहितः। जहीतः, पा दः 8, ११६। जहिती जहाति दुर्जने सङ्गम, कवि २५८। डि, जडिडि, ज-चीनि, जनानि, पा ६, ४, ११०। जंबात्, मा ६, ४, ११८। प्रजहात्। प्रजहिताम्, प्रजहिताम्। प्रजहः। जहीं र जहतुः। जहिय, जहाय। ज दिव । दाता। द्वास्यति हेयात्। र्यहासीत्। यहासिष्टाम्। यहासि 🔆। क्सींग, हीयते। प्रश्नीय। जिल्ला-सति। जेंद्रीयते, पा ब, ४, बद्द । जा-इति। जादाति। द्वापयति। यजी-इपत्। डिला। • हाय। होन:। हानि:। हातुम्। हातव्यम् । हियः।

कोडाङ, हा, था। गति:। जिडीते। जिडात। जिडते। जिडीते सळानाः त्रयम्, कवि २५८। प्रजिहीत। पश्चि-हातामा चाजहता जहा जहिये। दाता। प्रास्ति। प्रासीष्ट। प्रपास्ता प्रहासातान्। प्रहासत्। कर्मण् हा-यते। जिहासते। जाहायते। जाहिति। द्वाता। द्वान:। उप प्रामिसना उपाणिकीया न महीतल यदि, मा १, ३७। उद्-उदयः। उक्तिहोते हिसाग्रः, महाना ४, ३५ ।

हि खा, पा श्राति: । प्रेरणम। रहेडि:। वर्षने विरस्तप्रयोगः, दुगी। हिनोति। हिन्तः। हिन्दिना हिन् यात्। पाइनीत्। जिथाय, पा ७, २, ५६। जिंचतुः। ईता। इधात। हीयात्। पहेषात्। पहेष्टाम्। पहे-षुः। वर्माण, दीयते। अदायि। गदा तन जिच्च, भं १४, ३१। जिचीवति। जिवायते। जेवेति। हाययति। यजी-इयत्, पा ७, १, ५६ । हिला। • हिला। हितः। हितः। हयनम्। हेतुम्। हेतुः। प्र—प्रेरणम्। यनीकं प्रजिघाय बीदुम्, भ १४,१। प्रजा क्या मा प्रहिण खस्तुम्, भ १, २१। प्रडियोमि, पा द, ४, १५ । वानराय पाइवीत् परिचम्, भ १५,

हिक—भ्वा, उ। प्रयत्त्रप्रदः। हिका। हिक्यति। ते। हिक्, चु, था। क्रिसा

हिट्—श्वा, प। प्राक्रीयः। हिण्ड्—हिंड, आं, बा'। श्यति:। देवनादर:। हिण्डते। जिहिण्डे। इंग्डन्ते च तथा रात्री, कवि १११। हिन्दोनं डिन्नोन (प्रान्दोन)।

प्रीयनम् । डिन्वति । डिल्—तु, प । भावकरणम् । जभिप्रायच्चनम् । डिल्ति । डेल्ति । डिस्क् —(विष्के) ।

हिंस् हिंस (खड़) व, प। हिंसा।

चिनस्त । डिस्तः । डिसंन्त । डिन-सीन्द्रस्य विक्रमम्, भ ६, ३८ । डिस्यात् । चिनः प्रहिनं दिपि सस्तः सिपि वा । रत्नमाना १६५ । चिन्त्रस्तः । प्रहिसन् । जिडिसतः । प्रहिसन् । जिडिसतः । प्रहिसन् । जिडिसतः । डिसंन् । जिडिसते । चिन्तं । चिन्तं । चिन्तं । डिसंतः । जिडिसंतः । जिल्हें ।

ह हा, प्रश्रदानम्। प्रचेषः। वैधे पाधारे देवतो है स्व कड विस्थागः। शोमः । रघदनम् । इपादानम् । श्रमीणः नम्। सट् जुडोति पा २, ४, ७५ जुड़त:। जुड़ति। डि, जुड़िया जरा-धरः धन् जुडुधीड पावकम्, भा १, ४४। बिड् जुडुयात्। बर्ड पेजुडोत्। पजुडुताम्। पजुड्वः। सिट् जुडवाञ्च-कार, प्रा ३, १, ३६। जुडाव । जुडवार्च-कतुः, जुडुवतुः। पुरो रामस्य जुडुवे। क्रु कार ज्वलने वंपुः, भा। सुट् होता। खेट् डीव्यति। पाचिति, इयोत्। लुङ् पडीषीत्। पडीष्टात्। पडीषुः। यो मन्त्रपूरां तत् मण्यशिवीत् रे १३ अ५ नर्मणि, इयते। यहावि। यन् जुहरा षति। युक् जोह्नबते। जोह्वीति।

जोडीति। चित्रं इतियिति। चज्रवत्। इति। उद्देश इति:। इति:। इति। इति:। इति:। इति:। इतियम्। इति। चीतुम्। चीता। इति:। हतियम्। इतिगियम्। इत्यम्। तसिव इत्यं होता च, जु २, १५। चा-

इड् इड्, होड, इड्, इड्, होड्, भ्वा, प। चा, वी। गति:। होडति। •ते। इड्, तुःपैषी। १सक्तनम्। २संडति:। इडति। जुडोड। इडिता।

पहुडोत्। इण्ड्—इडि, श्वा, पा। १सङ्गतः। राभोकरणम्। राभोभावः। २वरणम्। स्रोकारः। ३ इरणम्। इण्ड्वे। सृङ्ग्डे। इण्डिताः। इण्डा इण्डिनम्। इस्ट्—(श्वा) श्वा, पा १गितः।

त्याच्यादन्म, वो । होतात । शहील । हड (इड)। हच्ची, सा, पू भीटिखम्।

प्रमारणम् । झच्छेति । जुड्डच्छे । इच्छिता। (प्रा) इच्छितं द्वर्णम् तेन । इः। इसी ।

हालक्ष्यो आहे है। १हरणस्ति हो

प्राचणम् । इस्तीमारः । इस्तियम् । इति। इति। इद्वा । इति। प्राचित्वम् । इस्ति। इति। ज्ञारं । ज्ञारं ।

क्ती। हारी। दारकः। • इत्। • दरः। हार्थम । चरणीयम । इत्वयम्। व्यति—व्यतिहारः। विवय्ययः। प्रनु-, भनुद्रसम्। भनुकरसम्। पैद्यक्त सम्बा साख्यां गावः। भप-श्र तु इरन्ते र्भवहरणम्। श्रभ्यव - श्रभ्यवहारः। भाजनम्। व्यव-व्यवद्वारः। श्रा-भाइरणम्। भानग्रनम्। छदा-छदा-प्रखुद्य-प्रखुदाहरणम्। इरणम्। व्या-व्याहार:। उत्ति:। समा-समा-द्वारः। संबद्धः। उद्-उदारः। उप-**षपद्यार:। निर्-निर्दरणम्। परि-**त्यागः। प्रेतवहनादि। तस्य निर्दे-रचादीनि सम्परेतस्य कार्यित्वा, भाग-वतम्। परि-परित्यामः। प्र-प्रशारः। बार्सतावाथ वं: मका न प्रस्तु मना-गसि, शक् । निर्देशच प्रजाईतुः, स १४, १० । वि-विशादः। सम्-संवादः। संजियता मख्यम्, उत्तर है। उपस्त े खपसंबाद:। समापनम्। अप्रसर्वेष भात्वया बसादनीय गीवते। प्रशास-श्वारमंश्वारविशारपरिशारवत् ॥

म्रव् — मृतु, भा, प। १ सकी सम्।

सिव्याकरणम्। २ इवं: । विशोक्ताहः।

हो। मृत् (द, प। तोवः। पाम दः।

हवं: । सीम इवं: । इवंति। मृत्यति।

विस्रं हद्दापि सन्नुषां न महर्षित स्वाता।

स्तवा। समावितम्। कवि २०८।

जद्धी। जद्मवतुः। जद्गविय। अद्भषुः, भ १४, ७। द्विता। द्विष्यति। भ्वा, घद्वीत्। यद्मवदित्यन्ये। दि, यद्म-वत्, यद्वीत्, बार यद्मवतां ती, भ

१४, १०४। चनित्रं शब्द सन्त्रीषं ततो स्रोमानि चेऽक्रम , भारत्। जिहिन-स्रोत्। अरोप १। अर्ड्डिं। इर्थ-

यति । अजद्वेत्, अजीद्ववत् । (७) इपिला, हरा। •हथ। हरः। प्रहर-स्गान्तिकं चित्ततः, दितो। व्यना (लोमस्) हृष्टाः हृषिताः नियाः। हृष्टं च्चितं केशै:, अन्यत च्चितः, पा ७, २, २८। इटो विप्रः। विस्मितः प्रति-इतो वा। इष्टो हम्म इत्यत इष्टि-गब्दात् मलधीयोऽत् इति संचिप्तसा-रम्। णिच् इणितः। विसर्जयेद् यं सुतजनाइधितः, र ३,२०। इधिणम्। इषे:। इषितुम्। इषितव्यम्। हेट-भ्वा, प। बाधनम्। पौड्नम्। इंट्-आ, प। इंट् (एट) खा, पा। विद्याधा। शाळ्म । हिठति। •ते। इंडिता। पहेडीत्। जिन्नेठ। • ठे। पहेठिए। हेठयति। प्राणिहेठत्।

हेरु, तु, प, वो। १भूतपादुर्भावः। ३ पविद्योकरणम्। हेर्डातः। (हेर्ट् हेर्)। हेर्ड्-भा, प। वेष्टनम्।

. हेडति। जिहेड। हेडिता। विच् डिड्यर्ग्त। चनीडिडत्, घटादिः। कर्मणि, चडिड, चडेडि, चडेडि। हेन इस्तेने। हेनति। हेड्-होडू, स्ना, चा। चनादरः। हेडते। होडते। चयं गस्त्रवेऽिए। हेडते गोस्तसम्बन्धा बान्सवानीय तान्

कवि:, कवि १११।

हेट — (हेट, खर्च) क्राा, पा
भूतवादुर्भावः। हेट्राति। हेट्राति।
हेप् — क्रेष, हेष्टु, क्रेषु, (रेष्टु) भ्वा, चा।
चम्बक्र मृंक्यव्दः। हेषा। हेष्ति। क्रेने
वते। जिहेवे। हया जिहेषिरे, भ
१४,५। मा १७,३१। हेषिता। चहेविष्टु। हेष्यति। मजितेषत्। हृषा।
हेषा। होड् — (हुड, हेड्) होड् (हुड्)।

ह्युं हुड्, यदा, या। यपनयनम्। पपक्रवः। चौर्थ्यम्, वो। देवदत्ताय इते, पा १, ४, ३४,। इति। इति। इति। इत्वीत। बहुत। बहुवाताम्। बहु-वत्। जुड्डवे। इतोताः इतोखते। क्रीबीष्ट। चक्रोष्ट। चक्रोवाताम्। पद्मोषत्। यसस्याङ्गोष्ट विक्रमम्, भ १५, ८८। जुक्रूवते। जोक्क्रूवते। जोक्रोति। क्वावयति। क्रुत्वा। •क्रुत्व। इतः। इतः। ऋवनम्। ऋवः। क्रोतुम्। पप-यपक्रवः। पपनापः। मोपनम्। गुचानपञ्चविऽस्नाकम्, भ ५, ४४। प्रयञ्ज्ञवानस्य जनाय निजा-सधीरताम्, ने १, ४८। नि-अपक्रवः। चपनयनम्। धशसः निश्रवानीऽसी सीताये, भ ८, ३४। विभवसदेन निष्कु-तच्चीः, स १०, ३६।

धन् (इन्)

क्रग्-क्रग्, द्रगे, क्रगे (वरी)। भा, प। संवरणम्। आच्छाद्नम्। इति। ज्ञयति। अकागः। इतिता। (ए) पक्रगीत्, पक्रगीत्। क्रगयति, ह्मगयति, घटादी।

क्रप्(क्रप्)।

क्रम्—(तुम्) भ्वा, प। १ शब्दः। र इत्तः। चल्योभावः। इति। षायु ईसित पादयः, मतु १, ८३। कन्नास। जन्नसतुः। इत्तिता। मन्न-सीत्, पद्मासीत्। प्रासयितः। प्रांज-इसत्। एकैकं इत्रासरीत् पिण्डं क्वणी यक्तेच वर्षयेत्, मनु ११, २१६। इसितं सास्माधितम्, स १०, इसम्।

क्राइ—स्वा, बा। ब्रव्यतमण्डः। वाद्यादिषोषः । प्रादते दुन्दुभिः। बड़ादे। जड़ारे पट है र्रुं बन्, भ १४,

४। ज्ञादिता। १ पंजादिए। जादः। इद: ।

. ही हा, पा जला।

- जिच्चेति। जिज्ञीतः। जिच्चियति। जिक्केचितिष्ठन् यदि तातवाक्ये, भ १९ ५३। जिक्कति नीचसङ्ग्रेथः, कवि १८। निक्रीयात्। पनिक्रेत्। पनिकृताम्। षाजिङ्ग्यः। जिङ्ग्याचनार, पा ३, १, १८। जिड्डाय। शिनिड्डियतः। जिड्ड-थिय, जिहुय। न विभाग न जिहाय, भ ४, १०२। द्वेता। द्वेषाति। द्वी-यात्। पहुँगौत्। पहुँछाम्। पहुँछः। जिड्डीवति। जेड्डीयते। जेड्डेति। षु पर्यात, पा ७, ३, ३६। प्राविद् पत्। दीला। • द्रोय। द्रीतः द्रीयः। कीति:। दुवसम्। द्वी:। कृतम्। क्रीया च ब्रह्म च बभाष सेसी, ने **8, 401**

होह्-था, प। बजा। होकति। क इ-क इ, होइ, होइ, षुट्, खा, षा। गतिः। द्वीहते। इ खते।

हु प् हु ए, थ्या, था। गति:। क्षिति है वृ (हैवृ)।

दौड़ (इड) इम् (इम्)। क्रय्—'दृष्'—वु, प। कथनसृ। ह्मस्—(तुम) खा, प। मञ्दरः।

क्वार-क्वारी, भ्वा, गा। १ सखम्। महादः। र पयात्रग्रदः। जहादे। हादिता। प्रद्वादिष्ट। विच् ज्ञादयति। प्रजिद्वदस्। वने तं न लिबहर्त, भ ६, २२। इहिला। • ह्याचा (ह) हवः, पा ६, ८५। ड्वादनम्। ड्वादः। बडाटः।

हला हाल, श्वा, प। चनवम्। हलति। हानति। प्राहलत् चिति-मण्डलम् भ १९,१९०। जहाला ज-हनतः। ह्रविता। प्रहालोत्। ह्रज-यति, हालयति, प्रहलयति। ह्राल-यति, ह्रालयति, प्रहलयति। श्विहलो स्त्राम् स्वम्, भ ६,४५।

वस्रोतायम्। सर्ताः वद्गारः। सन्न-रतः। जदेशे इतीः। अविवर्धतः। ज्योतः माः ७, ४, २८। मन्नार्थतः।

इयोत्, पा ७, ४, २८ । प्रवामीत्। प्रवादीम् । अन्न प्रति। जावस्यते। जाकन्ति। द्वारयति । प्रजिह्मम्

'ह्र'—क्रा, प। हर्ष्यतम्। कोटिखसः हृगातीत क्रायत्। ह्रे — हेञ्च भ्वा, व। १ पंदी। प्रामिसविच्छा। पाद्वानम्। २ प्रस्टः

०ते।

संद् इयति।

जुड़ीय, जुड़िवय। जुड़िव, पा के दें रहे। तां पावतीति नामा जुडाव, जु १, २६। जुट्डाता। जुट्डास्टित। न्ते। प्राणिपि, । इयात्। इस्पेष्ट। जुड़् प्रदृत, पा ३, १, ५३। अडूत,

पहास्तः पा २, १, ५४। क्रमेणि | प्रकारको यमीयां बहुतिश्विधदाशक्त्याः संख्यितीऽहें मोऽयं सर्वोकारस्यः सक्तिपरवर्षः श्रह्मयाराधिती मे।

बिट् जुइव

Tathesia a. 1

पस्य प्रमुख पारं तटमिव जल्चे मी मनेबीद दयावान् प्रमानते तं सहसं परिचित्वक्षं स्थानामी नमामि॥

मानिक्यगोवसभूतरासरवस्याधीमतः। दत्तीयन वनुजन इतिनाभिनिवासिना॥

द्यायत तनुवन हार्याताचारा विकास

त नागा दास्त्रसिते याक संस्कृतो गणदर्पणः ॥

इयते। च्रायिषाताम्, च्रामा-ताम्। सन् जुङ्गवति। ०ते। यङ् कोङ्गयते। जोडवीति, जोडोति, पा ४,१,३३। पिच् क्राययति, पा ७, ३,३७। प्रजूडवत्, पा ६,१,३२। काष्यादीनां वेति इस्तिवक्तः प्रजुडावत् को १८२। जुडावियवति। इता। १इय। इति:। द्वासम्। द्वातसः।

माह्यः। प्राच्याः । स्यान् सर्वाः। प्रामिभवेष्यः। श्रद्धः साह्यस्ते, प्रामिभवेष्यः। श्रद्धाः साह्यस्ते,

माह्यत्। रेवत्क सेवापति स्ताव-टाइयताम् शकु १, ३१ । सत्नाशस्त वादवे स १५, ३६ । उत्तरिक्षा साववाद

माचूत, भारा ५१। हमप्रीक मानुहात, भ १४, ४४। चप, नि, कि, सम कथनम्। पाकानम्। उपद्यते, पादु

र, १९। यहादुणाइये प्रीतं मंत्रयस्व विविध्वतम् भ ८, १९। प्र विनयः। तदीरत्यं कापि वर्जातः विनयः प्रदूर्यति साम् उत्तर १४६।

बम्पूर्णम् । । ।

भय भूवादयः परस्रीपदिनः।

(भू सत्तायाम्।) (१) षक घग क्रिटलायां गती। षन् व्यासो। षंगि इगि तगि त्वगि मगि र्गि रिगि सगि किंगि विंग वला अगि ञ्जगि गत्यर्थाः। अज गतिचे पण्यीः। घट पर गती। बड उद्यमे। बड बद्ड बिभयोगे। श्रय काण काण धण ध्वण भण भ्रण मण रण वण व्रण मन्दार्थाः। यत सातत्वगमने। षति षदि बन्धने। (३) षन्तु गतिषुजनयोः। षभ मध्य वश्य गत्यर्थाः। षम गतिशब्द वंभितिषु। षर्व मूख्ये। षवं यर्घ दिसायाम्। षच पूजायाम्।

घर्ज वर्ज पर्जन। षदे गतियाचनपीड़ास । अवं गती। भवें भवें वर्वे डिंसायाम्। चई पूजावाम्। भूषणपर्याप्तिवार-पेषु । षवर चण-गति-कान्ति-प्रौति-द्वस्त्रवगमप्रवेश-व्यवपस्वास्यर्थ-याचन-क्रियेच्छादीस्यवास्या-सिङ्गनि सादानभाग-विष्यु । षाचि षायामे। इ गती। विचिदिमं दीव पठित्ति १ इख इचि रेखि उत् डिंब एक एकि सस् मांख रख रवि लख स्वि बख विश्व तथ विचि गत्ययी। .मिषि इति केचित्।

इट किट करी गती। (३) इद परमेखर्थे। इवि श्यासीता विकास रेष्ये देखें सूची रेषांची: र्षेत्र चंद्रके । **च स्वते ।** चकी उद्धे। (४) डिक विवासे। (प्) चंट वठ नुठ चवंचाते। **जठ इत्येव ।** डवीं तुर्वी छवीं- दुर्वी धुवी क्सार्थाः। जुवी प्रत्येके। खब दाष्ट्र । 🦠 🖹 उदिर् तुदिर् दुदिर् घर्दने । जव बजायाम्। मह गतिपापणयोः। एज कम्पने। भोख द्राख् भाख् राष्ट्र बाज गोगणानसर्थयोः। श्रीण श्रपमयने । 🥙 पाठ:। एव सन्धवापि

(१) भू पत्तायामित्यस्य भूवादियोगिषदार्थं मादी बोध्यम्।

(२) घतीति तान्तं द्रविद्धाः पठिन्ति। प्रार्थादय स्तु दान्तसिति धनपार्वः। डभय मिप मैत्रेयस्त्रामिकार्य्यपादयः। श्रीतः श्रीदं इदि विदि गिक् पश्चेते न तिङ्विषया इति काथ्यपादयः। प्रन्ये तुःतिङमपीच्छन्ति।

(३) देवार: बोदिती निष्ठाया , मिण्निषेधार्थः। विचिन् इदितं मत्वा त्रिम ताते वाष्ट्रतीत्यादि वदक्ति। को १३१

(४) छञ्छः क्यूग्यु घादानम्। काणियाद्यजनं ग्रिलं मिति यादवः।

(॥) विवासः समाप्तिः। पायैणायं विपूर्वः।

[गणदर्पणः] भ्वादि-परस्म खादि-परस्रे 200 क्रीड़ विद्वार। क्टि खिट वासे। क्रुश आहाने, रोदने च। कंखे इसने। कित निवासे, बागापन-कारी नीचाते। (4) लिंदि परिदेवने। यने च। कटे वर्णवरणयाः । खरे काथे निष्पानि । कीस क्रायन । इस्मेके। चर मचलने। कुच शब्दे तारै। ° वाठ लाच्छ्जीवने । चि चये। (८) कुच सम्पर्चनकौटिष्यप्रति बाड मदे। कडि इत्येकी। चीन घव्यतागव्दे। श्रयं प्रसावलेखनेष । वाडड कर्ड कावासी। चीव चेव निरसने। ज्य बादि: 1 वाष रण गती। कौटिखा-इत्येवी। कुनच जान्च मदि मदि मदि चाहाने, चै जें बे चये। ल्पीभावयोः। बोइने च। खन मन्ये। कुजु बुजु स्तेयकरचे। कानि दीप्तिका क्रिगतिषु। खिका गतिवैक्ष । कुटि वैक्षा । कुडि च। काव खाल ग्रस्त घुरू खट का हा याम्। क्कुठि प्रतिघाते। चाव तस्व नस्व बद खेथि इंसाभचगेष। पस्ब कुथि पुथि सथि सुधि बस्ब सस्ब ग्रस्त प्रस्त खर्ज पुजने च। श्विंसासंस मनयो: 1 बद दन्दश्चे । (१०) स्कि हिं सायाम्। कुवि याच्छादने। कार्ज व्ययने । नान सञ्जी। कुल संस्वाने, वन्ध्रव कदं जुलाते गण्दे। जुलातात-खाद भचणे। च।(0) कुचि मन्दे। चे बदने। (११) बूज बल्यको मन्दे। सबे खर्ब गुर्वे घर्वे चर्वे खोक्द खोख गतिप्रति-कूल पावरणे। पर बर्व गर्व कर्व मर्व वाते। लवि इंसा करणगतिष्। पर्व गती। गज सदने च। चात् क्षव विसेखने। कार्व खर्व गर्व दर्पे। शब्दे । बेल खेल खेल क्रम मञ्दे। गड सेचने। वेल्ट वेश चलने। क्षय खप जव भाव सब गिड़ि वदनेवादेशे। को गे भव्दे। रिष्न क्व वय अव भिष गद व्यक्तायां वाचि। कार् इच्छेंने। (८) श्विंसार्थाः। गर्ज गर्दे। क्रय क्रय क्षय अय हिं-वास गती। गर्द नद गन्दे। सार्थाः। क्रथ इत्येके। वाचि साचि वाधि गमक गती। क्रमु पादिक्चेपे। काष्ट्रायाम्। (4) नोचते रति पद्म प्रय मर्थे रति विशिष्य नोचते जियासामान्यार्थे त्यात्। क्रियामाह्रेऽनिकार्यत्वादिति केचित्। (०) संस्यानं सङ्घातः। बन्धुशब्देन तद्यापारः। सम्बन्धोऽभिषीयते। (८) इच्छेन कोटिच्यम्। (८) धनार्भनः। धनार्भावतच्यये स्तु सनमेनः। (१०) दंश हिंसादिक्यायां दन्दंश्वित्रयाया मिलार्थः। दंशने ववन्तु नीतं ताच्छी व्यायस्य पदो न स्यादिति प्रदीपः। (११) खदनं स्रोधेन, विंसनस्

वन्च गत्यथोः। जय सामसे च। (१८)-नर्ज नर्म सम्बं परि-गिन ग्रंज ग्रंजि चप साम्लने। मुज मुजि गब्दार्थाः। भाषणतजनयोः । चसु कसु जमु सतमु अ-दने। निसु दूर्विके। गुणि प्रयाते गब्दे। नल घातने। (१६) गुपूरचणे। चर गतिभच्चणयीः जि जये। (२०) गुर्वी उद्यमने। चर्च भर्च परिभाषण-जि चि ग्रीभभवे। (२१) ग्र पृ सेचने। तर्जनयोः। जिवि दिवि धिवि किवि प्रीणनायरि 🖟 राजको देख यु ख च स्तेयकारणे। चर्व प्रदेश : म्बुचु गता विप । जिषु सिषु विष्य सेचने । चल कम्पने। म्बुन् चुंगती। चह परिकल्काने। (१४) नोव प्राचिधार्ये 🚛 🦠 को को हपंचये। (१२) चु वेशेन गती 🖙 💮 🚈 चिट परप्रेष्ये। घव इसने। जुगि युगि वगि वजने 🌬 🤻 चिती संज्ञाने। धम्ख भदने। चित्र ग्रेशिको, मायकर्षीच। क्बर रोगे । श्वविष् विभव्दने। (१३) ज्वन दोसी । चटो बल्पोमाव । ध्यु सङ्गर्षे । चुड्ड चद्ड भावकरणे ।(१५) टल दल वैक छो। चैक्क घोर्ऋं गतिबातुर्खे । धोर्ऋं चुड़ी बल्पीभावे। व्ये दित पाठान्तरम्। इत्येवी। चुप मन्दार्या गती। दुन्द्ध चन्वषणे। मा गन्धोपादाने। चुवि वज्ञासंयोगे। षट चृतौ । (२२) चन द्यो। घटादिः। णट नृती। घटादि:। चन्न भावकर्णे। (१६) चण मण चण दाने। ग्रयाने मध्ये। 🔻 चूष पाने । भग गताविखन्छे। च्यतिर पासेचने। (१७) णम प्रञ्जले शब्दे च 📑 📻 चदि पाश्वादे। चुतिर इत्येके। णल गर्से । वन्धने इस्त्रेकि । चन इंसायाम्। जज जिल युद्धे। णिच चुम्बने। चन्च तन्च लन्च स्नुच जह भार संघाते। षिदि कृत्मायाम्। (२३) क्तुन्तु म्तुन् । ब्तुन्न्। जप अस्य व्यक्तायां वाचि। चित्र समाधी। 🖂 📆 (१२) इपंचयो धातुचय:। (१३) विश्वव्दनं प्रतिज्ञानम्। ततोऽन्यसिक्ये इत्येके। मब्दे इत्यन्ये पेठः। (१४) परिकल्कानं दशः, माट्यञ्च। (१५) भावकरणसभिष्रायस्चनम्। (१६) भावकरण मिप्रायाकिष्कार:। हावकरण मिति वोपदेव: । (१७) रेचन मार्द्रीकरणम्। प्राष्ट्रीवदर्धेऽभिव्याप्ती च । 🔭 🐪 👝 (१६) (१८) मानसं ष्ट्रयोचारणम्। (१८) घातनं तेल्याम्। (२०) जय छत्कर्षपामिः । प्रकर्मकोऽयम्) 🔐 (२१) श्रमिभको न्यूनीकरणं न्यूनीभवनन्द्र । त्याद्ये सकर्मकः । हितीयेऽकर्मकः । षध्ययनात् घरावयते, मतुं पराजयते । (२२) दृतिनी खाम् व क्यार्था भाग्योम् । बटादी तु रुति नृत्तम् रुखद्व। पदार्थाभन्यो रुत्तम् साव्रीवद्वेपमातं स्टब्स् (२१) गोपरेमो वैचित्रार्थः। वा जिंगनिचनिन्दा मिति विकेल दति पदीपः।)

गल घटन ।

तक इसने। तिक सच्छ जीवने। मज खचने। (२३) 🖊 तच् तच्च तन्मरणे। तर उच्छाये। तप सन्तापे। मर्ज भर्त सने। तर्द हिंसायाम् । सार छद्यगती। तिस गती। तिस इत्येके। तुज शिंसायाम्। १, शुक्ति पासने वसने च। तुड़ तोड़ने। तृड़ इत्येके। त्रप तृन्प द्रप वन्प चिंसीर्थाः । तुफ तुन्फ खुफ वुन्फ दे खप्र। श्विमार्थाः । तुवि खुवि चर्मे। तसरस इस इत प्रवे। तुल निष्कार्व । (२४) धप सम्तापे। तृष तृषी। खन पृत्र गता गती। ख प्रवनतर चयी: । तेज पासने। खन डानी। भ्रत गब्दे। वदि चेष्टायाम्। लिंग कम्पने। द्वि पासनवृज्नयौ:। दन्य दथने। (२५) भ्रे तमी।

ध्वन खन शब्द । दह भस्मीवार्गे। ध्व इच्छेने। (२६) (ट) निंद सम्बी। नील वर्णे। गील इति कातन्त्रः। पच परियहे। हह हिंह हिंद हिंदी। पठ व्यतायां वाचि। हिंच गब्दे थ। हिंचर पत्ला गती। पथे गती। पर्य गती। पन्न यती। पर्व पूर्व सर्व प्राची । द्रम इस मीस् गती। मीस शब्दे च। पा पाने। विट मन्दर्भवानयोः। धीरवाशित च। पिठ दिसासंति शनयोः। पिवि मिवि णिवि बेचने । सेवने पति तरक्विष्याम । ह स्थानानादरयोः। चिस्र पेस्र गती। धवि रवि रिवि गत्ययी:। पील प्रतिष्टको । (२७) पीव मीव तीव नीव धूज धूजि धूज धूजि खीखे। ध्वत्र ध्वति गती। पुन सङ्ख्ने। धेट पाने। पुष पुष्टी। धा शब्दाम्बसंयोगयोः। पृत सङ्घाते। ध्यै चिन्तायाम्। पूष वही। पृषु वृषु सेचन शिसाक्षेत्रानेषु । भ् खेर्या पर्य कुटादी पेल फेल घेल गती। पेख जल इत्येके। पै वै शोषणे। (२३) लवनं संवरणं लाची ग्रहणाचा। चरिग्रह इत्येके।

(२४) निष्कर्षः निष्कोषणम्। तद्यान्तर्गतस्य बिहिन्। सारणम्। (२५) उपदेशे नान्तीऽयम्। रसास्यामिति गत्वम्। नोपटेशफसन्तु यङ्कुकि दस्नि । दशने दित सामर्थाचनुक् । दशनं दंषाव्यापारः पृषोदरादिः । पतएक निवातनादिखने । तस्याप्यतेन तात्वर्थम् प्रथमिईंगस्य पाधनिकत्वात्। की १०४। द्या दर्भनदंशमधी रित्यन्यत की १७६। (२६) इच्छेणं कोटिसम्। (२७) प्रतिष्टची रोधः।

दल विशर्षे

दाणु दाने।

दु दु गर्ती।

इत्येके।

देव श्रोधने।

द्ये स्वक्राणे।

काड्यायाम्।

गत्यर्थोऽपि ।

श्राचि

टान खराडने।

दृशिर् प्रेज्ञयो ।

पैण लेख गतिप्रेरण हो-वणेषु । पौद बन्धे। एव म व दान्ने। पका नीचैगती। (२८) फण गती नि:खेडी च पास निष्यती। (छि) पत्ना विधारणे। फल विकसने। बह खेर्छ। प्राणने. धान्याव-रोधने च। बिट शब्दे। बिट प्राक्रीशे। बिदि धवयवे। भिद्धि इति पाठान्तरम्। बन्न अवर्षे। (२८) ब्ध अवगमने। भट खती। भन हिं सायाम्। भभ दलें की। भष भर्त मने। (३०) भूष अनद्वारे। भ्रमु चलने। मधि मण्डने। मिडि भूषायाम्। मध विकोडने। (३१) मत्य विसोडने। मबं मदनिवासयोः। अव बन्धने। मव्य बन्धने ।

रोष-मग मिग शब्दे, स्तते च। मच पूजायाम्। ? मिड सेचने। मील श्मील स्मील क्यील निमेषणे। (३२) सुक्र प्रमादे। सुट मद्ने। सुडि पुडि खर्डने। सुण्ड मदने। सर्वी बन्धने।" मुर्का मोहसम्क्ययोः। मुल प्रतिष्ठायाम्। मूष स्तेये। मुष इत्येके। सूष हिं सायाम। भूष इत्वेके। ख्षु सेचनसङ्ग्योः। का प्रभ्यासे। स्त्र च संघाते। इत्येके। मेड डकारदे। म्बेष्क प्रव्यते गब्दे। ब्बेट डबादे। यभ मैथने। जभ च। यम जपर्म। योट् सम्बन्धे। रच पालने। रख रोषे। संघाते इत्येने। रट रठ परिक्षावर्षे ! रद विलेखने। (२३) वट वेष्टने।

रप लप व्यक्तायां बाचि। रफ रिफ गती। रइ खारी। रिं गती। कटि कुटि स्तेये। क्ठ परिभाषणे। बिंठ लुठि स्तेये गती च रिंड लिंड स्तेये कश्चित्। रुष्ट्र वीजजनानि, प्रादु-भवि च। क्ष ल्ष भूषायाम्। रे शब्दे। रोड़ कोड डबादे । रोड चनादुरे। लगी सङ्गा ल विशोषणे नती चा सक्र माक्रि सम्पी। नन ननि भजेंगे। लट बाल्ये। लड विकास। स्य स्वेषम्भीडमयीः । खाज बाजि भर्त मने चा लुट विलोडने। लुठि पालस्ये प्रतिचाते ৰ। लुड सुस विसोडने। लुन्च घपनधैने। सन्च इत्ये के। रगि शक्कायाम्। का निवास रोषे। संघाते इत्येके। वज वज गती। 🤻

(२८) नीचे गीत मेन्द्रगमन मसद्यावद्वारस। 🐨 🔭 🦠

(२८) मैवणं खरवः। (३०) भत्यन मिह ख-(व:।

(३१) विनोड्नं प्रतिघातः।

(३२) निमेवण सङ्घोषः पद्माभि यत्तु तद्रायम्। (३३) विलेखनं भेदः।

वर भट परिभाषणे (१४) वटि विभाजने। वठ खोखे। वद खन्नायां वाचि। वन जग सन्धती। वनुच कोचाते। वन व्यापारहिं सवी रि-त्येकी। (ट) बम उद्गिरेषी । ्री वस निवासे। वाण्डि इच्छायाम्। विट मब्दे। विट पानोगे। घट , बजावियर्चगत्य-वसादनेष । गठ केतव इं मा संक्षेप्रनेषु। गर्क गतिन्दानिगातनेषु । श्रप शातने, चयं विभी-र्वावामपि की ८०। श्रम प्रमागती। ्रभवगती। दन्खोष्टान्तः। श्रम प्रतन्ती। श्रमु हिंसायाम्। श्रमसु स्तृती। (३५) शास्त्र साम् व्याप्ती। शिवि पात्राची। 📅 शिष्ट विक बनादरे। श्रीत समाधी।

श्व गती। शुख शोकी। गुच चचा सभिववे (१६) श्रुठ श्रुठि प्रतिचाते। श्रुठि योषचे। ग्रांड खण्डंनविमर्दनयोः। ग्रन्थ भारी। भाषपी। श्रम श्रनभ भागने चेत्वेके। चिं-साया मिलान्धे। संखीषे श्रुल बजायाम, च। संघाते चे त्येके। शूष प्रसवे। घूष इत्येके। सुव इति च। यो पाने। मोणु वर्षगत्थोः। भोड़ गर्बे। स्रातिर चरणे। यकार-रिह्तीऽप्ययम्। (१७) यु खबणे गती च। योण संघाते। स्रोण च । खन खन प्राध्यसने। (ट्रमी) विकासतिहारीः। वर्ग हरी द्वारी स्वर्ण । वच्च सङ्गे। षट अवयवे। षद्ज विशर्गगत्यवसा-दनेषु ।

षप समवाये। (३८) वस एस अवैक खे। षका गती। षस्ज गती। विश्व गत्याम्। विध् भास्ते a 1 (55) षिभु षिन्भु हिंबायाम्। षु प्रसवैष्वध्ययोः । (४०) षुभु षृन्भु डिसायाम्। ष्टक प्रतिघाते। प्रम वन गन्दे। ष्टे बेष्टने मोभागाञ्च। ष्ट्री मण्डसंघातयोः। ष्टा गतिनिहत्ती। ष्ठिव निरसने। ष्णे बेष्टने। (बि) बिदा थयहो मब्दे। जिच्चिडा **बि**च्चिदा इत्येके। सुभ सन्भ भाषने, र्षं-सायाचा । भाषणे इत्येके । सूर्च पादरे। (४१) र्ख गती। स्पर्व गती। स्कन्दिर् गतिशोषणयोः। ख्बल सञ्चलने । स्ते ष्टे मन्दर्भघातयोः ।

(३४) वठ वेष्टने भट सता विति पठितयोः परिभाषणे मित्तार्थोऽनुवादः ।
(३५) ब्रयं दुर्गता वणीतिदुर्गः । नृशंभी वातुक इत्यमरः ।
(३६) बभिवदः सवयवानां शिथिकी करणम्, सुराधाः सन्धानं वा, सानञ्च।
(३७) दन्खादि रय मुपदेशे इच्चते इति पदीषः ।
(३८) समवायः सम्बन्धः, सम्बन्धवोषो वा । (३८) शास्त्रं शासनम्

(३८) समवाय: सम्बन्ध:, सम्बन्धावनाचाः वातः (३८) यास्त्र धासनम् । (४०) प्रस्वोऽभ्यतुत्रानम्।

(४१) मनादरे रति काचित्कीऽयमाठः। " यवज्ञावकेक मस्र्वेषसिखमरः।

स्थल स्थाने। से वा वेष्टने शोभायाचा। समुच्छी विस्तृती। (टुग्रा) स्फुर्जी वज्रान-र्चीषे । स्मुटिर् विशर्षे। स्मृटि इत्यपि। स्मृचिक्तायाम्। खसु मन्दे। सुसु गती। ! स्त्र मन्द्रीपतापयीः। इट दीमी। इंड झुतिशठखंबी: । बलात्कारे चेत्वेके। इय गती क्रमे मितिय-व्दयोखित्येन । चर्यं गतिक्तान्त्यीः। इस विलेखने। श्वये इसने। ब्रिट पाक्रांथे। इंड्रुइड्रिड् गती। पुरक्तां कोटिखे।. द्ध संवर्षे। इषु पनीने। इट बाधे। हेठ विबाधायाम्। इंड वेष्टने। क्रीक बज्जायाम्।

क्रुकोटिक्ये।

हात इत चलने।

इति ग्रब्बिकरणा भूवा-दयः परस्रोपदिनः समाप्ताः। षय भूवादय बाक्षने पदिनः। ष्मिक लच्चे । प्रविस्विवि गिलाः चिपे। गुल्यारको चेलो-के। मधि कैतवे च। घट घड्ट घतिक्रमिं सयो:। चंदि गती। भवि रिव लवि मण्डे। चिमि भव्दे। भय चय तय गय पय मय वय गती। ष हिंगती। रंच दर्शने। र्ज गतिकुलानयी:। ईजि द्रत्येके। र्षेष गति इसादश्नेषु । र्देष चेष्टायाम्। उट कुट खुड गुड घड **ड्ड** गब्दे। साङ वु ङ इत्येकी। उर्द माने कीड़ायाचा। जयो तन्तुमन्ताने। जा इ वितर्वे। नरन गतिसानाननीनिनेषु વદ ઉપાસ્ત્રી મર્જના

एज् सानृ से जु दी ही। ै रेज़ इस्येके।(१)ैं एठ हेठ विवाधायाम्। (१) एध हुडी। एषु जेषु पेषु पेषु,गती। वावासी एवं। (३) कि विकारी करी के ,तिक्रातीक वर्षि वीक्रा बिता मस्क वस्क खन मानि गत्यर्थाः। कच बन्धने। कचि काचि दीप्तिकस्य-नयोः। कठि मठि योके। (४) कडि मदे। कथि स्नाचक्याम्। कत्य श्लाचायाम्। कदि क्रादि कादि वैक्राची, वैकल्ये इत्येका, कह व्राद् काद इत्यन्ये। . . किंपि चनने। कह वर्षे। वसुवान्ती। नन गन्दसंख्यानयी:। वस प्रव्यते गब्दै। (५) कार्य दोसींग दक्यान्ती-ऽपि। की छ शब्दं कुका याम् । क्ष वा प्रदाने।

कुषिदाही

(१) इच भ्राजृ इत्यस्य पाठी व्रम्चादिषत्वाभावार्थः। तत्र राजिसाइ-चर्यात् पापादेरेव प्रइपम्। को ८७। (२) विकाधा ग्राज्यम्।

(१) सीखं गर्व यापच्या (१) शोक इहाध्यानेत्। (५) पेगच्ये इति खामी । पंत्रक्ट स्तृष्णीभावः।

सुर्द स्ट्रिगुर्द गुद कीड़ा-यामेव।(६) क्रपु सामर्थे। कें प्रशिष्ट ग्लेष्ट कस्पने, गती च। बेह को है खेह गेह ग्लेह पेव मेव स्बोह शेव पेव सेवन । क्रायो शब्दे, उन्देच। क्रप क्रवायां मती। क्लिटि परिदेवने (७) क्रीव भवार्षा क्षोग प्रव्यक्तायां वाचि। बाधनंद्रि । चर्जि गांतदानयी:। चमूष सहने। चीह मदे। न्ध्य सञ्चलने। क्यायो विध्ननी । ः ख्डि खन्ने। गर्च गल्ड , कुत्साराम्। गाङ गती। गाध प्रतिष्ठा लिपावी चंत्री च । गाह विकोडने। भुष गोषमे। (८) ग्रह गर्हणे ग्लंडेन्च। रीह क्लेंड पेंड मेंड को ह मेंड षेत्र सेवने ॥ की ६६

रीष् ग्रन्विच्छ।याम्।(८) रले पृ दृत्येक । गोष्ट लाष्ट संघाते। प्राथ कौटिखें। यसु ग्लंसु घदन । म्बीप दैन्ये। घठ चेष्टायाम्। घट चलने। विष वृष्य प्रणि यहणे। घट परिवर्त्तने। घुण घूण भन्नमणी। घाष कान्तिकरणे। अषि इत्येक। चक लासप्रतिघातयोः। चाड्कापे। चेष्ट चेष्टायाम्। चाङ ज्यङ पुङ गती। जभी जृभि गावविनामे। ज़ृत्व युद्ध भासने। जे ह वाह वेह प्रयत्। (१०) जेहित गत्यवीऽपि। ज्यां इ नियमव्रतादेशाप-नीतिषु। डीङ विदायमा गती। गम कोटिखे। णास रास मन्द्र। राष्ट्र इति दुगै: 1 तां ता हने।

तिज नियाने, चमायाञ्चा तिप्र तेष्ठ ष्टिष्ठ ष्टेष्ठ चर-णार्थाः । तेष्ट कम्पने च। तुड़ि तोड़ने। (११) तुभ णभ हिंसायाम्। बाचोऽभावेऽपि। तेव देव देवने। पूत्रव बजायाम्। वंड पासने। (जि) त्वरा चंभ्रमे (१३)। द्व हरो, मीमार्थ पा दच्च गतिश्विंतनयीः (१३) दद इ।ने। दध धारणे। दानगतिरचण्डिं-सादानेषु । 7 11 12 12 13 होच मोख्येज्योपनयन-निययव्रतादेशेषु । देख रच्यो । वात दोसी। ट्राष्ट्र ग्राष्ट्र साम्बी। बाष्ट्र बत्यपि केचित्। द्राष्ट्र भाष्ट्र विधरणे। द्राष्ट्र निद्राचये। निषेप इत्ये की। द्रेत भें सं शब्दोत्साइ-यो: (१४)

तायु सन्तानपाननयोः।

(६) क्रीड़ाया मेवेत्येवकारादन्यवार्थनिर्देश नियमोऽनुमीयते इति प्रवीप:।

(७) परिदेवन मिन्न भोता:। धर्य सकामेवा:।

(८) गुपे 'निन्दाया मिलादो गुपादिवनुबन्धकरणसामर्थात् सवन्तदालाने-(८) प्रत्युक्ता प्रत्येवणम्। (१०) बाह्य विवस्रोष्ठरादिः। वैद्व दन्योष्ठरादिः। जमावयोष्ट्ररादी पत्ये के। दन्योष्टरादी पत्यपरे।

(११) तोड्न दारणं चित्रमञ्जा (१२) पाकारोपीदानं वेचित्रप्रार्थं मिति प्रदीपः।

(१३) मर्थविभेषे मिस्वाबीऽयदमनुवातः। (१४) उद्यादो हविरोबत्यच । .

धच धिच सन्दीपनले यमजीवनेषु। 💛 💴 🦠 धुङ पवध्वं सने। ध्वन्सु अन्सु सन्सु 'पव-संपने। ध्वन्य गती च भन्य इत्यपि केचित् पेठुः। नाय नाष्ट्र याच्जीप-ताप्रैष्वर्थाभी:व। पचि व्यत्तीकरणे। पडि गती। पण व्यवहारे स्तती च। धन चा (१५) पर्द कुतिसिते ग्रब्दे। (१६) पिडि सङ्घाते। पुङ पवन । पूर्यो विश्वरणे दुर्गन्धे च। पेव मेह सेवने। पेव प्रयते। (षो) प्यायी स्कायी वृद्धी। प्येङ हडी। प्रथ प्रख्याने। प्रेम विस्तारे। प्रिंड गती। षध वन्धने। बाध प्राप्नावे। (१७)

बाध जोडने।

भडि परिहासे। (१८)

भदि काल्याणे सुखे च। भल भन्न परिभाषप्रिं-सादानेष्। । भाम क्रोबे। क्रिक भाष व्यक्तायां वाचि। भाख दोष्ती। भिच भिचायामनासे लाभे च। सुडि भर्षे। भ्यस भये। दुभाजृ दुधाम् दुभाम् दौप्ता । हा दन्यान्ताविषः। मिक मण्डने। मच मचि वाल्लाने। (१३) मचि धारणो च्छायपूजनेषु । मदि स्तिमोदमदस्य-कान्तिगतिषु।ः 🚈 मल मल धारणे। मान पूजायाम्। (जि) मिदा सेहने। सुठि ग्रानने। सुडि मार्जने 🕌 सुद इर्षे। मुङ बन्धने। मेड प्रणिदाने। (२०) मेष्ट रेष्ट्र लेष्ट गती। खद मदन । 🦠

यती प्रयत्ने। रिध लिख गती। लेबि भोजननिव्यसाविष । रम रामखे। रिभ शब्दे। ∙सुक्रीडायाम्। रय गती। लय इत्येकी। रुङ गतिरेषणयो । (२१) रच दौप्ताविभिष्रीती च। रुड लुँट लुठ प्रतिचाते। रिका गङ्गायाम्। रेस शब्दे। रेड प्रवगती। (२२) रेष हैष इहेष प्रव्यक्ते मञ्दे। रेषु द्वकगब्दे। चपरी यखगळ्। (ड्) लभष प्राप्ती। लोका दर्भने। बीचु दर्भने।'.../ विभ की दिख्ये। विट एक चर्यायाम् (२३) वित एकचर्यायाम्। विष विभाजने। मिंह च्। वदि श्राभवादनस्तुखोः।

वर्च दोष्टी।

खेइने। . दन्यों-

ष्ठ्यादिः। पर्व इत्येके। (२४)

वर्ष

(१५) स्तुना वित्येव मस्बध्यने पृथङ् निर्देशात्। (१६) कुलितिगब्दीऽपानगब्दः। (१७) घाद्वावः स्नानम्। (१८) परिचासः सनिन्दोपानस्थनं परिभाषणम्।

(१८) कल्पनं दक्षः शास्त्रच्च । वधने इत्येवे ।

(२०) प्रणिदानं विनिमयः प्रत्यपेणच । (२१) रेप्पणं हिंसा।

(२२) स्वगतिः सुतगतिः। (२३) एकचर्या प्रसद्दार्थगमनम्।

(२४) दक्योष्ठादी। नेचित् प्रनर्धी राष्ट्रादित्समाइः।

बहुँ वल्ड परिभाषण-हिंसाच्छादनेषु। बल बल संवरणे, सञ्चरणे च। बल्भ भोजने। दन्यो-ष्ठ्यादिः ॥ विडि मिडि हही। विध् वेध् याचने। व्य वर्षे। वृत् वर्त्तमे । हुध हुडी। (ट्) वेषु कम्पने। 🗼 वेष्ट वेष्टने। व्यव भयचनगरी:। शकि शङ्कायाम्। शच व्यक्तायां वाचि। गड़ि बनायाम्, संघाते च। शब चलनसंत्ररणयोः। ग्रन्भ कराने । (बार्ड) ग्रसि उच्छायाम्। शाष्ट्र श्वाघाय।म् । शिच विद्योपादिन । गील सेचने। दन्खादि-रित्येके। शीस कायने। चीस चा शुभ दीसौ। मृधु गन्दकुकायाम्। श्रीङ् गती।

यन्भु सन्भु प्रमादे। साम् कराग । स्रोक्त संघाते । (२५) खच खचिं गती। विता वर्षे । खिदि गैस्ये। षच सेचने, सेवने च। षस्ज गती। षच मर्घणे। षद चरणे। ष्टुच प्रसादे। ष्टुभु स्तको। बिक इंबडसने। व्यन्ज परिव्यक्ते। षद षदं पाखादने। (छि) खिदा खेइनमी चनयोः। । खेडनमोड-नया रित्येके। जिच्चिदा सेल स्त्रेश स्त्रीं अवि स्विक गती। स्काभि एभि प्रतिबन्धे। (RE) स्कृदि पाप्रवर्षे। (१७) खबद खबदने। (२८) स्रदि कि चिचन । साई संघर्षे। स्फुट विकसने।

स्मुडि विकसने । स्रन्ट् स्वरणे १ स्नन्भु विष्वासे। खाद-प्राखाटने। इट पुरीषोत्सर्गे । हिडि गत्यनादरयोः। इंडि वरणे। (२८) इंडि संघाते। हेड् होड् घनादरे। 🏥 क्राद प्रव्यक्ते गव्हे। क्रेप्र यत्याम्। द्वादी सुखे च। चात् अध्यते गब्दे। प्रव्विकरणा भूवादय षात्रानेपदिनः समाप्ताः।

ष्य भूवादय एभय-पदिनः। पन्षु गती याचने च। प्रमु इस्त्रेके। ष्यचीत्य-परे।(१) षम गतिदीस्यादानेषु। षयं पान्तोऽपि। स्टब घादानसंवरणयीः। स्तिदि परिदेवने। खनु षवदारणे। गुह्र संवर्षे।

श्रीय ग्रीयवरी। स्पुट बिलसन। १९८१ वर्षा । प्राची-(२५) तक्षाती चर्यः। स चेत्र ग्रम्यमानस्य व्यापारी ग्रन्थित वा। प्राची-उत्तर्भकः। कितीये सन्तर्भकः।

- (२६): केचिक्स्य टकार भौपटेशिक इत्याष्ट्रः। तस्तरे, ष्टकारे। टक्को।
- (२०) बाप्रश्य मुत्रवनमुद्धरय छ। (२८) खबदनं विद्रावयम्।
- (२८) वरणं स्तीकारः। इरण मिल्येकी।
- (१) प्रन्तु गता वस्य पाठे कार्ज मिप्राये क्रिताफलेऽपि प्रसीवदमिति प्रदीष:। पूर्वपाठोऽस्य कार्ज भिप्राये क्रियाफलेऽपि प्रसीपदार्थ:।

अद्वाद-परसा

388

षथादादय परची-

पदिनः 🕫

इण् गती ।

जर्षज पा स्थादने 🥬 🐪

(ट) च गब्दे।

ख्या प्रकाशनाः 💢 📑

चनास दोशी। 🕮 🔒

जम भचण इसनयोः।

ण स्तरी। 🗝 🗀

दरिद्रा दुर्गती । 51 🔻

दाएं सवने।' 🦻 🛲 👺

दिश्व जगचये। जमयः

दुइ प्रपूर्णे । उसक्पदी

ख् ग्रीभगमने ।:

द्रा कुवायां गती।

दिष प्रमीती। अभयक

जाग्र निद्राचये।

च्या तजने ।

षद अचले ।

यम प्राप्ती

इक् सार्चे।

षम भुवि।

आ शब्दे।

चते चदे याचने। चेव भक्ता । चाय पूजानिशामनयोः। चीह चादानसंवरणयी:। छष हिंसायाम्। क्षव चादानसंवरणयी:। णिष्ट पेट क्रवास नि-कार्वयोः। णीञ प्रापण । लिय दीशी। टान खराडने पार्जिके च दास दाने। धाव गतिश्रवोः। धर्म कम्पने। ध्रुञ धार्ये। (ड) पचष् पाके। प्रोय पर्याप्ती। ((उ) बुन्दिर् निमामने। मज सेवायाम् । स्ञ भर्षे। भेष भया। गतावित्येक ।

भव भूच घटने। इलोबी। भूच इलापरे। भद्य इत्यापर इति काचित् पाठ: । खेष भेष गती।

माच्च माने। मिट मेह मेथा हिंसनयो:। यान्ताविमाविति खामी,

धानता विति न्यासः।

पदिनः समाप्ताः । (२) वीजसन्तानः केने वोजधिकरणम्, गर्भाधान ञ्चा

(३) वा दित्रश्य वाद्यभाष्ड्य वादनार्यमादार्म वादिलग्रहणम् 🖟

(४) काको घो विद्वानुष्यानम्। (४) सर्प्रतं प्रवनम्, वो ६

(६) हरण प्रापणम् ।। स्त्रीकारः स्त्रेयः नामनञ्च ।

स्ध गुध उन्दर्भ। मेष्ट सङ्गमे च । 💯 🗀 🗀 यज देवपूजासङ्कृतिकारणः दानेष्ठाः । हिल्लाहरू (र्) चाच याखायोग । रन्ज राजी। राज दीसी है रेष्ट परिभाषणी। लप काम्ती। (इ) वप वीजसन्ताने। (२)

षयं छेटनेऽपि। वह झाउँचे। वृधिर् बोधने । हज वर्षे।

वेञ तन्त्रसन्ताने। वेण गतिज्ञानचिन्ता-

नियामनवादिवयहणेषु । नाम्लोऽप्यक्रमः (३)। व्यय गती।

व्येज मंवर से। यप काक्रोये। (अ)

यान तेजने।

श्रिज सेवायाम् ।

षक समवाये।

हुन् द्वारे (६)

सम बाधनसम्मनबोः।(५)

गव्यिकरणा भूवादयः छभय-

विक प्रधाने गब्दे।

हेञ् सर्वायां ग्रन्थे च । 🥏

या रचणे 🕫

पदी।

पद्यो।

मा पूर्वो ।

भा दोती ।

पक्ष अच्चेष । 👙 🌾 ब्रूज व्यतायां वाचि .२२०

सा माने। स्रुज्य शुडी ! या प्रापण । (१) यु मित्रणे, श्रीमञ्जूणे च। रा दाने। क शब्दे। कदिर् पश्चिमोचने। सा' ग्रादाने। दाने इति चत्रः। निह् पासादने। डिभय-पदी । वच परिभाषणे। वश काम्सी। वा गतिगत्धनयोः। विद ज्ञाने। वो गतिकाशिपजनकान्य-सनखादनेषु । खेके।(२) शास पन्धिष्टी। श्रा पाके। खस दापने। खखि कान्दसी। षु प्रसवैद्धवियोः। (१)

ष्टुञ स्तृती। णा, भीचे। पा प्रसवयो । (ञ्रि) खर्व भये। इन हिंसागत्योः। बदादयः परसा-दति पदिनः।

श्रयादाय बात्मनेपदिनः। मास उबवेशने। इङ मध्ययने। नित्य-मधिपूर्वः। ईड स्तृती। ईर गती। र्ग ऐखयाँ। कसि गतिशामनयाः (१। चित्र व्यक्तायां वाचि। ष्यं दर्भनेऽपि (२)। ष्य मनिदिदित्येको। व्यान्तोऽपि। णिनि गुषी। विसि चुखने। दीधीङ दीप्तिदेवनयी:।

fu जि वर्गे। एके खेवी (३) पृत्ती सम्पर्चन । वेबाङ वेतना तुल्ये। (8) 面1元母: 1 वनी वजन। विज इत्येकी वन प्राच्छादने। (ब्राङः) शासु बच्छायाम्। शिंज शब्दती मन्दे। भीड खप्र। षुङ प्राणिगर्भविमी चने । इंड प्रवन्यने। इत्यदा दय षादनः।

> प्रय जुडोत्यादयः। (इ दान दनयो:) ऋस गती। (ड) दाव दाने । (हु) धाञ्ज धारणपीषण-योः। विजिन् शोचपोष-

णयोः। चमयपदी । पु पालनपूरणयोः। इस्त क्तोऽयमिति केचित्। (कि) भी भये।

(१) प्रापणसल गतिः। (२) प्रजनं गर्भेयहणम्। श्रमनम् चेपणम्।

क्राग्दसः।

(३) प्रसवोऽभ्यनुद्धानम्। (१) प्रथमनिदिदित्येके। तानव्यान्तोऽप्यनिदिन्।

(३) इक्षारोऽनुदात्ती युजर्थः। इक्षार उद्घारणार्थं इति विचित्। इन्हिम नुड्।गमार्थ इत्येके। वेदेषु उच्चारणार्थ इत्यन्ये। शत बहवस्तु हतीयसरो भ्रीमकारितः। किन्तु चतुर्थस्त्ररानुबन्धोऽयम्। निष्ठाया इम्निधेधार्थे दिति दुर्गी-दासः। चर्चिङो ङित्करणेनानुदात्तेत्वनिमत्तवात्मनेपदस्वानित्यत्वम्। पत-एव, तर्जयद्विव वितुधिरिति रखः ४, २८। स्कायद्विमीक स्वीत्यादि, की ११२।

(ः) सम्पर्वन इत्येके। उपयित्रसम्बे। अध्यक्षे प्रव्हे इतीती

(४) वोधातुसमानार्थोऽयम्। गत्यादयस तदयोः।

(डु) ग्रंज धारणपोषणयोः, दानेऽपीत्येके।
माङ माने, शब्दे च।
विजिर् प्रथमावे। दुभयपदी।
(श्रो) डाक त्यामी।
(श्रो) डाक त्यामी।
इ दानादनयोः। श्रादाने
चेत्येके। प्रीणनेऽपीति
भाष्यम्। (१)
इो लक्जायाम्।
जुडोत्यादयः समाप्ताः।

षय दिवादयः परसीपदिनः।
(दिवृ क्रीडादी।)
षस चेपणे।
इव गती।
उच समवाये।
नेटधु हसी।
सुध प्रतिभावे। (२)
सुप क्रीधे।
सुध तन्त्रस्यो।
सुध हर्यकी।
सुध क्रीका।
सुध क्रीका।
सुध क्रीका।

समुखानी। क्षित् पादीभावे। चम् सङ्गे। 🏥 📆 चिप प्रेरण १८४८ हुई च्य व्भुचायाम्। चुम सञ्चलने। (जि) चित्रा सेइनमी-चनयोः । १५४० १६ गुध परिवेष्टने। गुप व्याकुत्तले। ग्टध् प्रभिकाञ्चायाम्। को केंद्रने। जसु मोचर्षे। जुष भृष् वयोद्दानी। डिप चेपे। ण्य पदर्भने। ण इ बन्धने। जमयपदी। तस् काङ्गायाम्। तसु उपचये। इसुच। तिम प्रिम श्रीम बार्दीभावे। तुभ प्रभ हिंसायाम्। तुष प्रोती। त्व प्रीचने। (३) (ञि) खष विवासायाम्। वमी उद्वेग । दम् डवशमे। (४) दिव क्रीडाविजिगीवा-व्यवशारद्यांतस्तुतिमादः मदखप्रकान्तिग्तिष् ।

द्ष वैक्रत्य। हपु इषेमो इनवी:। (म्) दृ विदारे 🜓 🖂 🖂 . दो प्रवाखाउने। दुष्ट जिघीसायाम्। न्ती गाव विचेषे। 🔭 🦠 पुथ हिंसायाम्। 👫 📑 पुष्प विकासने। मुष् दाहे। (६) गाः भ्रुस दाहे। स्य भन्य घघ: पतने। भ्रम् धनवस्थाने। मदी इर्षे। मसी परिणामे। परि-माणे इत्येके। समी-त्येवी। (ञि) मिदा स्नेइने 🎼 सस खण्डनेन मुद्र वैचित्वे। " सग पन्देषणे । स्व तितिचायाम्। उभयन पदौ ।। भारता है यसु प्रयत्ने। युपु रुपु लुपु विमोहने। रध हिंसासंसाहारे:। (0) रन्ज रागे । उभयपदी। राध साध संसिद्धे।

- ॰ (१) दानचे इ प्रचेप:। स च वैधे प्राधारे इविषयेति स्वभावाकभ्यते।
- (१) पूर्तीभावो दौर्गस्यम्। (२) ह्ररणं कौटिस्सम्।
- (३) प्रीपनं रक्षि स्तर्पेण श्व। (४) उपयम इति णिजन्तस्य रूपम्। तेन सक्तमेकोऽयम्। न तु यमिवदकमैकः। (४) मोइनं गर्वः।
- (६) पर्य पुषादि:। व्युषदाहे प्रृष्ठ चेति परत पाठ: सिजय:। तद् आदि-पाठेन गतार्थ मिति सुवचम्। (७) संराधिनिष्यत्ति:।

णास भदने। चादाने कष रिष हिंसायाम। संद्र विसोडमे। सुभ गार्बेग । (८) वसु स्तभो । विस प्रेरेषे। वस डिलागे। व्या वर्णे। व्यष्टाहे। सुष च ६ व्यव विभागे। वृष च। व्याध ताडने। बीख चोटने ज्ञायाचा । शक विभाषितो भवेषे। (८) श्रप पाक्रोशे। उभयपदी। श्चिर् पूर्वीभावे। डभय-चदी। (१०) ग्रध ग्रीचे। अव गोवर्षे। भ्रोतन्बर्ण। श्रम तपिं, खेदे च। श्चिष या लिक्नने । षह पुर स्ती। -विधु संराद्यो । (११) षिवु तन्तुसन्ताने। षो अन्तकर्मण। ष्ठिव निरमने। केचि-दिहेमं न पठिन्ता। षासु निरंसन्। श्चिष्ठ प्रोती। (द) गार्बामाकाङ्घा।

इत्येक । अटभीने इत्यपरे। षाष्ठ उद्गर्ये। सिव मतियोषणयोः। खिंदा गावपचरण (१२) हव तृष्टी। इति प्रमिववरणा दिवा-टबः परस्रैपदिनः। चय दिवादय चालने-पटिनः। चय प्राणने। दक्त्यान्तो-त्यमिखेंके। र्ड गती। काम्य दीशी। क्रिय उपतापे। खिद दैन्छे। गरी धरी शिंसागत्वी:। वृरी जुरी हिंसावयी-डाम्बी: । वरी दाही। जनौ प्रादुर्भावे। हीस विश्वायमा गरी। तप ऐम्बर्थे वा। (१) तूरी लरगहिंसवी:। হীক বয়। পর্যাক্ত दोवी दोसी। दुङ्ग परितापे।

धीक बाधारे। पद गती। पौड़ पाने। पूरी आप्यायने। प्राक्त प्रोती। शयं सवास्वाः विद सत्तायाम । 😲 वध धवगमने। सन जाने। माङ माने। मौङ हिंसायाम । यध सम्प्रहारे। रीङ स्रवणे। (धनो:) रुध कामे । 😘 लिय चल्पीभावे। लीड सेवचे। वाश्राभव्दे। इत् वर्षे। बहुत् वर्षे इत्येके। त्रीङ हणोत्यर्थे। श्री हिंसास्तकानयोः। चुङ पाचिप्रस्वै। द्रति प्यन्विकरणा दिवा-दय प्रात्मनेपदिनः। षय स्वादय: । (पुञ पशिषवे ।) षश् व्याप्ती, सङ्घाते च ।

श्रयमात्मनेपदौ। चाप्ल व्यामी।

॰ते इदि प्रष्टुं भत्तः, कौ १३८। (१०) पूर्तीभावः क्रोदः। (१२) प्रचरणं वर्मचुति:। षयं जीदिति न्यास-

(८) विभाषित इत्युभयपदीत्वर्थः। शक्यति

(११) मंराह्य निष्यत्ति:। बाराद्यः। निति हरदत्तादयः।

(१) पर्य धातुः रैम्बर्यो वा तङ्खनौ लभते। अन्यया तु श्रव्यवारणपरसा-षदीत्यर्थः।

ऋधें हडी। क्षञ हिंसायाम्। चि इंसायाम्। चिञ चयने। तिक तिग गती, भास्त-न्दने च। खप प्रीपने। दन्भु इस्रे। (टु) दु डपतापे। धुञ कम्पने। दीर्घान्तो-उप्ययम्। (जि) धृषा प्रागल्भ्ये। पृ प्रौतौ। (डु) मिञ्र प्रचेपचे। हुडा वर्षे। यक्ख यती। शिक निर्माने। श यवणे। घयं खादौ पढितः। षच हिंसायाम्। षिष बस्वने । षुज प्रभिषवे। (१) ष्टिघ पास्तन्दने। प्रय-मात्मनेपदी। स्त्ञ पाच्छादने। सर प्रीतिपासनयोः। प्रीति-चनवारित्यन्ये। चलमं जीवनमिति खामी। प्रिगतिष्ठद्योः। इति युविकर्णाः बाद्यः।

षय तुदादयः परस्री-पहिनः। (तद व्यवने। दल समचीपणयोः। द्षु दच्छायाम्। 🔭 उक्ति उन्हें। उन्ही विवासे। उन्मा उसर्गे। उवन चार्जवे। छभ छन्भ पूर्ण 🚛 ऋष स्तुती। ऋक गती न्द्रियप्रनयमू निं-भावेषु । जरफ परन्फ डिंगवाम्। ऋषी गती। वाड मदे। किस ग्रैत्यक्रीडनयी: कुच सङ्घोचने। ब्रुट कोटिखो। क्षड वास्ये।. कुण प्राच्हीपकरणयी:। कुर शब्दे। सङ्घनस्य । 🌃 🖹 🔻 स्तरी छेदने। कृ विच्ने पे। क्रुड मृड निम्नजने। चि निवासगत्योः। चिद् परिचाते । 🕬 🕫 त्तुर विलेखने । खुर छेटने। गुपुरीवीलार्गे। 🐃 गुज भञ्दे।

गुड रचायाम्। गुफ गुम्फ ग्रन्थ । गुनिगरणे। घुट प्रतिषाति । घ्ण घृषं भ्वमणे। 🔹 घुर भीमार्थं शब्दयोः । चर्च जर्ज भभे परिभा-षणभत् सनयोः। चल विकसने। विसंवतन । चुट छुट छेदने। चुड ब्रुड स्फूड संवरणे। चती शिंमाश्रयनयोः।, कुप सार्थे। कुर छेदने। चुट **बन्धने** । हिल्ला हा जुड गती। जुन इत्येके। जुड वस्पने। हा देखा एक **डिप कोपे।** मान्यामध्य गा णिस गद्दने। 👝 🛒 खद प्रेरचे । (१) णु स्तवने। तिल छोड़े। तुट बाल इकर्मणि। तुष्ठ तोड़ने। तुण कौटिस्ये। तुप तुन्प तुफ तुन्प चित्रायाम् । अस्ति ह त्व त्न्य स्तो। त्यम इस्रेजे। जिल्ला तह साइ हन्इ दिसार्थाः। वट छेदने।

(१) श्रीभववः स्वपनम् पीड्नं सातं सरायाः सन्धानच्य । १ (१) यद्यपि एद इसयपदी वच्चते तथापि कर्मुगामिनि पुनेऽपि परसौपदार्थमि इ वाठः । खूच संवरणे। युह स्थुड संवरणे। खुड़ कुड इत्येके। ह्य दन्फ वत्केशे।

हमी गर्ये। दुण हिंसागतिकोटिख्येषु।

घि घारणे। धू विध्नने। घ् गतिस्थैययोः ५ इति पाठान्तरम्।

पि रिगती। पित्रा अवयवे। पुट संश्लेषगे । पुड उत्सर्गे।

पुण कर्मणि ग्रमे। पुर अवग्रमने। पृड् मृड् सुखने।

पृष प्रीपने । हण च। प्रक जीपायाम्। विस भेदने।

बृह डिंदामने। भुजो की टिखे। भुड संवतिमं इत्योः। (टु) मस्जी गुजी। सिक उत्केशे।

मिल श्रेवणी। सिव साडीयाम्। सुट पूर्विषप्रसद्देनयीः। मुख प्रतिज्ञाने। सुन् संवैष्टने।

मृण हिंसायाम्। (२) पामर्थनं सर्भः।

(३) विमोचनमा कुसी करणम्।

(४) दन्योद्यादिः पवर्गीधादिः सम्बे। (१) मिन मंद्रेषण रति पठितस्य पुनः पाटः कर्च भिषाये तस्यैः।

श्रष्ट तुदादय **भारतने** सृग बामर्थने।(२) कत्यनयुद्धनिन्दा-पदिनः। रिफा हिंबादानेषु।

हङ घादरे।

(ম্বা)

धृञ चवस्थाने i 🥙 🔭

पुङ् व्यायामि ।

संह प्राचलांगे।

क्रीड़ायाम्। 💯

(भो) विजी सयचलनयीः।

प्रायेणायसुत्पूर्वः ।

इति तुदादय चालने-

पदिनः ।

षण तुदादय डभय-

पदिनः ।

क्षष विलेखने।

चिप प्रेरणे।

गुद प्रेरणे।

तुद व्यवने।

भ्रम्ब पाके।

दिश चतिसर्जने।

मिल सङ्गमे। (१)

मुच्ला मोचणी।

बजी घोलम्जी

वजी महिं। कुङ कुङ गब्दे। गुरी उद्यमने। जुवी प्रीतिसेवनयीः।

क्य रिश हिंमायाम्। लिख प्रचरविन्याचे। लिय गती। नुठ मंश्लेषणे।

लुभ विमोइने।(३) विक गती। विध विधाने। विस संवरण । (४) विग प्रवेशने।

व्यव व्याजीकरणे। (यो) वस्च छेदने। गद्ख गातने। गिम विश उन्हें।

शुन गती।

ग्रुभ ग्रन्भ गोक्षार्थं। षद्ख विशरणगत्वकादनेषु षुर ऐखर्थदीस्योः 🗠 षू प्रेररे। सूज विसर्गे। स्रम संस्पर्भने। स्प्रट विकसने।

सम्र सम्बं मञ्चलने। स्मृत् स्मृर्णे। समर स्मल इत्येवी। हिन भाववार्षे।

इति तुद्दादयः प्रस्कीः

पदिनः।

निप उपटेडे। (२) लुप्ख केदने।

विष्ल साभे। सिच चर्षे। द्ति यविकरणास्तुदादयः

षय स्थादयः परस्रो-पदिन:। (क्षिर् प्रावरणे। धन्ज व्यतिमर्पणकान्ति-गतिष्। (ञ) इस्वो दीशौ। घालने-पदी। उन्दो क्षेदने। सतौ वेष्टने। खिद दैन्ये। धाताने-पदी। तन्चु सङ्गोचने। त्रह हिसि हिंसायाम्। पिष्ट सञ्चर्णने। पृची सम्पर्के । भन्जी श्रामदंगे।

भुज पालनास्यवहारयोः। विद विचारणे। यात्मने-पदी।

(श्री) विजी भयचल-नयोः।

व्रजी वर्जने। शिष्ट विशेषणे।

इति च्यादयः परस्रो-पदिनः।

THEN STATES

(२) उपदेशे हिंदः।

(२) भूतपादुर्भावोऽतिक्रान्तोत्पातः।

च्धादय पदिन:। चुदिर् सम्पेषणे। 🏅 🦠 किदिर् हैधी कर्ण। (ज) छ्दिर दीप्तिदेव-नयोः । (ड) ढिदर् हिंसानाइ-

रयो:। भिदिर् विदारणे।

युजिर्योगे। रिचिर् विरेचने। रिधिक् आवरणे। विचिर् पृथमाव।

इति स्थादयः।

षय तनाद्य उभय-

पदिनः। (तनु विस्तारे।) ऋणु गतौ। (ड्) क्षञं करणे। चणु हिंसायाम्। जिणुच। घण दीमी। तनु विस्तारे।

मनु पन्नवोधने। पदी। वनु याचने। पदी।

षण दाने। इति तनाद्यः।

वणु घदने।

भूज कम्पने।

पदिन:। (डु क्रीञ द्रव्यविनिमय।) षश्र भोजने। 💯 🐬 इष याभीच्छेर। (१) ऋ गती। कुत्य संश्लेषणे। संक्लेशे इलोने। कुचेति दुर्गः। क्षषं निष्कर्षे। क हिंसायाम्। कृञ हिंसायाम्। (ड्) क्रीज द्रव्यविनिमये। क्रज गब्दे। क्रीम् विवाधने। चौष् हिंसायाम्। चिष इत्येके। चुभ मञ्चलने। खच भूतप्रादुर्भावे। खव इत्येने। हेट च। (२) गुध रोष्। ग्रु शब्दे 🕨 यन्य श्रम सन्दर्भे। यह उपादाने। उमय-पदी। जु बयोद्धानी। भु इत्येकी।

धृ इत्यन्ये।

त्रा अवबोधने ।

ज्या वयो हानी।

तुभ णभ हिंसायाम्।

द्रञ हिंसायाम्।

दृ विदार्णे।

षय क्यादयः परसी-

(१) प्राभीच्या पीन पुन्यम् संशार्थी वा।

Deltkin

उन्नेसं - उन्के । **उकार** ्रत्। उकारो धालव-यवं इत्येकी। नृ नये। पुषु पुष्टी। पूज पवने। पृ पालनपूरपायोः।

प्रीज तपेंचे कान्ती च । (३) सें इनसेगत-पुष प्रुष षूरणेषु । श्री गती।

वस्य बस्धने । ब्ज धरेषी। ब वरणें। भरणें चेत्येके। स् भवाने। भरगोऽपि। स्त्री भये। भरणे इत्येके।

मस्य विसोडने। मीज हिंसायाम् । सुष सीये।

सद चोदे। सड्चा ष्ययं सुखेऽपि । स डिंगायाम् । युज बन्धने। बी गतिरेषणयी: "

सी सेंघणें। सूज हेदने " विष विपयोगे । वङ मधाती।

व्रीवरण्री।

ही वरणे। अपने अर्थे। म् - हिंसायाम् १ यत्व-विमोचनप्रतिहर्षयी: ।

(३) कान्ति: कामना ।

योज पाने। षिजं बन्धने । स्कू अ प्राप्ता ने ।

स्तुज्याच्छादने। इति याविकरणाः क्रांदियः

चुरादय: परसी-भय पदिन:। (चर खेंचे।) षणि यप्ति निवि तड

नल

नट

संशि महि रवि रहि ब्ठ ब्या ब्रिस लिख स्रिवा सिंड भीवा भासार्थाः । (१)

दिसं पुटि

षय

दोपंधः। षन्चु विशेषणे । श्रम रोगे। प्रक स्तवन । - तपने

षष्ट षुष्ट धनादरे।

इत्ये के। पर्व पूजायाम्। पर्ज प्रतियति । प्रयम्था-स्तरेऽपि ।

षदें हिंसायामा जमय-पदी # षर पूजायाम्।

पाइ लक्नान । उभयपदी त्ये वी। इस प्रेरणे ह

रंड स्तृती ।

(४) रेषणं हक्यान्दः।

हेर चेपे। उर्ज बलपाचनयीः। योगडि उत्विपगे ।

ष्माकार इदिल्वे के। उकारादिरयमित्यन्ये। कट वर्षे।

कठि योने। उत्पूर्वेदियः मृत्व खायाम्।

कड़ि खड़ खंडिं भेदने। क्यां निमोलने। कल विन चेपे। कीर वर्णे ।

कुट केंद्रनभवानयों। पूरणे पत्ये के। कुड़ि रचणे।

कुद्धि पंतरमापणे । कुप कुभि कुसि गुप घंट घटि चीव चंद तक तुनि वसि देशि ध्व

पट पिकि पिकि पुर पुष मंजि मिजि सर्वि लुजि लुट लोवा लोच वह वहाँ विक हत हम

हडि भाषायाः। कुवि पाच्छादने। कुभि इत्वेन । 'क्रप युंती चित्रे करवने चे।'

कृत संग्रव्हेंने। (पाड:) मान्द सातत्व। चित्र संच्छजीवने।

चपि चान्याम्।। चल गीचकर्मणि।

(१) भासार्था दी सार्थाः । भाषार्थी इति पाठे भाषायां येऽवस्ति तेवां धातूनां

ते भाषार्काः । यनेकार्या इति केचित्।

(8)

मह मंवरणे। खुडि खण्डने । गज मार्ज गव्दार्थी। सर्च च। मर्ज गर्द ग्रब्हे। मर्थे प्रसिक्ताङ्गयाम् । गर्ड विनिन्दने। मुड प्रेग्गे मुडि वैष्टने। रचणे इत्येके। कुठि इत्यन्धे। चूर्णीकरणे क्षीक गुठि इत्यपरे। बुदं पूर्व निकेतने। ग्रयः वन्धने । ग्रयः इत्येकै । इस ग्रह्ये। घट सङ्घाते। इन्तार्थंस। घट चलने। घुषिर् विक्रक्टने। प्रस्ववणे। 'आवणी इस्क्री चक चुक व्यथने। चिक्र ्रत्येक । चट स्म्ट भेदने । चन यहोपहननयोहि-्रत्येके। चिव गत्थाम्। चा संध्ये । चर्च अध्ययने। चल सती। चन्न प्रतिकल्कने। चप द्र त्येवी। 8 6 W 3 W विञ चयने। विति सृत्याम्।

चुट छेटने। चुटि केंदने । चुष्ट गुरु गुलीभाव 🕨 चुट मञ्चीटने। चुर स्तेये। चुल ममुच्छावे ह चूट छैटने। चण सङ्गेचने। चर्ण पेषणे । चूर्ण वर्ण पेरिका वर्ण वण ने इत्यें के । चृत छप हप सन्दीपने। चु सहने। इसने चेलेके। चस इत्येके। क्द अपवार्गे। अभय-पटी। छदि संवर्णे। क्ट वसने। क्दो मन्दी वने। जभि नाशने। जन अधवार्षे। सज जिस रचये। मोचये इति केचित्। जसु हिंसायाम्। जसु ताडमे । जुड प्रेरणे। ज्ञष परितर्कषे । (३) जुबयो हानी। चित्र च त्रप जाने जापने च। च्चप मिच। न्ना नियोगे। टिक बन्धने। डिप चेपे । (२)) परितक्षेण मूडी डिंसा वा छ

इस्यें के।

तड प्राचाते। तत् ऋदोपकरणयीः। उ सर्गाच देखें। तप दाहें। 📭 🦠 तन प्रतिष्ठायाम्। 🗀 🔑 तिस भूष अलङ्गर्ष । तिज नियाने ्रिक स्रेष्ट्रने । तुनि पिनि हिंसावना • दाननिनितनेषु । तुः पिनेति वेचित्। बरि लुजि इत्येकै। तुल उन्माने । तुवि लुवि • षद्रभँने षटने इस्वेते। त्रमी। सन्दीपन इत्येके। त्रस धारणे। यहण इत्येके। वारणे इत्यन्धे दल विटारणे। दिवुं मदेने। दुल डत्चिपी हम पन्दर्भे । हमी सर्वे । धकः नकः नामने।। धूञ वाम्पने । धुस कान्तिकरणे। धूव इत्येवे। ध्य इत्यवरे। ध्व प्रमन्त्र 🕯 उप्रम उच्छे। उनारी इत्येकी। धालवयव गेन्तन्ते:। नट पवस्यन्दन । (३)

(ह) प्रविद्यन्दनं नावाम् ॥

पत्त परिवरे। पचि विस्तारवचने। विड् पिम नांगने। पथि गती। प्रश बस्बने। पाल रचणे। विक बुहने। विडिसंघाते। पिस गती। चीड चवगाइने। पुष धारणे। पुलमञ्चले । पुस प्रसिद्धने । पुस्त वस्त बादरामादः रयोः। पुज पुजायाम् + पूरी चाप्यायने । पुल संघाते। पूर्ण इ.स्बे-के। पूजा पत्यन्ये। प्रजि सन्दर्भीयने। • पृथ प्रचेपे। • प्रथ प्रथेके। पु पूरणे। प्रथ प्रस्थाने। ्रे प्रीज तर्पणे। वध संयमने। बन्धेति चान्द्रः। • वन प्राण्ने। विस भेदने। नुका सापणी वट हिंसायामे। ब्रुस वह हिंसायाम्। भच घटनै। भज वियायने।

भडिक खाणे। भुवोऽवक्कने। भवक-ल्बनं मिखोकरणमि-लोके । चिन्तनमित्वन्धे। सपिय। मडि भूषायाम्। इपव। मान पुत्राधाम्। मार्ग चन्वेषणे। सिदि सेवने। सी गती। सुच प्रमोचने। मोदन सुट संजूष ने। सुद संसर्गे। सुद्धा संघाते। मूल रोषणे। मुज गोचालकारयोः। स्य तितिचायाम्। उभय-पदी। मोध असने। (8) सव संच्छनं। स्त्रेष्ठ प्रव्यक्तायां वाचि। यत निकारोपस्कारयोः। यत्रि सङ्गोचे। यस च परिवेषणे। -(५) यु जुगुपायाम्। युज एव संयमने। रवा लग भास्तादने। रग इत्येकी। रघ च । रइ लागे। रिच वियोजनसम्पर्चनयीः। र्ज हिंसायाम्। way the rest [to be the desired of the second

(१) परिवेषणभिष्ठ बेडनम्।

क्ष रोषे। कट रलेकी। लड उपसेवायाम। सच दर्गनाङ्ग्नयोः। बस शिल्पयोगे। सी द्वीवरणी। बिगि चित्रीकरणे। नुट सञ्जूषाने। लुगढ स्तेये । लुगड इत्येवें। ल्य (इंसायाम्। वच पश्मापणे। वज सार्गवासंस्कारगत्वीः। वटि विभाजने। विड चला के। वद सन्देशवचने। उभय-पदी। पाक्षनेपदी इस्येके। वर्षं केदनपूर्वयी:। 💮 वल्क खल्क परिभाषणी। वस खेडच्छेदापहर-चेषु। वा सुखासिगतिसेवास्। हजी वर्जने। हुअ चावरचे। **2.ठ व्यठ परंस्कार**-गत्वोः। ऋति इत्वेते। ग्रव्ह उपसगीद।विष्कारेच चाद् भाषणे। शिव श्रमवेषियोगे। ग्रीक मीक पामपंगे। चीक च। शुठ चानस्ये। याँठ भोषचे।

श्रुस्य शीचकर्मण। शुल्क द्यतिस्पर्धने। शुल्व माने। शूर्प च । शृधु प्रहसने। अण दाने। प्रायेणायं विपूर्व: । ावपूर्वः। व्यय प्रयक्ते। प्रस्थाने इस्मेने। श्रय मोचणे। हिंसाया-मित्येके। श्रत्य ग्रत्य सन्दर्भे । श्चिष श्चेषणे। षष्ट स्मिष्ट चुवि हिंसा-याम् । (बाङः) षद पदार्थे। वस्व सम्बन्धने। श्रास्त च। साम्बद्येके। षद्दमध्ये। षान्व सामप्रयोगे। षद चरणे। इन्यस् च्छाये। िणाइ स्तेइने। स्फिट इत्येके। षद प्रास्वादने। दत्ये के। स बास्तरणे। सिट सेइगत्यो:। स्मिट इत्याम्। वधे भना-दरे चे त्येकी। साडि परिचासे, समृदि कति पाठान्तरम्। स्मिट भगादरे। •

खतंगलाम्। खभाच। हिसि हिसायाम्। ह्नव व्यक्तायां हाचि। क्लप इत्येती। इति सुरादयः परसी पदिन:।

[गणदपणः]

स्रादय बालाने-चय पदिन:। कुट प्रभापने। कुत्स घवचेपणे। कुसा कुत्सितसायने। कूट यापदाने। श्रवसा-दने इत्येके। कूण सङ्गाचे। कण च। गल स्वणे। गूर उद्यमने। न विज्ञाने। गर इत्यन्ये। चित सञ्चेतने। डप डिप संघाते। तित .कुट्रेबधार्णे। - चान्द्रास्तु धातुद्दयमिति वदन्ति। मर्ज भर्त्स तर्जने। तूण पूरणे।. वुट छेदने। कुठ इत्येकै। दिशा दंशने। दिम दर्भेनदंभनयोः । दस इत्येके। दिवु परिक्रुजने। निष्क परिमाणे।

भ्वण आजाविशक्यी:। मद हिंसियोगे। मन सामी। मित्र गुप्तपिभाषणे। यच पूजायाम्। 🔪 युं जुगुपायाम् । लल देपुसायाम्। वसु प्रमाभने। वस्त गुरु घटने। विद चेतनात्यानविदा-सेषु । विष्क हिंसायाम्। हिष्क इत्धेने। इव प्रात्तिवन्धने। (१) गठ श्वाचायाम्। गम लच पालोचने। स्मय यहणसंञ्चेषणयी:। स्यम वितर्वे। इति चुरादय बात्मने-" पदिनः।

भय भदन्तासदादयः। पदे लचणे च। पह च। श्रव पापकर्षे। षम्ब दृष्टावचाते । षर्यं उपयाच्जायाम्। अवधीर अवज्ञायाम्। त्रं य प्रस विभाजने 🔓 यं स समाघाते। यान्दोन हिन्दोन हिन्नोन ं (वे) दोसने। 🗷 🕾 🕬 🕏

भन पाभगडने।

न्कत्र ग्रीधल्धे। काथ वाकापवन्ये। (१) कल गंती मंख्याने चा। स्मा यास काणे। क्रमा गुण केतने ं च। कुण मङ्गेवनेऽपि। क्रमार कोडायाम। कुमान इत्से के बुह विसाधने। क्राट परिनामे। परिदाही इत्यन्ये। शामकाषी च। परिकामे इति केचित। कृण सङ्गोचे। श्रावणे निमस्क्रणे। खप प्रेरणे। कोर चेषे। कोट कोड इत्येके। ख च बुन्धने। खेट भन्दी। खेट खोट इत्येके। ग्रमानमंख्या ने १ ग्रव माने । सवेष सागणे। ग्रह ग्रहने। रहन्द्र ग्रन्थों। गोम उपलेपने। याम यामळाणे। च इ परिकल्लाने। (३) चित्र चित्रीकरणे । कट प्रवस्ता ।

किट कर्णभेदने। कारण-भेटने इखन्ये । धालनारभित्वचे। छेट हैंथी कर थे। त्य प्रावरणे। दण्ड दण्डिमिपालने। धेक टर्भने। ध्वन शब्दे। निकाम आच्छादने। पर वट कर्य । पत गती वा। वा गिजन्स:। का अटन्स इत्येके। पट गती। षण इरितभावे। स्वनपवनयोः । इत्येके। पत्कल वत्कन पष चनुपसर्गति मतावि-त्येव । पश् इत्येकी। कार तीर वार्मसमाप्ती। पट मंसर्गे। प्रकाम चापलेड। भाज पृथक कर्मणि। भाम क्रोधे। मह पूजायाम्। मिय सम्पर्ते। मृत प्रस्वयो । स्ग प्रन्वेषणी। दच प्रतियते। रम पास्तादने। €ह त्यागे।

कच पान्य। कप कपित्रयायास । (३) लज प्रकाशनी। ख जि बत्येके। सङ् साड याचेपे। लाभ प्रेरणी। विभाजने । विक्र द्रत्येके। (४) वर ईपसायाम्। वर्ण वर्णक्रियाविस्तारगुणः वचनेषु । बल्क दर्भने। वब्द्ध विष्कु दर्भने। वस निवासे वात सुखसेवनयोः। यति-स्खम्बनिष्वत्ये के। वास उपस्कायाम । विडम्ब विडम्बने। बीज् व्यजने। वेस कानोपदेशे। दति पृथक धातुनियको। वित्तसमुत्नग्। व्यय विक्त इति ष्ट्रयक्षात् रित्ये के। व्रष् गात्रविचर्णने। गठ ख्ठ मस्यगवभाषणे। शील उपधारणे। (१) श्रुर वीर विकाली।

यय यय टीर्बल्ये।

हृद प्राप्त स्था । इस्त त्यारी। प्रक्रित प्राप्त त्यारी। (१) याक्ष टायनस्तु क्यादीनां सर्वोषां एक सहस्र। तस्ति क्यापयित नणा-प्रयतीत्यादि। (२) पश्चिक्क्यनं दक्षः प्राह्मच्च।

(१) इपर्यं दर्भनं वा इपिक्रया । (४) दटीत्यस्य शहरते पाठवलादरः कले इहि रिखनो । वटार्पयति । एवं इनीत्यवापि । (५) उपधारण मध्यासः ।

संगाम युंबे। श्रंयमालंने-पदी। संत्रं सन्तानित्रयायाम्। समाज प्रीतिदर्भनयोः। प्रीतिसेवनयो रित्यन्ये। साम सान्त्रप्रयोगे। सार क्रंप दीर्बल्ये। सुख दुःख तत्रियायाम्। सूच पैग्रन्ये। सूत्रं वेष्टने विमोचने श्रंत्ये च।

स्तेन गेदी देवप्रब्दे।
स्तेन चौर्या।
स्तोम स्नावायाम्।
स्टून पारहेड्णे।
स्टुड प्रमायाम्।
स्पुट विस्मुरणे।
स्तर प्राचिपे।
हिस्नाव दोलने।
वहनमत्रवदर्यनम्। बाइन नादन्येऽपि वाध्याः;

बहुलंगिर्लोहु:। तैना-पर्डिता पर्षि सोर्च-नीर्विवविद्वा बीध्याः भंपरे तुं नवंगणीवाठों बंदर्लिमित्योद्दः। विना-पठितंभ्यो हिप र्बे चिर्त् खार्थे णिच । रामो राज्यं भर्तीकर्दिखां हुं?। इत्यंदन्तं चुरादयः। संमासीड्यं पाणिनीयो धातपाठः ।

प्रगद नीरीगले। श्रुगदाति। षव्। भ्रघीयति । श्रास्त्रीयति। श्रध्वर। भनुक्लयंति। अनुक्र्न, कु इ. ३८। श्रनुनीमयति। नीमान्यनुमार्षि। श्रीभमनायते। श्रीभमनस्। श्रसिषेणयति। श्रस्यवेणयत्। श्रसिष-चेगायिषति । सेनयाभिम्खं याति । श्रभायते। श्रभां वरोति। ध्रमतायते। प्रस्त मिवाचरति। श्रुखर्यति। श्रुखर संभागी। अर्थात। परर पाराकर्मण। धनोकायते। पनीक। श्रवश्रीत । श्रवर । अभनायति। अभन। अश्रीतिपिबतीयति । श्रवयते। श्रवतर माच्छे। श्रवस्थिति वडवा। श्रवः। अस्यति । •ते । असुञ उपतापे । श्रविलयति । श्राविल । इरज्येति,। इरज् ईर्थायाम्। इरस्यति। इरम् ईष्यीयाम्। इयंति। •ते। इरञ ईर्ष्यायाम। इषुध्यति । इषुधं शरधारणे । र्वत्युच्छयते। पुच्छ सुत्चिपति। उन्सकायते। 'उत्सक। उदंग्यति। उदक्ष मिच्छति। उनानायते। उनान्स। उपवीषयति । वीणया उपगायति ।

उषस्यति । उषस् प्रभातीभावै। उषायते। उषाण सुदसति। पनायति। एना विनासे। षीजायवे। घोजस्। कराष्ट्रयति। •ते। कराष्ट्रच गात्रविघर्षणे वास्यायते। वास्या। कलहायते। कलहा कष्टायते। कष्टाय क्रामते। किनविज्ञायति। थिलंतिखा। कुषुभ्यति। कुषुभ चेपे। सच्छायते। किन्छ। क्रपणायते। क्रपण। क्रणायते। क्रणा केलायति। केला विलासे। चौरस्यति। चौर। खेलायति। खेला विलासे। गद्गदाति। गद्गद वाक खबलने। गव्यति। गी। गोमयायते। भीमय। चपनायते। चपन। चरण्यति। चरण गती। चरितार्थयति । चरितार्थ । चित्रीयते हैमसूगः। चित्रक्ष पासर्थे। चिरयति। चिरम्। चिरावति। ०ते। चिर। चित्रयति। चित्रः। क्लयति। क्ला। तन्तस्वति। तन्तस् दुःखे। र्तप्रवात । तपः वारोति ।

नरस्यति। तरस्य गती। तिमिरयति। तिमिर गती। तिरस्यति । तिरस् अन्तर्दी । त्रचयति। तुच । • त्यमायते। तमा दवयति। दूर। टाक्णायते। दाक्ण। दु:खायते । दु:खं वेदयते । दुःख्यति । दुःख तत्क्रियायाम् । दुर्मनायते । दुर्मनस् । दोलायते। दोना। द्रवस्यति। द्रवस परितापपरिचर्षयोः। दुसायते। दुस। धनायति। धन। धमायते। ध्व। नसंख्ति। नमः करोति। निष्यवयति। निष्यव। नेदयति। श्रन्तिका। परपरायति। ०ते। परिष्डतायते। परिष्डत। पतीयति। पति। पैयस्वति । पयस् प्रस्तौ । प्राद्धीमावै । परिकर्मयति । परिकर्मन् । पस्चवयति। पस्नव। विश्वनयति । विश्वन । पुलक्यति। पुलका प्रतिकालयति। प्रतिकाला। प्रतीपायते । प्रतीप । प्रमाण्यति । प्रमाण् । प्रायश्वितीयते। प्रायश्वित्त। फोनायति। •ते। फोनमहमति। भिचयति। भिच भिचायाम। भिषज्यति। भिषज् चिकित्सायाम्। भूमयति । भूमन् । 🦠 स्थायते। प्रस्थो स्थो स्वति। स्रमायते। समत।

मगध्यति। मगध बेष्टते। मद्रायति । ०ते । मद्र । . सन्त्यति । सन्तु अपराधि । रोवेच । सश्चायति। ०ते। मन्द। मन्त्रयते। मन्त्र। मांजनयति। मांजन १ गुरु । अपन महीयते। महीङ पूनायाम्। मित्रीयते। मित्र। 🔭 😅 🕯 मखरयति। सुखर। स्यति। स्यन्तः धदेवीं स्गः। मेघायते। मेघ। मेधायते। सेधा आग्रुयहणे। योक्तयति।योक्ता। रणकास्यति।रणमिच्छति। रहायते। रहस्। राजायते। राजेवाचरति। रेखायते। रेखा साघासादनयोः। रीमस्यायते । रोमस्यं वर्त्तयति । लघमति। लघ्। खवणयति । खवणा । नवगस्यति। नवगा। 🥦 🔭 🔎 🥒 🗸 बाह्यति। बाट् जीवने। निव्यति । निट् प्रत्यक्षत्वन्धोः । लेखाति। लेखा खेख लेखायति। विलासे खबलने च। नेवात। नोवात। नेट नोट धीर्स्थ पूर्वभावे खप्ने च। लेलायति । लेला दीप्ती । लोडितायति। •ते। लोडित वरिवस्थति। वरिवम। वर्षायते। वर्चसा वल्ग्यति । वला पूजामाध्ययोः । वाजयाति। वाजा। वाष्यायते। वाष्य मुखमति। विषयित । विष्न । वित्रस्तयति। तुस्त। कैयान् विजयी-

, बारोति, पा ३, १,२१। विश्वरयति। विश्वर। विपाशयति। पाशं विमोचयति। विमन्यति। विमन्। ह्रष्ट्राति। हषा ॰ व्रवायते । व्रवा वेलायति। वेला । वेडायते। वेडत्। वैरायते। वेरं करोति। प्रतयति पयः । तनाति भुङ्को । धव्यति। भव्र। मञ्दायते। मञ्दं करोति। शिथिलयति। शिथिलं करोति। शीवायते । अशीवः शीवो भवति । ग्रुचीयते। ग्रुचिम्। ग्यामायदे। ग्याम। श्रमणायते। श्रमण। श्वच्ययति । श्वच्य । श्वयायते। श्वय। खेतयति। खेत माचष्टे। सत्याद्वयति । सत्य । सपर्थति । सपर् पूनायाम् । सफलयति । सफल। समानयति । समान । समुद्रायते । समुद्र । सञ्चोकत्यते। चीवराष्यर्जयति। सस्वर्धति । सस्वर सकारचे । संभाण्ड्यते । भाण्डानि समाचिनीति । सभ्यस्यति । संभूयस् प्रभूतभावे। संबर्भेयति । वर्मणा संनद्यति । मंबरत्यति । वस्तेष समाच्छादयति । सिंहायते। सिंह दवाचरति। सुखायते । सुख यनुभवति । सुल्यति। सुस्त तत्रिक्षयायाम् । सुल्येयुः

प्रक्रतयो ज्ञुपम् । सुमनायते । सुमनम् । सुख्यति । सुख्य । स्नजयति । स्वग्विन् । इस्रायते । इस्र । इरितायति । ०ते १ इरित । इपीयते । इणोड रोषणे कट्यायाच् ।

सीवधातवः।

ऋति ज्ञापायामिति वहवः। क्षपा-जहतीयते। जहतीयाञ्चली याचेत्येवे। पा ३, १, २८। इयङभावे तु परस्मैप-दम्। पानर्त्त । पर्तिष्वति । पार्तीत् । तु, बदा, प। गतिहिं हिंसासु। जु, तु, दुग्ढ, भादी गताः। कर्क हासे। कर्कटः। कर्क्यः। चिक स्त्रान्ती। चङ्गरः। मर्के गत्याम्। सर्कटः। सिवा सेचने। सिवाता। सर्च ग्रहणे। सर्वः। क्ति जन्मिन। कन्नरः। ,पिन रोधे। पद्धरः। सिन ध्वनौ। सञ्जरी। सञ्जलः। सञ्जा मट अवसादने। मटहः। वटि स्तेये। वस्टकः। कुठ छेदने। कुठार:। कुठेर:। कुटाकु:। **उड् संहती। उड्पम्।** वड यारोहणे। वड्भी। वड्गि:। कुत पास्तरणे। कुतपः। प्त गती। पुत्तिका। नत प्रावाते। नता। सात सुखे। सातय:, पा २,१,१३८। उद प्राधाती पोदनः। उदक्रम्। चद संवर्णे। चना। सुदि खुती। सुन्दरः। क्यूप लीखे। कपोल:। खुप भवसादमे । चुपः 🕍 रिंफ चेपे कुझने च। रिफः। रेफः।

रिभ रवे। विरिचः, पा ७, २,१८। स्कन्भु स्कन्भु स्तन्भु स्तन्भु गताः। डिम हिंसायाम्। डिग्डिस:। धम ध्वाने। धमनि:। पीय प्रीणने। पीय्षम्। डर गतौ। डरगः । तद्भि सोहावसादयो:। तन्द्रा । तन्द्रि:। खल दाहे। खलपः। खल्का। लुल विमर्दने। लुलाप:। शल गमने। शलको। ऋग गतिस्तुत्योः। ऋग्यः। पश्र पम्पश्यते, पा ७, ४, ८६। रम खने। रमना। नच युगी। नचत्रम। भिष रग्जये। भिषक्। भेषजम्। युष भजने। योषित्। युषाद्। ल्ष सिंसने। लूषणम्। सीव्रधातवः समाप्ताः।

वैदिक्षधातवः।

दीधी खदी प्रिदेवनयोः। वैवी खवितना तुःखे। पस् खासा खप्रे।

प्रमा काक्ष्री। च करीतचा।

हित घटादिः।

हे प्रमा हिर्मे हिर्मे ।

हि प्रमा हिर्मे हिर्मे ।

सि स्राने।

सि साने।

सि प्रान्दे।

धन धान्ये।

जन जनने।

गा स्तुती।

इति जुडीत्यादयः। पृ प्रीती। स्य प्रीतिपाजनयोः। स्मृ इत्येकै।

ष इ व्याप्ती। दघ घातने पालने च। चमु भच्चो। रिचि चिरि जिरि दाग्रः ह सिंसाग्राम् । इति खादिः।

स्वार्स्सार-धातुगणः।

• खुत खिता जिमिदा जिब्बिदा जिब्बिटा क्च घुट क्ट लुट सुठ ग्रम सुम गम तुम खन्स ध्वन्स ध्वन्स अन्य खन्म (धनु बधु ग्रधु स्वन्दू कपू) इति द्युतीदि वितादिख् व्यादिभ्यो लुङि परसायदे वा खात्। परसायदेऽह्य, पा १, ३, ८१। ३, १, ५४। वतादोनान्तु स्थमनाः परसोपदं वा स्थात्, पा १, ३, ८२। परसोपदे इट्पतिधेषय, पा ७, ३, ५८।

ण पाक राजृ दुश्चाजृ दुश्चाण्य दुश्चाण्य स्वमु •स्वन इति प्रापादीनां विदि एत्वाश्यासनी भी वा स्थानाम्, पा ६, ४. १२५।

ज्ञान जान चना टल दून स्थन इन गन पन बन पुन जान घन इन पत्स्र काथे पथे मथे दुवम स्थम चर घह रस षद्व्य भद्व क्या जुच बुध रह नस इति ज्ञानादिः। ज्ञानादिस्यो गाः स्थादा, पा ३०१,१४०। यज दुवप वह वस वैज को जो होड वद दुशोध्वि इति यजादिः। यजादीनां किति सम्प्रसारणम, पादः,१,१४।

े विद्वि जिल्लाप स्वस स्रम जल इति वदादिः। वदादिभ्यः सार्वेधातुकी इट् पा ७,२,०६।

ज्ञ जार्थ दिश्व चकास्त मासु दोधौ इति जचादिः। तत्पन्न सभ्यस्तिः संज्ञा भिष्य च बहादेगः, पा ७, १, ४।

पुष श्र तुर दुव श्चिर गक व्यदा क्रिय चुध श्व विघ (रथ जगू छ प हु इस् स्व श्वाह क्याह इति रघादिः)। एथ्य इट्वा स्थात, पा ७, २, ४५। (श्वसु तम् दम् अपि चम् क्रिस मदो इति समादिः)। प्यां स्थित दीर्घः, पा ७, २, ७४। (श्वसु यस जस तस दस् एस वस व्यव व्यव व्यव व्यव इत दिष डिप क्षि समी समी चुठ छ व रहा अन्य हम अप जिस्

कुप गुप पुप कपु लुप लुभ लुभ णभ तुभ किंदू निमिदा निल्लिदा ऋघु ग्रधु • इति पुषादिदिवादान्तर्गणः। पुषादीनां लुङ ग्रङ् स्थात्, पा ३, १, ५५।

षुड दूड दोड डोड घोड मोड रोड बोड बोड प्रति दिवादान्तर्गणः स्वादिः। ततफलं निष्ठानत्वम्, पा ८, २, ४५। की १३५ है

कृ गृदङ घड प्रक् इति किरादिस्तुदार्द्यन्तर्भणः, की १५५। एभ्यः स्नि इट्स्यात्, पा ७, २, ७५। कर्मकर्त्तरि न यक् चिणी, की २७७।

कुट पुट की च गुज गुड डिप छुर स्फुट सुट वट तुट चुट, छुट जुट जुट कड़ कुड़ कड़ पुड़ घुट तुड युड खुड खुड छुड स्फुर स्फुन (फुन) स्फुड़ चुड बुड कुड स्ड (स्वड) ग्री णू धू गु भ्रु भ्रुव कुड कूड इति कुटादिस्तुदाद्यन्तर्गणः। तत्फलम् अणिति गुणाभावः पा १, २, १।

सुच् खुप् खिद् खिप लिप विच क्षतो विद पिश इति सुचादिस्तुद। यन्त-गैषा:। तत्पलं सार्वधातुको नुसागमः, पा ७, १, ५८।

पूज लूज स्तूज कृज वृज धूज गृपृ वृ भृ मृद् ज भृ धृ नृ कृ ऋ गृ ज्या ही ली बी प्री (बी भी चीष्) इति पाद स्वीदि स्व। तत्पल न्तु सार्वधातुकी इस्त त्या ७, ३, ८०। निष्ठान तच्च, पा ८, २, ४४।

कर्ण रण भण त्रण लुप हैठ। हायि वाणि लोटि लोपि। चानि लोठि इति काण्यादयः। एषां णी चङ्ग्रपधाया इस्स्रो वा, की १८२।

ग्रम पुष दल पट पुट लुट तुनि मिलि पिलि लुनि मिलि लिघि विसि कुसि दिशि कुशि घट घटि हिंद बई बल्ह गुप धूप विक्र चौव पृथ लोक लोचे गर कुए तक हत् हुधु कुठ लिन श्रीन दिश स्ट्रीश किश किस शोक नट पुटि निवि रिघ किश्व शिह रिह मिहि लिडि तह नल पूरी केन ष्वद हत्यासदीयाः। एभ्यः सम्भवत्- कर्मभ्य एवं गिच, की १७६।

युज एज अर्च षह देर ली हजी हज जू जि रिच शिष तप तथ कृदी चृप कृप हप हमी हम अथ मी ग्रम्थ मीक चीक अदे हि सि अर्ड अड: — षद अन्य छद जुष धूज प्रोज अन्य ग्रम्थ आपल्ट तनु चैण ब्रद वच मान भू गर्ड मार्ग किंठ सजू स्थ भूष दत्याभूषीया:। एभ्यः णिच्वा स्थात, की १९८।

चित दिश दिस दस उप डिप तित कुटुम्ब मित स्पर्ग तर्ज भन्ने वैस्त गन्ध विष्क इष्कि निष्क लल क्या दित्य भ्रूण यह यच स्थम ग्र यम लच कुलक तुट. कुट गल भन्न कूट कुट वन्च वष मद दिवु ग्र विद मन यु कुसा दत्या कुसोया यातान्यदिन:, की १९६।

पट रह रहा कुह शूर वीर स्थूल श्रधी सत गर्व इत्यागर्वीयाः,। शागर्वादा-तानेपदं चिज्विक स्थम, को १८४।

इति स्वानुमारि-धातुगणः।

সাকৈতিক চিহ্ন।

				_			SS
().	এই বন্ধৰ্	तित्र मरभा	্যে ধাতু থাকিবে,	উ	***	***	় উভয়পদী।
9	ধাতুপীঠে	_		অন্থ	• • •	•••	অন্ধৱাৰ্য়।
	অভীষ্ট ধা	40		উত্তর	***	•••	উত্তরচব্রিত।
			ৎ শ্ৰুঙ ধাতু ধাতু-	কবি	•••	•••	কবিবহস্ত।
			क्टिं प्रथ।	কু	***	•••	কুমারসম্ভব ন
	্যাতে চ্যুড় যেখানে		কোন অংশ উহ	কৌ	•••	•••	সিদ্ধান্তকৌ মূদী
•	By Tak Iron	্ৰত্য সই স্থা		গী			গীতা।
ANK TO S		্যহ হা থো খ্যাস্য		গীতগো			গীতগোবিন্দ 1
			শ উহু। খাস্থতি	देन		•••	নৈষধকাব্য।
			बेट्ड इंडेर्टर ।	পা		• • •	পাণিনি।
			ক ধ ধাতুর নিরমুবন্ধ	প্রদীপ	•••	•••	ধাতৃপ্ৰদীপ।
অবস্থা লিখিত আছে।				ड	•••	• • •	ভট্টিকাব্য।
winth?	शालायक	•		ভা	• • •	•••	ভারবিকাব্য।
ভা		- "	ভাদিগণীয়।	ভারত			মহাভারত। 🗸
অন্		•••	व्यम्। मिश्रीय ।				মন্থুশংহিতা।
হ্বা	•••	•••	হ্বাদিগণীয়।	মন্ত	***		
দি	***	• • •	দিবাদিগণীয়।	মহা	•••	***	,মহানাটক।ু
স্থা			স্বাদিগণীয়।	মা	a same	Section Control Control	মাঘকাব্য।
তু	•	**• •	তুদাদিগণীয়।	র	•••	•••	রঘুবংশ।
乘		•••	রুধাদিগণীয়।	রত্না			রত্বাবলী 🗓
ত	<i>j</i>		তনা দিগণীয়।	রামা		•••	রামায়ণ।
ক্র্যা			জ্ঞা দিগণীয় ৷	বো	•••	***	বোপদেৰ ৄ
Ę	in the second		চুরাদিগণীয়।	শকু	•••	•••	অভিজ্ঞানশকুস্তৰ
٩ 9	• • • •	n.	পর देशभागी।	হিতে ।	ware and		হিতোপদেশ।
• আ	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •		আশ্বদেপদী		Magnetic Control		- • •